लेनिन के
जीवन के चंद पन्ने

ली॰ फ़ोतियेवा

विषय-सूची

जेनेवा और पेरिस में व्ला० इ० लेनिन् से भेंट

१६०४ के वसन्त के शुरू मे पेर्म सामाजिक-जनवादी सगठन से सवद्ध होने के इलज़ाम मे अपने भाई तथा दूसरे साथियो के साथ पेर्म की हवालात मे सात महीने रहने के बाद मुझे रिहा कर दिया गया। अपनी रिहाई के बाद फौरन मैंने क्रान्तिकारी काम फिर शुरू कर दिया। लेकिन एक महीने के भीतर ही यह बात साफ हो गई कि मुझे पुन गिरफ्तार कर लिया जायेगा और इसलिए पेर्म के साथियो ने देश से निकल भागने मे मेरी सहायता की। उन्होंने मुझे समारा नगर का एक गुप्त पता दिया, जहा से मुझे सुवाल्की भेज दिया गया, जो एक सरहदी नगर है। वहा से मुझे सीमा पार कराने के लिए इतज़ाम किए गए।

सीमा पार करने का काम आश्चर्यजनक रूप मे आसान साबित हुआ और उसमें केवल १५ रूबल खर्च हुए। जैसा कि मेरे गाइड ने मुझे बताया, इस रकम का एक बडा हिस्सा सरहदी चौकी के कमाडर को मिला। सीमा-रेखा पर तैनात नौजवान सैनिक को तो एक बोतल वोद्का के लिए सिर्फ २० कोपेक ही मिले। हमने एक छोटी नदी पार की और कुछ मिनटो मे ही जर्मनी के भूक्षेत्र मे आ गए। मेरा गाइड मुझे गोल्डाप तक ले गया। यह एक छोटा-सा जर्मन नगर है, जहा मुझे एक जर्मन सामाजिक-जनवादी से मिलना था। वे दर्ज़ी का काम करते थे और उनका पता मुझे सुवाल्की मे मेरे साथियो ने दिया था। मैंने रात उनके घर मे गुज़ारी और दूसरे दिन सुबह बर्लिन और फिर वहा से जेनेवा के लिए रवाना

हो गई। रेलगाड़ी के टिकट का बंदोवस्त उसी दर्जी साथी ने कर दिया था।

जेनेवा में आकर मैं व्ला० इ० लेनिन से सीधे नहीं मिली। जब मैं रूए दे कारूज (कारूज नामक सड़क) के उस पते पर पहुंची, जो मुझे दिया गया था, तो व्ला० द० बोंच-ब्रुयेविच * ने मेरा स्वागत किया। मैंने पहले समझा कि वही लेनिन हैं। उन्होंने अपना परिचय दिया और मुझे बताया कि व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ** इस समय जेनेवा में नहीं हैं, मगर वे शीघ्र ही वापस आनेवाले हैं।

बोंच-ब्रुयेविच मेरे साथ बहुत अच्छी तरह पेश आए। उन्होंने मुझे बोल्शेविक पार्टी के साहित्य-वितरण कार्यालय में काम देने का प्रस्ताव किया। उन्हें केंद्रीय समिति ने इस कार्यालय का व्यवस्थापक नियुक्त किया था। यह कार्यालय भी रूए दे कारूज पर ही था। वहां वे० मि० वेलीच्किना (बोंच-ब्रुयेविच की पत्नी), मा० नि० ल्यादोव और उनकी पत्नी ल० प० मान्देलश्ताम, फ़० फ़० इल्यीन, लेपेशीन्स्की दम्पति तथा बोल्शेविक पार्टी के अनेक दूसरे सदस्यों से मेरी मुलाक़ात हुई। वे अच्छे साथी और भले लोग थे। मेरे लिए उनका सत्संग न केवल सुखद, बल्कि उपयोगी भी सिद्ध हुआ, क्योंकि उनसे मुझे उस परिस्थिति की पेचीदगियों को समझने में सहायता मिली, जिसमें उस समय राजनीतिक उत्प्रवासियों का समुदाय रह रहा था।

जेनेवा आने से पहले मुझे इस बात की कोई स्पष्ट धारणा नहीं थी कि बोल्शेविकों और मेन्शेविकों के बीच मतभेद के मूल मुद्दे क्या थे और वह किस हद तक पहुंच चुका था। हालांकि हमें जो भी थोड़ी-बहुत जानकारी मिली थी, उससे हमें बोल्शेविकों का पक्षधर बना दिया था। इस प्रकार, मैं बोल्शेविकों के प्रति

* व्ला० द० बोंच-ब्रुयेविच (१८७३-१९५५) – पुराने बोल्शेविक। वह १९०३ में जेनेवा में सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी की केंद्रीय समिति के साहित्य-वितरण कार्यालय के व्यवस्थापक थे। अक्तूबर क्रांति के प्रथम दिनों से १९२० तक जन-कमिसार परिषद के प्रबंध कार्यालय के व्यवस्थापक रहे। – सं०

** नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना क्रूप्स्काया (१८६९-१९३९) – बोल्शेविक पार्टी की सबसे पुरानी सदस्य, व्ला० इ० लेनिन की पत्नी और सहकर्मी। – सं०

पूरी हमदर्दी लेकर जेनेवा आई, चाहे वह हमदर्दी समुचित समझ से पैदा होने के बजाय शायद सहजबुद्धि से पैदा हुई हो। अत मैं फौरन ही बोल्शेविकों में शामिल हो गई और जेनेवा में ही पार्टी-साहित्य पढकर, जिसपर मैं भूखे भेडिए की तरह टूट पडी थी, विशेषत लेनिन की कृति 'एक कदम आगे, दो कदम पीछे' पढकर तथा पुराने साथियो से बाते करके मुझे बोल्शेविको और मेशेविको के मतभेदो की गहराई एव असाध्यता की पूरी समझ प्राप्त हुई।

जेनेवा के राजनीतिक उत्प्रवासी समुदाय की परिस्थिति विशेषकर तनावपूर्ण तथा जटिल थी। पार्टी की तीसरी काग्रेस बुलाये जाने की वजह से बोल्शेविको तथा मेशेविको के बीच सघर्ष ने तीव्र रूप ग्रहण कर लिया था। मेशेविको ने फूट की नीति चला रखी थी। मेशेविको की स्थिति की विचारधारात्मक सिद्धातहीनता ही रूस मे तथा विदेशो मे रूसी राजनीतिक उत्प्रवासी समुदायो के बीच उनकी व्यवहार-पद्धति को निर्धारित करती थी। वे अखबारो और सभाओ मे बोल्शेविको पर झूठे लाछन लगाते थे और लेनिन पर अधिनायकवादी स्थिति अपनाने, पार्टी मे सम्पूर्ण सत्ता पर अधिकार जमाने का प्रयास करने, बोनापार्टवाद बरतने का आरोप लगाते हुए उन्हे सभी भयानक पापो का दोषी ठहराते थे। वे रूसी पार्टी सगठनो के साथ धोखाधडी करते थे, जेनेवा मे बोल्शेविको द्वारा आयोजित सभाओ को भग करने के प्रयास करते थे और सभाओं मे पास किए जाने वाले प्रस्तावो पर वोटो की गिनती मे बेईमानी करते थे। सक्षेप मे, वे अनत विवादो की सृष्टि और ऐसे ओछे दलगत झगडे पैदा करने मे लगे रहते थे कि वे कभी-कभी असह्य बन जाते थे। रूस से आनेवाले हर कार्यकर्ता को फुसला-बहकाकर अपने पक्ष मे कर लेने की कोशिश मे मेन्शेविक अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए लफ्फाजी का पूरा-पूरा सहारा लेते थे।

१६०४ की गर्मियो मे जेनेवा के उत्प्रवासी समुदाय के बीच परिस्थिति ऐसी ही उलझी हुई, नाजुक और कठिन थी, जिसमे आते ही मैं पड गई।

थोडे ही दिन बाद व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना जेनेवा वापस आ गए। मेरे मन पर उनसे मुलाकात की

ज़बर्दस्त छाप पड़ी। लेनिन के धैर्य, उत्साह तथा संकल्पशक्ति को देखकर मैं दंग रह गयी। ऐसा लगता था कि लेनिन इस तुच्छ झगड़े के परे थे, इससे कहीं बहुत ऊपर थे। मेंशेविकों की सिद्धान्तहीनता के विपरीत वह सख़्त सिद्धान्तनिष्ठता, अपने विचारों की सत्यता में दृढ़ विश्वास का उदाहरण प्रस्तुत करते थे। उन्होंने मुझे बोल्शेविकों के रुख़ का सार तथा मेंशेविकों के विचारों की सैद्धान्तिक आधारहीनता और अवसरवादिता समझायी।

जेनेवा में रहते हुए मैं भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में व्लादीमिर इल्यीच से मिली और बुद्धिमान नेता तथा अद्‌भुत साथी के रूप में उन्हें देखकर मैं चकित रह गयी थी। वे अत्यंत शिष्ट स्वभाव के व्यक्ति थे और उस जैसी जटिल परिस्थिति में तो उन्होंने लोगों के प्रति किसी विशेष विनम्रता का रुख़ अपनाया था।

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना बोल्शेविक समितियों और दूसरे बोल्शेविक संगठनों के साथ होनेवाले गुप्त पत्र-व्यवहार का काम करती थीं। अपने संस्मरण में वे कहती हैं कि तीसरी कांग्रेस* आयोजित करने के अभियान के दौरान उन्हें महीने में ३००-३०० तक पत्र भेजने पड़ते थे। उन्होंने सुझाव दिया कि मैं इस काम में उनकी सहायता करूं और मैं बड़ी ख़ुशी से राज़ी हो गई।

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना के साथ काम करते-करते उनसे मेरा लगाव बढ़ता गया। वे लाजवाब इन्सान थीं, सदा एक सी, धीर और मिलनसार, सदा दूसरों के लिए फ़िक्रमंद तथा अपने साथियों की सहायता के लिए तत्पर। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना का सैद्धान्तिक ज्ञान विशाल था और उन्हें पार्टी के काम का भी पर्याप्त अनुभव था। उत्प्रवास में रहते हुए उन्होंने अपनी सारी शक्ति रूस में क़ायम ग़ैरक़ानूनी पार्टी संगठनों के साथ पत्र-व्यवहार के बड़े और महत्वपूर्ण कार्य में लगा दी थी। इस काम में वे व्लादीमिर

---

* रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की तीसरी कांग्रेस अप्रैल और मई १९०५ में लंदन में हुई थी। बोल्शेविक इस तथ्य को दृष्टिगत रखकर अविलम्ब कांग्रेस बुलाने के लिए संघर्ष कर रहे थे कि मेंशेविकों की विघटनकारी कार्रवाइयों ने पार्टी में एकता लाना तथा रूस में विकासमान क्रांतिकारी परिस्थितियों की अवस्था में एक सयुक्त मार्क्सवादी कार्यनीति निकालना कठिन बना दिया था। – सं०

इल्यीच लेनिन की फौरी रहनुमाई मे और प्रत्यक्ष आदेशो के अनुसार दिन-रात लगी रहती थी।

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना रूस से लेनिन के नाम आए पत्रों को खोलती और पढती थी तथा उन्हे हमारे गैरकानूनी सगठनो की वस्तुस्थिति के बारे मे पूरी-पूरी जानकारी देती रहती थी। वे लेनिन की बेहतरीन सहायक थी, क्योंकि पेशेवर क्रातिकारी कार्यकर्ताओ को अच्छी तरह जानती थी, साथियो के नामो और पार्टी गुप्तनामो को याद रखती थी और हर पार्टी कार्यकर्ता की असल कीमत आक सकती थी।

रूस के साथ पत्र-व्यवहार करना बडा कठिन और पेचीदा काम था। कार्य-पद्धति यों थी. आनेवाले पत्रो को तरतीब से लगाना और हर पत्र के सांकेतिक भाषा मे लिखे हुए हिस्सो को पढकर सामान्य भाषा मे लिखना। जवाब मे आम स्याही से ऐसे पत्र लिखे जाते थे, जो खुफिया पुलिस के दिमाग मे संदेह न पैदा करे और साथ ही उनकी पक्तियो के बीच मे गोपनीय बातो को रासायनिक साधनो से साकेतिक भाषा मे अक्स कर दिया जाता था। आनेवाले पत्रों की साकेतिक भाषा मे अक्सर गलतिया होती थी और उन्हें पढने मे बहुत समय और परिश्रम लगाना पडता था। ऐसी घटनाएं भी होती थी कि डाक मे किसी पत्र के खो जाने या किसी सगठन का राज खुल जाने से एक नई अपरिचित साकेतिक भाषा का इस्तेमाल करना जरूरी हो जाता था और तब उसे पहचानने में हमे बहुत कठिनाई होती थी। कभी-कभी रासायनिक साधनों से लिखी पक्तिया उभर नही पाती थी और अतएव उस पत्र को "लेटर बक्स" से दुबारा मगाना जरूरी हो जाता था।

रूस के साथ पत्र-व्यवहार पर लेनिन बडा ध्यान देते थे। पत्रो के प्रारूप या तो लेनिन खुद लिखते थे या उनकी ओर से नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना तैयार करती थी। जेनेवा मे रहते हुए रोज के बधे-बधाए, "तकनीकी काम" मे मैं नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना की मदद किया करती थी।

रूस मे कायम पार्टी समितियो के नाम लेनिन के पत्रों के महत्व को मुश्किल से ही बढा-चढा कर आका जा सकता है। वे

पार्टी समितियों को एक सामान्य निदेशन में संयुक्त तथा संघटित करते थे। रूस में गुप्त रूप से काम करनेवाले बोल्शेविक अत्यंत बेसब्री के साथ उन पत्रों की प्रतीक्षा करते थे और उन्हें बड़े चाव से पढ़ते थे।

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना "लेटर-बक्स" के संदेशों की शब्दावली तैयार करने में भी व्लादीमिर इल्यीच की मदद करती थीं। वे संदेश हमारे काम के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण होते थे और उनकी गोपनीयता बनाए रखना लाज़िमी था। वे रूप में संक्षिप्त और ऐसी शब्दावली में लिखे हुए होते थे कि उन्हें केवल वे ही समझ सकते थे जिन्हें संबोधित करके वे लिखे जाते थे। उनके द्वारा आदेश और सुझाव दिए जाते थे, सूचना मांगी जाती थी, पत्रों के मिलने की सूचना दी जाती थी या बहुत दिनों से अपेक्षित उत्तर न मिलने के संकेत दिए जाते थे, अमुक-अमुक पत्र की सांकेतिक भाषा पढ़ने में असमर्थता की सूचना दी जाती थी, आदि। जिस अवधि में (१९०३ के नवम्बर से १९०४ के अन्त तक) बोल्शेविकों के पास कोई अपना अख़बार नहीं था, उस में उक्त संदेशों को छापने का कोई साधन नहीं था, लेकिन जब 'व्पेर्योद'* नामक अख़बार निकलने लगा, तब उन्हें प्रायः हर अंक में छापा जाने लगा। कभी-कभी तो "लेटर-बक्स" बहुत लम्बा हो जाता था। उदाहरण के लिए, 'व्पेर्योद' के ९वें अंक में उक्त कालम २९ पंक्तियों का हो गया था। मिसाल के तौर पर २१ अप्रैल १९०५ को, 'व्पेर्योद' के १५वें अंक में प्रकाशित निम्नलिखित "लेटर बक्स" प्रस्तुत है, जो कोई बहुत बड़ा नहीं है.

"नाता! पत्र 'डेवेलप' नहीं हो सका, घोल बहुत कमजोर है... स्पीत्सा! वह पत्र 'डेवेलप' नहीं किया जा सकता, जिसमें

---

* दूसरी कांग्रेस में पार्टी के अंदर फूट पड़ जाने से वह बोल्शेविकों और मेंशेविकों में बंट गई। इसके बाद 'ईस्क्रा' (लेनिन द्वारा संस्थापित तथा संचालित, क्रांतिकारी मार्क्सवादियों का पहला अखिल रूसी ग़ैरकानूनी अख़बार) पर मेंशेविकों ने क़ब्ज़ा कर लिया और ५२वें अंक (१९ अक्तूबर १९०३) से वह उनका मुखपत्र बन गया। बाद में, बोल्शेविकों ने 'व्पेर्योद' नाम से ख़ुद अख़बार निकाला, जो जेनेवा में १९०५ की जनवरी से मई तक (कुल १८ अंक) निकला। अधिक ब्यौरे के लिए इसी किताब के पृ० २०-२३ देखें। – सं०

प्रस्ताव है। **कोल्या!** पत्रवाहक से पत्र और पते हासिल हुए। **व्लादीमिर!** पत्र मिला, धन्यवाद। **ओदेस्सा,** 'एक देहाती को'! तुम्हारा पत्र बहुत दिलचस्प है। लिखते रहो। **त-रा!** पत्र, सख्या १,२,३ और ४, मिले। सख्या २ और ३ की दो-दो प्रतिया। पत्र के लिए पता दुबारा भेजो। **लोला!** क्या तुम्हे पैसा और पत्र मिल गये? **अन्तोन!** पत्र मिल गया। **फ़ी० एस०!** तीसरा पता बिलकुल ठीक है। **'ईस्क्रा' के खिलाफ विरोध के लेखक!** धन्यवाद, लेकिन वह छापने योग्य शायद ही है हर छोटी बात का जबाब कोई नही दे सकता। **स० स० प०!** पत्र और प्रस्ताव मिल गए। **अन्तोनीना!** नियमित रूप से मिल रहा है।"

मैं रोज़ तडके सुबह नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना के पास पहुच जाती थी और दिन के अधिकतर समय उनके साथ काम करती रहती थी। रूए दे दोविद (दाविद मार्ग, जैसा कि हम कहते थे) पर उनका रसोईघर समेत दो कमरो का एक छोटा मकान था, जिसके दोनो कमरो मे एक-एक खिडकी थी। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना की मा, येलिजावेता वासील्येव्ना भी, जो बहुत भली वृद्धा थी, उसी मकान मे रहती थी। वे शायद ही कभी अपनी बेटी से अलग रही और मरने के दिन तक उन्ही के साथ बनी रही। व्लादीमिर इल्यीच उनका बहुत खयाल रखते थे और वह भी उन्हे दिल से चाहती थी।

व्लादीमिर इल्यीच का परिवार बहुत सादगी से रहता था। येलिज़ावेता वासील्येव्ना उनकी गृहस्थी चलाती थी, बाजार से सौदा-सुलुफ लाती थी, खाना पकाती थी और कमरो की सफाई करती थी। वे शान्त स्वभाव की थी और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना तथा व्लादीमिर इल्यीच का बहुत ध्यान रखती थी। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना को जब कभी अपने काम मे घडी दो घडी की फुर्सत मिलती थी, तो वे गृहस्थी के काम मे अपनी मा की मदद किया करती थी। वे मुझसे अक्सर कहती थी कि गृहस्थी का काम अपने आप मे इतना बुरा नही है, इसलिए इस मे परेशानी नही होती। परेशानी तो इस बात से होती है कि काम के बारे मे सोच-विचार करने की ज़रूरत होती है।

मकान के एक कमरे में नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना तथा उनकी मां रहती थीं और दूसरे में व्लादीमिर इल्यीच। उनके मकान में साधारण मजदूरों के मकान की तरह ही मामूली साज-सामान थे। व्लादीमिर इल्यीच के कमरे में एक लोहे का पलंग था, जिसपर छाल के रेशों से भरा गद्दा बिछा हुआ था और एक छोटी सी मेज के साथ दो या तीन कुर्सियां थीं। उसी कमरे में वे रूस से आनेवाले साथियों से मिलते और उनसे बातचीत किया करते थे। लेकिन, खुद अपने काम के लिए वे 'सोसियेते दे लेकत्यूर' के सार्वजनिक पुस्तकालय में बैठना बेहतर समझते थे, जहां बड़ी अच्छी सुविधाएं उपलब्ध थी। वे तड़के सवेरे पुस्तकालय के लिए रवाना हो जाते थे, तिपहरी का खाना खाने घर आते थे और फिर रात के खाने या शाम की चाय के वक्त तक के लिए काम करने वापस चले जाते थे। जहां तक मुझे याद है, वे लोग तिपहरी का खाना चार बजे खाया करते थे। मैं कभी-कभी वहीं रुक जाया करती थी और तिपहरी का खाना, यहां तक कि बहुत अधिक काम होने पर रात का खाना भी उन्हीं लोगों के साथ खाती थी। उन दिनों की याद मेरी सबसे मूल्यवान निधि है। व्लादीमिर इल्यीच आम तौर से बहुत जिन्दादिल और विनोद-प्रिय थे, वे येलिजावेता वासील्येव्ना को यह कहकर चिढ़ाया करते थे कि किसी आदमी के लिए दो शादियां करने की बुरी से बुरी सजा दो सासों का मिलना है। व्लादीमिर इल्यीच हमारे काम के बारे में न तो खाते समय बात करते थे, न ही चाय के वक्त। वे खाना बड़े चाव से खाते थे, खाने में खास पसन्द का कभी कोई आग्रह नहीं करते थे; बल्कि सच तो यह है कि वे चाहे जो कुछ भी खाते थे, उससे उन्हें कोई अंतर नहीं पड़ता था।

परिवार की अद्भुत मैत्रीपूर्ण सद्भावना देखकर मुझे बेहद खुशी होती थी, जो ऊंचे आदर्शों के प्रति निष्ठा, समान आत्मिक अभिरुचियों, पारस्परिक विश्वास और सम्मान पर आधारित थी।

मैं आम तौर से लेपेशीन्स्की दम्पति* द्वारा संचालित भोजन-

---

* पान्तेलेइमोन तथा ओल्गा लेपेशीन्स्की – पुराने बोल्शेविक। वे १९०३-१९०५ में उत्प्रवासी बोल्शेविकों के जेनेवा-दल में काम करते थे। – सं०

भवन मे खाना खाती थी, जैसा कि अधिकतर रूसी राजनीतिक उत्प्रवासी करते थे। वहा सुबह से रात तक लोगो की भीड लगती रहती थी। वह वास्तव मे एक बोल्शेविक क्लब जैसा था। लोग वहा अपने साथियो से मिलने, नवीनतम समाचार सुनने-सुनाने, वाद-विवाद करने, शतरज खेलने या कोई रिपोर्ट सुनने जाते थे। रूस से आनेवाले साथी सबसे पहले लेपेशीन्स्की दम्पति के भोजन-भवन मे ही आते थे। वहा एक किराये का पियानो रखा था और शाम के समय हम अक्सर मे० इ० गूसेव का गाना या प० अ० क्रासिकोव का वायलिन-वादन सुनते थे। मैं पियानो पर उनकी सगत करती थी और कभी-कभी अकेले भी कोई धुन बजाती थी। वहा कभी-कभी व्लादीमिर इल्यीच भी आते थे। गूसेव के पास, जो एक अत्यन्त सक्रिय बोल्शेविक और दूसरी पार्टी काग्रेस के प्रतिनिधि थे, बहुत सुरीला गला था और सगीत मे उनकी अच्छी पैठ थी। व्लादीमिर इल्यीच उनसे दर्गोमीज्स्की, रुबिन्शताइन और चायकोव्स्की का सगीत सुनना पसन्द करते थे।

पियानो पर जो धुने मैं बजाती थी, उनमे बीथोवेन की करुण वाद्यसगीत-रचना – Pathetique Sonata – व्लादीमिर इल्यीच को सबसे प्रिय थी। एक बार जब मैं उसे बजा चुकी, तो व्लादीमिर इल्यीच मेरे पास आए और बोले, "आपको जरूर अभ्यास करना चाहिए।" इन शब्दो ने मुझे चकित कर दिया और मैंने सोचा, "अच्छा, तो इसकी इजाजत है?!" युवावस्था के प्रारभिक दिनो मे मैंने पिसारेव* की कृतिया बहुत पढी थी और उनका एक वाक्य मेरे दिमाग मे नक्श हो गया था "एक भी व्यक्ति के अशिक्षित रहते हुए यदि कोई समाज कला के अध्ययन मे प्रवृत्त होता है, तो वह एक ऐसे जगली आदमी की तरह है जो फिरता तो नगा है, मगर बाहो मे सोने के कडे पहनता है।" इस विचार का मुझपर जोरदार प्रभाव पडा और इसके बावजूद कि मैं सगीत-विद्यालय की *अन्तिम कक्षा मे विशेष योग्यता के साथ पास हुई थी*, मैंने उसे

---

* द० इ० पिसारेव (१८४०-१८६८) – प्रमुख रूसी क्रातिकारी जनवादी, भौतिकवादी दार्शनिक, समसामयिक विषयो के लेखक और साहित्य समालोचक। – स०

दिया और उसके स्थान पर वेस्तूजेव-पाठ* में सम्मिलि
थी। लेकिन अब सुनिए कि और किसी ने नहीं, ख़ुद लेनिन
हा : "आपको ज़रूर अभ्यास करना चाहिए ..." फिर भी संगीत
पुनः अभ्यास मैं लगभग दस साल बाद ही शुरू कर सकी।

क्रासिकोव ब्राग के 'सेरीनेड' (सांध्यसंगीत) और रैफ़्फ़
'कैवेटिन' (सामान्य प्रगीत) जैसी सामान्य धुनों को वायलिन
पर अच्छी तरह अदा करते थे। मास्को में बहुतेरी गिरफ़्तारियों
के बाद, उनसे किसी तरह बचकर वे जून के अंतिम दिनों में जेनेवा
पहुंचे। मैंने उन्हें पहली बार तब देखा, जब वे पा० नि० लेपेशीन्स्की
के साथ अभी स्टेशन से निकल ही रहे थे। उनके हाथ में एक
छोटा सूटकेस और एक वायलिन-केस था। गुप्तचरों और जेन्दार्मों
के पंजे से निकलकर हाथ में एक वायलिन लिए हुए ग़ैरक़ानूनी
ढंग से सीमा लांघनेवाले किसी पेशेवर क्रान्तिकारी की कल्पना मुझे
बहुत विचित्र लगी। उन्होंने हमें दूसरी पार्टी कांग्रेस के बारे में,
जिसके वे प्रतिनिधि थे, रूस में होनेवाले काम के बारे में और
साइबेरिया के बारे में, जहां वे पैदा हुए और पले थे, अनेक दिलचस्प
बातें बताईं। वे मेन्शेविकों के साथ वाद-विवाद में बहुत कामयाब
साबित हुए। वे उनकी कमज़ोरियों को चालाकी के साथ पकड़
लेते थे और उन पर मार्मिक प्रहार करते थे। वे खिल्ली उड़ाने
में माहिर, हाज़िरजवाब और ख़ासे चुटीले व्यंग्यकार थे। इसलिए
आश्चर्य नहीं कि मेंशेविक उन्हें बहुत नापसंद करते थे और उनक
एक पार्टी उपनाम 'श्पील्का' (कांटा) था।

एक दिन क्रासिकोव ने प्रस्ताव किया कि मैं तीन-चार साथि
की एक मंडली संगठित करूं और वे स्वयं हमें प्रस्तुत विषयों
पर्चे तथा इश्तहार लिखना सिखाने लगे। मेरे साथ इस मंडली
सोन्या अस्ताफ़्येवा, जो कीयेव कैदख़ाने में मेरी पड़ोसिन हुई,
वाल्या कसात्किना शामिल थी, जो उस समय जेनेवा विश्ववि
के चिकित्सा संकाय की विद्यार्थी और बाद में, १९०

---

* वेस्तूजेव-पाठ – प्रगतिशील बुद्धिजीवियों के एक हलके द्वारा
में १८७८ में स्त्रियों के लिए स्थापित एक उच्चतर शिक्षा-संस्थान।
विभाग थे साहित्य और इतिहास तथा भौतिकी और गणित।

पीटर्सबर्ग के मजदूर प्रतिनिधियों की सोवियत की सचिव हुई। जेनेवा मे देर तक रहने का हम मे से किसी का इरादा नही था। लेकिन रूस मे अच्छी तरह पर्चा लिखने की निपुणता बहुत उपयोगी हो सके, इसलिए हमने क्रासिकोव का प्रस्ताव खुशी से स्वीकार कर लिया। फिर भी, हमारे पाठ जल्द ही खत्म हो गये: इस काम में कुछ न कुछ अस्वाभाविक था।

हम कभी-कभी अपनी शामे लैंडोल्ड काफे मे गुजारते थे। वहा मात्र रूसी राजनीतिक उत्प्रवासियो के इस्तेमाल के लिए ही एक कमरा सुरक्षित था, जिसमे से गली में निकलने के लिए एक अलग दरवाजा था। वहा हम शामों को बैठ जाते और एक गिलास बीयर पीते हुए बाते या बहस करते और शतरज खेलते। लैंडोल्ड में केवल बोल्शेविक ही जाते थे। कम से कम मेरी मुलाकात वहा किसी मेन्शेविक से नही हुई। मैं अधिकतर गूसेव के साथ शतरज खेलती और क्रासिकोव हमारा ध्यान बुरी तरह भग करते हुए खेल देखते रहते। कभी-कभी शतरज की एक बाजी के लिए वहा व्लादीमिर इल्यीच भी आ जाते थे। कभी-कभी मैं और मारीया इल्यीनिच्ना एक साथ बैठकर वहा घटे दो घटे बिता देती।

मारीया इल्यीनिच्ना उल्यानोवा* १९०४ के सितम्बर के अन्त या अक्तूबर के शुरू मे जेल से छूटने के तुरत बाद ही जेनेवा आ गयी थी। परिचय हुआ नही कि हम मे एक-दूसरे के प्रति गहरी मित्रता पैदा हो गई, जो आजीवन बनी रही। १९०५ में मैं उनसे पीटर्सबर्ग मे क्रान्तिकारी काम के सिलसिले मे अक्सर मिलती थी। अक्तूबर क्रान्ति के बाद जब सोवियत सरकार मास्को चली आई, तब मारीया इल्यीनिच्ना व्लादीमिर इल्यीच के साथ ही रहने लगी। वे उन्हे असीम स्नेह करती थी और उनकी दिली दोस्त थी। उन दिनो हम एक-दूसरे से रोज ही मिलती थी। मारीया इल्यीनिच्ना मुझे बताती थी कि व्लादीमिर इल्यीच उनकी कितनी अच्छी देखभाल करते है। जिस दिन पानी पडता, उस दिन उन्हे रबड के जूते

---

* मारीया इल्यीनिच्ना उल्यानोवा (१८७८-१९३७) – बोल्शेविक पार्टी की एक सबसे पुरानी सदस्य, पेशे से पत्रकार। व्लादीमिर इ

पहने बिना नहीं निकलने देते, और यदि वे कभी थकी हुई दिखाई देतीं, तो वे अपने विशिष्ट विनोदप्रिय ढंग से उनसे पूछते कि वह कहीं "बहुत थकी" तो नहीं हैं। एक दिन जाड़े में व्लादीमिर इल्यीच और मारीया इल्यीनिच्ना दोनों मुझे क्रेमलिन के मैदान में टहलते हुए मिल गए। मारीया इल्यीनिच्ना और मैंने बर्फ़ के गोले बनाकर एक दूसरे पर फेंकने का खेल शुरू कर दिया। हम तब तक हंसते और खेलते रहे, जब तक कि मेरे गोलों से मारीया इल्यीनिच्ना के कोट का कालर न भर गया। व्लादीमिर इल्यीच तब उनके पास आए और बड़ी फ़िक्रमन्दी के साथ बर्फ़ को झाड़ गिराया, ताकि वह गलकर उनके गले से नीचे न बहने लगे। व्लादीमिर इल्यीच की बीमारी के दिनों में उन्होंने और नादेज्दा कोन्स्तान्ती-नोव्ना ने उनकी दिन-रात तीमारदारी की और उनकी अन्तिम सांस तक उनके पास से हिलीं तक नहीं। मारीया इल्यीनिच्ना एक पेशेवर क्रान्तिकारी थीं और पार्टी के प्रति उनकी असीम निष्ठा थी। उन्होंने वस्तुतः अपना सारा जीवन तथा शक्ति क्रान्तिकारी कार्यों के लिए समर्पित कर दी थी। १९३७ के जून के शुरू में वह अकस्मात् ऐसी बीमार पड़ी कि फिर कभी होश में नहीं आयीं और उसी माह की १२ तारीख़ को उनकी मृत्यु हो गयी।

मारीया इल्यीनिच्ना और मैं अक्सर जेनेवा के आस-पास के देहातों में साइकिल-सैर के लिए जाती थी। कभी-कभी व्लादीमिर इल्यीच भी हम लोगों के साथ हो लेते थे। एक शाम को हम तीनों नगर के सिरे पर एक ऐसी पगडंडी से होकर देहात की ओर जा रहे थे, जिसके दोनों तरफ़ उथली खाइयां थीं। व्लादीमिर इल्यीच सबसे आगे थे, मैं उनके पीछे थी और मारीया इल्यीनिच्ना सबसे पीछे थीं। रास्ता ज़रा सा ढलवा था। मैंने साइकिल पर चढ़ना अभी-अभी ही सीखा था और मुझे यह तक नहीं मालूम था कि पिछले पहिये में ब्रेक जैसी कोई चीज भी होती है। अगले पहिये के ब्रेक ने काम करने से इनकार कर दिया। फलतः जब मेरी साइकिल की गति तेज हो गई और वह व्लादीमिर इल्यीच की साइकिल के बिल्कुल पास पहुंचने लगी, तो मैं लाचार हो गई। मैंने चिल्लाकर कहा कि मेरी साइकिल उनसे टकराने ही वाली है। उन्होंने मुड़कर

पीछे देखा और खतरे को समझकर अपनी साइकिल को खाई में मोड लिया। वे साइकिल के गिरने से पहले ही उसपर से कूदकर बच गए, मगर उनकी साइकिल खाई में टकरा गई और उसका हैंडिल इतनी बुरी तरह मुड गया कि फिर उसपर सवारी नही की जा सकी। ब्लादीमिर इल्यीच ने न तो गुस्से और न ही लानत-मलामत का एक शब्द भी कहा। इससे मुझे अपने पर और अधिक गुस्सा आया कि मैंने क्यों अपना मानसिक सतुलन खोया और उनसे पहले ही क्यो न अपनी साइकिल खाई में मोड दी। मेरी बहादुरी पर हंसते और मजाक करते हुए वे हम लोगों को पास के एक गिरजाघर के बाहर पडी बेंच की ओर ले गए। गिरजाघर से हारमोनियम की आवाज आ रही थी। वहा हम लोग गाना सुनते हुए कुछ देर बैठे रहे और फिर पैदल ही नगर की ओर लौट चले।

नगर से बाहर की यह साइकिल-सैर ब्लादीमिर इल्यीच को बडी पसद थी और आम तौर से इस सैर पर वह अपनी पत्नी के साथ निकलते थे। इससे उन्हे कम से कम उस कठोर और व्यग्रकारी वातावरण से थोडी देर के लिए छुट्टी मिल जाती थी, जो मेन्शेविको के साथ अधिकाधिक बिगडते हुए सम्बन्धों के कारण पैदा हो गया था।

पा० नि० लेपेशीन्स्की के सुप्रसिद्ध व्यग्यचित्रो से कुछ समय के लिए उस मानसिक तनाव से छुटकारा मिलने मे सहायता मिलती थी। मेन्शेविक अखबार 'ईस्क्रा' के जून अक मे मार्तोव का एक लेख प्रकाशित हुआ था, जिसका शीर्षक था आगे या पीछे?' यह लेख लेनिन की पुस्तक 'एक कदम आगे दो कदम पीछे' को लक्ष्य करके लिखा गया था। उसमें मार्तोव ने घोषणा की थी कि लेनिन एक राजनीतिक लाश है और अपने लेख का उपशीर्षक रखा था—'अन्त्येष्टि-भाषण के स्थान पर'। लेपेशीन्स्की ने फौरन एक व्यग्य-चित्र बनाकर जवाब दिया, जिसका शीर्षक था—'चूहों ने बिल्ली को कैसे दफनाया'। यह उनकी एक श्रेष्ठतम कृति थी। उसमें चूहों के चेहरे प्रमुख मेन्शेविक नेताओं—मार्तोव, दान, [illegible] आदि—के चेहरो से मिलते-जुलते बनाए गए थे। [illegible] के साथ जो उपयुक्त मूलपाठ दिया गया था वह स्वयं [illegible]

की कहानी 'चूहों और मेढकों का युद्ध' के उपसंहार से लिया गया था। उस व्यंग्यचित्र को सारे जेनेवा में हाथों-हाथ घुमाया गया। लोगों ने मूलपाठ की पंक्तियों को बार-बार दुहराते-दुहराते रट लिया था, जिनसे बोल्शेविकों में हंसी पैदा होती थी और मेन्शेविकों में जबर्दस्त गुस्सा। वह व्यंग्यचित्र मेन्शेविकों का मजाक़ बन गया था, एक ऐसा घातक हथियार जिसके सामने मेन्शेविक लाचार थे।

जुलाई में बोल्शेविक उत्प्रवासी-समुदाय की स्थिति और गंभीर हो गयी। रूस मे केंद्रीय समिति के कई सदस्यों की गिरफ़्तारी के फलस्वरूप उसका रूप बदल गया। नयी केंद्रीय समिति ने समझौते का रवैया अपना लिया तथा एक वक्तव्य ('घोषणापत्र') प्रकाशित किया, जिसमें उन्होंने मेन्शेविकों के साथ मेल करने पर ज़ोर दिया और तीसरी पार्टी कांग्रेस बुलाने या उसके लिए आन्दोलन का जोरदार विरोध किया। इसके साथ ही, लेनिन को, जो विदेशों मे केन्द्रीय समिति के प्रतिनिधि थे, देश से बाहर केन्द्रीय समिति के कार्य-संचालन से अलग कर दिया गया और केन्द्रीय समिलि के सभी सदस्यो की पूर्वस्वीकृति के बिना कुछ भी प्रकाशित करने से उन्हे रोक दिया गया। केन्द्रीय समिति ने रूस मे बोल्शेविक साहित्य के वितरण पर रोक लगा दी तथा यह माग की कि उसके स्थान पर मेन्शेविक साहित्य का वितरण किया जाये। इस सब के कारण रूस मे पार्टी कार्रवाइयो मे गड़बड़ी पैदा होने लगी। एक के बाद एक संघर्षो का दौर आरम्भ हो गया। यह स्थिति जेनेवा में रहनेवाले समूचे बोल्शेविक दल के लिए बेहद कठिन थी। व्लादीमिर इल्यीच के लिए तो वह खास तौर से कष्टप्रद थी, क्योंकि वे इस बात को अन्य सभी लोगो की अपेक्षा अधिक स्पष्ट रूप से समझते थे कि ये कार्रवाइयां एक ऐसे समय मे शक्ति के व्यर्थ ह्रास और रूस में पार्टी-कार्य के विघटन का कारण बन रही थी, जब कि देश में क्रान्तिकारी आन्दोलन के विकास की माग यह थी कि हमारी पार्टी की समस्त शक्तियां एकजुट हो।

व्लादीमिर इल्यीच और उनके निकटतम साथियों के लिए यह बात साफ़ थी कि केन्द्रीय समिति के फूटपरस्त 'जुलाई-घोषणापत्र'

को उसका जवाब दिए बगैर नही छोडा जा सकता। मूलत. इसी चीज से उस समय जेनेवा मे रहनेवाले बोल्शेविको के दल की एक बैठक बुलाने का विचार पैदा हुआ, जो बाद मे "२२ की बैठक" के नाम से सुप्रसिद्ध हुई। बैठक में लेनिन द्वारा लिखित 'पार्टी के नाम' अपील पर विचार-विमर्श हुआ और उसे स्वीकृत किया गया। लेनिन के चरित्र के नितान्त अनुरूप ही यह अपील आद्योपात पार्टी की शक्ति मे, संकट पर काबू पाने और तमाम मुसीबतो के बावजूद सही रास्ता ढूंढ लेने की उसकी क्षमता मे उत्कट विश्वास से ओत-प्रोत थी।

बैठक नगर से बाहर कही जेनेवा के सीमान्त पर हुई थी। मुझे यह बात ठीक-ठीक नही याद है कि वह किस इमारत में हुई थी, मगर यह जरूर याद है कि वह दूसरी मजिल पर एक बडे से हाल मे हुई थी। मुझे बैठक मे भाग लेनेवाले सभी लोगो के नाम भी नही याद है। जेनेवा मे १६०४ की गर्मी मे अनेक गुप्त काम करनेवाले बोल्शेविक कार्यकर्ताओ से मेरा परिचय हुआ था, जिनमे लुनाचार्स्की, बोग्दानोव, मालीनिन, वोरोव्स्की, कार्पीन्स्की, इल्यीन दम्पति और पेर्वूखिन दम्पति आदि थे। मैं निश्चित रूप से नही कह सकती कि इन मे कौन-कौन बैठक से पहले जेनेवा आ गए थे और बैठक मे भाग लिया था तथा कौन-कौन बाद में आए थे। लेकिन यह तो मुझे बहुत अच्छी तरह याद है कि बैठक मे व्लादीमिर इल्यीच, नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना, व्ला० द० बोच-ब्रुयेविच, वे० मि० वेलीच्किना, लेपेशीन्स्की दम्पति, ल्यादोव दम्पति, पेर्वूखिन दम्पति, प० अ० क्रासिकोव, से० इ० गूसेव और लीज़ा क्नुनिआत्स उपस्थित थे।

'पार्टी के नाम' अपील में सकट से उबरने के एक मात्र सभव मार्ग के रूप मे तीसरी पार्टी काग्रेस के फौरन बुलाये जाने की जरूरत समझाई गई थी और पार्टी सगठनो से आह्वान किया गया था कि वे काग्रेस के आयोजन के लिए आदोलन चलाये। इस दस्तावेज ने रूस में बोल्शेविक पार्टी समितियो के काम मे जबर्दस्त भूमिका अदा की। इसने उन्हे लडाई के लिए एक हथियार, तीसरी पार्टी काग्रेस बुलाये जाने के आदोलन के लिए एक कार्यक्रम प्रदान

या। लेनिन की पहल पर अक्तूबर में तीसरी कांग्रेस बुलाय ने के संघर्ष के लिए रूस में बहुमतवालों की समितियों का एक यूरो बनाया गया।

अख़बार के अभाव की वजह से बोल्शेविक संगठनों के कार्य में बड़ी कठिनाई पैदा हो गयी थी। रूस में पार्टी संगठनों के संचालन पर इसका विशेष प्रभाव पड़ा।

एक बोल्शेविक अख़बार निकालने का विचार व्लादीमिर इल्यीच और उनके निकटतम साथियों पर अधिकाधिक हावी होता गया। बोल्शेविक प्रकाशन ('व्ला० बोंच-ब्रुयेविच और न० लेनिन प्रकाशन') ने लेनिन, ओल्मीन्स्की, बोरोव्स्की, ल्यादोव, बोग्दा-नोव और दूसरे बोल्शेविकों द्वारा लिखे अनेक पैम्फ़लेट रूस भेजने के लिए प्रकाशित किये। मगर जाहिर था कि यह सब काफ़ी नहीं था। ज़रूरत थी नियमित रूप से निकलनेवाले एक मुखपत्र की, जो पार्टी संगठनों के साथ निकट सम्बन्ध बनाए रखता और रूस के क्रान्तिकारी जीवन में घटनेवाली घटनाओं के सम्बन्ध में फ़ौरन अपनी सम्मति प्रकट करता।

अत्यधिक थक जाने के कारण व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना को जेनेवा छोड़ने और आराम करने के लिए बाध्य होना पड़ा। लगभग जुलाई के मध्य से सितम्बर के मध्य तक लाक दे ब्रे नामक झील के पास एक गांव में ठहरे और स्विट्ज़रलै के पहाड़ों में पैदल सैर करते रहे। पूरी गर्मी भर, विशेषतः अग में व्लादीमिर इल्यीच ने जेनेवा में केंद्रीय समिति के कार्यवाहक व्ला० द० बोंच-ब्रुयेविच, मा० नि० ल्यादोव और पा० नि० शीन्स्की – के साथ पत्र-व्यवहार के ज़रिये निकट संपर्क बनाये वे उनके काम का मार्गदर्शन करते रहे और उनकी मार्फ़त रू डाक प्राप्त करते रहे।

स्पष्टतया, उस समय तक व्लादीमिर इल्यीच के में एक बोल्शेविक अख़बार निकालने की योजना निश्चित रू कर चुकी थी। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने अपने संस्मरण हैं कि उन्होंने और व्लादीमिर इल्यीच ने अगस्त का महीन नोव, ओल्मीन्स्की और पेर्वूख़िन के साथ लाक दे ब्रे झील

एक छोटे से एकाकी गाव मे विताया। उन्होंने वही साहित्यिक कार्य की योजना के बारे मे बोग्दानोव के साथ विचार-विमर्श किया और "विदेश से अपना निजी अखवार प्रकाशित करने तथा रूस मे काग्रेस के लिए आन्दोलन विकसित करने का निश्चय किया।"

यही वात प्रकारातर से एक पत्र मे भी कही गई थी, जो मुझे अगस्त के अन्तिम दिनो मे व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना से प्राप्त हुआ था। व्लादीमिर इल्यीच ने "यथाशीघ्र (वेहतर हो कि आज ही) रूस मे **हमारे सभी मित्रों के पास**" पत्र को भेज देने का आदेश दिया था। इसके वाद व्लादीमिर इल्यीच के हाथ का लिखा हुआ पत्र का मूलपाठ था, जिसे रूस भेजना था। "कृपया फौरन हर प्रकार का पत्र-व्यवहार जमा करना और 'लेनिन के लिए' अकित करके हमारे पतों पर डाक से भेजना शुरू कर दीजिए। धन की भी सख्त जरूरत है (वही अकित)। घटनाए तेज हो रही हैं। अल्पमतवाले केन्द्रीय समिति के एक हिस्से से समझौता करके स्पष्ट ही उथल-पुथल की तैयारी कर रहे हैं। हम वुरे से वुरे नतीजे का इन्तजार करते हैं। आगामी चद दिनो में और व्योरे आ रहे हैं।" व्लादीमिर इल्यीच ने इस बात को बार-वार दुहराया था कि पत्र को फौरन डाक मे डाल देना है। आगे नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना के हाथ के लिखे दस पते थे, जहा पत्र को भेजना था। अन्त मे पुनश्च करके लेनिन ने जोडा था " और हमारे उन सभी मित्रों के पते पर जिनपर पूर्णत भरोसा किया जा सके।" स्पष्टत व्लादीमिर इल्यीच नये वोल्शेविक अखवार के लिए सामग्री के तौर पर यह पत्र-व्यवहार इकट्ठा कर रहे थे। पत्र इसलिए नही निकाला जा सका कि धन का अभाव था। फिर भी, नवम्बर महीने में व्ला० द० वोंच-ब्रुयेविच किसी एक फ्रासीसी कम्पनी के साथ यह समझौता करने मे कामयाव हो गए कि कम्पनी उधार कागज मुहैया करेगी और छपाई करेगी। मा० नि० ल्यादोव ने फौरी खर्चों के लिए कुछ धन हासिल कर लिया। इसके अतिरिक्त अन्तत विदेशो तथा रूस मे अखवार की विक्री से धन प्राप्त होने की आशाएं थी।

इन सारी वातो ने अखवार को कामकाजी, व्यावहारिक ढग

किया। लेनिन की पहल पर अक्तूबर में तीसरी कांग्रेस बुलाये जाने के संघर्ष के लिए रूस में बहुमतवालों की समितियों का एक ब्यूरो बनाया गया।

अख़बार के अभाव की वजह से बोल्शेविक संगठनों के कार्य में बड़ी कठिनाई पैदा हो गयी थी। रूस में पार्टी संगठनों के संचालन पर इसका विशेष प्रभाव पड़ा।

एक बोल्शेविक अख़बार निकालने का विचार व्लादीमिर इल्यीच और उनके निकटतम साथियों पर अधिकाधिक हावी होता गया। बोल्शेविक प्रकाशन ('व्ला० बोंच-ब्रुयेविच और न० लेनिन प्रकाशन') ने लेनिन, ओल्मीन्स्की, वोरोव्स्की, ल्यादोव, बोग्दानोव और दूसरे बोल्शेविकों द्वारा लिखे अनेक पैम्फ़लेट रूस भेजने के लिए प्रकाशित किये। मगर ज़ाहिर था कि यह सब काफ़ी नहीं था। ज़रूरत थी नियमित रूप से निकलनेवाले एक मुखपत्र की, जो पार्टी संगठनों के साथ निकट सम्बन्ध बनाए रखता और रूस के क्रान्तिकारी जीवन में घटनेवाली घटनाओं के सम्बन्ध में फ़ौरन अपनी सम्मति प्रकट करता।

अत्यधिक थक जाने के कारण व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना को जेनेवा छोड़ने और आराम करने के लिए वाध्य होना पड़ा। लगभग जुलाई के मध्य से सितम्बर के मध्य तक वे लाक दे ब्रे नामक झील के पास एक गांव में ठहरे और स्विट्ज़रलैंड के पहाड़ों में पैदल सैर करते रहे। पूरी गर्मी भर, विशेषत: अगस्त में व्लादीमिर इल्यीच ने जेनेवा में केंद्रीय समिति के कार्यवाहकों – व्ला० द० बोंच-ब्रुयेविच, मा० नि० ल्यादोव और पा० नि० लेपेशीन्स्की – के साथ पत्र-व्यवहार के ज़रिये निकट संपर्क बनाये रखा। वे उनके काम का मार्गदर्शन करते रहे और उनकी मार्फ़त रूस की डाक प्राप्त करते रहे।

स्पष्टतया, उस समय तक व्लादीमिर इल्यीच के दिमाग़ में एक बोल्शेविक अख़बार निकालने की योजना निश्चित रूप ग्रहण कर चुकी थी। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने अपने संस्मरण में लिखा है कि उन्होंने और व्लादीमिर इल्यीच ने अगस्त का महीना बोग्दानोव, ओल्मीन्स्की और पेर्वूखिन के साथ लाक दे ब्रे झील के निकट

एक छोटे मे एकाकी गाव मे बिताया। उन्होंने वही साहित्यिक कार्य की योजना के बारे में बोग्दानोव के साथ विचार-विमर्श किया और "विदेश मे अपना निजी अखबार प्रकाशित करने तथा रूस मे काग्रेस के लिए आन्दोलन विकसित करने का निश्चय किया।"

यही बात प्रकारांतर से एक पत्र में भी कही गई थी, जो मुझे अगस्त के अन्तिम दिनों मे व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना से प्राप्त हुआ था। व्लादीमिर इल्यीच ने "यथाशीघ्र (बेहतर हो कि आज ही) रूस मे हमारे सभी मित्रों के पास" पत्र को भेज देने का आदेश दिया था। इसके बाद व्लादीमिर इल्यीच के हाथ का लिखा हुआ पत्र का मूलपाठ था, जिसे रूस भेजना था। "कृपया फौरन हर प्रकार का पत्र-व्यवहार जमा करना और 'लेनिन के लिए' अंकित करके हमारे पतो पर डाक से भेजना शुरू कर दीजिए। धन की भी सख्त जरूरत है (वही अंकित)। घटनाएं तेज हो रही हैं। अल्पमतवाले केन्द्रीय समिति के एक हिस्से से समझौता करके स्पष्ट ही उथल-पुथल की तैयारी कर रहे है। हम बुरे से बुरे नतीजे का इन्तजार करते हैं। आगामी चंद दिनो में और ब्योरे आ रहे हैं।" व्लादीमिर इल्यीच ने इस बात को बार-बार दुहराया था कि पत्र को फ़ौरन डाक में डाल देना है। आगे नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना के हाथ के लिखे दस पते थे, जहा पत्र को भेजना था। अन्त मे पुनश्च करके लेनिन ने जोडा था: " और हमारे उन सभी मित्रो के पते पर जिनपर पूर्णत भरोसा किया जा सके।" स्पष्टत. व्लादीमिर इल्यीच नये बोल्शेविक अखबार के लिए सामग्री के तौर पर यह पत्र-व्यवहार इकट्ठा कर रहे थे। पत्र इसलिए नही निकाला जा सका कि धन का अभाव था। फिर भी, नवम्बर महीने मे व्ला० द० बोंच-ब्रुयेविच किसी एक फ़ांसीसी कम्पनी के साथ यह समझौता करने मे कामयाब हो गए कि कम्पनी उधार कागज़ मुहैया करेगी और छपाई करेगी। मा० नि० ल्यादोव ने फौरी खर्चो के लिए कुछ धन हासिल कर लिया। इसके अतिरिक्त अन्तत विदेशो तथा रूस मे अखबार की बिक्री से धन प्राप्त होने की आशाए थी।

इन सारी बातो ने अखबार को कामकाजी, व्यावहारिक ढग

ने शीघ्र ही यह सिद्ध कर दिया कि लेनिन की चेतावनी कितनी सही थी। उदारवादी पूंजीपति वर्ग १६०५-१६०७ की क्रान्ति के दौरान अपना नक़ाव उतारकर एक प्रतिक्रान्तिकारी शक्ति के रूप में सामने आया। व्लादीमिर इल्यीच ने अपनी रिपोर्ट बड़े भावनात्मक ढंग से पढ़ी। उन्होंने, जैसा कि हम कहते हैं, मेन्शेविकों के वखिए उधेड़ दिए। वे वस्तुतः क्रोध के मारे आपे से वाहर थे। व्लादीमिर इल्यीच की रिपोर्ट को पैम्फ़लेट के रूप में प्रकाशित करके रूस भेजा गया।

अन्ततोगत्वा हम सवकी खुशी के बीच 'व्पेर्योद' का पहला अंक ४ जनवरी १६०५ को निकल आया। मुझे अपनी प्रति उस समय मिली, जब मैं पेरिस में थी।

दिसम्वर १६०४ में व्लादीमिर इल्यीच ने प० अ० कासिकोव को इसलिए पेरिस भेजा कि वे वहां के रूसी वोल्शेविक दल को एकजुट करें। उन्हें दल का सचिव नियुक्त किया गया था। प्रायः दो सप्ताह वाद मैं भी पेरिस चली गई। पहले-पहले तो मैं पेरिस को देखकर हक्का-वक्का रह गई। विराट नगर, उसकी सड़कों पर जीवन की चहल-पहल, उसके अनेक ऐतिहासिक स्मारक और संग्रहालय, लूव्रे और लक्सेमवर्ग, कला-कक्ष में चित्रकला और मूर्ति-कला की प्रदर्शनी... यह सारा कुछ नया और मोहक था। मगर शीघ्र ही मेरी पहली धारणाओं की चमक-दमक खो गई और वह विस्तृत तथा जनाकुल नगर मेरे मन में एक रिक्तता और उदासी की भावना भरने लगा। रूसी उत्प्रवासियों का समुदाय वहुत छोटा था। पुराने साथियों में से फ़िलातोव थे, जिन्होंने पेरिस में अनेक वर्ष विताए थे और युवजनों में मुझे माथी वेर, ईनवेर, नाद्या शेवेलिना और राचेल रिव्लीन याद हैं।

संगठनात्मक संघर्ष जितना जेनेवा में कठोर था, उतना पेरिस में नही था और वहां मेन्शेविकों के साथ मुठभेड़ें भी वहुत कम होती थीं। लेकिन जेनेवा में रूसी क्रान्तिकारी जीवन की धड़कन जितनी जीवंतपूर्ण ढंग से महसूस होती थी, उतनी पेरिस में नहीं : वहां लेनिन नहीं थे, जिनकी ओर रूस के पार्टी संगठनों के सूत्र अनवरोध्य ढंग से खिंचे आ रहे हों।

जेनेवा से हमारा सम्बन्ध मुख्यत. मारीया इल्यीनिच्ना के साथ होनेवाले पत्र-व्यवहार द्वारा कायम रहा। वे विस्तारपूर्वक लिखती थी, हमें रूस से प्राप्त सूचनाए भेजती थीं और यह बताती थी कि जेनेवा मे क्या हो रहा है। वे हमें साहित्य भेजती थी, जिसमें जेनेवा के बोल्शेविक प्रकाशन द्वारा निकाले गए पैम्फ़्लेट और पेरिस समूह तथा रूस रवाना करने के लिए "लिफ़ाफ़ों मे" 'व्पेर्योद' अखबार की प्रतियां शामिल होती थीं। समय-समय पर कोई साथी जेनेवा से साहित्य और चित्र (अनुकृति) लेकर आ जाता था, जिनके पीछे डाक से रूस भेजने के लिए छपी हुई बोल्शेविक सामग्री चालाकी के साथ चिपकाई गई होती थी। यह सारी छपी हुई सामग्री उन दिनों सिगरेट के कागज़ जैसे बहुत ही पतले कागज़ पर निकाली जाती थी, जिससे उसे रूस भेजना काफी आसान हो जाता था। जो साथी पेरिस आते थे, उनमे थे वोरोव्स्की, बोंच-ब्रुयेविच, लुनाचार्स्की, एस्सेन ("बैरन" और उनके भाई "बूर") आदि।

जनवरी या फरवरी १९०५ मे मुझे लिखे अपने एक पत्र मे मारीया इल्यीनिच्ना ने ख़बर दी कि रूस में कई पार्टी सगठनो की स्थिति कुछ ख़ास अच्छी नही है और आशा प्रकट की कि 'व्पेर्योद' की वजह से हालते बदलेगी। मारीया इल्यीनिच्ना ने लिखा कि और अधिक लोगो को रूस भेजना महत्वपूर्ण है। कुछ धन-प्राप्ति की भी आशा है, लेकिन अभी तक मिला कुछ भी नही है।

"कहा जाता है कि पीटर्सबर्ग मे कोई १७ मेन्शेविक पकडे गए। ओदेस्सा में काम कुछ बुरा नही चल रहा है। अब "चाचा" (ली० मि० क्निपोविच – ली० फ़ो०) वहा है। वहा १४ मेन्शेविक पहुंच गए हैं। "चाचा" ने आठ आदमियों का एक प्रचारक-दल बना दिया है – चार बोल्शेविक और चार मेन्शेविक, मगर ऐसा लगता है कि हर चीज़ इस बात का सकेत दे रही है कि फूट के कारण अलग-अलग बोल्शेविक और मेन्शेविक समितियो का गठन होगा।

"और ये रही हमारी जेनेवा की स्थानीय खबरे मार्तोव ने उदारतावाद और समाजवाद पर एक रिपोर्ट पढी। वह बेहद

ख़राव और वेमानी थी, मानो पांचवें दर्जे में पढ़नेवाले विद्यार्थियों के लिए तैयार की गयी हो। किसी भी प्रकार की वहस या नए 'ईस्क्रा' के लिए नई योजना से वेहद एहतियात के साथ परहेज़ किया गया था, यहां तक कि वोइनोव (अ० वा० लुनाचार्स्की – ली० फ़ो०), जिन्होंने वोलने का इरादा किया था, वहुत चाहकर भी वोलने के लिए नहीं खड़े हो सके, क्योंकि उसमें विरोध करने के लिए कुछ था ही नहीं... हमारे लोगों ने कई मंडलियां वना ली हैं – संगठनात्मक, आन्दोलनात्मक, प्रचारात्मक और प्राविधिक। काम चुस्ती से चल रहा है, वैठकों के कार्य-विवरण लिखे जाते हैं। अव तक तो काम दिलचस्प और फलप्रद है, आगे के वारे में नहीं जानती..."

मारीया इल्यीनिच्ना ने लिखा कि उन्हें आशा है कि हम लिफ़ाफ़ों में डाक से साहित्य भेजने के काम को कुशलतापूर्वक चलाएंगे। "इसका वहुत अधिक महत्व होगा, विशेपतः इसलिए कि, जैसे मालूम हुआ, दूसरे समूहों में यह काम वहुत वुरी तरह चलाया जा रहा है। लीपज़िग, जिसके वारे में हम वहुत आशान्वित थे, मुख्यतः 'ईस्क्रा' (!!) भेजने में व्यस्त है। लन्दन विल्कुल मौन है, आदि।" आगे, मारीया इल्यीनिच्ना ने उन सभी पतों की एक सूची मांगी थी, जहां पेरिस से वोल्शेविक साहित्य भेजा जा रहा था। उन्होंने यह भी पूछा था कि क्या हम इसका कोई रेकार्ड रखते हैं कि कौन चीज़ कहां भेजी जाती है। उन्होंने हमें कुछ नए पते देने का भी वादा किया था। "महत्वपूर्ण केवल यह है," उन्होंने लिखा था, "कि उनका इस्तेमाल किया जाना चाहिए।"

पेरिस जैसे वड़े शहर से भी लिफ़ाफ़ावन्द साहित्य या दूसरी मुद्रित सामग्री केवल थोड़ी मात्रा में ही – रोज़ एक या दो पार्सलों से अधिक नहीं – भेजी जा सकती थी, ताकि सरहद पर कोई गड़वड़ी न हो। डाक द्वारा "लिफ़ाफ़ों" को नियमित रूप से प्रतिदिन भेजे जाने के महत्व को आज कोई मुश्किल से समझ पायेगा। और इस महत्व को समझे विना रूस में पार्टी मुखपत्र के नए अंकों के पहुंचने के महत्व को भी नहीं समझा जा सकता, जिसमें लेनिन के लेख छपे होते थे। इन "छोटे चालानों" का भेजना पेरिस में

हमारे काम का बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा था। हम उसे अपनी पूरी क्षमता के साथ अंजाम देते थे।

हमारे ऊपर राजनीतिक प्रवासियों के समुदाय के बीच बोल्शेविक साहित्य का वितरण करने तथा आनेवाले साथियों (जो मुख्यत: जेनेवा से आये हुए थे) का इंतजाम करने की भी जिम्मेदारी थी। हम पार्टी कोष में धन-संग्रह के लिए जलपान के साथ सांध्य गोष्ठियां करते थे और भाषण का आयोजन करते थे, जिसके लिए कुछ प्रवेश-शुल्क लेते थे, आदि।

जनवरी ९ की घटनाओं* ने समूचे उत्प्रवासी-समुदाय को हिला दिया। हम रूस से अधिकाधिक नई खबरों की बेसब्री से प्रतीक्षा किया करते थे। रात-रात भर हमारा एक दल पेरिस के आलोकस्नात "ग्रा बुलवार" पर चक्कर काटता रहता। बीच-बीच में हम अखबारों के दफ्तरों में यह जानने के लिए टपक पड़ते थे कि रूस से कोई नया तार तो नहीं आया है। हमें ऐसे लगता था जैसे कि हम एक दूसरे से अलग नहीं हो सकते थे, हम कमरों में शान्त नहीं बैठ सकते थे, सो नहीं सकते थे। रूस लौटने की बात मन में रोज से कहीं अधिक उठने लगी थी, लेकिन हम उस समय लौट नहीं सकते थे।

९ जनवरी के चन्द दिन बाद हम एक सभा में शरीक हुए, जो त्रोकादेरो प्रासाद के ग्रैंड हॉल में हुई थी, जहां ९ जनवरी की घटनाओं के बारे में जोरेस ने भाषण किया। पूरा हॉल, जिसमें १०,००० आदमियों के बैठने की जगह थी, खचाखच भरा हुआ था। जोरेस मंच पर तेजी के साथ इधर-उधर टहल रहे थे, प्राय दौड़ रहे थे। उन्होंने ठीक फ्रांसीसी भाषण-शैली में सस्वर और सकरुण भाषण किया, मानो कवितापाठ कर रहे हों। रूसी कानों के लिए वह अजीब लग रहा था, मगर उनके जोशीले भाषण ने श्रोताओं को इतना उत्तेजित कर दिया कि जब उनका भाषण समाप्त

* ९ जनवरी १९०५ (पुरानी प्रणाली) – इस दिन ज़ारशाही सरकार ने पीटर्सबर्ग के मजदूरों के एक शांतिमय प्रदर्शन पर गोलियां चलवाईं, जो ज़ार के पास एक याचिका पेश करने जा रहे थे। वह दिन पहली रूसी क्रांति का दिन सिद्ध हुआ। – सं०

हुआ, तो सबने एक स्वर से नारा लगाना शुरू कर दिया, जो कई मिनट तक चलता रहा, «Assassin Nicolas! Assassin Nicolas!» (हत्यारा निकोलाई!)। इसका प्रभाव बड़ा ही उत्साहवर्धक था, पर प्रासाद से बाहर निकलकर हमने देखा कि फाटक पर घुड़सवार पुलिस तैनात है। फ़्रांसीसी संविधान अपने नागरिकों को किसी बंद इमारत के भीतर मन चाहे ढंग से चीखने-चिल्लाने, उत्तेजित होने तथा क्रान्तिकारी भाषण करने की इजाज़त देता था, लेकिन बाहर निकलकर तो उन्हें तमीज़ के साथ पेश आना ही था... दस हज़ार की भीड़ सड़क पर एक शान्त, मंद धारा की भांति निकली और हर कोई अपनी राह चला गया।

उसके बाद कई रात लगातार हम विभिन्न सांध्य-समारोहों और संगीत-गोष्ठियों में "९ जनवरी के पीड़ितों के सहायतार्थ" धन-संग्रह के लिए घूमते रहे। फ़्रांसीसी नर-नारियों ने ख़ुशी से चन्दे दिए। हर सुबह हम बेसब्री के साथ ताज़े अख़बारों पर टूट पड़ते थे कि पीटर्सबर्ग में हो रही बातें जान लें। निहत्थे मज़दूरों के ऊपर गोलीबारी, बड़ी संख्या में हताहतों से – ज़ारशाही जल्लादों के इस नृशंस अत्याचार से हम स्तंभित हो उठे। हमारा ख़्याल जेनेवा की ओर लौट-लौट जाता। हम यह जानना चाहते थे कि वहां के साथी रूस से आयी ख़बरों के बारे में क्या सोचते हैं। व्लादीमिर इल्यीच ने रूस की घटनाओं को किस रोशनी में देखा है? यह क्या है? क्रान्ति का आरंभ?

लंबे अर्से बाद नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने अपने संस्मरणों में लिखा था: "९ जनवरी की ख़बर अगली सुबह जेनेवा पहुंची। व्लादीमिर इल्यीच और मैं पुस्तकालय जाते वक़्त लुनाचार्स्की दंपति से मिले, जो हमारे घर जा रहे थे। मुझे लुनाचार्स्की की पत्नी आन्ना अलेक्सांद्रोव्ना की आकृति की याद है, जो घबराहट के मारे बोल नहीं पा रही थीं और निरुद्देश्य दस्ताने घुमाती रही थीं। हम उधर गये, जिधर पीटर्सबर्ग की घटनाओं को जानने वाले सभी बोल्शेविक स्वभावतः चले आ रहे थे, यानी लेपेशीन्स्की दंपति के उत्प्रवासियों की कैंटीन की ओर। हम साथ-साथ होना चाहते थे। आये हुए लोग प्रायः चुप रहते, क्योंकि सब घबराये हुए और उत्तेजित

थे। गाने लगे 'आप शहीद हुए ..' लोगों के चेहरे गंभीर थे। [illegible] लोग समझ गये कि क्रांति शुरू हो चुकी थी, [illegible] तमाम बंधन टूट गये, अब वह ज़माना बिलकुल नज़दीक है, [illegible] 'अत्याचार गिरेगा और जनता उठेगी ..'

"हम विलक्षण जीवन गुज़ार रहे [illegible] वासियों के लिए स्वाभाविक था। स्थानीय समाचारपत्र '[illegible]' के एक संस्करण से दूसरे संस्करण तक।

"व्लादीमिर इल्यीच के सारे विचार [illegible] हुए थे।"

कुछ दिनों बाद [illegible] अंक का अग्रलेख [illegible]। [illegible] वर्णन और विश्लेषण [illegible] जैसी कोई और [illegible]

"मज़दूर वर्ग [illegible] है, सर्वहारा की [illegible] की है, [illegible] वर्गों में [illegible]

"पीटर्सबर्ग के [illegible], हर हालत में [illegible] तैयारी में [illegible] होगा।"*

[illegible]

[illegible]

---

*[illegible]

हुआ, तो सबने एक स्वर से नारा लगाना शुरू कर दिया, जो कई मिनट तक चलता रहा, «Assassin Nicolas! Assassin Nicolas!» (हत्यारा निकोलाई!)। इसका प्रभाव बड़ा ही उत्साहवर्धक था, पर प्रासाद से बाहर निकलकर हमने देखा कि फाटक पर घुड़सवार पुलिस तैनात है। फ़ांसीसी संविधान अपने नागरिकों को किसी बंद इमारत के भीतर मन चाहे ढंग से चीखने-चिल्लाने, उत्तेजित होने तथा क्रान्तिकारी भाषण करने की इजाज़त देता था, लेकिन बाहर निकलकर तो उन्हें तमीज़ के साथ पेश आना ही था... दस हज़ार की भीड़ सड़क पर एक शान्त, मंद धारा की भांति निकली और हर कोई अपनी राह चला गया।

उसके बाद कई रात लगातार हम विभिन्न सांध्य-समारोहों और संगीत-गोष्ठियों में "९ जनवरी के पीड़ितों के सहायतार्थ" धन-संग्रह के लिए घूमते रहे। फ़ांसीसी नर-नारियों ने ख़ुशी से चन्दे दिए। हर सुबह हम बेसब्री के साथ ताज़े अख़बारों पर टूट पड़ते थे कि पीटर्सबर्ग में हो रही बातें जान लें। निहत्थे मज़दूरों के ऊपर गोलीबारी, बड़ी संख्या में हताहतों से – ज़ारशाही जल्लादों के इस नृशंस अत्याचार से हम स्तंभित हो उठे। हमारा ख़्याल जेनेवा की ओर लौट-लौट जाता। हम यह जानना चाहते थे कि वहां के साथी रूस से आयी ख़बरों के बारे में क्या सोचते हैं। व्लादीमिर इल्यीच ने रूस की घटनाओं को किस रोशनी में देखा है? यह क्या है? क्रान्ति का आरंभ?

लंबे अर्से बाद नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने अपने संस्मरणों में लिखा था: "९ जनवरी की ख़बर अगली सुबह जेनेवा पहुंची। व्लादीमिर इल्यीच और मैं पुस्तकालय जाते वक़्त लुनाचार्स्की दंपति से मिले, जो हमारे घर जा रहे थे। मुझे लुनाचार्स्की की पत्नी आन्ना अलेक्सांद्रोव्ना की आकृति की याद है, जो घबराहट के मारे बोल नहीं पा रही थीं और निरुद्देश्य दस्ताने घुमाती रही थीं। हम उधर गये, जिधर पीटर्सबर्ग की घटनाओं को जानने वाले सभी बोल्शेविक स्वभावतः चले आ रहे थे, यानी लेपेशीन्स्की दंपति के उत्प्रवासियों की कैंटीन की ओर। हम साथ-साथ होना चाहते थे। आये हुए लोग प्रायः चुप रहते, क्योंकि सब घबराये हुए और उत्तेजित

थे। गाने लगे 'आप शहीद हुए .' लोगो के चेहरे गभीर थे। सब लोग समझ गये कि क्राति शुरु हो चुकी थी, जार मे विश्वास के तमाम बधन टूट गये, अब वह जमाना बिलकुल नजदीक है, जब 'अत्याचार गिरेगा और जनता उठेगी..'

"हम विलक्षण जीवन गुजारने लगे जो जेनेवा के सभी उत्प्रवासियों के लिए स्वाभाविक था स्थानीय समाचारपत्र 'ट्रिब्यून' के एक सस्करण से दूसरे संस्करण तक।

"व्लादीमिर इल्यीच के सारे विचार रूस की तरफ खिचे हुए थे।"

कुछ दिनों बाद हमने बडी खुशी के साथ 'व्पेर्योद' के चौथे अंक का अग्रलेख पढा। लेनिन द्वारा रूस मे हो रही घटनाओ का वर्णन और विश्लेषण क्रातिकारी पर्चे की तरह गूजे। क्या, लेनिन जैसे कोई और इस तरह लिख सकता था? – कोई नही!

"मजदूर वर्ग ने गृहयुद्ध का बहुत ही महत्वपूर्ण सबक सीखा है; सर्वहारा की क्रातिकारी शिक्षा ने एक ही दिन मे इतनी प्रगति की है, जितनी नीरस, ऊबे-ऊबे, घिनौने जीवन के महीनो और बरसो मे भी सभव न थी

"पीटर्सबर्ग के वर्तमान विद्रोह का कुछ भी परिणाम निकले, हर हालत मे यह अधिक विस्तृत, अधिक सजग और अधिक अच्छी तैयारी से किये जानेवाले भावी विद्रोह की दिशा मे पहला कदम होगा।"*

अग्रलेख मे सभी नागरिको द्वारा हथियार सभालने और निरकुश शासन के विरुद्ध सघर्ष करने के लिए सभी क्रातिकारी शक्तियो को तैयार करने, उनको सगठित तथा एकत्रित करने का आह्वान किया गया था।

बोल्शेविक अखबार 'व्पेर्योद' के प्रकाशन और वितरण मे रूस मे बोल्शेविको की स्थिति अधिकाधिक मजबूत होती गई। स्थानीय समितिया मेन्शेविको और बोल्शेविको के बीच के उन

---

* ब्ला० इ० लेनिन, सकलित रचनाए दस खण्डो मे, हिंदी सस्करण, प्रगति प्रकाशन, मास्को १९८१, खण्ड २, पृष्ठ ३६५,३६६। – स०

विचारधारात्मक मतभेदों की स्पष्टतर समझ हासिल करती जा रही थीं, जिनपर मेन्शेविक सिद्धान्तहीन तू-तू मैं-मैं तथा रूसी समितियों के विघटन और ग़लत जानकारी के सहारे रोगन लगाने की कोशिश कर रहे थे। दूसरी ओर मेन्शेविक एक-एक क़दम करके अपनी स्थिति खोते जा रहे थे। वे चिल्लाते थे कि कांग्रेस निश्चय ही फूट पैदा करेगी।

रूसी पार्टी संगठनों की स्थिति को ध्यान में रखते हुए, जो अधिकाधिक आग्रहपूर्वक कांग्रेस बुलाने की मांग कर रहे थे, रूस में समझौतापरस्त केन्द्रीय समिति ने १२ मार्च १६०५ को बहुमत-वालों की समितियों के ब्यूरो के साथ समझौता कर लिया और उसके साथ मिलकर संयुक्त रूप से 'पार्टी के नाम' एक अपील प्रकाशित की, जिसमें कहा गया था कि वे कांग्रेस को संयुक्त रूप से संगठित करने के बारे में एक निर्णय पर पहुंच गए हैं। इस निर्णय के आखिरी पैराग्राफ़ में कहा गया था – "केन्द्रीय समिति और ब० स० ब्यू० (बहुमतवालों की समितियों का ब्यूरो – सं०) 'ईस्क्रा' के ८६ वें अंक में प्रकाशित तीसरी पार्टी कांग्रेस बुलाने के ख़िलाफ़ पार्टी परिषद* के प्रस्ताव को कांग्रेस संगठित करने के काम को रोक देने का आधार नहीं मानते।" यह बोल्शेविकों की पूरी नैतिक विजय थी, यह गुटबंदी के ऊपर पार्टी के उसूलों की विजय थी।

'पार्टी के नाम' केन्द्रीय समिति और ब० स० ब्यू० की अपील 'व्पेर्योद' के १३ वें अंक में ५ अप्रैल १६०५ को छपी और उसे पैम्फ़लेट के रूप में भी अलग से छापा गया। व्लादीमिर इल्यीच और उनके निकटतम साथियों पर इस अपील की जो प्रतिक्रिया हुई

---

* **पार्टी परिषद** – रूसी सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी का एक नेतृत्व-कारी केंद्र, जिसे दूसरी पार्टी कांग्रेस द्वारा स्वीकृत पार्टी नियमों के तहत उच्चतम पार्टी निकाय के रूप में स्थापित किया गया था। परिषद के कार्यों में केंद्रीय समिति और पार्टी अख़बार के कामों में ताल-मेल बैठाना शामिल था। नवम्बर १६०३ में पार्टी परिषद ने, जो वस्तुतः मेन्शेविकों के हाथ में चली गई थी, पार्टी के बहुमत के ख़िलाफ़ स्थिति अपनाई, जो तीसरी पार्टी कांग्रेस बुलाने की मांग कर रहा था। – सं०

वह मारीया इल्यीनिच्ना के पत्र से प्रकट है, जिसमे उन्होंने लिखा था:

"अक १३ वाला पैम्फलेट आपको कैसा लगा? घटनाओं का क्या ही अप्रत्याशित मोड़ है! है न? इसकी आशा कौन कर सकता था? केन्द्रीय समिति के दो सदस्यो ने दो समझौतापरस्तो और दो मेन्शेविको (एक रूसी साथी के शब्दो मे, वह भी 'जलील' किस्म के) को नामजद कर दिया था, मगर उसके बावजूद 'ईस्क्रा' के ८६ वे अंक में प्रकाशित पार्टी परिषद का प्रस्ताव कांग्रेस संगठित करने के काम को रोक देने का आधार नहीं माना गया?! हमारे लोग इस समाचार से बिल्कुल दग रह गए थे। अब कांग्रेस से अत्यधिक अप्रत्याशित परिणामो की आशा की जा सकती है। उसमे सभवत. सभी रूसी समितिया शरीक होगी, बहुत सभव है कि परिषद भी शरीक हो। वह और कर ही क्या सकती है?! परिषद जिस स्थिति मे है वह आश्चर्यजनक रूप मे मूर्खतापूर्ण स्थिति है, किन्तु वे लोग बिना सघर्ष के शायद ही आत्मसमर्पण करना चाहे, और मेरा खयाल है कि पहले तो उन्हे अपने आपको ही पार्टी से निकालना पडेगा, जैसा करने की धमकी उन्होंने गुस्से मे कांग्रेस मे शरीक होने का साहस करनेवालो को दी थी। मेन्शेविको की नाक बुरी तरह झुक गई है, उनमे से कोई कहता है, 'हा, तुम लोग जीत गए,' तो कोई बहुत साफ एलान करता है, 'अच्छी बात है, लेकिन हम अब भी कुछ न कुछ सोच निकालेगे।' बडे-बूढे अभी तक कुछ नही कहते।

"हमारे लोग प्रबल उत्तेजना मे है। बेशक, कोई भी कुछ कर नही रहा है। सभी केवल यही बात कर रहे है कि आगे क्या होगा। इल्यीच तो बिलकुल 'पागल' थे (लेपेशीन्स्की के व्यग्यचित्र 'चूहो ने बिल्ली को कैसे दफनाया' के नीचे लिखे मूलपाठ से—**ली० फो०**)। पहले तो वे बस हसते रहे, हसते रहे—हर किसी को उन्होंने उल्लसित कर दिया—मैंने उन्हे इतना खुश बहुत दिनो से नही देखा था। दोलायमान समितिया सभवत हर हालत मे बहुमत मे होगी, बहुत कुछ कांग्रेस की सदस्यता पर निर्भर होगा, और अल्लाह ही जानता है कि हमारी किस्मत क्या होगी "

व्लादीमिर इल्यीच ने कांग्रेस की तैयारी के लिए कठिन परिश्रम किया, वे उस सिलसिले में १९०५ के मार्च और अप्रैल में खास तौर से व्यस्त रहे। जेनेवा में उन्होंने कांग्रेस बुलाने से संबंधित समस्याओं पर भाषण किए, 'व्पेर्योद' के लिए लेख लिखे, कांग्रेस के प्रस्तावों के मसविदे तैयार किए, कांग्रेस के लिए प्रतिनिधियों को मनोनीत करने के बारे में रूस में पार्टी समितियों को पत्र लिखे, प्रस्ताव किया कि बोल्शेविक समितियों के साथ-साथ मेन्शेविक समितियों को भी कांग्रेस में निमंत्रित किया जाए और तीसरी कांग्रेस की संगठन-समिति द्वारा जेनेवा में आयोजित बैठकों में सम्मिलित हुए। उन्हीं दिनों व्लादीमिर इल्यीच ने सड़कों पर लड़ाई की विधियों का अध्ययन-मनन किया: रूस में जन-क्रान्ति शरू हो रही थी।

व्लादीमिर इल्यीच ने ५ अप्रैल को पेरिस में क्रासिकोव को लिखा। क्रासिकोव को विदेश-स्थित संगठनों की समितियों के प्रतिनिधि की हैसियत से कांग्रेस में शरीक होने के लिए रवाना होने से पहले कांग्रेस की तैयारियों के बारे में लिएज जाकर भाषण करना था। व्लादीमिर इल्यीच ने उन्हें "एक चक्करदार दौरे का ४५ दिनवाला टिकट खरीदने की सलाह दी – पेरिस – लिएज, आदि और वापस पेरिस" तथा इस बात का इशारा किया कि प्रतिनिधियों के प्रति क्रासिकोव को क्या रुख अख्तियार करना चाहिए: "**प्रतिनिधियों के प्रति** हमारा रुख निश्चय ही सुलह-समझौते का रुख होना चाहिए, हमें 'खोना कुछ भी नहीं है, हमें (विजय की स्थिति में) सब कुछ जीतना ही जीतना है' और हमारे विरोधियों के साथ बात बिलकुल उलटी है।"

व्लादीमिर इल्यीच कूर्स्क और ओदेस्सा की समितियों* की ओर से निर्णयात्मक वोट के लिए प्रमाण-पत्र से लैस होकर २५

---

* कूर्स्क की समिति ने अपना प्रमाण-पत्र लेनिन को ऐसी स्थिति में उपयोग करने के लिए भेजा था, जबकि कूर्स्क के संगठन द्वारा मनोनीत प्रतिनिधि अपने क़ाबू से बाहर की परिस्थितियों के कारण कांग्रेस में शरीक होने में असमर्थ रह जाता। लेकिन कूर्स्क का प्रतिनिधि कांग्रेस में शरीक हुआ और लेनिन ने केवल ओदेस्सा की समिति का प्रतिनिधित्व किया।

अप्रैल को तीसरी पार्टी कांग्रेस के लिए लन्दन रवाना हुए। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना भी एक सलाहकारी वोट की अधिकारी प्रतिनिधि की हैसियत से कांग्रेस में गई।

मारीया इल्यीनिच्ना १९०५ के वसन्त में पेरिस आई। यह शायद उस समय की बात है, जब व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना लन्दन में थी। मुझे यह तो नही याद है कि वे पेरिस क्यो आई और कितने दिन ठहरी, लेकिन पियर-लाशेज़ कब्रिस्तान तक हम दोनों का प्राय साथ-साथ टहलना मुझे कभी नही भूलेगा। हम घटो उस टीले पर बैठे गुज़ार दिया करती थी, जो कम्यूनार्डों की दीवार के सामने है, जहा १८७१ में वेर्साई की फौजों ने पेरिस के उन १५०० से अधिक मजदूरो को गोलियो से भून दिया था, जो पेरिस कम्यून के अन्तिम रक्षक थे। हम वहा एक दूसरे के व्यक्तिगत विचारो और भावी कार्य योजनाओ को सुनतीं-सुनाती बैठी रहती। मारीया इल्यीनिच्ना ने व्लादीमिर इल्यीच के बारे में मुझे ढेरों बातें बताई।

जेनेवा लौटने पर व्लादीमिर इल्यीच ने तीसरी पार्टी कांग्रेस और मेन्शेविक सम्मेलन* के संबंध में एक शिक्षाप्रद भाषण दिया।

जून के शुरु में व्लादीमिर इल्यीच पेरिस आए। अपने आने की सूचना देते हुए उन्होंने मुझे निम्नलिखित पत्र भेजा

"मैंने अभी-अभी आपको एक तार भेजा है। बहरहाल, यह स्पष्ट कर दू कि तार क्यो दिया। मुझे एक काम से पेरिस बुलाया गया है। निश्चय ही मैं इस यात्रा को केवल उसी काम में नष्ट नहीं कर देना चाहता और इसलिए एक रिपोर्ट भी पढ़ना चाहता हू। विषय है 'तीसरी कांग्रेस और उसमें स्वीकृत प्रस्ताव।' अन्तर्य हमारे तथा मेन्शेविको के प्रस्तावो का तुलनात्मक विश्लेषण उन्होंने अभी हाल में ही अपने सम्मेलन के बारे में एक बयान

* उन मेन्शेविको द्वारा जेनेवा में आयोजित सम्मेलन, जिन्होंने तीसरी पार्टी कांग्रेस में भाग लेने से इनकार कर दिया था।

जारी किया है, जिसका मैं विश्लेपण करूंगा। मैं यह काम केवल मंगल के दिन ही कर सकता हूं (मैं सोमवार को पहुंचूंगा, लेकिन उस दिन शाम को मैं व्यस्त रहूंगा और मुझे उसको जरूर एक दिन में ख़त्म कर देना चाहिए। अगर संभव हो, तो सबसे बड़ा हॉल किराये पर ले लीजिए (वही, जहां मैंने स्त्रूवे के ख़िलाफ़ एक रिपोर्ट पढ़ी थी। फ़िलातोव और दूसरे जानते हैं), और maximum लोगों को सूचित कर दीजिए। अगर आपने अब तक अपना निश्चित उत्तर तार द्वारा न भेजा हो, तो कल मुझे तार दीजिए, ताकि मैं निश्चित रूप से जान सकूं कि आपने हॉल किराये पर लिया है या नहीं। शायद आपके लिए अभी मेरे पास express ख़त भेजने का भी समय है (ताकि वह मुझे इतवार की सुबह से पहले मिल जाए), लेकिन अगर आपको कोई महत्व की बात कहनी हो तो जरूर तार दीजिए।

"उसी रिपोर्ट को मैं आज यहां पढ़ रहा हूं।

Tournez s'il vous plait!*

साभिवादन।

आपका लेनिन

"अगर कहीं ऐसा हो कि रिपोर्ट नहीं पढ़ी जा सकती, तो संभवत: मैं आऊं ही नहीं। इसलिए जवाब जरूर दीजिए।"

हॉल किराये पर लिया गया और व्लादीमिर इल्यीच ने अपनी रिपोर्ट पढ़ी। तीसरी कांग्रेस-सम्बन्धी रिपोर्ट के अतिरिक्त वे अन्य किस काम से पेरिस आए, यह मैं नहीं जानती। इस बार वे कम से कम तीन दिन पेरिस ठहरे। वे अपनी दोनों ख़ाली शामों को थियेटर देखने गए। पहली शाम को वे साथी फ़िलातोव की सलाह से, जो पेरिस को ख़ूब जानते थे, ग्रैन्ड ऑपेरा में कोई ऑपेरा सुनने गए, जो वहां चल रहा था। लेकिन वह उन्हें पसन्द नहीं

* कृपया पन्ना पलटिये ! – सं०

आया, उनके विचार मे वह उवाऊ था। दूसरी शाम को व्लादीमिर इल्यीच, क्रामिकोव के और मेरे साथ फोली वेर्जियर में गए। वहा विनोदपूर्ण शैली मे छोटे-छोटे दृश्य प्रस्तुत किए जा रहे थे। उनमें से एक मुझे याद है, जिसका नाम था 'पेरिस के पैर'। पर्दे को घुटने की ऊचाई तक उठा दिया गया था और मच पर जीवन के विभिन्न क्षेत्रो तथा सामाजिक स्थितियो के लोगो के चलते-फिरते पैर दिखाए गए थे। उनमे एक था मजदूर, एक सडक की रोशनिया जलानेवाला, एक श्रमिक युवती, एक पादरी, एक पुलिसवाला, एक छोटा दुकानदार, एक पेरिस का बाका, तथा अनेक दूसरे लोग भी थे। अलग-अलग पैर इतने प्रतीकात्मक थे कि उनके मालिको को पहचानने मे भूल नही हो सकती थी और आप आसानी से उन व्यक्तियो की धारणा बना सकते थे। वह हास्यजनक दृश्य था। व्लादीमिर इल्यीच ऐसे मुग्धकारी ढग से हसे, जैसे हसना केवल वही जानते थे। उन्हे वास्तव मे उस शाम को आनन्द प्राप्त हुआ।

व्लादीमिर इल्यीच के चले जाने के शीघ्र ही बाद क्रामिकोव तीसरी काग्रेस तथा मेन्शेविक-सम्मेलन के सम्बन्ध मे कुछ उत्प्रवासी रूसी समुदायो के बीच भाषण करने के दौरे पर चले गए और मैं थोड़े ही दिन बाद रूस लौटने के इरादे से जेनेवा वापस आ गई। बहुत दिन नही बीते कि मुझे निकोलायेव नगर की एक निवासी, सार्रा यूद्कोव्ना देर्बारिन्दिकेर के नाम से बना पासपोर्ट मुहैया कर दिया गया। पासपोर्ट की निर्दिष्ट अवधि लगभग पाच साल पहले खत्म हो गई थी। इसलिए सरहद पर जुर्माने की एक बड़ी रकम अदा करने से बचने के लिए मेरे साथियों ने मुझे यह सलाह दी कि मैं निकोलायेव मे अपने कथित मकान का कोई फर्जी पता लिखा दू और एक बयान पर दस्तखत कर दू कि मैं ज्योंही वहा पहुचूगी और पासपोर्ट को रजिस्ट्री के लिए पुलिस के हवाले करूगी, त्योंही जुर्माना अदा कर दूगी।

१९०५ की जुलाई मे मैं बर्लिन होती हुई रूस के लिए रवाना हुई। मुझे अपने साथ कुछ गैर-कानूनी साहित्य ले जाने की जिम्मेदारी सौपी गई थी। मुझे इस डर से सरहद पर चद बेचैन लमहे

गुज़ारने पड़े कि कहीं मेरा पासपोर्ट ही मेरी असफलता का [illegible] न बन जाये। लेकिन मैं सुरक्षित निकल गई और आखिर में अपने वतन वापस आई। प्स्कोव में अपने रिश्तेदारों से संक्षिप्त मिलन के बाद मैं १९०५ की जुलाई में क्रान्तिकारी पीटर्सबर्ग पहुंच गई।

व्ला० इ० लेनिन कैसे काम करते थे

व्ला० इ० लेनिन सोवियत राज्य की प्रतिरक्षा के संगठक और नेता

एक छोटे से लेख मे बेशक कोई लेनिन के काम करने के ढग का पूरा वर्णन नही कर सकता। उसके लिए तो विशेष खोज की आवश्यकता होगी। यहा मैं जो कुछ लिख रही हू उसका उद्देश्य पाठको को जन-कमिसार परिषद के अध्यक्ष लेनिन के कुछ तरीको और कार्य-शैली का थोडा परिचय देना भर है। साथ ही उन मुख्य मागो का परिचय देना भी वाछनीय है, जो वे सोवियत राजकीय मशीनरी के कार्यकर्ताओ से करते थे और जिनका जोर अथवा महत्व आज भी खत्म नही हुआ है। इस लेख का उद्देश्य लेनिन के चरित्र के कुछ लक्षण दिखाना भी है।

* * *

सोवियत राज्य के लिए कठिनाइयो के साल मे, जब विदेशी हस्तक्षेपकारी रूस के प्रतिक्रान्तिकारियो से मिलकर सोवियत सत्ता को हथियारो की ताकत से उलट देने की कोशिश कर रहे थे, कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार ने लेनिन के नेतृत्व मे जनता को पितृभूमि के हेतु लडने के लिए जागृत किया और सोवियत राज्य की प्रतिरक्षा का सगठन किया।

जनतत्र के लिए उन कठिनाइयो के साल मे मैं व्लादीमिर इल्यीच को अक्सर अपने कार्यालय मे मेज़ पर फैले हुए एक नक्शे के ऊपर गहरे चिन्तन मे लीन देखती थी। वे हमारी फौजो की स्थिति पर निशान लगाते, शत्रु की सेनाओ की गतिविधियो का अनुसरण करते तथा पार्टी और सरकार के दूसरे अग्रणी कार्यकर्ताओ के

साथ मिलकर शत्रु को हराने के लिए रणनीतिक योजनाएं बनाते, उनपर विचार-विमर्श करते।

व्लादीमिर इल्यीच मोर्चे पर होनेवाले घटनाक्रम पर लगातार और सावधानी के साथ नज़र रखते थे। लड़ाई के मोर्चों पर और मोर्चों के पीछे जो कुछ भी हो रहा था, उसकी आश्चर्यजनक रूप से उन्हें पूरी-पूरी ख़बर होती थी। वे समूचे विस्तृत देश में समाज के सभी स्तरों की आवश्यकताओं तथा भावनाओं से पूर्णतः परिचित थे। वे प्रान्तों तथा केन्द्र के अग्रणी कार्यकर्ताओं के विवरणों एवं रिपोर्टों से, मेहनतकश जनता से प्राप्त होनेवाले अनेकानेक पत्रों तथा तारों से, मज़दूरों तथा किसानों के प्रतिनिधिमंडलों के साथ व्यक्तिगत तौर पर बातचीत के ज़रिए एवं अन्य साधनों से अपनी सूचनाएं प्राप्त करते थे।

व्लादीमिर इल्यीच समस्त उपलब्ध तथ्यों का मार्क्सवादी विश्लेषण तथा मूल्यांकन करते हुए प्रतिरक्षा-संगठन के हर ब्योरे को समझने की कोशिश करते थे। उनकी दृष्टि से कुछ भी ओझल नहीं रह पाता था। वे संक्षिप्त सटीक रिपोर्टों तथा यथार्थ तथ्यों की मांग करते थे। वे अपने आदेशों के कार्यान्वयन की निरन्तर जांच करते रहते थे। उन्होंने वोलोग्दा के म० केद्रोव को २९ अगस्त १९१८ को लिखा था :

"आप बहुत ही कम तथ्य देते हैं। **प्रत्येक अवसर पर** रिपोर्टें भेजिए।

"कितनी मोर्चेबंदियां बनायी गई हैं ?

"किस दिशा में ?

"रेलवे लाइन के किन स्थानों पर सुरंग लगानेवाले **उपलब्ध हैं**, ताकि जब बड़ी-बड़ी आंग्ल-फ्रांसीसी सेनाएं अंदर आने लगें, तो हम **अमुक-अमुक*** में (एक विवरण ज़रूर दिया जाना चाहिए कि ठीक-ठीक कौनसी और कहां) पुलों, मीलों लम्बी रेल की पटरियों, दलदले रास्तों आदि को **जड़मूल से** उड़ा और बर्बाद कर सकें।

---

* ज़ाहिर है कि "संख्या" शब्द छोड़ दिया गया था।

"क्या वोलोग्दा को श्वेत गार्डों के खतरे से काफी सुरक्षित बना लिया गया है? यदि आप लोगों ने इस मामले में कोई कमजोरी या लापरवाही दिखायी, तो वह अक्षम्य होगी।"

लेनिन मोर्चों के नक्शों का अध्ययन बहुत सावधानी से करते थे। उनके पास बहुत से नक्शे थे। उनके अध्ययन-कक्ष में किताबों की आलमारी की निचली दराज तो नक्शों से ही भरी होती थी।

व्ला० इ० लेनिन का युद्ध-सम्बन्धी पत्र-व्यवहार वास्तव में असाधारण रूप से अधिक था। क्रेमलिन-स्थित अपने अध्ययन-कक्ष के तार से सीधे तथा डाक और टेलीफोन के जरिए लेनिन अपनी हिदायतें, आदेश और दोस्ताना सलाहें देश के सभी भागों को भेजते रहते थे, तात्कालिक समस्याओं का ध्यान दिलाते रहते थे, भूलों, जरूरत से ज्यादा आशावादिता तथा शत्रु की शक्तियों को कम करके आकने के खिलाफ चेताते रहते थे, वह विजयों पर बधाई देते थे, लाल सेना की वीरता की भूरि-भूरि प्रशंसा करते थे, तकाजे करते थे और समझाते-बुझाते थे। उनकी हिदायतें और आदेश हमेशा स्पष्ट, ठोस और सटीक होते थे।

अधूरे तथ्यों तथा केवल प्रकाशित दस्तावेजों के अनुसार, लेनिन ने गृह-युद्ध और विदेशी हस्तक्षेप के वर्षों में (१९१८-१९२०) लड़ाई के मोर्चे के विभिन्न स्थलों, कमांडरों, राजनीतिक कर्मियों, पार्टी और सोवियत संगठनों सहित आबादी के ९७ केंद्रों को प्रतिरक्षा-समस्याओं तथा मोर्चे के पश्चभाग को मजबूत करने के संबंध में लगभग ५०० पत्र और तार भेजे थे। इनके अलावा भी, 'सभी गुबेर्निया समितियों तथा सभी गुबेर्निया कार्यकारिणी समितियों' के नाम लेनिन के कितने ही आदेश टेलीफोन या व्यक्तिगत बातचीत के जरिये दिये गये थे।

इन दस्तावेजों से विदेशी हस्तक्षेप और घरेलू प्रतिक्रान्ति के खिलाफ लड़े गए युद्ध में सोवियत राज्य की प्रतिरक्षा के संगठन तथा संचालन में लेनिन की भूमिका का अत्यन्त स्पष्ट विवरण प्राप्त होता है। मोर्चों की कमानों को दी गई लेनिन की सूझबूझ-भरी हिदायतों से अन्य अधिक महत्वपूर्ण फौजी कार्रवाइयों को सावधानी के साथ परिनिष्पन्न बनाने में सहायता मिली। जब अक्तूबर १९२०

ना व्रांगेल के ख़िलाफ़ क्रीमिया के दरवाज़ों पर लड़ रहे
समय लेनिन ने फ़्रून्ज़े* को निम्नलिखित तार भेजा था –
आपसे तथा गूसेव से प्राप्त अत्यधिक प्रसन्नता भरे तारों
अत्यधिक आशावादिता का ख़तरा प्रतीत होता है। याद
आपके लिए दुश्मन की पीठ पर ही क्रीमिया में दाख़िल होना
ी है, चाहे उसकी क़ीमत कुछ भी क्यों न चुकानी पड़े।
अधिक संजीदगी से तैयारी कीजिए, जांच कीजिये कि क्रीमिया
क़ब्ज़ा करने के लिए हेलकर पार किये जाने वाले सभी घाटों
अध्ययन कर लिया गया या नहीं।”

इन हिदायतों ने दोतरफ़ा प्रहार करके व्रांगेल को पराजित
रने की योजना को अचूक बनाने में दक्षिणी मोर्चे की कमान का
थ-प्रदर्शन किया। यह दोतरफ़ा प्रहार एक तरफ़, सिवाश की
छिछली खाड़ी को हेलकर और दूसरी तरफ़, पेरेकोप की मोर्चे-
बंदियों पर सीधे हमला बोलना था। इस योजना को लाल सेना ने
शानदार ढंग से कार्यान्वित किया।

नियमित लाल सेना तथा लाल नौसेना के निर्माण, राष्ट्रीय
प्रतिरक्षा तथा देश की आन्तरिक स्थिति को सुदृढ़ करने से संबंधित
सभी मुख्य, बुनियादी सूत्रों के बारे में लेनिन ही हिदायतें जारी
करते थे। कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति, जन-कमिसार परिषद
और मजदूरों और किसानों की प्रतिरक्षा परिषद** के नेता के
रूप में लेनिन सोवियत राज्य की प्रतिरक्षा संबंधी अनेक समस्याओं
के हल के लिए ज़िम्मेदार थे। पार्टी अथवा सोवियत सरकार ने
लेनिन की असली शिरकत के बिना कोई एक भी बड़ा महत्वपूर्ण
फ़ैसला नहीं किया।

---

* मि० वा० फ़्रून्ज़े (१८८५-१९२५) – बोल्शेविक पार्टी और सोवियत
राज्य के एक नेता, एक प्रतिभाशाली सेनानायक तथा लाल सेना के प्रमुख संगठन-
कर्ता। १९२० के अन्त में दक्षिणी मोर्चे की फ़ौजों के कमाण्डर थे, जिसने व्रांगेल
के सफ़ेद फ़ौजों को पूर्ण पराजित और क्रीमिया को आजाद किया था। – सं
** मजदूरों और किसानों की प्रतिरक्षा परिषद जनतंत्र की प्रतिरक्षा
संचालन करने के लिए नवम्बर १९१८ में गठित हुई थी। उसका नेतृत्व लेनिन
हाथों में था। अप्रैल १९२० में मजदूरों और किसानों की प्रतिरक्षा परिषद पु
गठित होकर श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद बन गई।

लेनिन हर सैनिक से जगी आदेशो की पूर्ण तामील की माग करते थे। उनकी मान्यता थी कि कठोर अनुशासन और आदेशो की सही-सही तामील लाल सेना की सैनिक कार्यकुशलता की बुनियाद है।

१९१८ की पतझड मे, जबकि पूर्वी मोर्चे पर हमारी प्रगति धीमी हो गई और दक्षिणी मोर्चे पर अनेक नाकामिया पेश आई, रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केन्द्रीय समिति ने सभी पार्टी सदस्यो के नाम – कमिसारो, कमाडरो तथा लाल सेना के सैनिकों के नाम – एक गश्ती चिट्ठी जारी की। उस चिट्ठी का मूलपाठ तैयार करने मे लेनिन ने मदद की थी और उसमे कहा गया था

" यह नितान्त आवश्यक है कि बडे से लेकर छोटे तक, सभी कमाडरो को जगी आदेशो की तामील के लिए फौलादी हाथो से विवश किया जाए, चाहे उसकी जो भी कीमत क्यो न अदा करनी पडे। आज लाल सेना के सामने जो महान उद्देश्य है, उनकी पूर्ति के लिए किसी भी कुर्बानी को अन्तिम नही समझना चाहिए अनुशासन अथवा क्रान्तिकारी युद्ध-भावना के खिलाफ कोई एक भी अपराध कदापि अदडित नही रहना चाहिए।"

लेनिन साहस, दृढता और मृत्यु की अवज्ञा की सीख देते थे। वे माग करते थे कि हर घडी विलपते रहनेवालो, आतक फैलानेवालो, मोर्चे से फरार होनेवालो और बुजदिलो के साथ बेरहमी बरती जाए। उन्होने बार-बार बताया कि सम्बन्धित आदमी चाहे अथवा न चाहे, नाजुक समय पर कमजोरी, असमजस और बुजदिली दिखाने का नतीजा गद्दारी ही हो सकता है। हर मजदूर, हर सैनिक और कमाडर के दिमाग पर अलग-अलग यह नक्श कर देना लाजिमी है कि अन्तिम विश्लेषण मे युद्ध की समाप्ति उसके साहस, उसकी दृढता और उसकी वफादारी पर निर्भर है।

इसके साथ ही, लेनिन ने लाल सेना के लिए अधिकतम समर्थन और उसके घायलो के लिए सहायता की अपील की। २ जुलाई मे 'रानेनी क्रास्नोआर्मेयेत्स' ('लाल सेना का घायल जवान') पत्रिका मे लेनिन ने लिखा था – "मजदूरों और किसानो की सत्ता की रक्षा करने मे अपना खून बहानेवाले लाल सेना के घायल जवानो को जो

कुछ झेलना पड़ा है, उसकी तुलना में हमारी सारी कठिनाइयां और कष्ट नगण्य हैं..."

इतना तो निश्चय के साथ कहा जा सकता है कि गृह-युद्ध और विदेशी फ़ौजी हस्तक्षेप के वर्षों में सोवियत राज्य की प्रतिरक्षा की समस्याओं से संबंधित लेनिन द्वारा छोड़ी गई विपुल सामग्री का सावधानी के साथ अध्ययन करने से सिद्ध हो जायेगा कि वे सोवियत सेना-विज्ञान के संस्थापक थे।

व्ला० इ० लेनिन के राजकीय कार्य के तरीके

लड़ाई के मोर्चों पर विजय तथा समाजवादी पुनर्निर्माण की सफलता के लिए सोवियत राजकीय मशीनरी का कुशलतापूर्वक चलते रहना अत्यन्त महत्वपूर्ण था।

लेनिन ने सोवियत राजकीय मशीनरी के काम को बेहतर बनाने, उसे सरल और चुस्त बनाने, सोवियत निकायों के रोज़मर्रा के कामों में कुशलता, व्यवस्था और अनुशासन पैदा करने के लिए अथक संघर्ष किया और सोवियत जनता को श्रम के प्रति एक नया समाजवादी रुख़ अपनाने की आग्रहपूर्वक शिक्षा दी।

सोवियत राजकीय निकायों के कार्य को संगठित और बेहतर बनाने के लिए सोवियत सरकार द्वारा जारी किए गए सभी क़ानूनों और आदेशों की सख़्ती से, फ़ौरन और ख़ूबी के साथ तामील बिलकुल ज़रूरी थी। लेनिन ने **क्रान्तिकारी क़ानून और व्यवस्था** का सख़्ती से पालन किए जाने के लिए अथक और नियमित संघर्ष चलाया। उन्होंने सोवियत सत्ता द्वारा जारी किए गए क़ानूनों और आदेशों तथा सोवियत जनतंत्र के संविधान के प्रति गंभीर सम्मान करने की शिक्षा दी।

इस संबंध में दानिलोव सूती मिल के प्रतिनिधियों को दिया गया लेनिन का उत्तर (२४ मार्च, १६१६), जो उनसे सूती कपड़े के राशन के लिए प्रार्थना करने आये थे, इसकी एक मिसाल है।

व्लादीमिर इल्यीच ने लिखा था "इस तथ्य को ध्यान मे रखते हुए कि इस प्रश्न का निर्णय केंद्रीय कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष-मंडल द्वारा किया जा चुका है, जो संविधान के अनुसार जन-कमिसार परिषद की अपेक्षा **उच्चतर निकाय** है, उस निर्णय को बदलने का अधिकार न तो जन-कमिसार परिषद के अध्यक्ष के रूप मे मुझे और न ही खुद जन-कमिसार परिषद को है।"

लेनिन की माग पर १९१९ मे न्याय जन-कमिसारियत ने एक पैम्फलेट निकाला, जिसका शीर्षक था 'सोवियत जनतंत्र के कानूनो का पालन करो!' व्लादीमिर इल्यीच ने इस पैम्फलेट का खुद संपादन किया था। उस पैम्फलेट मे मेहनतकश जनता से सोवियत सत्ता द्वारा स्थापित कानूनो का सख्ती से पालन करने की अपील की गई थी। लेनिन की आज्ञा से जन-कमिसार परिषद के सभी सदस्यो को उसकी प्रतिया भेजी गई थी। लेनिन उस पैम्फलेट को जन-कमिसार परिषद की बैठको मे हमेशा अपने सामने रखते थे, उसके हवाले देते थे और उसकी ओर जन-कमिसारो का ध्यान दिलाते रहते थे।

क्रान्तिकारी कानून को कायम रखने मे लेनिन ने रिश्वत के खिलाफ अथक संघर्ष किया, जिसे वे ज़ारशाही की लानत भरी विरासत कहते थे। १९१८ की मई मे न्याय जन-कमिसार कूर्स्की को लिखे एक नोट मे लेनिन ने निम्नलिखित प्रस्ताव किया था: "**फ़ौरन**, *उल्लेखनीय शीघ्रता के साथ* कानून का एक इस आशय का मसविदा पेश कीजिए कि रिश्वत की (भ्रष्टाचार, रिश्वत-सितानी, रिश्वतखोरी मे दलाली, **आदि** की) सजा दस साल की कैद से **कम नहीं** होनी चाहिए और उसके ऊपर से दस साल का अनिवार्य श्रम होना चाहिए।"

अपने रोज़मर्रा के व्यावहारिक कार्यो मे लेनिन अक्सर रिश्वत के खिलाफ लड़ने की समस्या पर पहुच जाते थे। इस काम मे भी उन्होंने पार्टी सदस्यो की प्रमुख भूमिका उसी प्रकार निर्धारित की जिस प्रकार समाजवादी निर्माण से संबंधित सभी कामो और राजकीय मशीनरी को सुधारने के काम मे की थी। १९२१ के अक्तूबर मे

तिक शिक्षा निकायों * की दूसरी अखिल रूसी कां...
रिपोर्ट में रिश्वत के ख़िलाफ़ लड़ने में उक्त निकायों का
का का स्पष्टीकरण करते हुए लेनिन ने कहा था: "...अगर
नीतिक शिक्षा निकायों के सदस्य यह कहते हैं कि 'हमारे
भाग से इसका कोई संबंध नहीं है,' या 'हमने इस विषय के
फ़लेट और एलान निकाल दिए हैं,' तो जनता आपसे यह कहेगी
कि 'आप अच्छे पार्टी सदस्य नहीं हैं। बेशक, इसका संबंध आपके
विभाग से नहीं है, इसके लिए मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था**
मौजूद है, लेकिन फिर भी आप पार्टी के सदस्य हैं।'"

व्लादीमिर इल्यीच को जब कभी यह पता चल जाता कि किसी ने सोवियत सत्ता द्वारा पास किए गए किसी एक भी फ़ैसले या आदेश की तामील नहीं की है, तो वे निरपवाद रूप से दोषी को सज़ा देने का आग्रह करते थे। इसके साथ ही, वह यह भी कहते थे कि यह ज़रूरी नहीं है कि सज़ा सख़्त ही हो, कभी-कभी केवल झिड़की देने से भी काम निकल सकता है, लेकिन यह लाज़िमी है कि इस आम विश्वास को नष्ट कर दिया जाए कि दोषी सज़ा से बच निकलते हैं। व्लादीमिर इल्यीच का कहना था कि दोषी केवल वही नहीं है, जो सीधे तौर से अपने सुपुर्द किए गए किसी काम को पूरा करने में असफल होता है, बल्कि उस संस्था का लापरवाह संचालक भी दोषी है, जिसके काम को सरकार के फ़ैसलों की ग़ैर-तामील के कारण नुक़सान पहुंच रहा है। लेनिन ज...
किसी ऐसे संचालक को दोष देते थे तो इसलिए कि वह समय...
ख़तरे की घंटी नहीं बजाता या शिकायत नहीं दर्ज कराता अ...
उपयुक्त निकायों को जानकारी नहीं होने देता था। उदाहरण...
लिए, यदि जन-कमिसार परिषद ने खाद्य जन-कमिसारियत को ...
एक उद्यम के मज़दूरों को विशेष अतिरिक्त राशन देने को...

---

* राजनीतिक शिक्षा निकाय – जन-शिक्षा पद्धति का एक अंग, ...
कार्य बालिगों में शिक्षा-प्रचार (निरक्षरता का उन्मूलन, विभिन्न प्रकार के ...
पाठ्यक्रमों, क्लबों तथा पुस्तकालयों का संचालन) था। – सं०

** मज़दूर किसान निरीक्षण जन-कमिसारियत – १९२० में स्था...
राज्य-नियंत्रित निकाय, जिसका काम राजकीय प्रशासन में लोगों को
संस्था में खींचने में सहायता पहुंचाना था। – सं०

कर दिया और उस उद्यम के संचालक समय से यह चेतावनी देने में चूक गए कि जन-कमिसार परिषद का फैसला कार्यान्वित नही किया जा रहा है, तो लेनिन उस सचालक को भी उतना ही दोषी समझते थे, जितना खाद्य के जन-कमिसारियत को।

लेनिन दैनंदिन प्रशासनिक आदेशों के प्रति भी लापरवाही का रवैया नही बर्दाश्त करते थे। जब जख्मी होने के बाद स्वस्थ होकर वह अपने काम पर वापस आए, तब डाक्टरों ने उन्हे आग्रह-पूर्वक सलाह दी कि वे सिगरेट के धुए भरे कमरे मे काम न करें। सम्मेलन-कक्ष मे धूम्रपान की कडी मनाही कर दी गई। लेनिन के अपने दफ्तर मे उन्ही के सुझाव पर एक "धूम्र-पान निषेध" का इश्तहार बडे-बडे अक्षरों मे लिखकर ईट की भट्ठीवाली दीवार पर चिपका दिया गया। इसके बावजूद भी, वहा आने वाले सभी ही साथी सदा इस नियम का पालन नही करते थे। एक दिन किसी सम्मेलन के बाद, जब कि कमरा खास तौर से धुए से भरा हुआ था, व्लादीमिर इल्यीच ने मुझे अन्दर बुलाया और कहा, "इश्त-हार उतार लिया जाना चाहिए।" फिर बोले, "अगर हम किसी नियम का पालन नहीं करवा सकते, तो हमे उस नियम को हटा लेना चाहिए, ताकि नियम का महत्व न नष्ट हो।"

जब कभी जन-कमिसार परिषद या श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद की बैठकों के दौरान लेनिन को यह पता चलता कि कोई सरकारी फैसला अमल मे नही लाया गया, तो वे यह कहकर दोषी व्यक्ति को दो या तीन दिन तक गिरफ्तारी मे रखने का आदेश देते— "उसे छुट्टियो के दिन गिरफ्तारी मे रखो और काम के दिन छोड दो, ताकि काम का हर्ज न हो।"

मेहनतकश जनता के असीम सम्मान तथा उसकी हार्दिक श्रद्धा का पात्र होते हुए भी व्लादीमिर इल्यीच ने अपनी हैसियत का कभी दुरुपयोग नही किया और न अपने मामले में कभी उन्होंने स्थापित दस्तूरों, कायदो या कानूनों में अपवाद करने की इजाजत दी। जन-कमिसार परिषद के प्रबंध व्यवस्थापक के नाम २३ मई १९१८ को लिखा उनका पत्र सुविख्यात है। उस पत्र द्वारा उन्होंने जन-कमिसार परिषद के अध्यक्ष की हैसियत से लेनिन का वेतन ५००

राजनीतिक शिक्षा निकायों * की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस के लिए अपनी रिपोर्ट में रिश्वत के खिलाफ़ लड़ने में उक्त निकायों की भूमिका का स्पष्टीकरण करते हुए लेनिन ने कहा था: "...अगर राजनीतिक शिक्षा निकायों के सदस्य यह कहते हैं कि 'हमारे विभाग से इसका कोई संबंध नहीं है,' या 'हमने इस विषय के पैम्फ़लेट और एलान निकाल दिए हैं,' तो जनता आपसे यह कहेगी कि 'आप अच्छे पार्टी सदस्य नहीं हैं। बेशक, इसका संबंध आपके विभाग से नहीं है, इसके लिए मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था ** मौजूद है, लेकिन फिर भी आप पार्टी के सदस्य हैं।'"

व्लादीमिर इल्यीच को जब कभी यह पता चल जाता था कि किसी ने सोवियत सत्ता द्वारा पास किए गए किसी एक भी फ़ैसले या आदेश की तामील नहीं की है, तो वे निरपवाद रूप से दोषी को सज़ा देने का आग्रह करते थे। इसके साथ ही, वह यह भी कहते थे कि यह ज़रूरी नहीं है कि सज़ा सख़्त ही हो, कभी-कभी केवल झिड़की देने से भी काम निकल सकता है, लेकिन यह लाज़िमी है कि इस आम विश्वास को नष्ट कर दिया जाए कि दोषी सज़ा से बच निकलते हैं। व्लादीमिर इल्यीच का कहना था कि दोषी केवल वही नहीं है, जो सीधे तौर से अपने सुपुर्द किए गए किसी काम को पूरा करने में असफल होता है, बल्कि उस संस्था का लापरवाह संचालक भी दोषी है, जिसके काम को सरकार के फ़ैसलों की ग़ैर-तामील के कारण नुक़सान पहुंच रहा है। लेनिन जब किसी ऐसे संचालक को दोष देते थे तो इसलिए कि वह समय से ख़तरे की घंटी नहीं बजाता या शिकायत नहीं दर्ज कराता और उपयुक्त निकायों को जानकारी नहीं होने देता था। उदाहरण के लिए, यदि जन-कमिसार परिषद ने खाद्य जन-कमिसारियत को किसी एक उद्यम के मज़दूरों को विशेष अतिरिक्त राशन देने को बाध्य

---

* **राजनीतिक शिक्षा निकाय** – जन-शिक्षा पद्धति का एक अंग, जिसका कार्य बालिगों में शिक्षा-प्रचार (निरक्षरता का उन्मूलन, विभिन्न प्रकार के स्कूलों, पाठ्यक्रमों, क्लबों तथा पुस्तकालयों का संचालन) था। – सं०

** **मज़दूर किसान निरीक्षण जन-कमिसारियत** – १९२० में स्थापित एक राज्य-नियंत्रित निकाय, जिसका काम राजकीय प्रशासन में लोगों को अधिकतम संख्या में खींचने में सहायता पहुंचाना था। – सं०

कर दिया और उस उद्यम के सचालक समय से यह चेतावनी देने में चूक गए कि जन-कमिसार परिषद का फैसला कार्यान्वित नही किया जा रहा है, तो लेनिन उस सचालक को भी उतना ही दोषी समझते थे, जितना खाद्य के जन-कमिसारियत को।

लेनिन दैनदिन प्रशासनिक आदेशो के प्रति भी लापरवाही का रवैया नही बर्दाश्त करते थे। जब जख्मी होने के बाद स्वस्थ होकर वह अपने काम पर वापस आए, तब डाक्टरो ने उन्हे आग्रह-पूर्वक सलाह दी कि वे सिगरेट के धुए भरे कमरे मे काम न करे। सम्मेलन-कक्ष मे धूम्रपान की कडी मनाही कर दी गई। लेनिन के अपने दफ्तर मे उन्ही के सुझाव पर एक "धूम्र-पान निषेध" का इश्तहार बड़े-बड़े अक्षरो मे लिखकर ईंट की भट्टीवाली दीवार पर चिपका दिया गया। इसके बावजूद भी, वहा आने वाले सभी ही साथी सदा इस नियम का पालन नही करते थे। एक दिन किसी सम्मेलन के बाद, जब कि कमरा खास तौर से धुए से भरा हुआ था, व्लादीमिर इल्यीच ने मुझे अन्दर बुलाया और कहा, "इश्त-हार उतार लिया जाना चाहिए।" फिर बोले, "अगर हम किसी नियम का पालन नही करवा सकते, तो हमे उस नियम को हटा लेना चाहिए, ताकि नियम का महत्व न नष्ट हो।"

जब कभी जन-कमिसार परिषद या श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद की बैठको के दौरान लेनिन को यह पता चलता कि कोई सरकारी फैसला अमल मे नही लाया गया, तो वे यह कहकर दोषी व्यक्ति को दो या तीन दिन तक गिरफ्तारी मे रखने का आदेश देते— "उसे छुट्टियो के दिन गिरफ्तारी मे रखो और काम के दिन छोड दो, ताकि काम का हर्ज न हो।"

मेहनतकश जनता के असीम सम्मान तथा उसकी हार्दिक श्रद्धा का पात्र होते हुए भी व्लादीमिर इल्यीच ने अपनी हैसियत का कभी दुरुपयोग नही किया और न अपने मामले मे कभी उन्होने स्थापित दस्तूरो, कायदों या कानूनों मे अपवाद करने की इजाजत दी। जन-कमिसार परिषद के प्रबंध व्यवस्थापक के नाम २३ मई १९१८ को लिखा उनका पत्र सुविख्यात है। उस पत्र द्वारा उन्होने जन-कमिसार परिषद के अध्यक्ष की हैसियत से लेनिन का वेतन ५००

...कर २०० रूबल प्रति मास कर देने के लिए ज्या०...
...इविच को पत्र लिखी थी। लेनिन ने कहा कि वैसा करना
...नावन और गैर-कानूनी है।

व्लादीमिर इल्यीच को यह बिल्कुल पसंद नहीं था कि उन्हें
...भेजी जायें, खासकर तब जबकि नई संस्थाओं या अधिकारियों
...न भेजी गयी हों। उदाहरण के लिए, मास्को सोवियत के खाद्य-
...विभाग द्वारा २० अगस्त, १९१९ को राजकीय फार्म पर उगाए
...गए, फलों के नमूने प्राप्त कर व्लादीमिर इल्यीच ने अपने ही दिन
२२ अगस्त को जवाब में यह लिखा: "...मैं विनम्रतापूर्वक आपसे
प्रार्थना करता हूं कि ऐसा फिर न कीजिएगा। मुझे फल, आदि
भेजने की कोई जरूरत नहीं है। उनके बजाए मैं कुछ तथ्य और
आंकड़े चाहता हूं, जिनसे मालूम हो कि राजकीय फार्म पर उगाए
गए फल इत्यादि को आस गाँव में किस प्रकार वितरित किया
जाता है, क्या उनमें से कुछ अस्पतालों, स्वास्थ्य-केन्द्रों, बच्चों
आदि के लिए भेजा जाता है, और अगर भेजा जाता है तो कहां
और ठीक-ठीक कितना भेजा जाता है।"

अपने जीवन को अधिक सुविधा-सम्पन्न बनाने के हर प्रयत्न
को व्लादीमिर इल्यीच दूसरों की अपेक्षा अपने को बेहतर स्थिति
में रखने का प्रयास मानते थे और ऐसे प्रयत्नों को बड़ी नाराजगी
के साथ अस्वीकार कर देते थे।

* * *

नौकरशाही तौर-तरीके और लाल फ़ीताशाही सोवियत रा...
...कीय मशीनरी के गंभीर दोष थे।

सोवियत सत्ता ने पुरानी नौकरशाही राजकीय मशीनरी...
नष्ट कर दिया था और राजकीय प्रशासन में मेहनतकश लोगों...
खींचने के आधार पर एक नयी सोवियत मशीनरी का निर्माण...
था। सोवियत सत्ता की यह महान उपलब्धि थी। व्यावहारि...
कांग्रेस में भाषण करते हुए, लेनिन ने कहा था: "हमारी...
मशीनरी चाहे कितनी भी बुरी क्यों न हो, फिर भी उसका...
किया गया है, वह एक महान ऐतिहासिक आविष्कार...

व्यवहारत सोवियत राजकीय मशीनरी मे गंभीर दोष थे। सुसस्कृत कार्यकर्त्ताओ का अभाव था। नौजवान सोवियत कार्यकर्त्ताओ को उस समय राजकीय प्रशासन-कौशल का कोई अनुभव नही था। पुराने जारशाही ज़माने के अधिकारी, दकियानूसी नौकरशाह, जो विभिन्न विभागो और सस्थाओ मे कुडली मारकर बैठे हुए थे, अक्सर जानबूझकर काम मे बाधा डालते थे। व्लादीमिर इल्यीच ने सिखाया कि नौकरशाही पर पूर्ण विजय प्राप्त करने के लिए समूची आबादी को राज्य-प्रबध मे खीचना और जनता के आम सास्कृतिक स्तर को ऊचा उठाना जरूरी है। इसके लिए कई साल नही, दसियो सालो की जरूरत है। लेकिन ठीक इसीलिए लाल फ़ीतेशाही और नौकरशाही के विरुद्ध दिन प्रतिदिन सघर्ष करना चाहिए।

लाल फीतेशाही, नौकरशाही या लापरवाही के जो भी मामले लेनिन की जानकारी मे आ जाते थे, उन पर वे सख्ती से रोक लगाते थे। वे काम में अत्यधिक सक्रियता तथा सोवियत सत्ता के आदेशों की तत्काल और ठीक-ठीक तामील की माग करते थे। वे काम मे अनावश्यक उलझाव और बाधाए पैदा करने वाले नौकरशाहो, लाल फीतेशाहो और कानून का उल्लघन करनेवालो के खिलाफ निरतर सघर्ष करते थे। ठोस तथ्यों, गलतियो तथा चूको के उदाहरणो से लेनिन ने नौजवान सोवियत कर्मियों को काम करने के तरीके सिखाये।

जनवरी १९१९ में मजदूरो को रोटी सप्लाई करने के सर्वाधिक महत्वपूर्ण राजकीय कार्य के प्रति अपनाए गए गैर-ज़िम्मेदारी और लापरवाहीपूर्ण रुख पर गभीर रोष से भरकर ६ जनवरी, १९१९ में लेनिन ने सिम्बीर्स्क गुबर्निया के खाद्य-कमिसार को लिखा "पेत्रोग्राद और मास्को मे फाके करनेवाले मजदूरो के ४२ सगठनो की समिति ने आपकी प्रबधकीय अयोग्यता की शिकायत की है। वे आप से अत्यधिक सरगर्मी, काम के प्रति नये रवैये और फाक़े करनेवाले मजदूरो के लिए हर प्रकार की सहायता की माग करते हैं। इसमे असफल होने पर मुझे आपकी सस्थाओ के सभी कर्मचारियो को गिरफ्तार करने और उनपर मुकदमा चलाने को बाध्य होना पडेगा।"

...नन ने १८ फ़रवरी, १९१९ को ममादीश उयेज़्द...
...णी समिति को तार दिया: "क्या यह सच है कि सोर्मोवो ...मुनिस्ट एकावीशिनकोव एक महीने से जेल में हैं और उनके ...की अब तक तहक़ीक़ात नहीं हुई है? अगर यह सच है तो ...लिए ज़िम्मेदार व्यक्ति पर लाल फ़ीतेशाही के लिए मुक़दमा ...या जाना चाहिए। जवाब तार से दीजिए।"

लेनिन लाल फ़ीतेशाही के ख़िलाफ़ संघर्ष को राजनीतिक महत्व मामला समझते थे।

न्याय जन-कमिसारियत, क्रान्तिकारी न्यायाधिकरण, आदि ...ो लिखे कई पत्रों में लेनिन ने यह मांग की थी कि लाल फ़ीते-...शाही से संबंधित मामलों में अदालती कार्रवाई की जाए। द० इ० कूर्स्की को लिखे अपने ४ नवम्बर, १९२१ के पत्र में लेनिन ने कहा, "...यह लाज़िमी है कि मास्को के लाल फ़ीतेशाही संबंधी चार-छः मामले १९२१-२२ के इस पतझड़ और जाड़े के दौरान मास्को की अदालत में लाए जाएं। इसके लिए अधिक 'ज्वलंत मामलों' को चुना जाए और हर मुक़दमे को एक राजनीतिक महत्व का माम-ला बनाया जाए।"

लेनिन ने २० अक्तूबर, १९२१ को खाद्य जन-कमिसारियत की लाल फ़ीतेशाही से संबंधित एक विशेष मामले के बारे में मास्को क्रान्तिकारी न्यायाधिकरण को लिखा:

"पुनश्च यह पार्टी तथा राजनीति दोनों की ही दृष्टि से, विशेषतः सोवियतों की आठवीं कांग्रेस द्वारा स्वीकृत प्रस्तावों की रोशनी मे, अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि लाल फ़ीतेशाही के मामले में अदालती कार्रवाई को जितना भी संभव हो उतना संजीदा और शिक्षाप्रद बनाया जाए और फ़ैसला काफ़ी प्रभावोत्पादक हो।"

लाल फ़ीतेशाही के ख़िलाफ़ संघर्ष में व्लादीमिर इल्यीच आदे... परिपत्रों की तामील पर निगरानी रखने को बहुत महत्वपूर्ण मानते... उनका आग्रह था कि सोवियत सत्ता के फ़ैसलों की तामील पर वि... और संस्थाएं, पार्टी और सोवियत कार्यकर्ता अमली निगरानी... और जांच करें कि वास्तविक तथ्य के रूप में उसका क्या न... निकला।

अनेकानेक चौकियों से होकर गुज़रना पड़ता था। एक चौकी क्रेमलिन के दरवाजे पर थी, फिर "निचली" और "ऊपरी" चौकियां थी और मिलने आनेवाला कहीं न कहीं अवश्य अटक जाता था। व्लादीमिर इल्यीच ने कमांडेंट से कोई ऐसा तरीका निकालने की मांग की कि उनसे मिलने या जन-कमिसार परिषद में किसी काम से आनेवाले लोगों को अंदर आने देने का आदेश कमांडेंट के कार्यालय से मिल जाने पर उन्हें कोई समय नष्ट न करना पड़े। सेक्रेटरी का कर्त्तव्य यह देखना था कि लोगों को अन्दर आने की इजाजत मिलने में कोई कठिनाई न हो। जब व्लादीमिर इल्यीच किसी के आने की उम्मीद करते और वह समय पर नहीं पहुंचता, तो वे किसी को यह पता लगाने के लिए भेजते कि कहीं वह आदमी जन-कमिसार परिषद का रास्ता ढूंढ़ता हुआ क्रेमलिन में भटक तो नहीं रहा है, या शायद किसी चौकी पर तो नहीं अटक गया है। कमांडेंट को लिखी कई ऐसी हिदायतें सुरक्षित रखी गई हैं, जिनके द्वारा लेनिन ने चेतावनी दी थी कि यदि अंदर आने के नियमों को दुरुस्त नहीं किया गया, तो कोई न कोई सजा दी जायेगी।

व्लादीमिर इल्यीच ने १६ नवम्बर, १९२१ को क्रेमलिन के कमांडेंट के नाम लिखा "पिछली रात ८ बजे ओसिप पेत्रोविच गोल्डेंबेर्ग मुझसे मिले। कमांडेंट के दफ्तर और संतरियों को आधा घंटा या उससे भी अधिक पहले सूचना दे दी जाने के बावजूद, उन्हें जन-कमिसार परिषद में नीचे नहीं, बल्कि ऊपर रोक रखा गया।

"नियमों के इस उल्लंघन की ओर मैं एक बार फिर — और यह किसी भी रूप में पहली बार नहीं है — आपका ध्यान आकृष्ट करना लाज़िमी समझता हूं। मुझे सख्त कार्रवाइयों का सहारा लेने के लिए मजबूर न कीजिए..."

लेनिन ने संतरियों द्वारा रास्ते में अपने मुलाक़ातियों के रोक रखे जाने के बारे में २६ नवम्बर, १९२१ को क्रेमलिन कमांडेंट को फिर लिखा "...मैंने बार-बार यह मांग की है और एक बार फिर मांग करता हूं कि क्रेमलिन के कमांडेंट कोई ऐसी युक्ति ढूंढ़ निकालें कि जो लोग मुझसे मिलने आयें, उनके पास अगर पास न हों तो भी, उन्हें बेरोकटोक क्रेमलिन के फाटकों या जन-कमिसार

परिषद के प्रवेशद्वार से अन्दर आकर मेरे कार्यालय के साथ या तीसरी मजिल पर टेलीफोन आपरेटरो के साथ **संपर्क स्थापित करने** दिया जाये।

"आप मेरी माग के साथ लापरवाही बरत रहे हैं। इसे चेतावनी समझिए।"

लेनिन ने आगे चलकर इस बारे मे विस्तारपूर्वक हिदायते दी कि इस काम को किस प्रकार सगठित किया जाना चाहिए।

अपने कार्यालय के कर्मचारीमडल से व्लादीमिर इल्यीच ने अपने आदेशो को कुशलतापूर्वक, शीघ्र, स्पष्ट, शुद्ध तथा फौरी ढग से तामील करने की माग की, चाहे यह काम कोई चिट्ठी भेजने से ही सबधित क्यो न था।

यह व्लादीमिर इल्यीच की चारित्रिकता थी कि वह छोटे से छोटे काम को भी करने से नही हिचकिचाते थे, बशर्ते कि उसके *अच्छे व्यावहारिक नतीजे निकलते हो। मिसाल के लिए,* चिट्ठियो के पहुचाने का काम, जिसे मामूली काम समझा जा सकता है। व्लादीमिर इल्यीच ने हमे ये हिदायते दे रखी थी साइकिल-हरकारे को किसी के पास पत्र लेकर तब तक न भेजिए, जब तक कि यह न पता लगा लीजिए कि वह व्यक्ति कहा है (वह किसी सभा मे है, अपने अध्ययन-कक्ष मे है, घर पर है या अन्य कही), यह निश्चित कर लेने पर लिफाफे को मुहरबन्द कर दीजिए, जरूरत हो तो उसमे छेद करके एक धागा डालकर बाध दीजिए और धागे के बधे हुए सिरो को खुद मुहरबन्द कर दीजिए। इसके अलावा, लिफाफे पर यह लिखना हरगिज न भूलिए कि उसे दूसरा कोई न खोले और हरकारे से कहिए कि वह लिफाफे पर पानेवाले से रसीद जरूर लिखवा ले। पत्र पहुचाकर पत्र पानेवाले से दस्तखती रसीद हासिल करने के बाद हरकारे को वह लिफाफा कार्यालय मे दे देना होता था, जिसे बाद मे व्लादीमिर इल्यीच को दिखाया जाता था। इस तरीके से बिना कोई समय खोए हुए इस बात की जमानत हासिल की जा सकती थी कि पत्र जिसके नाम लिखा गया, खुद उसी व्यक्ति के हाथो मे वस्तुत पहुचा दिया गया है, न कि वह कही दफ्तर मे ही पडा रह गया है। जहा तक उनके

पत्रों की रवानगी का संबंध था, व्लादीमिर इल्यीच लाल फ़ीतेशाही के मामले में बहुत ही सख़्त थे।

यह मालूम होने पर कि उनका एक पत्र समय पर नहीं भेजा गया, लेनिन ने १३ सितम्बर, १६२१ को जन-कमिसार परिषद के प्रबंध कार्यालय को लिखा: "मुझे कल पता चला कि एक फ़ौरी दस्तावेज़, जिसे मैंने फ़ोतियेवा को दिया था,.. 'सामान्य' यानी मूर्खतापूर्ण ढंग* से भेजा गया और कई घंटे देर में पहुंचा; और अगर मैं दख़ल न दूं तो अगली बार कई दिनों की देर होगी।

"दफ़्तर में इस तरह से काम होना असह्य है और अगर इस तरह की बेहद मिसाली लाल फ़ीतेशाही और तबाही का काम एक बार भी और सामने आया, तो मैं सख़्त सज़ा देने और संबद्ध व्यक्तियों को हटाने का रास्ता अपनाऊंगा।"

आगे चलकर व्लादीमिर इल्यीच अपने पत्रों की रवानगी के सिलसिले में विस्तारपूर्वक हिदायतें देते हैं:

"मेरी आज्ञा से –

"१) जो सेक्रेटरी ड्यूटी पर हों (जिनके बाहर जाने की हालत में उनका कोई एवज़ी ज़रूर होना चाहिए और जिन्हें उसकी सूचना चौबीसों घंटे काम करनेवाले टेलीफ़ोन आपरेटरों को ज़रूर दे देनी चाहिए), उन्हें ख़ुद उस हर दस्तावेज़ या लिफ़ाफ़े की जांच करनी चाहिए जो मैं रवानगी के लिए देता हूं;

"२) उन्हें देखना चाहिए कि सारी हिदायतें लिफ़ाफ़े पर लिखी हों (पानेवाले के हाथ में दिया जाना है, फ़ौरी है, लिफ़ाफ़े पर रसीद लिखवानी है, आदि);

"३) फिर उसे फ़ौरन हरकारे को सौंप दिया जाना चाहिए;

"४) टेलीफ़ोन के जरिये अनिवार्यतः पत्र पानेवाले से काम की पूर्ति की तसदीक़ कर ली जानी चाहिए;

"५) प्राप्ति-सूचक दस्तख़त के साथ लिफ़ाफ़ा मुझे दिखलाया जाना चाहिए;

---

* लेनिन के फ़ौरी काग़ज़ात साइकिल-हरकारे द्वारा भेजे जाते थे। इस अवसर पर दस्तावेज को रजिस्ट्री दफ़्तर को दे दिया गया था और वह डाक-दफ़्तर द्वारा भेजा गया था।

"६) सेक्रेटरी की अनुपस्थिति में जब पत्र रवाना करने हो, तो टेलीफोन-आपरेटरो को भी जरूर इन्ही नियमो का पालन करना चाहिए।"

• • •

केंद्र और प्रातो मे राजकीय मशीनरी के काम मे गभीर कमियो से पूर्णत अभिज्ञ होने के कारण व्लादीमिर इल्यीच उन पत्रो और शिकायतो पर बहुत ध्यान देते थे, जो मेहनतकश लोग खुद उन्हे या जन-कमिसार परिषद को भेजते थे। उन्होंने कार्यालय के कार्यकर्ताओ के लिए यह नियम बना दिया था कि वे उन सभी पत्रों को पढे, जिनमे आवेदन या शिकायते हो। व्लादीमिर इल्यीच ने जन-कमिसार परिषद के प्रबध कार्यालय के नाम १८ जनवरी, १६१६ को इस *आशय* का विशेष *आदेश जारी किया था* कि उन्हे सभी लिखित शिकायतो की सूचना २४ घटे के भीतर और जबानी शिकायतो की सूचना ४८ घटे के भीतर दी जाए। उन्होंने यह भी माग की कि इस बात पर सावधानी से नजर रखी जाए कि शिकायतों के सबध मे वे जो हिदायते दे, उनकी पूरी-पूरी तामील की जाये।

बाद मे व्लादीमिर इल्यीच के आदेश से जन-कमिसार परिषद मे एक प्रवेश-कार्यालय खोला गया। वह क्रेमलिन के बाहर था। लेनिन की आज्ञा से जन-कमिसार परिषद अथवा उसके अध्यक्ष के नाम आनेवाले सभी पत्र वही भेज दिए जाते थे। प्रवेश-कार्यालय के सेक्रेटरी को उन पत्रो को कार्रवाई के लिए सबद्ध स्थान पर भेजना होता था और १५ दिन मे एक बार लेनिन को रिपोर्ट देनी होती थी कि क्या कार्रवाइया की गई।

प्रबध व्यवस्थापक नि० पे० गोर्बुनोव से बात करते हुए २० जनवरी, १६२१ को व्लादीमिर इल्यीच ने उन्हे इस प्रकार के आदेश दिए थे प्रवेश-कार्यालय के बाहरी हिस्से में साधारण पैमाने पर काम शुरू कीजिए, जन-कमिसारियतो के साथ निकटतम सम्पर्क *स्थापित कीजिए और काम मे उनकी मशीनरी का* इस्तेमाल कीजिए, पहले तो सगठन की पद्धतियो का अध्ययन कीजिए और गृह जन-कमिसारियत तथा मजदूर किसान निरीक्षण सस्था की मशीनरी का इस्ते-

माल करना सीखिए; पत्रों, शिकायतों और पूछताछों का जवाब देने के लिए 'अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति के समाचार' ('इज्वेस्तिया') नामक अखबार को डाकघर की तरह इस्तेमाल कीजिए; अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति और जन-कमिसार परिषद को लिखे पत्रों और अपीलों में मज़दूरों और किसानों द्वारा अक्सर उठाई जानेवाली समस्याओं के बारे में अखबारों में लेख प्रकाशित कीजिए; सबसे पहले व्लादीमिर इल्यीच से राय ले लीजिए; पत्र या अपील लिखनेवालों को सूचित कीजिए कि उनके मामले अमुक-अमुक विभागों के पास भेजे गए हैं; काम में पुनरावृत्ति को बचाइए और उसके ख़िलाफ़ दूसरी संस्थाओं में भी लड़िए।

व्लादीमिर इल्यीच जन-कमिसार परिषद के प्रवेश-कार्यालय के काम पर ध्यानपूर्वक निगाह रखते थे। उसकी कारगरता बढ़ाने के लिए चिन्तित लेनिन "सीधे संपर्कों" के उपयोग की हिमायत करते थे। व्लादीमिर इल्यीच ने ३ दिसम्बर, १९२१ को यह पत्र कई ऐसे कार्यकर्ताओं को भेजा, जो अपने पद के कारण मेहनतकश लोगों द्वारा भेजे जानेवाले पत्रों और शिकायतों से सर्वाधिक संबंधित थे। ये कार्यकर्ता द्ज़ेर्जीन्स्की, कार्पीन्स्की, आदि थे।

"आवेदनों और शिकायतों को निपटाने में जन-कमिसार परिषद के प्रवेश-कार्यालय के अनुभवों से 'सीधे सम्पर्क' के उपयोग का लाभ यानी अपने क्षेत्रों में काफ़ी प्रभावशाली पदों के किसी न किसी पार्टी कार्यकर्ता से **निजी** अपील का लाभ विशेषतः गंभीर और आवश्यक मामलों में सिद्ध हो गया है। यह सामान्य विभागीय कार्यों में विलंब से बचाता है और आम तौर से वांछित प्रभाव पड़ता है।

"मिसाल के लिए (नए) येलान्स्की उयेज़्द, सरातोव गुबर्निया, के उस कुलक 'गिरोह' के आतंकवादी मामले को लीजिए, जो सोवियत सत्ता और पार्टी के अन्दर घुन की तरह घुस गया था। वोल्गा प्रदेश में अखिल रूसी असाधारण आयोग* के

---

* प्रतिक्रांति तथा तोड़फोड़ के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए अखिल रूसी असाधारण आयोग, एक राजकीय सुरक्षा-संस्था, जो दिसंबर १९१७ में व्ला० इ० लेनिन की पहल पर स्थापित की गयी थी। – सं०

सर्वाधिकारी प्रतिनिधि के पास इस 'बिरादराना' ढग से जाच का आवेदन भेजने पर उनसे तार द्वारा इस आशय का जवाब प्राप्त करने मे कुल १० दिन लगे कि 'अपराधियो का पता लगाने के लिए सभी कार्रवाइया की गई है।' इसी प्रकार के नतीजे दूसरे मामलो मे भी हासिल हुए है।

"लेकिन इस पद्धति को एक विस्तृत पैमाने पर तभी अपनाया जा सकता है, जबकि हम अपनी-अपनी जगहो पर नियुक्त जिम्मेदार कार्यकर्ताओ से पर्याप्त रूप मे परिचित हो। इसलिए मैं आप से प्रार्थना करता हू कि आप तत्काल ऐसे साथियो की सूचिया तैयार करे, जो आपकी राय मे इस प्रकार के 'दबाव' का इस्तेमाल करने मे खास तौर से योग्य हो, विश्वसनीय साथी जिनका रेकार्ड अच्छा हो और जो कार्यकारिणी समिति, गुबर्निया के असाधारण आयोग आदि के सदस्यो मे से हो, हर गुबर्निया मे एक या दो। इन सूचियो को जन-कमिसार परिषद के प्रवेश-कार्यालय, ४, वोज्द्वीजेका सडक के पते पर भेज दीजिए।"

पत्र के अन्त मे लेनिन ने लिखा

"पुनश्च इन साथियो की ईमानदारी की बिलकुल ठोस जमानत होना लाजिमी है पार्टी और सोवियत दोनो ही के कामो का पूर्णतम सभव रेकार्ड और उनकी निर्विवाद ईमानदारी की कई पुराने पार्टी सदस्यो द्वारा दी गई व्यक्तिगत जमानत।"

दिसम्बर १९२१ मे लेनिन को पता चला कि जन-कमिसार परिषद के प्रवेश-कार्यालय द्वारा केंद्रीय सोवियत सस्थाओ के सचालको के पास कार्रवाई के लिए भेजी गई मेहनतकश लोगो की शिकायतो और निवेदनो का अक्सर कोई जवाब ही नही आता है और न उनके बारे मे कुछ किया जाता है। काम के प्रति गैर-जिम्मेदारी के इस रवैये से तग आकर लेनिन ने सबधित केन्द्रीय सस्थाओ के सचालको को दिसम्बर, १९२१ मे लिखा

"आदरणीय साथी! आपके दफ्तर मे जो लाल फीताशाही तथा नौकरशाही के कुकृत्य है उनका सदा के लिए अत किया जाना चाहिए। जन-कमिसार परिषद और उसके अध्यक्ष के नाम लिखी बहुसख्यक शिकायतो तथा निवेदनो के रूप मे आनेवाले महत्वपूर्ण

और फ़ौरी मामलों के, जिन्हें जन-कमिसार परिषद के प्रवेश-कार्यालय ने आपके पास भिजवाया था, कोई जवाब तथा तामील नहीं है।

"चेतावनी देता हूं कि अपने को फ़ौरन ठीक कीजिए। सोवियत प्रशासन की मशीनरी को अचूक ढंग से, ईमानदारी के साथ और अविलम्ब काम करना होगा। अलग-अलग व्यक्तियों के हितों के लिए हानिकर होने के अलावा, यह ढील-ढाले समूचे काम में मृग-मरीचिका जैसी एक अयथार्थता पैदा कर रही है।" लेनिन ने यह मांग की कि आगे से प्रवेश-कार्यालय से आनेवाले सभी पत्रों और पूछताछों के फ़ौरन और विस्तृत जवाब दिए जाने चाहिए और यह चेतावनी दी कि "जन-कमिसार परिषद के प्रवेश-कार्यालय को दोषी व्यक्ति से उसके 'पद' का लिहाज़ किए बिना, जवाब-तलब करने का अधिकार है।"

* * *

सोवियत संस्थाओं के प्रशासन के लिए नियमों के उपरोक्त मसविदे में लेनिन ने यह विस्तारपूर्वक लिखा था कि किसी सोवियत संस्था में लोगों के साथ मुलाक़ातों का किस प्रकार इंतज़ाम किया जाना चाहिए। वे इस बात के लिए उत्सुक थे कि उस हर नागरिक को, जिसे कोई प्रार्थना या शिकायत करनी हो अथवा दर्ख़ास्त देनी हो, संबंधित संस्था में आजादी के साथ और बिना किसी प्रकार की कठिनाई के दाख़िल होने देना चाहिए और हर मामले के उचित स्थान पर भेजे जाने और उसपर उचित विचार होने की गारंटी होनी चाहिए।

"प्रत्येक सोवियत संस्था के लिए," लेनिन ने लिखा था, "न केवल इमारत के भीतर बल्कि बाहर भी सूचना-पट्ट लगाना ज़रूरी है, जिसपर लोगों से मुलाक़ात के दिन और घंटे लिखे हों, ताकि किसी पास के लिए दर्ख़ास्त देने की ज़रूरत हुए बिना ही लोगों को सूचना प्राप्त हो जाए। मुलाक़ात के स्थान का प्रबंध ऐसा होना चाहिए कि लोग वहां बेरोक-टोक आ-जा सकें।

"प्रत्येक सोवियत संस्था को एक मुलाक़ाती-रजिस्टर खोलना

चाहिए, जिसमे यथासंभव सक्षेप मे मुलाकाती का नाम, उसके मामले का विवरण और उस विभाग का नाम दर्ज हो, जहा उसका मामला भेजा गया हो।

"मुलाकात के घटे रविवार और छुट्टियों के दिनो के लिए भी निश्चित किए जाने चाहिए।"

लाल फीतेशाही के खिलाफ लडने, भ्रष्टाचार के मामलो का भडाफोड करने और बेईमान कार्यकर्ताओ का पर्दाफाश करने के उद्देश्य से लेनिन सोवियत सस्थाओ के काम मे कडाई के साथ नियम-पालन को बहुत महत्व प्रदान करते थे।

• • •

लेनिन का जनता पर दृढ विश्वास था और उसे सघर्ष के लिए सघटित करना जितना वह जानते थे उतना दूसरा कोई नही जानता था। युद्ध और आर्थिक विघटन के वर्षो मे मेहनतकश जनता को जिन कठिनाइयो और अभावो से होकर गुज़रना पडा था, उनसे लेनिन भली भाति परिचित थे और आम लोगो की तकलीफो को गहराई से महसूस करते थे।

वे जनता के साथ निकट सबध को सोवियत सत्ता की तमाम कामयाबियो और विजयो की गारटी मानते थे और परिस्थिति चाहे जितनी भी कठिन या खतरनाक क्यो न हो उसे जनता से वे कभी भी नही छिपाते थे। वे अक्सर इस बात पर ज़ोर देते थे कि सोवियत सत्ता की सपूर्ण शक्ति का आधार मजदूरो का विश्वास और उनकी चेतना है।

हस्तक्षेपकारी ताकतो की नए सयुक्त हमले की सभावना देखकर लेनिन ने अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति, मास्को सोवियत, कारखानो की ट्रेड-यूनियनो की समितियो और ट्रेड-यूनियनो की एक मिली-जुली बैठक मे २२ अक्तूबर, १९१८ को अपनी रिपोर्ट मे कहा "मेरा खयाल है कि जो खतरा हमारे ऊपर मडरा रहा है, उसकी अनुभूति जनता को शायद ही है, और चूकि हम तभी काम कर सकते हैं जब हमे जनता का समर्थन प्राप्त हो, इसलिए सोवियत सत्ता के प्रतिनिधियो के सामने मुख्य कार्यभार यह है कि

नता को वर्तमान परिस्थिति की संपूर्ण सचाई में पा
ह परिस्थिति यदा-कदा कितनी ही कठिन क्यों न हो।"

ग्यारहवीं पार्टी कांग्रेस में भाषण करते हुए लेनिन ने इस
विचार को इन शब्दों में और भी ज़ोरदार ढंग से व्यक्त किया:
" आखिरकार हम जन-समुदायों में वैसे ही हैं जैसे समुद्र में एक
बूंद और हम उनका शासन तभी कर सकते हैं, जब हम उनकी
आकांक्षाओं को समुचित अभिव्यक्ति प्रदान करें। इसके अभाव में
कम्युनिस्ट पार्टी सर्वहारा वर्ग का नेतृत्व नहीं कर पायेगी, सर्वहारा
वर्ग जनता का नेतृत्व नहीं कर पायेगा और सारी मशीनरी टुकड़े-
टुकड़े होकर बिखर जायेगी।"

लेनिन की निर्विवाद प्रतिष्ठा और उनके प्रति जनता के
असीम स्नेह का स्रोत था जन-समुदायों से, मज़दूरों के वर्गीय सहज-
बोध में उनका गंभीर विश्वास। मज़दूरों, लाल फ़ौज के सैनिकों
और गरीब किसान समुदाय में उनके भाषण का निरपवाद रूप से
उत्साहपूर्ण प्रभाव होता था। लेनिन के आह्वान पर मेहनतकश लोग
अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति के लाभों की रक्षा के निमित्त कोई
भी अभाव झेलने और कोई भी कुर्बानी करने के लिए आगे बढ़
आते थे।

* * *

सोवियत राज्य के प्रमुख के रूप में लेनिन सामूहिक नेतृ
के सिद्धांत का सख्ती से पालन करते थे। यद्यपि उनकी प्रतिष
अपार थी, फिर भी जन-कमिसार परिषद के अध्यक्ष के रूप
व्लादीमिर इल्यीच कभी भी समस्याओं का फ़ैसला व्यक्तिगत
पर नहीं करते थे। वे हर कार्यकर्ता को पहलकदमी दिखाने के
प्रोत्साहित करते थे। वे लोगों को अपने अधिकार का दबाव
कर नहीं, बल्कि समझा-बुझाकर कायल करते थे। लेनिन के
गिर्द खुशामद, जीहुज़ूरी और चापलूसी की बात सोची भी
जा सकती थी। जन-कमिसार परिषद या श्रम तथा प्रतिरक्षा
की बैठकों में विचाराधीन प्रश्नों पर सभी वक्ता आज़ादी
अपनी राय प्रगट करते थे। प्रश्नों का हल वोट के ज़रि
जाता था। अक्सर गर्म बहसें भी होती थी। कभी-कभी

होता था कि जन-कमिसार परिषद के सदस्यो के बहुमत द्वारा स्वीकृत किसी निर्णय से व्लादीमिर इल्यीच का मतभेद हो। वे बहुमत की बात स्वीकार कर लेते थे, लेकिन अगर किसी उसूल का सवाल हुआ तो वे उसे बार-बार उठाते थे और अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति, पोलिटब्यूरो, केंद्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन, यहा तक कि पार्टी काग्रेस के सामने पेश करते थे।

उदाहरण के लिए, यह सर्वविदित है कि उद्योगो के सचालन में ऐकिक प्रबध के सिद्धात के लिए लेनिन ने कितना अडिग सघर्ष किया था। डेसीस्ट* लोग, जो ट्रेड-यूनियनों और प्रशासनिक निकायो मे जिम्मेदार पदो पर थे, असीम सामूहिक प्रशासन का समर्थन करते थे। लेनिन ने ऐकिक प्रबध की हिमायत करते हुए अनेक भाषणो मे उनका विरोध किया और यह साबित किया कि यह पद्धति अन्य सभी पद्धतियो की अपेक्षा व्यक्ति की योग्यताओ के पूर्णतम उपयोग तथा किए गए काम की न केवल ज़बानी बल्कि वास्तविक जाच की गारटी करती है।

ऐकिक प्रबध-सबधी बहस ट्रेड-यूनियन और प्रशासनिक कार्यकर्ताओं के विस्तृत क्षेत्रो मे चल रही थी। लेनिन ने, जिन्हें दृढ विश्वास था कि उनकी राय सही है, अखिल-रूसी केन्द्रीय ट्रेड-यूनियन परिषद** की इकाइयो, राष्ट्रीय आर्थिक परिषदो*** की तीसरी काग्रेस, जल-परिवहन कार्यकर्ताओ की काग्रेस, आदि मे भाषण करने के बाद, जहा उन्हे पर्याप्त समर्थन नही प्राप्त हुआ, प्रश्न को नौवी पार्टी काग्रेस मे विचारार्थ पेश किया।

***डेसीस्ट** –जनवादी केंद्रीयतावादी गुट का सदस्य। यह गुट १९२०-१९२१ मे बना था। उसके सदस्य सोवियतो और ट्रेड-यूनियनो मे पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका से इनकार करते थे, उद्योगो के सचालको की व्यक्तिगत जिम्मेदारी तथा ऐकिक प्रशासन का विरोध करते थे और पार्टी के भीतर गुटो और दलो की आज़ादी की माग करते थे। पार्टी ने डेसीस्टो को पार्टी-विरोधी गुटबाज कहकर उनकी निंदा की। – स०

****अखिल-रूसी केंद्रीय ट्रेड-यूनियन परिषद** सोवियत ट्रेड-यूनियनो का सर्वोपरि निकाय है। – स०

*****राष्ट्रीय आर्थिक परिषद** –उद्योगो का सचालन करनेवाला राजकीय निकाय। प्रदेश, गुबर्निया, उयेज्द आदि की इन परिषदो मे राष्ट्रीय आर्थिक परिषद सबसे बडी थी। –स०

पार्टी कांग्रेस में डेसीस्टों ने अपने फ़ैसले को मनवाने के लिए नए प्रयत्न किए, जो असफल रहे। कांग्रेस ने लेनिन द्वारा समर्थित प्रस्ताव स्वीकार किया।

* * *

शुरू में जन-कमिसार परिषद की बैठकों की कार्य-सूची में प्रश्नों की एक बहुत बड़ी संख्या शामिल होती थी। कभी-कभी तो एक बैठक में निपटाये जानेवाले प्रश्नों की संख्या ६० तक होती थी और यहां यह बात ध्यान में रखने की है कि १९१८ के साल में उक्त बैठकें प्रायः रोज़ बुलाई जाती थीं। आंशिक रूप से इसका कारण यह था कि सोवियत राजकीय निकायों ने अभी शासन-कार्य के अनुभव संचित नहीं किए थे। जन-कमिसार परिषद की कार्य-सूची में छोटी-छोटी बातों को शामिल करने के ख़िलाफ़ व्लादीमिर इल्यीच ने कठिन और निरंतर संघर्ष किया। वे सूची में से ऐसे प्रश्नों को काट देते थे और उन्हें कार्रवाई के लिए संबंधित विभागों के पास भेज देते थे। अक्सर विचारार्थ पेश किए गए प्रश्न पूरी तरह तैयार नहीं होते थे और न पहले से उनके ऊपर संबंधित विभागों के साथ कुछ तय होता था। इस तरह के प्रश्नों को भी लेनिन के आदेश से संबद्ध विभागों को वापस कर दिया जाता था, ताकि उनपर विचार होने से पहले उनके संबंध में सारी सामग्री सावधानी के साथ तैयार कर दी जाए। किसी भी मामले को विचारार्थ पेश किए जाने योग्य बनाने के लिए व्लादीमिर इल्यीच का विचार था कि निम्न सामग्री पेश की जानी चाहिए: एक संक्षिप्त वर्णनात्मक स्मरणपत्र (२ या ३ पृष्ठों से अधिक नहीं), जन-कमिसार परिषद या श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद के निर्णय का एक तैयार मसविदा तथा उसके ऊपर सभी संबंधित विभागों की टिप्पणियां और उस निर्णय से असहमत होने की हालत में असहमत विभाग के जवाबी निर्णय का भी तैयार मसविदा। कार्यालय को काफ़ी पहले जन-कमिसार परिषद के सभी सदस्यों के पास सामग्री भेजनी होती थी। व्लादीमिर इल्यीच ने दिसम्बर १९१७ में इस संबंध में एक स्कीम तैयार की, जिसमें उन्होंने हिदायत दी कि जन-कमिसार

परिषद की कार्य-सूची मे किसी प्रश्न को शामिल कराने के इच्छुक हर जन-कमिसार से माग की जानी चाहिए कि वह "एक लिखित प्रारभिक बयान" दे

"क) प्रश्न किस बारे मे है (सक्षेपत) [यहा बयान एक या दूसरी चीज़ के सदर्भ तक ही सीमित नहीं रह सकता, बल्कि उसमे प्रश्न का सपूर्ण सार दिया जाना चाहिए],

"ख) जन-कमिसार परिषद के करने के लिए ठीक क्या सुझाव है? (धन दे, अमुक-अमुक प्रस्ताव पास करे, या ऐसे ही अन्य स्पष्ट बयान कि प्रश्न को शामिल करानेवाला व्यक्ति क्या चाहता है);

"ग) क्या प्रस्तुत प्रश्न दूसरे कमिसारो के विभागो मे सबधित है? वास्तव मे किन-किन विभागो मे? क्या उनके लिखित परामर्श प्राप्त हैं?"

इस मसविदे को जन-कमिसार परिषद ने उसी दिन स्वीकार कर लिया और उसके बाद जन-कमिसारियतों तथा जन-कमिसार परिषद के कार्यालय से अधिकाधिक सटीक मागे करते हुए व्लादीमिर इल्यीच उस मसविदे का हवाला देते रहते थे।

कार्य-विधि मे सुधार आसानी से नहीं शुरू हुआ लेकिन व्लादीमिर इल्यीच मसले को बार-बार उठाते रहे और उन्होंने जन-कमिसारो के प्रतिरोध को सख्ती के साथ दबाया, जो आम तौर से बैठक शुरू होने समय इस आग्रह के साथ कार्य-सूची मे कुछ अतिरिक्त प्रश्न जोड देने की कोशिश करते थे कि वे अत्यधिक तात्कालिक प्रश्न हैं। इस सबध मे मुझे एक घटना याद आती है। जन-कमिसार परिषद की एक बैठक मे फ़े० ए० दज़ेर्जीन्स्की ने किसी तात्कालिक प्रश्न को कार्य-सूची मे ऊपर से शामिल कर लिए जाने की प्रार्थना की। "आपके पास इससे सबधित सामग्री है?" लेनिन ने पूछा। दज़ेर्जीन्स्की ने हामी भरी। तब व्लादीमिर इल्यीच ने मेरी तरफ मुड़कर पूछा, "सामग्री क्या यहा है?" मैंने कहा, "नही।" इस पर दज़ेर्जीन्स्की ने कहा कि उनके कार्यालय ने सामग्री हमारे पास भेज दी है और जन-कमिसार परिषद के कार्यालय ने ही उसे कही इधर-उधर रख दिया है। फिर भी, व्लादीमिर इल्यीच

5-763

ने उस प्रश्न को बैठक की कार्य-सूची में शामिल करने से इनकार कर दिया। मैंने तुरंत द्ज़ेर्जीन्स्की के कार्यालय को टेलीफ़ोन करवाया और चंद मिनटों में ही मुझे बताया गया कि वहां से अभी-अभी सामग्री जन-कमिसार परिषद को भेजी गई है। मैंने द्ज़ेर्जीन्स्की को एक नोट लिखा जिसमें मैंने मज़ाक़पूर्ण अंदाज़ में कहा कि वह मुझे यों ही बदनाम कर रहे हैं, जबकि दोष उनके अपने ही कार्यालय का है। इसपर द्ज़ेर्जीन्स्की ने बोलने की अनुमति मांगी और सबको सुनाकर घोषित किया कि उन्हें मुझसे क्षमा मांगनी चाहिए। "मैंने ग़लत कहा," वह बोले, "जन-कमिसार परिषद के कार्यालय ने काग़ज़ात को इधर-उधर नहीं किया। दोष हमारे कार्यालय का ही है।" यह घटना गौण हो सकती है, लेकिन उससे यह प्रदर्शित होता है कि फ़ेलिक्स एद्मून्दोविच द्ज़ेर्जीन्स्की सत्य के कितने ईमानदार आग्रही थे।

कमिसारों द्वारा जन-कमिसार परिषद की बैठकों की कार्य-सूची में रखे जानेवाले अनेकानेक छोटे प्रश्नों को निपटाने के लिए, जिन्हें व्लादीमिर इल्यीच "वर्मिसैली" प्रश्न कहते थे, एक विशेष आयोग नियुक्त करने का प्रस्ताव बहुत पहले १९१७ में ही स्वीकृत किया जा चुका था। "छोटे 'वर्मिसैली' प्रश्नों को निपटाने के लिए एक 'वर्मिसैली' आयोग बनाइए," प्रस्ताव को ठीक इन्हीं शब्दों में बैठक के कार्य-विवरण में लिखा गया था। यही आयोग बाद को रूपांतरित होकर लघु जन-कमिसार परिषद बन गया था, जिसे अपने अस्तित्व की अवधि में अनेक बार पुनर्गठित किया गया। मुख्य जन-कमिसार परिषद से भिन्न लघु जन-कमिसार परिषद के सदस्य जन-कमिसार नहीं, बल्कि जन-कमिसारियत बोर्ड के सदस्य और विभागीय मुख्याधिकारी थे। उसके अध्यक्ष-पद पर एक साथी को विशेष रूप से नियुक्त किया गया था। शुरू के दिनों में लघु परिषद की बैठकों के कार्य-विवरण मुख्य परिषद की बैठकों में सुनाए जाते थे और कोई आपत्ति न होने पर उन्हें मुख्य परिषद की बैठकों के कार्य-विवरणों में, जन-कमिसार परिषद के निर्णयों के रूप में शामिल कर लिया जाता था। बाद में जन-कमिसार परिषद ने अपनी तरफ़ से लघु परिषद के निर्णयों को मान्यता प्रदान करने की ज़िम्मे-

दारी लेनिन को सौप दी। फिर भी, लघु परिषद मे सर्वसम्मति मे स्वीकृत होने पर ही लेनिन उन्हें मान्यता प्रदान करते थे। यदि लघु परिषद के किसी सदस्य अथवा किसी जन-कमिसार को कोई आपत्ति होती थी या यदि खुद लेनिन असहमत होते थे, तो वे मामले को बहस के लिए मुख्य परिषद में पेश करते थे। उदाहरण के लिए, व्लादीमिर इल्यीच ने रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतंत्र की सभी निर्माण परियोजनाओं के एकीकरण के संबध में ३ फरवरी, १९२१ को लघु परिषद द्वारा स्वीकृत निर्णय को मान्यता नही प्रदान की और उसे मुख्य परिषद के सामने विचारार्थ पेश किया।

व्ला० इ० लेनिन लघु परिषद के काम पर नज़दीक से निगाह रखते थे और उसके सदस्यों को जल्दबाजी के फैसले न करने की सलाह देते रहते थे।

लघु परिषद के नाम २७ अगस्त, १९२१ को लिखे अपने पत्र मे व्लादीमिर इल्यीच ने "आज्ञप्तियो की शब्दावली को **भली-भांति और सावधानी के साथ तैयार करने"** की आवश्यकता बताई थी।

उन्होंने लिखा था, "अतहीन सुधार असह्य है।

"मेरी धारणा है कि लघु परिषद की हाल की कई आज्ञप्तियों से जल्दबाज़ी प्रकट होती है।

"इस गडबडी के खिलाफ गभीर कार्रवाई की जानी चाहिए, *ताकि लोगो मे और नाराज़गी न* पैदा हो और लघु परिषद के खिलाफ उनकी आपत्तियो को केंद्रीय समिति के सामने न लाना पडे।"

श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद के कामो मे भी ऐसी ही पद्धति अपनाई गई थी। छोटे मामलो को निपटाने के लिए श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद की प्रशासनिक बैठके की जाती थी। श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद की प्रशासनिक बैठको और पूर्ण अधिवेशनो में अतर केवल यह होता था कि पहली की अध्यक्षता व० अ० अवनेसोव करते थे और दूसरे की – लेनिन। कभी-कभी प्रशासनिक बैठको मे विचार-विमर्श के दौरान प्रकट होता था कि देखने मे

५*

मामूली लगनेवाला मामला वास्तव में सिद्धांत से जुड़ा महत्वपूर्ण मामला है। ऐसी स्थिति में व्लादीमिर इल्यीच को (जिनका अध्ययन-कक्ष सभा-भवन से बिलकुल लगा हुआ था) बुला लिया जाता था और श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद की उस बैठक को पूर्ण अधिवेशन घोषित कर दिया जाता था। ज्यों ही प्रस्तुत प्रश्न तय हो जाता था, व्लादीमिर इल्यीच अपने अध्ययन-कक्ष में वापस चले जाते थे और श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद की कार्रवाई फिर से प्रशासनिक बैठक के रूप में चलने लगती थी। इस प्रक्रिया की झलक श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद की बैठकों के कार्य-विवरणों में भी मिलती थी।

श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद की ओर से प्रशासनिक बैठकों द्वारा किए गए फ़ैसलों को व्लादीमिर इल्यीच केवल उसी हालत में मान्यता प्रदान करते थे जब श्रम तथा प्रतिरक्षा और जन-कमिसार परिषदों के सदस्यों में से किसी को कोई आपत्ति नहीं होती थी। जिन फ़ैसलों पर किसी को आपत्ति होती थी, उन्हें श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद के पूर्ण अधिवेशन की कार्य-सूची में विचारार्थ शामिल कर लिया जाता था।

किसी बैठक के दिन और समय में तब्दीली करने जैसे मामूली प्रतीत होनेवाले प्रश्नों के संबंध में भी व्लादीमिर इल्यीच कभी कोई फ़ैसला खुद ही नहीं कर देते थे; बल्कि अपने सेक्रेटरी से गश्ती चिट्ठी भिजवाकर जन-कमिसार परिषद के सभी सदस्यों की पूर्व-सहमति प्राप्त करते थे। हां, यह ज़रूर सच है कि ऐसी तब्दीली पर कभी कोई आपत्ति नहीं करता था। उक्त "गश्ती चिट्ठियों" में से कुछ मार्क्सवाद-लेनिनवाद संस्थान के अभिलेखागार में सुरक्षित हैं। जन-कमिसार परिषद के सभी सदस्यों की एक टाइप की हुई सूची है, जिसमें हर नाम के सामने "हां" लिखा हुआ है।

जन-कमिसार परिषद की बैठकों में भाग लेने का अधिकार जन-कमिसारों और उप जन-कमिसारों को प्राप्त था, जिन्हें जन-कमिसारों की अनुपस्थिति में निर्णायक वोट देने का भी हक़ था। बैठकों में उपस्थित होनेवाले बोर्ड के सदस्यों को केवल परामर्शदायी वोट प्राप्त था। व्लादीमिर इल्यीच इस बात के ख़िलाफ़ थे कि बैठकों

में फ़ालतू लोग शरीक हों, क्योंकि वे चाहते थे कि बैठकें कामकाजी ढग से चलाई जाए, ताकि ययासभव कम समय नष्ट हो। उन्हें विशेष रूप से, इस बात पर आपत्ति थी कि जन-कमिसारियतों के बहुत से कार्यकर्ता बैठकों में रिपोर्ट देने आयें। शुरू में वे बडी संख्या में आते थे। उनमें अधिकतर इसलिए बैठकों में शरीक होते थे कि शायद अचानक किसी ऐसी सूचना की जरूरत न पड जाए, जो न तो जन-कमिसार और न ही उप जन-कमिसार पेश कर सके। व्लादीमिर इल्यीच इस प्रक्रिया के ख़िलाफ इसलिए थे कि उससे बैठक में रुकावट आती थी और कार्यकर्ताओं को अपना काम छोडकर बैठना पडता था। उनकी माग थी कि जो मामले जन-कमिसार या उप जन-कमिसार पेश करे, उनसे सबधित सभी सूचनाए पेश करने की क्षमता उनमें खुद होनी चाहिए। लघु परिषद की बैठकों मे बोलनेवालो की सख्या ख़ास तौर से अधिक होती थी।

एक बार जन-कमिसार परिषद की शाम की बैठक में बोलने-वाले दूसरे कमरे मे इन्तजार कर रहे थे। व्लादीमिर इल्यीच ने कार्य-सूची के आगामी प्रश्न पर विचार शुरू होने से पहले उन्हे अदर आने की अनुमति दी। दरवाज़ा खुला और बोलने के लिए आनेवालो का ताता बध गया – वे लगभग २० थे। आखिरी आदमी के अदर आते न आते बैठक मे ठहाके गूजने लगे। उसी दिन लेनिन के आग्रह पर जन-कमिसार परिषद ने इस आशय का प्रस्ताव पास किया कि कार्य-सूची के प्रत्येक सूत्र पर हर सबधित विभाग से केवल एक या दो वक्ता बोले। फिर भी बोलनेवालो की सख्या आवश्यकता से अधिक ही रही।

आम तौर से, व्लादीमिर इल्यीच उस कमरे मे निगाह नही डालते थे, जिसमे वक्ता बैठकर इन्तजार करते थे। एक दिन देर गये शाम को जब जन-कमिसार परिषद की बैठक चल रही थी, लेनिन इत्तफाक से उस कमरे मे होकर गुज़रे। देखते क्या है कि कमरा ऊबे-थके प्रतीत होनेवाले लोगो से भरा हुआ है, जो धुए के एक अम्बार मे बैठे हुए घुट रहे है (कुछ लोग शतरज के मोहरे जमाए और कुछ किसी अख़बार की आड मे) और बैठक में बुलाए जाने का इन्तजार कर रहे है। इतने पर भी अनेक बार ऐसा होना

था कि बैठक समाप्त होने पर उन्हें सुनने को मिलता कि उनसे संबंधित काम स्थगित कर दिया गया है।

व्लादीमिर इल्यीच क्रोध में भरे हुए आए। उन्होंने इस अनुचित स्थिति के लिए हम लोगों की कठोर भर्त्सना की और फ़ौरन वहीं तत्संबंधी कार्य-विधि के बारे में आज्ञा जारी कर दी। उस समय से उन्होंने यह क़ायदा बना दिया कि बयान देनेवाले अपने मामले की पेशी से १५ मिनट पहले आयें। इस बात को दृष्टि में रखकर बैठक शुरू होते ही पहले यह निश्चय करने के लिए कार्य-सूची पर ग़ौर कर लिया जाए कि किन प्रश्नों पर विचार होगा और कौन स्थगित किए जाएंगे तथा मामलों की सुनवाई किस क्रम से होगी। जिन मामलों में रिपोर्टें सुनने का सवाल होता, उन्हें सूची में ऊपर रखा जाता और दूसरों को अन्त में। सेक्रेटरी को बैठक से पहले बयान देनेवाले से संपर्क स्थापित करना और यह निश्चय करना होता था कि बैठक शुरू होने पर वे कहां मिलेंगे तथा उनसे तय करके मोटर तैयार रखना और बैठक की कार्य-सूची निश्चित होते ही उन्हें यह सूचना देनी होती थी कि उनके मामले की सुनवाई के लिए मोटे तौर से कौन-सा समय नियत किया गया है। यदि बैठक के दौरान यह पता चलता कि उनके मामले की सुनवाई देर तक नहीं हो सकेगी, तो सेक्रेटरी को इस बात की खबर बयान देनेवाले व्यक्ति को दे देनी होती थी। इसे व्लादीमिर इल्यीच "बयान देनेवाले को टेलीफ़ोन की दूरी पर रखना" कहते थे।

व्लादीमिर इल्यीच ने १३ अक्तूबर, १९२१ को जन-कमिसार परिषद और श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद के प्रबंधक को यह लिखित चेतावनी दी थी: "मैं मांग करता हूं कि आप लघु परिषद के अध्यक्ष की नियमित सहमति प्राप्त करने (और सेक्रेटरियों के साथ तय करने) के बाद बयान देनेवालों को (मुख्य और लघु दोनों परिषदों की बैठकों में) बुलाने का तरीक़ा बदल दीजिए।

"इस समय ऐसा हो रहा है कि बयान देनेवाले बस किसी बैठक का बुलावा पाते हैं और अपने मामले की पेशी के इन्तजार में घंटों बिता देते हैं।

"यह शर्मनाक और हास्यास्पद है।

"लाजिम यह है कि बयान देनेवालो को **एक निश्चित समय** पर बुलाने का तरीका अपनाया जाना चाहिए।

"बयान देनेवालो की जरूरत है या नही और अगर है तो उनमे से किनकी जरूरत है, टेलीफोन पर इस **दोहरी** जाच और बैठक-विशेष की कार्य-विधि के **सही** क्रम (यानी उसमे रिपोर्टों का सुना जाना शामिल है अथवा नही) का नतीजा यह होगा और जरूर होना चाहिए कि बयान देनेवालो को **१५ मिनट से अधिक इंतजार नहीं करना पड़ेगा।**

"आपसे यह प्रार्थना करता हू कि हर चीज को सावधानी के साथ तौलते हुए इन तरीको पर फौरन एक पद्धति बनाइए और जब यह लघु परिषद द्वारा पास हो जाए, तो मुझे फैसले की सूचना दीजिए।"

• • •

दूसरो से काम मे सुचारुता, व्यवस्था और अनुशासन की माग करते हुए, व्ला० इ० लेनिन अपने काम को सुनियोजित और अपने समय का समुचित विभाजन करके निजी उदाहरण से भी यह प्रदर्शित करते थे कि कार्य-कुशलता का उच्च मानक कैसे उपलब्ध किया जाता है। यही कारण है कि व्लादीमिर इल्यीच कभी भी स्नायविक उत्तेजना, जल्दबाजी अथवा घबराहट मे नही होते थे, हालांकि उनके काम की मात्रा अपरिमित थी और उनके दिन अत्यावश्यक समस्याओ, मुलाकातियो तथा टेलीफोन पर होनेवाले वार्तालापो के कारण बेहद व्यस्त होते थे। वे शान्त भाव से काम करते थे और दिन के लिए निर्धारित अपने सभी कामो को हमेशा पूरा कर लेते थे। लेनिन समय का मूल्य अन्य हर किसी से बेहतर समझते थे और जानते थे कि उसका सर्वोत्तम उपयोग कैसे किया जाना चाहिए। वे कभी एक क्षण भी व्यर्थ नही जाने देते थे। सुबह घर मे नाश्ता करके वह रोज एक निश्चित समय पर अध्ययन-कक्ष मे आते थे, ढेरो अखबार और कागजात पढ़ते, अपने सेक्रेटरी को हिदायते देते, साथियो को मिलने का समय देते और बैठकों की अध्यक्षता करते थे। तिपहरी मे ठीक ४ बजे वह दिन का खाना

खाने के लिए घर जाते थे। खाना खाने और थोड़ा आराम करने के बाद सदा उत्साह से भरे हुए वह ६ बजे फिर अध्ययन-कक्ष लौटते और देर गए रात तक काम करते रहते थे। लेकिन दिन के खाने के समय भी लेनिन का दिमाग़ फ़ुरसत से नहीं रहता था। वह किसी छोटी सी नोटबुक पर लिखी अनेक टीपों के साथ आराम करते हुए दिमाग़ में उठनेवाले प्रश्नों पर अपने सेक्रेटरी के लिए हिदायतों के साथ दफ़्तर लौटते थे। उन हिदायतों की फ़ौरन तामील ज़रूरी होती थी।

व्लादीमिर इल्यीच अपने समय की तरह ही दूसरों के समय की भी बड़ी क़द्र करते थे। वह कभी भी कहीं देर से नहीं पहुंचते थे। जन-कमिसार परिषद या श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद की बैठकों में वह ठीक समय पर या निर्धारित समय से चंद मिनट पहले ही आ जाते थे। लेनिन की अध्यक्षता में ये बैठकें ठीक निश्चित समय पर शुरू हो जाती थीं, चाहे हाज़िरी जैसी भी हो। लेनिन के आदेश पर देर से आनेवालों के नाम के साथ बैठक के कार्य-विवरण में यह भी लिख लिया जाता था कि कौन कितनी देर से पहुंचा। जब कोई बिना पर्याप्त कारण के पुनः देर से आता था, तो व्लादीमिर इल्यीच उसकी भर्त्सना करते थे और चेतावनी देते थे कि फिर वैसा होने पर भर्त्सना अख़बारों में छपवा दी जाएगी।

लेनिन सभा-संचालन में पटु थे। जन-कमिसार परिषद और श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद की बैठकों की अध्यक्षता करते हुए वह सदा यह कोशिश करते थे कि बहसें यथासंभव संक्षिप्त हों और वक्ता विषयांतर किए बग़ैर अपने मुद्दों पर ही बोलें। अगर किसी प्रश्न का स्पष्टीकरण आवश्यक नहीं होता, तो वह मांग करते थे कि केवल आंकड़े और व्यावहारिक सुझाव ही दिए जाएं। सभाओं में लम्बे-लम्बे भाषणों को वे निरर्थक समय गंवाना समझते थे। व्लादीमिर इल्यीच विचाराधीन प्रश्न का सारांश तत्काल ग्रहण करके बहस को सुनते हुए दूसरी समस्याओं पर भी विचार करते रहते थे। 'रूसी भाषा का शुद्धीकरण' विषयक लेनिन का सुविख्यात लेख एक ऐसी ही सभा के दौरान लिखा गया था। उन्होंने कोष्ठकों में

लेख का उपशीर्षक दिया था· **'अवकाश-चिंतन यानी सभाओं में भाषण सुनते हुए सोच-विचार।'**

किन्तु वह तनिक भी शोर से घबरा उठते थे और यह माग करते थे कि पूर्ण शाति और व्यवस्था कायम रखी जाए।

जब सभा-कक्ष में धूम्रपान की मनाही कर दी गई, तो जन-कमिसार परिषद के सदस्य टाइल लगे स्टोव के पीछे जाकर धूम्रपान किया करते थे। वे हवादान की नाली में धुआ फेकते और अध्यक्ष की नजरो से ओझल रहकर कभी-कभी फुसफुसाती आवाज में विचार-विनिमय किया करते थे। व्लादीमिर इल्यीच स्टोव के पीछे धूम्रपान करने को मना नही करते थे और मजाक मे उस कोने को क्लब कहते थे, लेकिन अगर उन्होंने धूम्रपान करनेवालों को वहा बात करते सुन लिया, तो फौरन उन्हे झिडकी देते और कहते, "वहा खामोशी रहे, स्टोव के पीछे वाले क्लब मे।"

बैठको मे होनेवाले लम्बे-लम्बे भाषणो पर आपत्ति करते हुए व्लादीमिर इल्यीच ने अप्रैल १९१९ मे जन-कमिसार परिषद की एक बैठक मे न्याय-विभाग के जन-कमिसार कूर्स्की को यह नोट लिखकर दिया

"समय आ गया है कि बैठको की कार्रवाइयो के लिए समय-निर्धारण **आम तौर से** जन-कमिसार परिषद द्वारा कर लिया जाए।

"१ दस मिनट रिपोर्टो के लिए।

"२ वक्ताओ के लिए पाच मिनट पहली बार और तीन मिनट दूसरी बार।

"३ वक्ताओ का बोलना दो बार तक सीमित कर दिया जाए।

"४ कार्रवाई की व्यवस्था के बारे मे बोलने के लिए एक मिनट पक्ष मे, एक मिनट विपक्ष मे।

"५ अपवाद, जन-कमिसार परिषद की **विशेष** अनुमति पर।"

कूर्स्की द्वारा रिपोर्ट पेश किये जाने पर जन-कमिसार परिषद ने समय-निर्धारण सबधी नियम को ५ अप्रैल १९१९ को स्वीकार किया। वक्त की ऐसी पाबदी का पालन करना कठिन था और

कभी-कभी एक या दो अतिरिक्त मिनट पाने के वास्ते वक्ता "व्यवस्था के बारे में बोलने के लिए" समय मांगते। लेकिन व्लादीमिर इल्यीच यह कहकर उसका विरोध करते थे कि उस मांग के स्वीकार किए जाने का नतीजा "व्यवस्था" नहीं, बल्कि "अव्यवस्था" होगा।

एक दिन जन-कमिसार परिषद की बैठक में व्लादीमिर इल्यीच ने एक ग़ैरपार्टी सैनिक विशेषज्ञ की रिपोर्ट की कटु आलोचना की, जिन्हें विचाराधीन प्रश्न के महत्व को ध्यान में रखकर २० मिनट का समय दिया गया था। व्लादीमिर इल्यीच ने कोई ख़ास आलोचनात्मक बात कही और उस व्यक्ति से अकस्मात् बोले, "कल एक बजे दिन में आकर मुझसे मिलिए तो मैं सिखाऊं कि रिपोर्ट कैसे पेश की जाती हैं।" वे विशेषज्ञ, जैसा कि कहा गया था, दूसरे दिन पहुंचे। व्लादीमिर इल्यीच ने उनसे पूरे एक घंटे तक बात की और उनके चले जाने के बाद सेक्रेटरियों के कमरे में आए और ख़ासा ख़ुश दिखाई दे रहे थे। उनके चेहरे पर मुस्कराहट थी और वह कमरे में एक सिरे से दूसरे सिरे तक चक्कर लगाते हुए बोले, "जी हां, अगर आदमी चाहे, तो अच्छी रिपोर्ट पेश कर सकता है।" मालूम यह हुआ कि उस फ़ौजी विशेषज्ञ ने रात भर जागकर लेनिन की रायों की रोशनी में अपनी रिपोर्ट तैयार की थी। काम में त्रुटियां होने पर व्लादीमिर इल्यीच बहुत सख्त रवैया अख्तियार करते थे। किन्तु इसके साथ ही, हर सच्ची सफलता पर, चाहे वह कितनी ही छोटी क्यों न हो, वह ख़ुश होते थे और उसका श्रेय देने से कभी नहीं चूकते थे।

काग़ज़ी कार्रवाई की मात्रा कम करने की कोशिश में व्लादीमिर इल्यीच संक्षेप रूप में लिखित वक्तव्यों के लिए आग्रह किया करते थे और बार-बार कहते थे कि यह बात बिल्कुल ज़ाहिर है कि लम्बी रिपोर्टों को न कोई पढ़ता है और न ही पढ़ सकता है। सितंबर १९२१ में अपने एक पत्र में उन्होंने लिखा था कि "संक्षेप में लिखिए, तार के तरीक़े से, अगर ज़रूरत हो तो हवाले के लिए संबंधित काग़ज़ात नत्थी कर दीजिए। मैं नहीं समझता कि मैं लम्बी रिपोर्ट को ज़रा भी पढ़ूंगा।

"अगर आपके पास कोई अमली सुझाव हो तो अति संक्षिप्त रूप मे, तार की तरह, उनकी सूची बनाइए और उसकी एक प्रति सेक्रेटरी को भेजिए।"

व्लादीमिर इल्यीच आम तौर से लंबी रिपोर्टो को आखिर की ओर से पढना शुरू करते थे, यानी जिस हिस्से को वह अपनी आदत के अनुसार "किस्सा" कहते थे, उसे छोडकर अमली सुझावोंवाले हिस्से से पढना शुरू करते थे। अगर अमली सुझाव कार्य-रूप मे परिणत करने योग्य सिद्ध होते, तो वह फिर पूरी रिपोर्ट देख जाते थे। व्लादीमिर इल्यीच की पढने की रफ्तार असाधारण रूप से तेज थी। एक पूरे पृष्ठ को पढने के लिए उन्हे महज़ एक नजर डालने भर की ज़रूरत होती थी।

पहले से निश्चित समय से आनेवाले मुलाकातियो को व्लादीमिर इल्यीच कभी इन्तजार नही करने देते थे। ऐसे विरल अवसरो पर जब वह यह देखते थे कि पहले आए हुए मुलाकाती के साथ बातचीत करते हुए उन्हे और चद मिनट लग जायेगे, तो दूसरी मुलाकात का समय होने पर वह अपनी सेक्रेटरी को बुलाते थे और इन्तज़ार मे बैठे साथी के पास क्षमा-याचना कहलवा भेजते थे।

जब व्लादीमिर इल्यीच के पास कोई मुलाक़ाती पहुचता था, तो वह आम तौर से उठकर दरवाज़े तक जाते थे, मुस्कराते हुए उससे हाथ मिलाते थे और तब अपनी मेज़ के पास एक आराम-कुर्सी खीचकर उसे उस पर बैठने को कहते थे। वे ध्यानपूर्वक बाते सुनते थे, सवाल पूछते थे, टीका-टिप्पणी करते थे और बातचीत को मुख्य विषय पर केंद्रित रखते थे।

व्लादीमिर इल्यीच के साथ होनेवाली हर बातचीत एक घटना होती थी और वह उनसे मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त करने-वाले व्यक्ति की स्मृति मे सदा के लिए अकित हो जाती थी। इसका कारण था लेनिन का अद्भुत व्यक्तित्व, व्यक्ति की इज़्ज़त को उसकी अपनी ही दृष्टि मे ऊचा उठा देने की उनकी योग्यता और मानवीय मर्यादा के प्रति उनका सम्मान। व्लादीमिर इल्यीच सुस्त कार्यकर्ता को कठोरतापूर्वक डाट-फटकार सकते थे, उसे सजा दे सकते थे, लेकिन वे कभी भी किसी के स्वाभिमान को ठेस नही

ते थे। उनमें खुद आत्म-सम्मान की अच्छी भावना
ण, वह जानते थे कि हर इंसान की उस भावना की कैसे क़द्र
नी चाहिए और उसे कैसे अक्षुण्ण रखना चाहिए। व्लादीमिर
यीच का मानव में अटूट विश्वास था। उनका यह गुण था कि
ह सबसे नरम कार्यकर्ता में ऐसी शक्ति तथा क्षमताएं खोल सकते
े, जिनका अनुमान स्वयं कार्यकर्ता तक को नहीं रहता था।

व्लादीमिर इल्यीच पहले राज्य-प्रबंध के अजीब और अपरिचित काम को हाथ में लेनेवाले हर कार्यकर्ता की भावनात्मक स्थिति को समझ लेते थे। कभी-कभी कोई साथी अपने में और अपनी सामर्थ्य में विश्वास खो देता और यह महसूस करता कि काम उसके बूते से बाहर है। तब वह घबराहट और थकान की मनःस्थिति में लेनिन से मिलने आता। लेकिन उसकी उत्साह-वृद्धि तथा उसकी मनःस्थिति में एकदम परिवर्तन पैदा कर देने के लिए व्लादीमिर इल्यीच के कुछ शब्द ही काफ़ी होते थे। लेनिन ने साथियों से कभी अपनी मांग कम नहीं की, लेकिन वे जानते थे कि वे आदमी के श्रेष्ठतम गुण को किस तरह परखते और उसे सामने लाते हैं, किस तरह उसके उत्साह की वृद्धि करते हैं, ताकि वह अपने सामने नया क्षितिज उन्मुक्त होता हुआ देख सके और नई शक्ति का आंतरिक संचार होता हुआ महसूस कर सके। लेनिन में यह योग्यता थी कि वे कार्यकर्ताओं को सही तौर पर परख लेते थे और उनकी रुचि तथा क्षमता के अनुरूप ही उन्हें ज़िम्मेदारी देते थे। इस कार
उनके साथ काम करनेवालों को यह महसूस होता था कि वे को
महान और उपयोगी काम कर रहे हैं।

लेनिन की विनम्रता के बारे में लोग जो कुछ कहते हैं
सही है, लेकिन उसे अत्यन्त ऊंचे कम्युनिस्ट अर्थ में समझा उ
चाहिए, न कि उसके विकृत अर्थ में, जिसके अनुसार विन
को आत्महीनता का समानार्थी समझा जाता है। लेनिन की विन
आत्मसम्मान की ज़बर्दस्त भावना के साथ जुड़ी हुई थी। वह
देश में घटित होनेवाली घटनाओं के लिए सोवियत जनता
उत्तरदायित्व के प्रचण्ड बोध के साथ जुड़ी हुई थी। यही
है कि वह जनता के दुख-दर्द को बहुत गहराई के साथ

करते थे और उसकी हर सफलता का बहुत हार्दिक प्रसन्नता के साथ स्वागत करते थे। लेनिन कहा करते थे कि नेता सिर्फ अपने ही कामों के प्रति जवाबदेह नहीं होता, बल्कि उन लोगों के कामों के प्रति भी जवाबदेह होता है, जिनका वह नेतृत्व करता है।

व्लादीमिर इल्यीच ठाट-बाट के जीने के ढंग को नापसंद करते थे। वह बहुत सीधे-सादे तरीके से रहते थे। शारीरिक आराम की उनकी आवश्यकताएं निहायत औसत ढंग की थीं। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना क्रूप्स्काया की, जो जीवन-पर्यंत लेनिन की वफादार संगिनी रहीं, आदतें और रुचियां भी लेनिन के समान ही थीं। उन्होंने अपने संस्मरणों में लिखा है, "लोग हमारे जीवन को अभाव-भरे जीवन के रूप में चित्रित करते हैं। यह सही नहीं है। हमने इस तरह का अभाव कभी नहीं महसूस किया, जब कि आदमी की समझ में यह नहीं आता है कि रोटी किस चीज़ से खरीदी जाए। ज़रा सोचिए तो कि हमारे साथी उत्प्रवास में किस ढंग से रहते थे। उनमें कुछ लोग तो ऐसे थे, जो दो-दो साल तक बेकार रहे और रूस से भी उनके पास कोई रकम नहीं आती थी। वस्तुत वे भूखे रहते थे। हमारे साथ ऐसा कभी नहीं हुआ। हां, यह ज़रूर सच है कि हम मामूली ढंग से रहे। लेकिन क्या प्रचुर भोजन और ऐश-आराम की ज़िंदगी में ही जीवन का आनंद है?" वास्तव में, व्लादीमिर इल्यीच और नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना को ऐश-आराम की ज़िंदगी में नहीं, बल्कि अपने संघर्ष और काम में आनंद प्राप्त होता था।

लेनिन आम तौर से हर किसी के साथ शिष्टता तथा विनम्रता बरतते थे और उनका स्वभाव सरल था। किसी भी सेवा के लिए वे धन्यवाद देना नहीं भूलते थे, चाहे वह अखबार लाकर उन्हें देने जैसी तुच्छ सेवा ही क्यों न हो। जो औरत उनके अध्ययन-कक्ष की अंगीठी जलाने के लिए नियुक्त थी, वह लोगों से बहुत हार्दिकतापूर्वक कहा करती थी कि जब कभी उसके काम करते समय व्लादीमिर इल्यीच आ जाते, तो उससे कितनी शिष्टतापूर्वक तथा सहृदयतापूर्वक बोलते थे। हर व्यक्ति की मानवीय मर्यादा की कद्र और इज्ज़त करना लेनिन का एक विशेष गुण था। मातहत

की हैसियत से काम करनेवाले किसी व्यक्ति के साथ अशिष्टता बरतने को वह घृणित तथा किसी सोवियत नागरिक और कम्यु-निस्ट के लिए अनुचित समझते थे।

* * *

अपने साथियों के लिए लेनिन की सुचिंता सुविदित है। वह संस्थाओं के संचालकों को नोट और पत्र लिखते रहते थे कि इस या उस व्यक्ति की मदद की जानी है। लेकिन वे ऐसी बातों को आदेश के रूप में नहीं, बल्कि एक प्रार्थना के रूप में लिखते थे कि अमुक साथी के लिए खाने, जलाने की लकड़ी, कपड़े, चिकित्सा या छुट्टी की व्यवस्था करके उसकी सहायता की जानी चाहिए। लेनिन की इस चिन्ता में केवल उदारता ही नहीं, बल्कि विचक्षणता और कोमलता भी थी। वह लोगों की अत्यधिक विविध आवश्यकताओं के प्रति आश्चर्यजनक रूप से संवेदनशील थे।

इस संबंध में स्वास्थ्य सुरक्षा के जन-कमिसार नि० अ० सेमाश्को के नाम लेनिन का लिखा हुआ पत्र मिसाली है। उसमें कहा गया था: "कृपया इवान इवानोविच स्क्वोर्त्सोव-स्तेपानोव के निमित्त, जो 'इज्वेस्तिया' समाचारपत्र के संपादक तथा पुराने क्रान्तिकारी हैं, गर्मी की छुट्टियों के लिए मास्को के आसपास नि-वास-स्थान की व्यवस्था कीजिए। संभव हो तो खानाबाग़ सहित। मुझे सूचित कीजिए।"

केंद्रीय सांख्यिकीय निदेशालय की उप निदेशक अ० इ० ख्रियाश्चेवा जन-कमिसार परिषद की सदस्य न होते हुए भी ठीक समय पर परिषद की सभी बैठकों में शामिल होती थीं, जो उन दिनों शाम के साढ़े आठ बजे शुरू होती थीं और १ या २ बजे रात में जाकर ख़त्म होती थीं। व्लादीमिर इल्यीच ने यह देखा और एक बैठक के दौरान अपने सेक्रेटरी को लिखा, "अगर ख्रियाश्चेवा दूर रहती हैं और उन्हें पैदल चलना पड़ता है, तो मुझे उनके लिए अफ़सोस है... उनसे कहिए कि जब कार्य-सूची में सांख्यिकी से संबंधित कोई प्रश्न न हो, तो वे जल्दी चली जाया करें या बिलकुल ही न आयें।" लेकिन स्पष्टतः इस डर से कि कहीं ख्रिया-

इसेवा बुरा न मानें, उन्होंने आगे लिखा, "उनसे अवसर देखकर और होशियारी से बात कीजिए।"

ऐसे नोट लेनिन आम तौर से एक छोटे नोटबुक के पन्नों पर लिखा करते थे। ऐसे नोटों की सख्या बहुत होती थी, लेकिन उनसे भी अधिक सख्या होती थी उन आदेशों की, जो वे अपने सेक्रेटरी को जबानी देते थे अमुक साथी को टेलीफोन कीजिए, ठीक-ठीक मालूम कीजिए कि क्या सहायता दी जा सकती है, निश्चित व्यवस्था कीजिए और जरूरतमद साथी को सूचित कीजिए।

केन्द्रीय साख्यिकीय निदेशालय के सचालक प० ई० पोपोव ने श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद की एक बैठक की कार्य-सूची मे यह प्रार्थना दर्ज करवाई कि उनके काम के लिए एक कार दी जाए। बैठक ने उनकी प्रार्थना मजूर कर ली, लेकिन बाद मे लेनिन ने मुझसे कहा, "उन्हें कार बेशक दी जानी चाहिए, लेकिन इस तरह के प्रश्न श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद की बैठको मे नही पेश किए जाने चाहिए। हमारे साथी निस्पृह भाव से काम कर रहे है और निजी सुख-सुविधा के मामलो मे प्राय विवश है। उनकी सहायता की जानी चाहिए। उन्हे अत्यधिक काम करना है और उन्हे तकलीफ नही दी जा सकती। इसलिए उनकी फिक्र रखना आपका काम है। आपको हर जन-कमिसार की मा, बहन और परिचारिका होनी चाहिए।"

सच तो यह है कि व्लादीमिर इल्यीच मुझे इस तरह के काम बहुत अक्सर दिया करते थे। उन्होंने एक लिखित आदेश भी जारी किया था कि मुझे खाद्य के जन-कमिसार अ० द० त्सुरुपा के स्वास्थ्य की देखभाल करनी थी। मुझे इस बात की निगरानी रखनी थी कि उन्हे मुनासिब खुराक और आराम मिले, वे ठीक समय पर स्वास्थ्य-निवास के लिए रवाना हो जाए और डाक्टर के आदेशो का पालन करे।

व्लादीमिर इल्यीच ने १६१८ मे त्सुरुपा को एक पत्र मे लिखा था, "सरकारी सम्पत्ति के साथ आपका व्यवहार बिलकुल असह्य है।" सरकारी सम्पत्ति से उनका मतलब था एक कार्यकर्ता

का स्वास्थ्य। जब किसी कार्यकर्ता के लिए दीर्घकालीन इलाज का इंतज़ाम किया जाता, तो व्लादीमिर इल्यीच उसकी व्यवस्था के लिए आग्रह करते और उसे "व्यक्ति की 'मुकम्मल मरम्मत' के लिए भेजा जाना" कहते थे।

लेनिन की पहलक़दमी पर जन-कमिसार परिषद का एक भोजनालय स्थापित किया गया। देश में अकाल पड़ा था। प्रमुख कार्यकर्ताओं को दूसरों की अपेक्षा केवल थोड़ा ही बेहतर खाना मिलता था। एक रात खाद्य के जन-कमिसार त्सुरूपा को जन-कमिसार परिषद की बैठक में ग़श आ गया। जो डाक्टर बुलाए गए, उन्होंने उसका मुख्य कारण भूख बताया। उसके बाद व्लादीमिर इल्यीच ने मुझसे कहा, "साथियों पर अच्छी तरह निगाह रखिए। कुछ तो इतने दुर्बल हो गए हैं कि बस भयानक दिखाई देते हैं। एक भोजनालय चालू कीजिए, जिसमें शुरू में ३० आदमियों को खिलाया जा सके और उनमें बेहद दुर्बल, भूख से बेहद पीड़ित लोगों को ही शामिल कीजिए।" भोजनालय क्रेमलिन के घुड़सवार-भाग में खोला गया और उसमें शुरू में ३० "बेहद दुर्बल" आदमियों के खाने का बंदोबस्त किया गया। धीरे-धीरे भोजनालय का काम बढ़ गया और अंत में उसे क्रेमलिन से हटाकर क्रेमलिन के डाक्टरी तथा सफ़ाई निरीक्षण विभाग के अंतर्गत कर दिया गया।

केंद्रीय समिति का डाक्टरी आयोग भी लेनिन की पहलक़दमी पर ही नियुक्त किया गया था। अक्सर ऐसा होता था कि कोई-न कोई साथी इतना अधिक खटता कि डाक्टर उसे फ़ौरन आराम दिए जाने और उसका इलाज कराए जाने का कठोर आग्रह करते थे। ऐसे मामलों में व्लादीमिर इल्यीच डाक्टर के आदेश का पूर्णतया पालन करने की मांग करते थे। लेकिन आदेश का पालन हमेशा नहीं होता था। फलस्वरूप, शक्ति और स्वास्थ्य दोनों ही नष्ट होते थे, क्योंकि हर व्यक्ति का विश्वास था कि उसकी जगह कोई और नहीं ले सकता और इस कारण यह समझता था कि उसके छुट्टी पर जाने से काम रुक जाएगा। जब मामला यहां तक बढ़ गया, तब व्लादीमिर इल्यीच ने उसे पोलिटब्यूरो के सामने पेश

किया और यह काम केंद्रीय समिति के सचिव पर छोड दिया कि वे इस वात की देखभाल रखे कि आदेश का पालन किया जाये यानी सवधित साथी छुट्टी लेकर इलाज कराए। फिर भी, जिस उत्साह और आत्मत्याग के साथ लोग काम करते थे, उसके कारण उनसे इस आदेश का पालन कराना सचमुच बड़ा मुश्किल था। केंद्रीय समिति के कार्यालय को विवश होकर इस संबध मे बहुत समय और श्रम लगाना पडता था। इसलिए उसे छुटकारा दिलाने के लिए लेनिन के आदेश पर केंद्रीय समिति का एक डाक्टरी आयोग कायम किया गया।

लेनिन अत्यत निश्छल हृदय के व्यक्ति थे, वह उच्च सिद्धात-निष्ठ व्यक्ति थे और छोटे-वडे सभी मामलो को गहराई से जाचते थे। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना कहा करती थी कि शुद्ध वैयक्तिक प्रश्नों का निर्णय करते समय भी व्लादीमिर इल्यीच अपने से पूछते थे, "मज़दूर क्या कहेगे?" जन-कमिसार परिषद के अध्यक्ष की हैसियत से भी लेनिन उतने ही सुलभ और सरल बने रहे, जितने उत्प्रवास के दिनो मे। उनकी जीवनचर्या भी उतनी ही सीधी-सादी थी। लेनिन जिन विचारो का प्रचार करते थे, उनका उनके जीवन मे पूर्ण सामजस्य था। उनके व्यक्तित्व में व्यष्टि और समष्टि एकाकार थे।

व्लादीमिर इल्यीच अपने परिवार के लोगो का वहुत ख्याल रखते थे। वह अपनी पत्नी तथा अपनी बहन मारीया इल्यीनिच्ना को वहुत प्यार करते थे और उनकी फिक्र रखते थे। अगर नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना बीमार पडती, तो वह खुद उनके दवा-इलाज की देखभाल करते थे। जब ऐसा होता तो व्लादीमिर इल्यीच कभी-कभी जन-कमिसार परिषद की बैठक मे मुझसे कहते कि मैं नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना से जाकर पूछू कि उन्हे किसी चीज़ की ज़रूरत तो नही है। वह मुझे अपने निवास-स्थान की ताली दे देते थे, ताकि मेरे दरवाज़े की घटी बजाने से नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना को परेशानी न हो।

लेनिन मित्रता को वहुत मूल्यवान समझते थे, लेकिन दोस्ती चाहे जितनी भी ज़बर्दस्त हो, वह कभी भी ऐसे व्यक्ति के साथ

6–763

निषेधात्मक रूप से और सदा के लिए संबंध-विच्छेद कर लेने में बाधक नहीं होती थी, जो मजदूर वर्ग के ध्येय के प्रति गद्दारी करता था और विचारधारा में उससे अलग हो जाता था। इसी प्रकार उन्होंने मार्तोव से संबंध-विच्छेद किया, जो उनके किशोरावस्था के मित्र थे। इसी प्रकार उन्होंने प्लेखानोव, पोत्रेसोव तथा दूसरों से संबंध-विच्छेद किये। लेकिन यह समझना भूल होगी कि लेनिन के लिए वैसा करना आसान होता था। व्लादीमिर इल्यीच के लिए ऐसे लोगों से संबंध-विच्छेद करना बहुत दुखद होता था, जो उनके प्रियपात्र होते थे।

* * *

मेहनतकश जनता लेनिन को दिलोजान से प्यार करती थी। मजदूरों और किसानों द्वारा उनके नाम लिखे जानेवाले अनगिनत पत्रों में इस प्यार की अभिव्यक्ति होती थी।

व्ला० इ० लेनिन को लिखे एक पत्र में क्लिन्त्सी सूती मिल के मजदूरों ने अक्तूबर क्रान्ति की पांचवीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में लेनिन के नाम पर अपने मिल का नामकरण करने का निर्णय घोषित किया। उन्होंने लिखा था:

"इस उत्सव के अवसर पर हम आपको अपनी हार्दिक शुभकामनाएं और खुद अपनी बनाई हुई एक छोटी सी चीज उपहार में भेज रहे हैं।

"अगर हमारे शिक्षक और नेता, आप हमारे हाथों के बुने कपड़े के इस सूट को पहनेंगे तो हमें खुशी होगी। इल्यीच, इसे हमारी शुभकामनाओं के साथ पहनिए और यह समझिए कि हम सदा आपके साथ हैं।

"क्रांति और आपके प्रति वफ़ादारी के साथ
लेनिन क्लिन्त्सी सूती मिल के मजदूर।
क्लिन्त्सी, ३ नवम्बर, १९२२"

व्लादीमिर इल्यीच ने इस पत्र का उत्तर बड़ी सहृदयता से दिया:

"प्रिय साथियो,

मैं आपकी शुभकामनाओं तथा आपके उपहार के लिए आपको सच्चे हृदय से धन्यवाद देता हूं। लेकिन मैं आपसे गुप्त रूप से कहूं कि मुझे उपहार नहीं दिये जाने चाहिए। मैं बहुत चाहता हूं कि आप मेरी इस गुप्त प्रार्थना को सभी मजदूरों में अधिक से अधिक फैला दें।

"धन्यवाद, सम्मान और शुभकामनाओं सहित,
आपका व्ला० उल्यानोव (लेनिन)।"

१९१९ के शुरू में इवानोव नामक एक किसान व्लादीमिर इल्यीच से मिलने आया। आगन्तुक के ख्याल में लेनिन का अध्ययन-कक्ष बहुत सीलन-भरा था। जब इवानोव अपनी कामकाजी यात्रा से लौटकर घर पहुंचा, तो उसने तहसील की कार्यकारिणी समिति के सामने अपनी रिपोर्ट पेश की। उसने कहा कि लेनिन ने समिति की नीति का अनुमोदन किया और उसे अपना सम्मान तथा धन्यवाद भिजवाया है। उसी सिलसिले में इवानोव ने जिक्र किया कि लेनिन जिस कमरे में काम करते हैं वह सीलन-भरा है। इसके जवाब में व्लादीमिर प्रदेश के सूदोगदा जिले की सिलिनोवो तहसील की कार्यकारिणी समिति ने फरवरी १९१९ में "साथी लेनिन को कार्यकारिणी समिति द्वारा अदा की जानेवाली कीमत पर मालगाड़ी के एक डिब्बा भर जलाने की लकड़ी भेजने और आवश्यकतानुसार हमारे अपने लोहार की बनाई हुई अंगीठी पेश करने का" फैसला किया।

इस तथा ऐसे ही अन्य अनेक पत्रों तथा दस्तावेजों से प्रकट है कि मेहनतकश लोग लेनिन को अपने नेता के रूप में प्यार करने तथा उनपर भरोसा करने के साथ-साथ उन्हें अपना बेहद करीबी और प्रिय व्यक्ति भी मानते थे।

लगभग अविराम तथा बिना आराम किए काम करने के कारण हद से ज्यादा थकान, लम्बी मुद्दत तक उत्प्रवास में झेली गई कठिनाइयों और एक आतंकवादी द्वारा जख्मी किए जाने के फलस्वरूप लेनिन का स्वास्थ्य समय से बहुत पहले खराब हो गया।

6*

न्हें १९२२ के दिसंबर में बीमारी का सख्त दौरा पड़ा। लेकिन सख्त बीमारी की हालत में भी वह उस क्षण तक काम करते रहे, जो वस्तुतः आदमी के बर्दाश्त की आखिरी सीमा थी। विस्तर से लगे, अपने क्रेमलिन के निवास-स्थान में व्लादीमिर इल्यीच उस ध्येय की चिंता करते रहे, जिसकी उन्होंने जीवनपर्यंत सेवा की थी।

व्ला० इ० लेनिन का कार्य-दिन

लेनिन की असीम कार्य-क्षमता सुविख्यात है। उसका स्रोत प्रथमत क्रान्तिकारी द्वन्द्ववाद की पद्धति के ऊपर उनका पूर्ण अधिकार और मज़दूर वर्ग के क्रान्तिकारी सघर्ष के सचालन में उनका ज़बर्दस्त व्यावहारिक अनुभव था। दूसरे, इसमें उनके असाधारण आत्मसयम तथा अपने समय का सुचारु विभाजन और प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करने की उनकी योग्यता का भी महत्वपूर्ण हाथ था। उनकी बहन मारीया इल्यीनिच्ना उल्यानोवा के अनुसार, व्लादीमिर इल्यीच ने अपने चरित्र के इन गुणो को बचपन से ही विकसित किया था।

लेनिन की सग्रहीत रचनाओ तथा संकलित ग्रथो और अन्य प्रकाशनो में प्रकाशित एव मार्क्सवाद-लेनिनवाद सस्थान के पुरालेख-सग्रहालय में सुरक्षित सामग्री के आधार पर उन समस्याओ और प्रश्नो की सूची तैयार करना सभव है, जिन्हे लेकर लेनिन का कार्य-दिन व्यस्त रहता था। बेशक इन दस्तावेज़ो के अन्तर्गत उनके कामो का समूचा आयाम और पूरी मात्रा नही आती, क्योकि वे काम अत्यन्त विविध होते थे और उनकी रोज़मर्रा की सरगर्मिया उनके द्वारा लिखी गई दस्तावेज़ो तक ही किसी रूप में सीमित नही थी।

लेनिन में एक साथ ही अनेक काम करने की आश्चर्यजनक योग्यता थी। वे एक बडी महत्वपूर्ण राजकीय समस्या के सबध में काम करते हुए भी मामूली महत्व के प्रश्नो पर, यहा तक कि तुच्छ लगनेवाले ऐसे मामलो पर भी ध्यान देते रहते थे, जिनसे सोवियत सत्ता का कल्याण होता था। राजकीय मामलो के बोझ से बेहद

थके रहते हुए भी साथियों के स्वास्थ्य, भौतिक सुख और दूसरी आवश्यकताओं की देखभाल करने के लिए समय और शक्ति निकाल लेने की भी उनकी योग्यता वैसी ही आश्चर्यजनक थी।

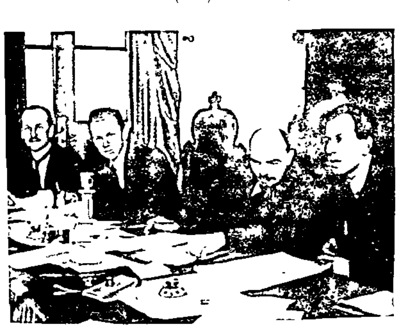
जब सुबह व्लादीमिर इल्यीच अपने अध्ययन-कक्ष पहुंचते थे, तब उनकी सेक्रेटरी उन्हें संक्षेप में प्रस्तुत तात्कालिक प्रश्नों की सूचना देती और उनके पिछले दिन के आदेशों की तामील के बारे में विस्तारपूर्वक बताती थीं। इसके बाद लेनिन अपने नाम आए हुए पत्रों और दस्तावेज़ों को देखते, उनपर हिदायतें लिखते, टेलीफ़ोन पर बातें करते, मुलाक़ात के लिए आए लोगों से मिलते, वार्तालापों और पत्रों तथा दस्तावेज़ों के निरीक्षण के दौरान सूझनेवाले मामलों के संबंध में अपनी सेक्रेटरी और प्रबंधक को अनेकानेक आदेश देते, अगली बैठक की कार्य-सूची तथा सामग्री को सरसरी तौर से देखते, जन-कमिसार परिषद, श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद, पोलिटब्यूरो तथा आयोगों की बैठकों में अध्यक्षता तथा भाषण करते, लघु जन-कमिसार परिषद के काम की जानकारी प्राप्त करते, श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद अथवा लघु जन-कमिसार परिषद की प्रशासनिक बैठकों में पारित प्रस्तावों को पढ़ते और उन्हें पुष्ट करते, कामकाजी चिट्ठियां और तार लिखते, अन्तर्राष्ट्रीय मामलों से संबंधित ताज़ा ख़बरें पढ़ते और रूसी तथा विदेशी अख़बारों, पत्रिकाओं और पुस्तकों को सरसरी तौर से पढ़ते हुए कभी-कभी उनके हाशियों पर नोट लिख देते थे।

इसके अतिरिक्त लेनिन अक्सर मज़दूरों, लाल फ़ौज के सैनिकों तथा किसानों की सार्वजनिक सभाओं और बैठकों में भाषण करते तथा सम्मेलनों और कांग्रेसों में रिपोर्टें पेश करते थे। आम तौर से जो रिपोर्ट पेश करनी होती थी, उसकी एक रूपरेखा वह पहले ही बना लेते थे, लेकिन उसे पेश करते समय शायद ही कभी अपने नोटों पर निगाह डालते थे।

व्लादीमिर इल्यीच अपने श्रमसाध्य दैनिक कामों के साथ-साथ अख़बारों के लिए राजनीतिक लेख और अपनी मुख्य सैद्धान्तिक रचनाओं के लिखने का काम भी करते रहते थे। उनकी सैद्धान्तिक रचनाओं तथा सोवियत सत्ता के सामने प्रस्तुत गृह तथा



भूमि-व्यवस्था-विभागों, गरीब किसानों की समितियों और कम्यूनों की
पहली अखिल रूसी कांग्रेस (दिसम्बर १९१८) के अध्यक्ष-मण्डल में
या० मि० स्वेर्दलोव (बायें) के साथ व्ला० इ० लेनिन



क्रेमलिन में मार्च, १९१९ में हुई कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की
पहली कांग्रेस के अध्यक्ष-मण्डल में व्ला० इ० लेनिन



ब्ला० इ० लेनिन
(मार्च १९१९)

विदेश-नीति संबंधी तत्कालीन व्यावहारिक समस्याओं में सदा ही घनिष्ठ सबंध होता था।

सबसे बढ़कर यह कि व्लादीमिर इल्यीच अपने कर्मचारी-मण्डल के काम का प्रतिदिन मार्गदर्शन करते थे। उनके छोटे से कार्यालय के, जो जन-कमिसार परिषद और श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद का भी सचिवालय था, किसी भी कार्यकर्ता को दफ्तर के काम का कोई पूर्व-अनुभव नही था। कर्मचारी-मडल के सभी कार्यो की तह मे पहुचने की कोशिश करते हुए लेनिन ने हमे काम करने का ढग सिखाया। चिट्ठिया रवाना करने (ताकि वे जल्दी से जल्दी पानेवाले तक पहुचे), सभाओं की कार्य-सूची तैयार करने और उनके लिए उचित सामग्री जुटाने, किसी सभा का कार्य-विवरण लिखने और सस्थाओ को निर्णयो की सूचना देने, आदि का पक्का से पक्का और तेज़ से तेज़ तरीका हमने उनसे सीखा। उनकी हिदायतो का, जो अधिकतर ज़बानी दी जाती थी, निरपवाद रूप से किसी न किसी ठोस व्यावहारिक समस्या या हमारी किसी गलती मे संबध होता था। वे कभी हवाई, पूर्व-चिंतित और बनी-बनाई हिदायतो जैसी नही होती थी।

लेनिन के रोज़मर्रा के कामों की शक्लो और किस्मो की पूर्वोक्त सूची ही यह प्रकट करने के लिए काफी है कि उनका कार्य-दिन कितना व्यस्त होता था। इसके साथ ही यह भी बिलकुल जाहिर है कि उनके काम का एक बहुत बडा हिस्सा ऐसा था, जो मात्रा और विषय-वस्तु दोनो ही में शुमार मे परे था। उदाहरण के लिए, जिन चीज़ो का कोई लिखित विवरण नही है उनका हिसाब नही मिलाया जा सकता, जैसे कि टेलीफोन पर उनकी बातचीत, कर्मचारियों को उनकी ज़बानी हिदायते, मुलाकातियो और यहा तक कि प्रतिनिधि-मडलो से होनेवाली उनकी वार्ता, उन वार्ताओ के विषय तथा उनमे उठनेवाले प्रश्न।

व्लादीमिर इल्यीच शायद ही कभी मास्को से बाहर जाते थे, लेकिन फिर भी वह देश के आम लोगों के साथ हज़ारो प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष सूत्रो द्वारा घनिष्ठ रूप से जुडे हुए थे। जनता की भावनाओ अथवा उनकी आवश्यकताओ को लेनिन की तरह दूसरा



ब्ला० इ० लेनिन
(मार्च १९१९)

गया था। उसी दिन शाम को लेनिन ने ताम्बोव गुबर्नियां के किसानों के एक प्रतिनिधिमण्डल से मुलाकात की। मुलाकात में हुई बातचीत को नोट किया।

व्लादीमिर इल्यीच मुलाकात के लिए किसी को समय देकर पैडवाले अपने कैलेण्डर पर ठीक-ठीक समय दर्ज कर लेते थे।

टेलीफोन पर मुलाकात का समय निश्चित करते हुए व्लादीमिर इल्यीच यह पक्का कर लेते थे कि उनकी घडी और उस दूसरे आदमी की घडी दोनो एक ही समय बताती हैं। ल० इ० गोल्ममान ने अपने सस्मरणो मे लिखा है कि एक बार उन्होंने लेनिन को टेली-फोन किया और उनसे मिलने का समय चाहा। "व्लादीमिर इल्यीच ने पूछा कि मेरी घडी में क्या समय है और मुझे याद है कि मेरी घडी और उनकी घडी में तीन मिनट का अन्तर था। व्लादीमिर इल्यीच ने मुलाकात का समय मेरी घडी के मुताबिक निश्चित किया।"

लेनिन आम तौर से प्रतिदिन दो या तीन मुलाकातियो से मिलते थे, लेकिन कभी-कभी उनकी सख्या इससे कही अधिक हो जाती थी। मिसाल के लिए, ६ फरवरी १९२१ को उन्होंने आठ मुलाकातियो को समय दिया, जिसमें कुल चार घटे लगे। उन आठ आदमियो मे अखिल रूसी असाधारण आयोग के अध्यक्ष द्जेर्जीन्स्की, शिक्षा के उप जन-कमिसार मि० नि० पोक्रोव्स्की, कम्युनिस्ट इटरनेशनल की कार्यकारिणी समिति के सचिव बेला कुन, साइबेरिया के एक किसान ओं० इ० चेर्नोव, नई आर्थिक नीति मे सक्रमण की समस्याओ से सबद्ध मजदूर किसान निरीक्षण सस्था के बोर्ड के सदस्य, कृषि के उप जन-कमिसार, रूसी सघ के लाटविया-स्थित राजदूत और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य मानवेन्द्र नाथ राय* शामिल थे। राय के साथ लेनिन ने डेढ घटे तक बात

---

* राय, मानवेन्द्र नाथ (१८९०-१९४८) – भारतीय राजनीतिक कार्यकर्ता। भारत में १९१०-१९१५ मे क्रान्तिकारी आदोलन में भाग लिया। गिरफ्तारी से बचने के लिए १९१५ मे विदेश भाग गये। बाद में कम्युनिस्टो के सपर्क में आये और पार्टी मे शामिल हो गये। कम्युनिस्ट इटरनेशनल की दूसरी, तीसरी और पाचवीं काग्रेसो के प्रतिनिधि रहे, १९२२ से कम्युनिस्ट इटरनेशनल की कार्यकारिणी समिति का उम्मीदवार सदस्य रहे और १९२४ मे उसके पूर्ण सदस्य बन गये।

कोई नहीं समझ सकता था। उन्होंने यह योग्यता उत्प्रवास के लम्बे और कठिन दिनों में विकसित की थी, जबकि दूरी और ज़ारशाही के सेन्सर के कारण रूस से विच्छिन्न होते हुए भी अपनी समस्त भावनाओं तथा विचारों में उससे संबद्ध रहकर उन्होंने मजदूर वर्ग तथा किसानों की क्रान्तिकारी भावना का सुस्पष्ट मूल्यांकन करते हुए हमारी पार्टी को बनाया और उसका नेतृत्व किया।

आगंतुकों से मिलने में लेनिन का काफ़ी समय निकल जाता था और यह प्राय: प्रति दिन होता था। उनसे मुलाक़ात के कोई निश्चित दिन नहीं थे। मुलाक़ात का बन्दोबस्त सेक्रेटरी के ज़रिए होता था, जो हर सुबह लेनिन को प्रार्थियों के नाम तथा काम के बारे में सूचना देती थी। अक्सर लेनिन खुद पहलक़दमी करके लोगों को मिलने के लिए बुलाते थे। इस प्रकार नई आर्थिक-नीति * में संक्रमण की समस्या पर काम करते हुए लेनिन ने फ़रवरी १९२१ में उफ़ा ज़िले के बुल्गाकोवो तहसील के बेकेतोवो गांव के कुछ किसानों को किसान-समस्याओं के बारे में बातचीत करने के लिए मास्को बुलाया था। लेनिन ने १४ फ़रवरी १९२१ को ताम्बोव गुबर्निया समिति के सेक्रेटरी, नि० मि० नेमत्सेव की रिपोर्ट सुनी, जिन्हें ताम्बोव गुबर्निया में निश्चित तारीख से पहले ही जिंस की हुक्मी वसूली के रद्द किए जाने के सिलसिले में राजधानी बुलाया

---

* नई आर्थिक नीति – गृह-युद्ध की समाप्ति के बाद सोवियत सत्ता द्वारा अपनाई गई आर्थिक नीति, जो पूंजीवाद से समाजवाद में संक्रमण की अवधि के लिए निर्धारित की गयी थी। अर्थव्यवस्था की प्रमुख शाखाओं (उद्योग, परिवहन, वित्त, विदेश व्यापार की इजारेदारी, राष्ट्रीयकृत भूमि) को राज्य के हाथ में बरक़रार रखते हुए, नई आर्थिक नीति ने सर्वहारा राज्य के नियंत्रण में पूंजीवाद तथा उन्मुक्त व्यापार को विकसित होने की कुछ छूट दे दी थी। इस नीति का उद्देश्य पूंजीवादी हिस्सों पर क़ाबू पाना और समाजवाद का निर्माण करना था। गृह-युद्ध के वर्षों में अपनाई गई 'युद्धकालीन कम्युनिज़्म' की नीति की तुलना में उसे 'नई' कहा जाता था। 'युद्धकालीन कम्युनिज़्म' की नीति का अर्थ यह था कि सोवियत सत्ता ने बड़े उद्योगों के उपरांत मझोले और छोटे उद्योगों को भी अपने नियंत्रण में ले लिया, अनाज के व्यापार की राजकीय इजारेदारी चालू की, निजी व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिया गया और जिंस की हुक्मी वसूली की स्थापना की, जिसमें किसानों की उपज की सारी बचत राज्य को दे दिये जाने की व्यवस्था थी, और आख़िरी चीज यह कि देशव्यापी श्रम-सेवा चालू की। वह अस्थायी क़िस्म की कार्रवाई थी, जिसकी जरूरत युद्ध तथा राष्ट्रीय प्रतिरक्षा की समस्याओं के कारण पैदा हुई थी। – सं०

गया था। उसी दिन शाम को लेनिन ने ताम्बोव गुबर्निया के किसानों के एक प्रतिनिधिमण्डल से मुलाकात की। मुलाकात में हुई बातचीत को नोट किया।

व्लादीमिर इल्यीच मुलाकात के लिए किसी को समय देकर पैडवाले अपने कैलेण्डर पर ठीक-ठीक समय दर्ज कर लेते थे।

टेलीफोन पर मुलाकात का समय निश्चित करते हुए व्लादीमिर इल्यीच यह पक्का कर लेते थे कि उनकी घडी और उस दूसरे आदमी की घडी दोनो एक ही समय बताती है। ल० इ० गोल्त्समान ने अपने सस्मरणो मे लिखा है कि एक बार उन्होंने लेनिन को टेलीफोन किया और उनसे मिलने का समय चाहा। "व्लादीमिर इल्यीच ने पूछा कि मेरी घडी मे क्या समय है और मुझे याद है कि मेरी घडी और उनकी घडी मे तीन मिनट का अन्तर था। व्लादीमिर इल्यीच ने मुलाकात का समय मेरी घडी के मुताबिक निश्चित किया।"

लेनिन आम तौर से प्रतिदिन दो या तीन मुलाकातियो से मिलते थे, लेकिन कभी-कभी उनकी सख्या इससे कही अधिक हो जाती थी। मिसाल के लिए, ६ फरवरी १६२१ को उन्होंने आठ मुलाकातियो को समय दिया, जिसमे कुल चार घटे लगे। उन आठ आदमियो मे अखिल रूसी असाधारण आयोग के अध्यक्ष द्ज़ेर्जीन्स्की, शिक्षा के उप जन-कमिसार मि० नि० पोक्रोव्स्की, कम्युनिस्ट इटरनेशनल की कार्यकारिणी समिति के सचिव बेला कुन, साइबेरिया के एक किसान ओ० इ० चेर्नोव, नई आर्थिक नीति मे सक्रमण की समस्याओ से सबद्ध मज़दूर किसान निरीक्षण सस्था के बोर्ड के सदस्य, कृषि के उप जन-कमिसार, रूसी सघ के लाटविया-स्थित राजदूत और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य मानवेन्द्र नाथ राय* शामिल थे। राय के साथ लेनिन ने डेढ घटे तक बात

---

* *राय, मानवेन्द्र नाथ (१८६०-१६४८) – भारतीय राजनीतिक कार्यकर्ता।* भारत मे १६१०-१६१५ मे क्रातिकारी आदोलन मे भाग लिया। गिरफ्तारी से बचने के लिए १६१५ मे विदेश भाग गये। बाद मे कम्युनिस्टो के सपर्क मे आये और पार्टी मे शामिल हो गये। कम्युनिस्ट इटरनेशनल की दूसरी, तीसरी और पाचवी काग्रेसो के प्रतिनिधि रहे, १६२२ मे कम्युनिस्ट इटरनेशनल की कार्यकारिणी समिति का उम्मीदवार सदस्य रहे और १६२४ मे उसके पूर्ण सदस्य बन गये।

की। लेनिन के साथ बातचीत का जो प्रभाव ओ० चेर्नोव अपने साथ ले गए, उसका उन्होंने अपने संस्मरण में बड़े ही मार्मिक ढंग से वर्णन किया है। वह लिखते हैं: "कौन सी बात लेनिन को महान बनाती है?

"यह कि वह मेरी बात, बेशक, इस तरह नहीं सुनते थे जैसे कि किसी विशिष्ट व्यक्ति की बात सुन रहे हों, बल्कि **मेरी मार्फ़त वह समूचे किसान-समुदाय की बात सुन रहे थे और गांवों की स्थिति को, उसकी तमाम पेचीदगियों को ग्रहण कर रहे थे।**"

व्लादीमिर इल्यीच प्राय: रोज ही प्रमुख सरकारी या पार्टी निकायों और आयोगों (जन-कमिसार परिषद, श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद, पोलिटब्यूरो, आर्थिक आयोग, वित्त-आयोग, अनाज-आयोग, आदि) की अध्यक्षता करते थे। अनाज-आयोग केंद्र को अनाज की सप्लाई पर निगरानी रखने तथा उसके मार्ग की बाधाओं को दूर करने के लिए ३१ जनवरी १९२१ को बनाया गया था। ऐसी बैठकों की अध्यक्षता करने में लेनिन का काफ़ी समय लग जाता था।

इसके अलावा लेनिन के किसी कार्य-दिन को उससे पहले या बाद के दिनों से एक अभेद्य दीवार द्वारा पृथक् करके किसी असंबद्ध इकाई के रूप में नहीं देखा जा सकता, क्योंकि प्रत्येक दिन पार्टी के लिए, सोवियत सरकार के लिए तथा देश के नेता की हैसियत से लेनिन के लिए अपनी विशाल समस्याएं लेकर आता था और गोकि उन समस्याओं को ठीक उसी दिन एक ठोस दस्तावेज़ी रूप नहीं दे दिया जाता था, वे निश्चय ही लेनिन के दिमाग़ पर छायी रहती थीं, उन्हें चिंतित रखती थीं।

लेनिन की यथार्थत: प्रचंड कार्य-क्षमता की बेहतर जानकारी प्राप्त करने के लिए उनके किसी सामान्य कार्य-दिन, उदाहरणत:, २ फ़रवरी १९२१ को शुरू से अंत तक देख लेना ही काफ़ी होगा।

बाद में वह कम्युनिस्ट पार्टी से अलग हो गये और भारत लौटकर कम्युनिस्ट-विरोधी बन गये। १९४० में भारत में रेडिकल-डेमोक्रेटिक पार्टी की स्थापना की, जिसका अस्तित्व प्राय: उनके जीवन-काल में ही समाप्त हो गया था। पहले 'वैनगार्ड' और बाद में 'रेडिकल ह्यूमेनिस्ट' नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन किया।—सं०



अक्तूबर १६२० मे क्रेमलिन-स्थित अपने अध्ययन-कक्ष मे
एच० जी० वेल्स से बातें करते हुए व्ला० इ० लेनिन



व्ला० इ० लेनिन और ना० कों० क्रूप्स्काया। नवम्बर १९२० में
... के उद्घाटन के अवसर पर काशिनो गांव के किसानों के साथ।

उस समय पार्टी और सोवियत सरकार के सामने युद्ध की स्थिति से शान्तिकालीन आर्थिक निर्माण में संक्रमण संबंधी कई बड़ी समस्याएं पेश थी। सोवियत राज्य के जीवन में वह एक बेहद कठिन दौर था राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की पूरी बर्बादी, कारखानों की बंदी, भुखमरी तथा हर चीज का – अन्न, जलावन, जीवन के लिए नितांत आवश्यक चीजों का – अभाव, युद्धकालीन कम्यु-निज्म की नीति से किसानों में बढ़ता हुआ असंतोष, अनेक गुब-र्नियों में कुलकों और समाजवादी-क्रान्तिकारियों द्वारा किए जानेवाले दंगे, सभी संचार-साधनों की तबाही की स्थिति में सैन्यविघटन की समस्या तथा तनावपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति। इसके अतिरिक्त पार्टी के भीतर त्रोत्स्कीपंथियों, बुखारिनपंथियों तथा दूसरे पार्टी-विरोधी दलों ने पार्टी के ऊपर ट्रेड-यूनियन संबंधी बहस लादकर बुनियादी समस्याओं की ओर से पार्टी की शक्ति को हटा दिया था। लेनिन की प्रतिभा ने इन तमाम परस्पर-संबद्ध, पर कभी-कभी परस्पर-विरोधी लगनेवाली समस्याओं तथा आवश्यकताओं के उल-झाव में से भी सही रास्ता निकाला और उस रास्ते पर पार्टी और सोवियत सरकार का विश्वासपूर्वक नेतृत्व किया।

लेनिन ने १९२१ के प्रारंभिक महीनों को नई आर्थिक नीति में संक्रमण का रास्ता निकालने और उसकी तैयारी करने, कमिंटर्न की तीसरी कांग्रेस की तैयारी करने, दसवीं पार्टी कांग्रेस के प्रस्तावों का मसविदा बनाने और सोवियतों की आठवीं कांग्रेस द्वारा दिसंबर १९२० में स्वीकृत गोएलरो योजना* के कार्यान्वयन के चिंतन-मनन में बिताया। यह योजना समाजवादी आधार पर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की बहाली और विकास की एक जबर्दस्त योजना थी। इसके साथ ही, लेनिन को आए दिन की चालू आवश्यकताओं से पैदा होनेवाली अनेक व्यावहारिक तथा तात्कालिक समस्याओं को भी हल करना होता था।

---

*गोएलरो योजना – सोवियत रूस की बिजलीकरण योजना। यह देश की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास की पहली दीर्घकालिक योजना थी, जिसे लेनिन के आदेशों पर रूसी राजकीय बिजलीकरण आयोग ने १९२० में तैयार किया था। – सं०

जैसा कि दस्तावेज़ों और सेक्रेटरियों की तहरीरों से प्र
निन ने २ फ़रवरी १९२१ का दिन इस प्रकार बिताया:
व्लादीमिर इल्यीच ने ४ सभाओं की अध्यक्षता की। आर्थिक
ग की बैठक ११ बजे दिन से २ बजे दिन तक चली और
य समिति के पोलिटब्यूरो की बैठक २ बजे से ४ बजे तक।
व लेनिन पोलिटब्यूरो की बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे, उस
मय उन्हें पेत्रोग्राद गुबर्निया समिति के सेक्रेटरी का भेजा हुआ
एक संदेश प्राप्त हुआ, जिसमें पेत्रोग्राद की बेचैन स्थिति तथा मज़-
दूरों को खाने का राशन न मिलने और जलावन के अभाव के
कारण पुतीलोव, बाल्टिक तथा कुछ दूसरे कारखानों की बंदी की
सूचना दी गई थी। लेनिन ने जवाब में निम्नलिखित तार भेजा,
"कल श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद ने १ करोड़ ८५ लाख पूड*
कोयला विदेशों से खरीदने का फ़ैसला किया। भोजन की स्थिति
सुधरेगी क्योंकि आज हमने काकेशिया से खाद्यान्न पहुंचाने के लिए
दो और रेलगाड़ियां देने का फ़ैसला किया है।"

व्लादीमिर इल्यीच ने ६ बजे से ७ बजे तक शिक्षा जन-
कमिसारियत के पुनर्गठन से संबंधित रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बो-
ल्शेविक) की केंद्रीय समिति द्वारा नियुक्त आयोग की बैठक की
अध्यक्षता की। बैठक के दौरान उन्हें अपनी सेक्रेटरी का एक नोट
प्राप्त हुआ, जिसमें लिखा था, "क्या आप आज सोकोलोव (साइ-
बेरियाई क्रान्तिकारी समिति के एक सदस्य) को मिलने का समय
दे सकेंगे? वह कहते हैं कि उनका काम बेहद फ़ौरी है। वे दिन में
कई टेलीफ़ोन करते हैं और बहुत चाहते हैं कि आप उन्हें मिल
का समय दें।" लेनिन ने उस नोट के पीछे जवाब लि
दिया, "बहुत अच्छा। मेरे पास आज १) क्रिजिजानोव्
आ रहे हैं। एक घंटे के लिए। २) उनके बाद सो
लोव। उनका टेलीफ़ोन नम्बर ले लीजिए।" उस दिन
में रात को व्लादीमिर इल्यीच ने फिर शिक्षा जन-कमिसा
के पुनर्गठन से संबंधित आयोग की बैठक की अध्यक्षता

* पूड – एक पुराना रूसी तौल-माप जो १६.३ किलोग्राम के
है। – सं०

उस दिन व्लादीमिर इल्यीच ने अन्य निम्नलिखित कार्य भी किये:

पत्र लिखे – १) मार्क्स-एंगेल्स संस्थान के संचालक को, जिसके साथ उन्हें मार्क्स और एंगेल्स के पत्रों का एक जर्मन संस्करण भेजा और उनसे यह निवेदन किया कि उनके (लेनिन के) द्वारा रेखांकित किए हुए हिस्से कहां से लिए गए थे, वे पत्र पूरे के पूरे कहां छपे थे और क्या शीदेमान ऐण्ड कम्पनी से मार्क्स और एंगेल्स के पत्रों की पूरी जिल्द (या उनकी फोटो प्रतिलिपियां) खरीदना और जो कुछ प्रकाशित हो चुका था वह सारा का सारा मास्को में संग्रह करना संभव था, २) जन-कमिसार परिषद के प्रबंधक नि० गोर्बुनोव को, जिसमें यह कहा गया था कि हमारे अमरीका-स्थित प्रतिनिधि, ले० क० मार्टेन्स को हमारी मिलों और फैक्टरियों के लिए तकनीकी सहायता की व्यवस्था करने में मदद दी जानी चाहिए, ३) लघु जन-कमिसार परिषद के उपाध्यक्ष को, जन-कमिसार परिषद को कमिसारों द्वारा दी गई रिपोर्ट के बारे में, जिसमें लेनिन ने अधिक महत्वपूर्ण प्रस्तावों की तामील की ओर परिषद का ध्यान आकर्षित कराया था, विशेष रूप से दफ्तरी कर्मचारियों की बढ़ती हुई संख्या तथा सरकारी संस्थाओं में और अधिक कर्मचारियों की भर्ती पर पाबंदी लगाने के फैसले को पूरा करते हुए मास्को में रिहाइशी मकानों के बटवारे पर नियंत्रण की ओर ध्यान दिलाया था।

व्लादीमिर इल्यीच ने कुछ पत्र पढ़े, एक तार पढ़ा और उनपर टीपें लिखीं १) पत्र अमरीकी पत्रकार, लुईज़ा ब्रयान्ट (रीड) के थे, जिन्होंने एक पत्र में मुलाकात के लिए आग्रह किया था और दूसरे में लेनिन के लिए कुछ किताबें भेजे जाने की सूचना दी थी, २) तार रोस्तोव-ऑन-दोन से प्राप्त हुआ था, जिसके द्वारा घुड़सवार सेना के चीफ आफ स्टाफ ने १६वीं डिवीज़न के बर्फीले तूफान में फंस जाने की सूचना दी थी।

उन्होंने खदान मजदूरों की भर्ती के बारे में श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद द्वारा पास किए गए एक प्रस्ताव के संबंध में सिरोमोलोतोव का एक नोट पढ़ा और जवाब में लिखा, "दस-पंद्रह पंक्तियों में सटीक और स्पष्ट ढंग से केंद्रीय समिति को लिखिए।"

उन्होंने सिरोमोलोतोव की उराल में की गई तैनाती की सनद पर हस्ताक्षर किए, जिसके द्वारा उन्हें उराल के उद्योगों का मुआइना करने और उनकी उत्पादनशीलता को तत्काल बढ़ाने के लिए फ़ौरी कार्रवाइयां करने का अधिकार दिया गया था।

लेनिन ने नि० अ० सेमाश्को से प्राप्त एक पत्र पढ़ा, जिसमें मज़दूरों को कीमिया लानेवाली अस्पताली रेलगाड़ियों के रास्ते में कोई बाधा न होने देने संबंधी कार्रवाई करने का निवेदन किया गया था।

शिक्षा जन-कमिसारियत के पुनर्संगठन के लिए नियुक्त केंद्रीय समिति के आयोग की बैठकों में मि० नि० पोक्रोव्स्की की शिरकत के संबंध में लेनिन और उनकी सेक्रेटरी के बीच नोटों का आदान-प्रदान हुआ। उनकी सेक्रेटरी ने नोट लिखकर पूछा कि वह व्लादीमिरोव को कब मिलने का समय दे सकते हैं, जिसके जवाब में उन्होंने लिखा, "व्लादीमिरोव से कहिए कि वह अपना टेलीफ़ोन नंबर दे जाएं, मुझे आशा है कि मैं आज रात में ९ या १० बजे तक खाली हो जाऊंगा।"

उन्होंने फ़सल ख़राब होने से पीड़ित किसानों को सहायता देने के बारे में रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केंद्रीय समिति के पोलिटब्यूरो के प्रस्ताव के मसविदे में कुछ संशोधन किए।

उन्होंने साइबेरिया में भूधारण और खाद्य-नीति के पुनर्संगठन के संबंध में साइबेरियाई क्रान्तिकारी समिति के सदस्य व० न० सोकोलोव की रिपोर्ट और प्रस्ताव के मसविदे को पढ़ा। उन्होंने साइबेरिया की स्थिति के बारे में ओम्स्क से प्राप्त एक तार भी पढ़ा और कुछ टीपें लिखीं।

उन्होंने श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद की प्रशासनिक बैठक के कार्य-विवरण में कुछ संशोधन करने के बाद उसपर हस्ताक्षर किए। इस कार्य-विवरण में ईंधन की समस्याओं (उसकी खुदाई, लदाई, ढुलाई), मोटर यातायात के लिए विशेषज्ञ और जलपोतों के निर्माण तथा उनकी मरम्मत के काम के लिए मज़दूर हासिल करने के सवाल, अखिल रूसी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था परिषद के भू-गणितीय विभाग के लिए लाल सेना में से भू-अभियंता नियुक्त करने के

मामलों, आदि के संबंध में ५६ मुद्दे और १५ प्रस्ताव शामिल थे।

लेनिन ने वित्तीय प्रश्नों के संबंध में हुई लघु जन-कमिसार परिषद की बैठक के कार्य-विवरण के १२ में से ६ मुद्दों को मंजूर किया और उनपर हस्ताक्षर किए।

उन्होंने आर्थिक आयोग की बैठक के कार्य-विवरण को भी मंजूरी दी और उसपर हस्ताक्षर किए।

लेनिन ने भगोड़ेपन के खिलाफ संघर्ष करने की कार्रवाइयों के संबंध में जन-कमिसार परिषद और अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति के प्रस्ताव, 'पोलैण्ड के युद्धबंदियों' और '१९२१ के पूर्वार्द्ध के लिए स्वशासी वोत्स्क इलाके की क्रान्तिकारी समिति को १५० करोड़ रूबल देने' के संबंध में जन-कमिसार परिषद के फैसले पर हस्ताक्षर किए।

उन्होंने जिंस के रूप में बोनसों की अदायगी के बारे में एक अस्थायी कानून का अनुमोदन किया।

२ फरवरी १९२१ को व्लादीमिर इल्यीच ने जिन बैठकों की अध्यक्षता की, उनमें विचाराधीन सामग्रियों को छोड़कर कम से कम ४० दस्तावेज लिखे, पढ़े, उनपर टीपें लिखीं या हस्ताक्षर किये।

उसी दिन व्लादीमिर इल्यीच ने राजकीय योजना आयोग के अध्यक्ष ग० म० क्रजिजानोव्स्की*, वित्त के उप जन-कमिसार व्लादीमिरोव, साइबेरियाई क्रान्तिकारी समिति के सदस्य व० न० सोकोलोव तथा रूजिच्का नामक एक चेक साथी को मुलाकात का समय दिया।

लेनिन के लिए वह महज एक साधारण कार्य-दिन था।

* ग० म० क्रजिजानोव्स्की (१८७२-१९५९) – क्रान्तिकारी आंदोलन के एक सबसे पुराने कार्यकर्ता, ऊर्जाविज्ञान के विशेषज्ञ और १८९३ से कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य। १९२१ में राजकीय योजना आयोग के अध्यक्ष बने। – सं०

क्रेमलिन में लेनिन का अध्ययन-कक्ष

१९१८ और १९१९ में व्लादीमिर इल्यीच को जिन अत्यधिक असुविधापूर्ण परिस्थितियों में काम करना पड़ता था, आज उनकी कल्पना करना भी कठिन है। वास्तव में, उनका औचित्य सिद्ध करना मुश्किल प्रतीत होता है, लेकिन उनका कारण उस समय की परिस्थितियों में ही निहित था: देश युद्ध से तबाह था, हर दिन सोवियत सत्ता का अस्तित्व खतरे में था और तीव्र संघर्ष चल रहा था।

दूसरी संस्थाओं ने उस पुरानी मशीनरी को विरासत में पाया था, जिसके पास अपनी तमाम अपूर्णताओं के बावजूद आवश्यक अनुभव था और जो देखने में साज-सज्जा से अच्छी तरह लैस थी। जन-कमिसार परिषद की मशीनरी – इतिहास की पहली मजदूर-किसान सरकार की मशीनरी – को स्वभावतः नए ढंग से बनाया जा रहा था और उसके कार्यकर्ताओं में से बहुसंख्यक लोगों ने पहले कभी दफ़्तरों में काम नहीं किया था। इसका एक अच्छा पहलू भी था, क्योंकि नौकरशाही के ठीक अभाव ने ही दूसरी संस्थाओं की मशीनरी के मुकाबले में जन-कमिसार परिषद की मशीनरी को वरिष्ठता प्रदान की थी।

हमने खुद सृजनात्मक ढंग से जन-कमिसार परिषद की मशीनरी का निर्माण किया था। लेकिन अफ़सोस कि हम अक्सर अपने को वही खोजें करते हुए पाते थे, जो बहुत पहले की जा चुकी थीं। हमने धीरे-धीरे, क्रमशः, एक-एक पग करके काम करना और

काम की परिस्थितियो को व्लादीमिर इल्यीच के लिए सुविधाजनक बनाना सीखा।

मैं व्लादीमिर इल्यीच के क्रेमलिन-स्थित अध्ययन-कक्ष का, जैसा कि वह शुरू मे था और जैसा कि वह हमारे ज़माने तक महज़ थोडी सी तब्दीलियो के साथ बना रहा, वर्णन करना चाहती हू। व्लादीमिर इल्यीच ने मास्को के अपने पाच साल के कार्य-काल मे अपना अधिकतर समय उसी कमरे मे बिताया। वह सादगी के साथ सजा हुआ कमरा ससार के हर सिरे के लोगो के विचारों, आशाओ और प्यार का केंद्र था, जहा हमारे युग की महानतम प्रतिभा ने चितन किया, सृजन किया और जनता के सुख के लिए सघर्ष किया।

जब सरकार पहले पहल पेत्रोग्राद से हटकर मास्को आई, तब क्रेमलिन मे जन-कमिसार परिषद का पूरा दफ्तर छ कमरो का था। वे सभी कमरे एक सीध मे थे और उनमें लेनिन का अध्ययन-कक्ष भी शामिल था। जन-कमिसार परिषद के दफ्तर से लगा हुआ, एक चौडे बरामदे के सिरे पर उनका चार छोटे कमरो का अपना मकान था, जो बहुत ही मामूली ढग से सजा हुआ था। बाद मे जब जन-कमिसार परिषद का दफ्तर इमारत के दूसरे खड तक फैल गया, तब व्लादीमिर इल्यीच के मकान के साथ एक और कमरा जोड दिया गया। वह कमरा उनकी बीमारी के दौरान ड्यूटी पर तैनात डाक्टरों के इस्तेमाल के लिए था।

व्लादीमिर इल्यीच को अपने मकान से अध्ययन-कक्ष पहुचने के लिए बरामदे से होकर जाना पडता था। १६१८ मे एक सकरे से गलियारे को छोडकर उस सारे के सारे बरामदे में तार कार्यालय था, जहा तार से समाचार भेजने और हासिल करने तथा सीधी लाइन से टेलीफोन सपर्क कायम करने का काम रात-दिन तेज गति से चलता रहता था। सभी फौरी और गुप्त सचारो के लिए इसी तार-सयत्र का उपयोग किया जाता था, जिसके आपरेटर विश्वसनीय और आजमाये हुए लोग थे।

१६१८ मे जो कोई भी व्लादीमिर इल्यीच से मिलने आया होगा, उसे वह तार-सयत्र याद होगा। वह लेनिन के अध्ययन-

कक्ष का एक अभिन्न अंग था। वह देश के जीवन की सुषुम्ना नाड़ी था। वहीं लड़ाई के सभी मोर्चों से रिपोर्टें आती थीं और वहीं से हुक्म जारी किये जाते थे।

इसी बरामदे से ही होकर अध्ययन-कक्ष का वह दरवाज़ा था, जिससे गुज़रकर व्लादीमिर इल्यीच आम तौर से जाते थे। सड़क की तरफ़ निकलनेवाला दरवाज़ा ठीक उस दरवाज़े के सामने था। १९१८ के अंत में इस तार-संयंत्र को अन्यत्र हटा दिया गया और बरामदे में अध्ययन-कक्ष के दरवाज़े के बाहर एक संतरी तैनात कर दिया गया। बाद में संतरी की जगह अखिल रूसी असाधारण आयोग के एक कार्यकर्ता ने ले ली।

जन-कमिसार परिषद में जानेवाले हर एक को उस दरवाज़े से गुज़रना होता था और उन दिनों जिस किसी को भी जन-कमिसार परिषद में कोई काम होता, वह लगभग बेरोक दाखिल हो सकता था।

लेनिन के अध्ययन-कक्ष से एक दूसरा दरवाज़ा तथाकथित "कोठरी" (क्रैमलिन की "ऊपरी मंजिल के फ़ोन-केंद्र") में जाता था। "कोठरी" भी व्लादीमिर इल्यीच के अध्ययन-कक्ष का उतना ही अभिन्न अंग थी, जितना कि बाहरी बरामदे का तार-संयंत्र और वह अंत तक वैसी ही बनी रही। जो साथी उन दिनों लेनिन से मिलने आते थे, उन सबको निश्चय ही "कोठरी" और तार-संयंत्र दोनों की याद होगी। "कोठरी" के ज़रिए जन-कमिसारों के अध्ययन-कक्षों और घरों, रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केंद्रीय समिति, लाल सेना के मुख्यालयों में पेत्रोग्राद, ख़ारकोव तथा दूसरे नगरों के साथ संपर्क स्थापित किया जा सकता था।

वह लड़ाई के मोर्चों, "विनाशपूर्ण परिस्थितियों", संकटों और सफ़ेद गार्डों की साजिशों का समय था। पहले व्लादीमिर इल्यीच के अध्ययन-कक्ष में टेलीफ़ोन नहीं थे और वे "कोठरी" से टेलीफ़ोन किया करते थे। संकट की घड़ियों में जबकि सभी व्लादीमिर इल्यीच के गिर्द जमा हो जाते थे, दूसरे साथी भी "कोठरी" में चले आते थे। १९१८ और १९१९ के टेलीफ़ोन आपरेटर परखे हुए और आजमाए हुए कार्यकर्ता थे, जो जन-कमिसार परिषद

के साथ स्मोल्नी* मे आए थे। व्लादीमिर इल्यीच उन्हे अपने सेक्रेटरी कहते थे और अक्सर उनसे फुटकर काम लेते रहते थे जैसे कि पत्रो का भेजना, मुलाकात की दरख़ास्ते लाना और उनके जवाब ले जाना, टेलीफोन से सदेश पहुचाना, आदि। सबसे पहले "कोठरी" मे ही सारी ख़बरे आती थी। वहा मे होकर एक दरवाज़ा सीढियों पर निकलता था और अध्ययन-कक्ष की ओर खुलनेवाला दरवाज़ा कभी बंद नही किया जाता था। फलत, ऐसी कई घटनाए हुई कि अजनबी लोग "कोठरी" की तरफ से बेरोक लेनिन के अध्ययन-कक्ष मे घुस आते थे। इसे ध्यान मे रखते हुए "कोठरी" के बाहरी दरवाजे को बद रखा जाने लगा और उसके बाहर एक सतरी तैनात कर दिया गया, जिसे यह आदेश दिया गया कि वह एक विशेष सूची मे दर्ज नामोवाले चद साथियो के अतिरिक्त और किसी को अदर न जाने दे।

मुझे याद है कि जन-कमिसार परिषद की एक बैठक मे खाद्य के जन-कमिसार त्सुरूपा को अधिक परिश्रम और भूख के मारे गश आ गया और उन्होने चाहा कि कुछ मिनट आराम करने के लिए "कोठरी" के सोफे का इस्तेमाल कर ले। लेकिन अदर जाने देने के लिए सतरी को समझाने-बुझाने का सारा प्रयत्न व्यर्थ हो गया।

अत मे जब लेनिन के अध्ययन-कक्ष मे टेलीफोन लग गए और जिदगी अधिक आसानी से चलने लगी, तब "कोठरी" के कामो मे टेलीफोन-केद्र के कामो के अतिरिक्त लेनिन के छोटे-मोटे काम करना भी शामिल हो गया।

टेलीफोन आपरेटरो का कर्मचारी-मण्डल भी बदल गया। व्लादीमिर इल्यीच अक्सर "कोठरी" की सहायता लेते थे, खासकर उस समय जब वे किसी पत्र को जल्दी से जल्दी पहुंचवाना और फौरन उसका जवाब मगवाना चाहते थे। उनकी हिदायत मे हम

---

*स्मोल्नी – पेत्रोग्राद मे एक भवन, जिसमे क्राति से पहले अभिजातो का एक बोर्डिंग स्कूल था। १६१७ मे स्मोल्नी अक्तूबर क्राति का मुख्यालय बन गया। वही से लेनिन ने सशस्त्र विद्रोह का सचालन किया था। *अस्थायी सरकार के* उलट दिये जाने के बाद उसे जन-कमिसार परिषद और अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति ने अपने अधिकार मे ले लिया था। – स०

उन लिफ़ाफ़ाबंद पत्रों का रेकार्ड रखते थे, जो वे हमें देते थे। उस रेकार्ड में पत्रों की रवानगी और पहुंचने के समय दर्ज किए जाते थे। लेनिन की बीमारी के दौरान "कोठरी" के ज़रिए गोर्की* से संपर्क क़ायम रखा गया। व्लादीमिर इल्यीच की ज़रूरत की सारी चीज़ें "कोठरी" में ही पहुंचती थीं, जहां से उन्हें उनके पास भेज दिया जाता था।

अध्ययन-कक्ष का तीसरा दरवाज़ा जन-कमिसार परिषद के सम्मेलन-हॉल में खुलता था, जो शुरू में दो खिड़कियोंवाला एक कमरा मात्र था और जिसे "लाल हॉल" कहा जाता था। १९१८ और १९१९ के वर्षों में व्लादीमिर इल्यीच अपनी हर शाम इसी कमरे में गुज़ारते थे, क्योंकि उन दिनों जन-कमिसार परिषद की बैठकें इतवार को छोड़कर हर दिन हुआ करती थीं। लोगों के धूम्रपान करने से, वहां सांस लेना भी मुश्किल होता था। जब ज़ख़्मी होने के बाद व्लादीमिर इल्यीच स्वस्थ होकर काम पर वापस आए, तो डाक्टरों ने उन्हें धुएं से भरे कमरे में काम करने से मना करना ज़रूरी समझा और सम्मेलन-हॉल में धूम्रपान पर रोक लगा दी गई। बगल के कमरे में भी दो खिड़कियां थीं। इसलिए सम्मेलन-हॉल को और बड़ा तथा खुला बनाने के लिए १९२१ में बीच की दीवार को तोड़ दिया गया, ताकि उसमें एक सीध में चार खिड़कियां हो जाएं।

लेनिन के जीवन-काल में जन-कमिसार परिषद का कार्यालय सम्मेलन-हॉल में था। इसका कारण एक तो स्थानाभाव था, लेकिन व्लादीमिर इल्यीच के आदेशों की अविलंब तामील के लिए उनके निकट रहने की आवश्यकता भी इसका कारण थी।

लेनिन के सभी आदेशों की असाधारण तैयारी के साथ और पूर्णतया तामील की जाती थी। मुझे एक बार की एक मज़ाक़पूर्ण घटना याद आती है, जबकि हमारी एक अतिउत्साही कार्यकर्त्री

---

*गोर्की – मास्को से ३५ किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक स्थान, जहां सितंबर १९१८ के अंत से बराबर लेनिन अपनी छुट्टियों के दिन बिताते थे। वहीं पर उन्होंने अपनी कई कृतियां लिखीं। मई १९२३ के मध्य से उन्होंने अपने जीवन का अंतिम वर्ष वहीं बिताया और वहीं २१ जनवरी १९२४ को उनका देहांत हो गया। वहां वह जिस मकान में रहते थे, उसे अब म्यूज़ियम बना दिया गया है। – सं०



जून-जुलाई १९२१ में हुई [illegible]
मच की [illegible]



नवम्बर १९२१ में अमरीकी अर्थशास्त्री क्रिस्टेन्सेन के साथ अपने अध्ययन-कक्ष में बातें करते हुए
व्ला० इ० लेनिन

न पेश करती हो। अपवाद केवल एक बड़ी और पुरानी घड़ी थी, जो सदा ग़लत समय बताती थी। प्रतिदिन एक मिनट भी सुस्त या तेज़ हो जानेवाली घड़ी ब्लादीमिर इल्यीच के लिए काफ़ी बुरी होती और यह घड़ी तो कभी-कभी पंद्रह मिनट तक खा जाती थी! उसके लिए ब्लादीमिर इल्यीच ने उस बूढ़े घड़ीसाज़ को अनेक बार बुलाया, जो क्रेमलिन की तमाम घड़ियों में चाभी भरता और उनकी मरम्मत करता था। लेकिन यह घड़ी ज़रूर ही मरम्मत लायक़ न रह गई होगी। फिर भी ब्लादीमिर इल्यीच ने उसे बदलना मंजूर नहीं किया। वे कहते, "दूसरी भी इतनी ही बुरी होगी।" लेकिन आख़िरकार उस पुरानी घड़ी के स्थान पर नई घड़ी लगाई ही गई।

न तो अध्ययन-कक्ष के दरवाज़ों पर कोई पर्दा था और न ही खिड़कियों पर। लेनिन की ऐसी ही इच्छा थी। वह पर्दे नापसंद करते थे और लटकते हुए पर्दों को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे, क्योंकि पर्दे द्वारा बाहरी संसार से कटा हुआ कमरा उन्हें तंग और घुटन भरा लगता था।

अध्ययन-कक्ष में १८ डिग्री सेंटीग्रेड तापमान रखना होता था, क्योंकि कमरे का अधिक तापमान ब्लादीमिर इल्यीच के लिए अनुकूल नहीं पड़ता था।

वे अपने अध्ययन-कक्ष के आदी हो गए थे और उसे पसंद करते थे। हमारे अनेक बार कहने पर भी उन्होंने इमारत के दूसरे खंड में किसी बड़े और बेहतर कमरे में अपने अध्ययन-कक्ष का हटाया जाना मंजूर नहीं किया और उतनी ही दृढ़तापूर्वक अपनी मेज़ बदलकर कोई बढ़िया और बड़ी मेज़ लेने से भी इनकार कर दिया।

कमरे के लगभग बीच में स्थित उनकी मेज़ पर पड़ी हुई हर एक चीज़ का अपना निश्चित स्थान और प्रयोजन था। दाहिनी ओर लाउड स्पीकर के साथ तीन टेलीफ़ोन थे। इस बात को हर कोई जानता है कि लेनिन के काम में टेलीफ़ोन की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण थी और उसका इस्तेमाल वे कितनी प्रायिकता से करते थे। इसलिए यह अच्छी तरह समझा जा सकता है कि टेलीफ़ोन के ठीक तरह काम न करने पर, विशेषतः दूसरे शहरों और दूर

की जगहो से बातचीत करते समय अच्छी तरह सुनाई न देने पर, टेलीफोन से शोर या खलल डालनेवाली आवाजें निकलने पर व्लादीमिर इल्यीच कितना नाराज होते होंगे। जन-कमिसार परिषद के प्रबधक डाक-तार-विभाग के जन-कमिसार तथा दूसरे अधिकारियों के नाम व्लादीमिर इल्यीच के अनेक लिखित और जबानी आदेश हमारी मार्फत भेजे जाते थे, जिनमें टेलीफोन के दोषहीन ढग से काम करने की व्यवस्था करने की माग होती थी। लेकिन प्रत्यक्ष ही यह किसी के भी बस की बात नही थी और खराबिया बहुत ही देर मे दूर हो पाती थी।

मुझे याद है कि १६२२ के शुरू मे जब व्लादीमिर इल्यीच गोर्की मे थे तब मैंने उनसे टेलीफोन पर बाते की। वहा पर उनके लिए सीधी लाइन के साथ टेलीफोन लगाया गया था और वे अपनी हिदायतें तथा अपने खत मुझे बोलकर लिखवाते थे। लेकिन वह टेलीफोन भी निर्दोष नही था। उस समय शोर और खलल डालनेवाली आवाजों से व्लादीमिर इल्यीच को सभवत इस कारण विशेष रूप से चिढ पैदा होती थी कि उनकी बीमारी बढना शुरू हो गई थी। प्राय हर एक बातचीत मे वे टेलीफोन के काम करने पर टीका-टिप्पणी करते थे। "आज तो टेलीफोन ठीक काम करता रहा है," वह कहते, या "एक मिनट पहले मैं आपकी आवाज अच्छी तरह सुन सकता था, लेकिन अब वह किसी कारण से खराब हो गया है," आदि। हमे खारकोव लाइन की याद खास तौर से आती है, जिसका इस्तेमाल व्लादीमिर इल्यीच अधिक प्रायिकता से करते थे और जो हमेशा खराब होती रहती थी।

आम तौर से उनकी बायी तरफ मेज पर कुछ फाइले पड़ी रहती थी। जितने साल भी मैंने व्लादीमिर इल्यीच के लिए काम किया, उतने साल तक बराबर, कभी उनके आदेश पर और कभी अपनी ही पहल पर, कोशिश करती रही कि उन फाइलो को उनके कार्य के लिए अधिक उपयोगी बना दू, मगर वैसा कभी न कर सकी। व्लादीमिर इल्यीच मुझसे अपने फौरी, गैर-फौरी, अहम, कम अहम, निबटाए हुए, गैर-निबटाए हुए और अन्य कागजों के लिए अलग-अलग फाइले बनाने के लिए कहते। मैं फाइले मगाती,

मुनासिब तरतीब से उनमें कागज़ों को रखती, हर एक पर मामले का विवरण लिखकर एक नोट नत्थी कर देती और उनके अंतर्य की सूची साथ लगा देती। तब फ़ाइलें निहायत "यक़ीनी" तरतीब से मेज पर रख दी जाती थीं और... और वहां इतमीनान और शान्ति से पड़ी रहतीं। व्लादीमिर इल्यीच अपनी ज़रूरत के सभी कागज़ों को बस मेज़ के बीचोंबीच जमा कर देते और अगर वे कमरे से बाहर जाते, तो उन्हें एक भारी-भरकम कैंची के नीचे दबा देते। इसका अर्थ होता था कि "छुइए मत!" या कि वह अपनी ज़रूरत के सभी कागज़ों को किसी ऐसी फ़ाइल में भर लेते, जिसका मामले से कोई लगाव नहीं होता और उसे अपने साथ ले जाते। उस फ़ाइल की सामग्री पर जब लेनिन काम करते, तो वह फ़ाइल अत्यंत महत्त्वपूर्ण बन जाती। अंततः वह फ़ाइल बेहद फूल जाती, क्योंकि व्लादीमिर इल्यीच उसमें एक न एक कारण से अधिकाधिक नए कागज़ जोड़ते जाते थे और थोड़े दिनों तक उन्हें किसी को छूने नहीं देते थे। मगर ज्योंही वे मुझे छूने की इजाज़त देते, त्योंही मैं सारे जमा कागजों को छांटती, उन्हें संबंधित फ़ाइलों में लगाती और पुराने पड़ गए कागज़ों को निकालकर पुरालेख-संग्रहालय भिजवा देती।

यद्यपि बाक़ायदा फ़ाइल करने की इन कोशिशों में हमेशा असफलता ही मिलती थी, तथापि किसी न किसी कारण व्लादीमिर इल्यीच उसकी बात उठाते ही रहते थे। उन्होंने एक बार मुझसे कह तक दिया कि "अमुक व्यक्ति के सभी कागज़ात बाक़ायदा रहते हैं और मैं वैसा करना सीख ही नहीं सकता।" अंततोगत्वा हमने उनके लिए विभागों में बंटी हुई एक बड़ी फ़ाइल चालू की, लेकिन नतीजा फिर भी कुछ भिन्न नहीं हुआ। "बेहद फ़ौरी और बेहद अहम" विभाग ने तो सक्रिय जीवन बिताया, लेकिन दूसरे विभाग "सुख की नींद सोते रहे।" जीवन इतनी तेज़ी के साथ गतिमान था, उसमें इतना कुछ "बेहद फ़ौरी और बेहद अहम" था कि औरों के लिए कोई समय ही नहीं दिया जा सकता था। आखिर लेनिन के काम में कागज़ ही तो सर्वोपरि महत्वपूर्ण नहीं थे। उनके लिए जो कुछ भी जानना जरूरी थी, वह सब बातचीत

और निरीक्षण के ज़रिए जान लेने का उनका एक अपना ढग था।

व्लादीमिर इल्यीच अपनी मेज़ की सभी दराज़ों को तालाबद रखते थे। केवल बायी ओर की ऊपरी दराज खुली रहती थी, जिममे वे अपने लिखित आदेश और हिदायतें रखते थे। हम लोग इन आदेशों और हिदायतों की तुरंत तामील के लिए दिन मे बार-बार निकालते रहते थे।

एक दिन व्लादीमिर इल्यीच बुखारा के एक प्रतिनिधि-मडल से मुलाकात कर रहे थे। जब वे लोग चले गए, तो हमें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सम्मेलन-हॉल मे खुलनेवाला अध्ययन-कक्ष का दरवाज़ा अदर से बद है, हालाकि समय ऐसा था जब लेनिन हमेशा दिन का खाना खाने के लिए घर जाते थे। यह सोचकर कि बरामदे की तरफ के दरवाज़े पर निगरानी रखनेवाले अखिल रूमी असाधारण आयोग के कार्यकर्ता ने दरवाज़ा बद कर रखा है और इस बात की परेशानी महसूस करते हुए कि मेज़ की दराज मे हमारे लिए छोडे गये व्लादीमिर इल्यीच के आदेशों की तामील समय से नहीं हो पाएगी, हमनें अपनी पूरी ताकत से दरवाज़े को पीटना शुरू कर दिया। मिनट-दो मिनट के भीतर व्लादीमिर इल्यीच ने मुस्कराते हुए खुद दरवाज़ा खोला। वे प्रतिनिधि-मडल द्वारा उपहारस्वरूप दी गई बुखारा की राष्ट्रीय पोशाक में थे, जिसे पहनकर आजमाने के लिए उन्होंने दरवाजा बद कर लिया था।

लेनिन की मेज़ पर एक बडी-सी कैंची हमेशा पडी रहती थी, जिससे वे ऐसे लिफाफों को काटकर खोलते थे जिनपर उन्ही के आदेशानुसार "निजी, अन्य कोई न खोले" लिखा होता था और जिनमे उनके निकटतम साथियों के भेजे हुए अत्यत गोपनीय पत्र होते थे। उनकी मेज़ पर किताबों के पन्ने चीरने के लिए एक सीप का चाकू भी रहता था। उसके बारे मे व्लादीमिर इल्यीच विनोदपूर्ण आश्चर्य के साथ कहा करते थे कि "मैंने यों ही चलते तरीके से ज़िक्र कर दिया था कि मैं इस किस्म का चाकू पसद करूगा, और दूसरे ही दिन एक चाकू मेरे पास भेज दिया गया।"

यह कहना ही होगा कि व्लादीमिर इल्यीच काम मे बेतरतीबी से उतना ही नाराज़ और गुस्सा होते थे तथा दोषी को फटकारने

के लिए तैयार रहते थे, जितना कि वे काम के अच्छी तरह और मुस्तैदी के साथ किए जाने पर खुश होते थे और बात छोटी होने पर भी उसकी तारीफ़ करने से नहीं चूकते थे। मुझे अच्छी तरह याद है कि राजकीय प्रकाशन गृह द्वारा निकाले गए १९१९ या १९२० के दीवार-कैलेंडर को देखकर वे कितने प्रसन्न हुए थे। उसमें छपे अंक इतने बड़े-बड़े थे कि उन्हें कमरे के दूसरे सिरे से भी आसानी से देखा जा सकता था। व्लादीमिर इल्यीच ने आंखों में एक चमक के साथ कहा था, "हमारे लोग इन चीज़ों को बनाना जानते हैं? बहुत खूब!" वह कैलेंडर व्लादीमिर इल्यीच की मेज़ के सामने सोफ़े से ऊपर दीवार पर टंगा था और उसके पन्ने वे खुद हर दिन फाड़ते थे।

उनकी मेज़ पर हमेशा खूब बढ़िया बनी हुई पेंसिलें, क़लम और दूसरी लेखन-सामग्रियां, रबड़ से मढ़े सिरेवाली एक छोटी गोंददानी रखी रहती थी, जिसे व्लादीमिर इल्यीच "नाकवाली गोंददानी" कहा करते थे। वे खास गोपनीय पत्रों को मुहरबंद करने में उसका इस्तेमाल करते थे।

जब व्लादीमिर इल्यीच हमें कोई खास गोपनीय पत्र भेजने के लिए देते, तो हमेशा कहते: "इसमें छेद कीजिए, उसमें एक डोरी डालिए और उस डोरी के सिरों को खुद अपने हाथों मुहरबंद कीजिए।" फिर मुस्कराकर आगे कहते, "जानती हैं कैसे किया जाता है?"

व्लादीमिर इल्यीच बहुत विनोदप्रिय व्यक्ति थे। मेरे खयाल में उनके काम करने के ढंग का ज़िक्र करते हुए यह कहा जा सकता है कि वे खुशदिली के साथ काम करते थे। उनकी विनोदबुद्धि असाधारण थी। अपने अध्ययन-कक्ष में किसी से बात करते हुए उन्हें ठहाका लगाते सुना जा सकता था और वह अक्सर जन-कमिसार परिषद की बैठकों में भी हंसा करते थे। उनकी हंसी असाधारण रूप से मुग्धकारी और दुर्भावना-रहित होती थी। उनकी हंसी एक ऐसे आदमी की हंसी थी, जिसमें स्फूर्ति और उत्साह उमड़ रहा हो। उनका यह जोश दूसरों को भी प्रभावित करता था और फलतः उनके इर्द-गिर्द रहनेवाले लोग उल्लास, आनंद और उत्सुकतापूर्वक

रहते थे। केवल काम के अतिम दस सप्ताहों (अक्तूबर-दिसबर १६२२) मे ही, जबकि उनकी बीमारी उनपर बोझ बन चुकी थी, उनकी हसी बहुत कम सुनाई देती थी। विनोद और हंसी के साथ अपने आदेश सुनाने का उनका एक अपना ढग था। उनके साथ काम करना खुशी की बात थी और चाहे उनकी माग जितनी भी कष्टसाध्य क्यों न हो, उनका अनुशासन जितना भी कठोर क्यों न हो, हम उसे खुशी से स्वीकार करते थे।

लेनिन को नरम गद्दीदार कुर्सिया नापसद थी। उनकी मेज़ के साथ वाली कुर्सी मामूली लकडी की हत्थेदार कुर्सी थी, जिसकी सीट और पृष्त पर बेत की बुनावट थी। ऐसी ही एक दूसरी कुर्सी उनके लिए सम्मेलन-हॉल मे रखी रहती थी।

१६१८ मे व्लादीमिर इल्यीच के अध्ययन-कक्ष मे हुई एक छोटी सी सभा के बाद उन्होंने मुझसे अपने लिए एक मेज़ मगाने को कहा, "चार पायो की एक मामूली मेज़, जो बैठने और लिखने दोनो के काम आ सके" (यानी, दोनो तरफ दराजे लगी हुई लिखनेवाली मेज़ नही)। इस मेज़ को लिखनेवाली मेज़ के साथ समकोण पर रखा गया और उसके गिर्द कई बडी-बडी चमडे से मढी हत्थेदार कुर्सिया लगा दी गई। जब कोई व्लादीमिर इल्यीच से मिलने आता, तो वे उठकर उन्ही कुर्सियों मे से एक को लिखनेवाली मेज़ के पास खीच लेते और आगतुक के निकट खिसक जाते। बात को बेहतर सुनने के लिए ज़रा आगे की ओर झुक-झुक जाने का उनका एक अपना ढग था। अगर बातचीत दिलचस्प हो, तो व्लादीमिर इल्यीच कमाल के श्रोता हो सकते थे।

चूकि उनके पाव सर्द हो जाते थे, इसलिए उनकी प्रार्थना पर उनकी मेज के नीचे फर्श पर नमदे का एक टुकडा डाल दिया गया था। एक दिन हमने नमदे के टुकडे की जगह सफेद बालोवाले रीछ की खाल बिछा दी। व्लादीमिर इल्यीच ने इस अनावश्यक ठाट-बाट के लिए मुझे सख्त फटकार सुनायी और जब मैंने उन्हे आश्वस्त किया कि उसी तरह की खाल दूसरी सस्थाओ के औसत दर्जे के कार्यकर्ताओ के अनेक कमरो मे भी मैंने देखी है, तभी जाकर उन्होंने उस तबदीली को किसी तरह मजूर किया।

8–763

उनकी मेज़ पर हरे शीशे के शेड का एक छोटा लैम्प था। शाम को अकेले होने पर व्लादीमिर इल्यीच केवल इसी लैम्प का इस्तेमाल करते थे और झाड़-फ़ानूस नहीं जलाते थे। सारी वत्तियों को पहले बुझाए बिना, उन्होंने कभी एक बार भी अध्ययन-कक्ष नहीं छोड़ा। अगर उन्हें पता चल जाता कि हममें से किसी ने वत्ती जलती हुई छोड़ दी, तो बिजली वर्बाद करने के लिए हमें अगली सुबह डांटना-फटकारना नहीं भूलते। १९२२ के पतझड़ में व्लादीमिर इल्यीच के निवेदन पर शीशेवाले लैम्प शेड को वदलकर उसकी जगह रेशम का शेड लगवाया गया।

व्लादीमिर इल्यीच उस नोटवुक में अपनी टीपें, हिदायतें और मुलाक़ात चाहनेवाले साथियों के नाम लिखा करते थे, जो उनकी मेज़ पर हमेशा पड़ी रहती थी। कभी-कभी टीपें लिखने के लिए वे कैलेंडर के पन्नों को भी इस्तेमाल करते थे।

वरामदे में खुलनेवाले दरवाज़े की वग़ल में एक छोटी मेज़ रहती थी, जिसपर एटलस और नक़्शे रखे रहते थे। लेनिन के काम में नक़्शों का वहुत वड़ा महत्व था। किताबों की एक अल्मारी की निचली दराज़ में नक़्शों का एक पुलिंदा था। भट्ठीवाली दीवार पर खुद व्लादीमिर इल्यीच का चिपकाया हुआ तुर्की और ईरान के साथ रूसी सरहदों का एक नक़्शा था। वह मुझे निरर्थक लगता था, लेकिन व्लादीमिर इल्यीच यह कहकर मुझे उसको उतारने नहीं देते थे कि वह उस स्थान पर उस नक़्शे को देखने के आदी हो गए थे। कुल मिलाकर लेनिन को उस कमरे में रखी अपने इर्द-गिर्द की चीज़ों से आदी होना और उन्हें ज्यों का त्यों वने रहने देना पसंद था। अपरिवर्तित, अपने पुराने, सुपरिचित स्थानों से कभी न हटनेवाली चीज़ों की नीरवता में मानो उन्हें घटनाओं से भरे जीवन की थकान से आराम मिलता हो।

देश के किसी न किसी भाग का नक़्शा, जहां गृह-युद्ध सर्वाधिक निर्णयात्मक मंज़िल पर होता, "मामूली मेज़" पर आम तौर से फैला रहता था। व्लादीमिर इल्यीच अक्सर यह इच्छा प्रकट किया करते थे कि कोई ऐसा उपाय निकल आता, जिससे खुले हुए नक़्शे हमेशा इस्तेमाल के लिए उपलब्ध रहते और ज़रूरत

के अनुसार नक्शो को जल्दी से बदला जा सकता। इस किस्म के उपाय के लिए बहुत दिनो तक निष्फल प्रयास करने के बाद अतत: (मेरा खयाल है, १९१९ के आखिर में या १९२० के शुरू में) अपनी मनचाही चीज़ बनवाने के लिए मैं एक इंजीनियर को ढूढ निकालने मे सफल हुई। एक बडा सा ढाचा बनकर तैयार हुआ, जिसने बरामदे मे खुलनेवाले दरवाजे से लेकर सम्मेलन-हॉल मे खुलनेवाले दरवाज़े तक सारी दीवार को घेर लिया। रूसी सघ के रेलवे-नक्शे को, जो वहा टगा रहता था, दोनों खिडकियो के बीच लगाना पडा, जिससे उस आईने को कमरे से निकाल देने की ज़रूरत पैदा हो गई, जो वहा हमेशा से पडा हुआ था, हालाकि लेनिन को उसकी कोई आवश्यकता नही थी। इस ढाचे की बनावट इस प्रकार थी एक चौखटे में जडे हुए वर्गाकार लिनेन के टुकडे पर बारह बडे-बडे नक्शे चिपकाए गए थे। वह चौखटा एक पाये पर टिका था, जो ऊचाई मे लगभग सवा गज़ था। चौखटे की दायी ओर एक हैंडल लगा हुआ था, जिसकी मदद से लिनेन पर चिपकाए गए नक्शो को चौखटे पर ऊपर-नीचे घुमाया जा सकता था। इजीनियर का कहना था कि उस ढाचे को तैयार करने मे दस मजदूरो ने काम किया था। जब अन्तत उसे लाया गया तो बहुत हलचल रही और मैंने इजीनियर को इस बात के लिए शायद व्यर्थ ही भला-बुरा कहा कि नक्शे बिल्कुल सपाट नही चिपकाए गए थे और धुरा टेढा-मेढा घूमता था। लेकिन व्लादीमिर इल्यीच खुश हो गए और उन्होंने नेकदिली के साथ खराबियो को नजरदाज करते हुए कहा "कपडे पर बिना झुर्रिया पडे कागज चिपकाना मुश्किल काम है। अभी हम वैसा करने की उम्मीद कैसे कर सकते है!"

कमरे की दीवार की सारी खाली जगह किताबो की स्वीडनी किस्म की अल्मारियो से भरी थी। व्लादीमिर इल्यीच की एक छोटी सी लाइब्रेरी थी, जिसमे प्राय दो हजार किताबे थी। उनकी मार्क्स-वादी किताबो मे मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, प्लेखानोव, रोज़ा लुक्ज़ेम-बुर्ग, आदि की कृतिया शामिल थी। उनके पास ग्रानाल, ब्रोकहौस और एफ्रोन के तथा अन्य विश्वकोश थे। बायी दीवार से लगी दो अल्मारियो मे रूसी साहित्य था तोलस्तोय, लेर्मोन्तोव, गोगोल,

तुर्गनेव, उस्पेन्स्की, लेस्कोव, सल्तिकोव-श्चेद्रीन, चेखोव, गोर्की, आदि। वहां स्दीश्चेव, हर्ज़ेन, वेलींस्की, दोब्रोल्यूबोव, पिसारेव, चेरनिशेव्स्की, आदि क्रान्तिकारी जनवादियों और सामाजिक साहित्य लेखकों की भी कृतियां थीं।

शुरू-शुरू में व्लादीमिर इल्यीच के पास कोई लाइब्रेरियन नहीं था और किताबें अल्मारी में यों ही बिना किसी पद्धति के रख दी जाती थीं।

बाद में एक नौजवान साथी को, जिन्हें काम की कुछ जानकारी थी, किताबों को विषयानुसार विभाजित करके उनकी सूची तैयार करने के लिए नियुक्त किया गया। १९२० में राजकीय प्रकाशन गृह की एक कर्मचारी श० म० मानुचार्यान्त्स को लाइब्रेरी चलाने के लिए निमंत्रित किया गया। धीरे-धीरे व्यवस्था क़ायम हुई और किताबों को विभागानुसार लगाया गया। एक छोटा सा विभाग कथासाहित्य का था, जिसमें अधिकतर रूसी क्लासिकीय ग्रंथ थे। दूसरे विभागों में मार्क्सवादी पुस्तकें, विश्वकोश, सामाजिक साहित्य, विदेशी साहित्य, आदि था। व्लादीमिर इल्यीच चाहते थे कि सभी नवीनतम पुस्तकें एक अल्मारी के उस निचली दराज़ में रखी जाएं, जो उस समय संयोग से ख़ाली थी और यद्यपि उन पुस्तकों में से कुछ देखने के लिए उन्हें अल्मारी के सामने उकड़ूं बैठना पड़ता था, फिर भी वह हमें उन पुस्तकों को अन्यत्र नहीं हटाने देते थे। उनका कहना था कि वह उन पुस्तकों के वहीं रखे जाने के अभ्यस्त हो गए हैं।

अख़बारों के पुस्तक-परिचय-विभाग तथा अपने पास भेजी गई पुस्तक-सूचियों पर नज़र दौड़ाते हुए व्लादीमिर इल्यीच जिन पुस्तकों को मंगवाना चाहते थे उनपर लाल या नीली पेंसिल से निशान बना देते थे अथवा इस संबंध में एक पर्चा लिखकर मेज़ की बायीं दराज़ में रख देते थे। जब से लाइब्रेरियन ने काम संभाला, तबसे लेनिन द्वारा मँगाई पुस्तकें दूसरे ही दिन उनके पास पहुंच जाती थीं। "ज़रा सोचिए तो, अभी कल ही मैंने इनके बारे में लिखा था और पुस्तकें अभी ही यहां मौजूद हो गई!" वे ख़ुशी और विनोद भरे आश्चर्य के साथ कहते।

उनकी लिखने की मेज़ की दायीं और बायीं दोनो ओर एक-एक घुमावदार किताबदान थे, जिन्हे लेनिन "चौघुमनी" कहते थे। दाहिने हाथ वाली "चौघुमनी" मे पार्टी और सोवियत साहित्य की चुनी हुई ऐसी पुस्तके, जिनकी व्लादीमिर इल्यीच को हवाले के लिए जरूरत हो सकती थी, तथा कुछ विश्वकोश रखे हुए थे। व्लादीमिर इल्यीच खुद इस बात की फिक्र रखते थे कि ऐसी पुस्तको का चुनाव समझदारी के साथ किया जाए। वे अक्सर उनका उपयोग करते थे और विश्वकोशो को भी हमेशा काम मे लाते थे।

बाए हाथ की "चौघुमनी" मे व्लादीमिर इल्यीच के आदेश पर खाने बनवा दिए गए थे, ताकि उनमे फाइले खडी करके रख दी जाए और मेज़ फाइलो से खाली हो जाए। इसी "चौघुमनी" मे व्लादीमिर इल्यीच उन किताबो को रखते थे, जिन्हे वे जल्दी ही पढने का इरादा रखते थे।

सदर्भ-पुस्तको मे एक रेलवे गाइड था, जिसका व्लादीमिर इल्यीच बार-बार इस्तेमाल करते थे और जो आम तौर से उनकी मेज पर पडा रहता था। एक दिन वह गायब हो गया, जिसका व्लादीमिर इल्यीच को बहुत अफसोस हुआ, क्योकि वे उसमे याद के लिए बहुतेरे निशान बनाते रहते थे। उन्होने हमसे उन सभी साथियो के नाम इस आशय की नोटिस जारी करने को कहा, जो अक्सर उनके दफ्तर मे आते-जाते रहते थे, कि अगर किसी ने रेलवे गाइड ली हो तो वह गाइड की नई प्रति के बदले मे उसे लौटा दे। लेकिन जाच-पडताल का कोई नतीजा नही निकला और वह किताब आखिर नही ही मिली। व्लादीमिर इल्यीच ने नए गाइड पर "लेनिन की प्रति" लिख दिया और हमसे यह कहा कि कमरे मे किताबे बिखरी न रहे, क्योकि साथी किताबे ले जाकर लौटाने की परवाह नही करते।

मेज के पीछे और दीवार से लगी किताबो की अल्मारियो के दाए और बाए दो किताबदान थे, जिनमे रूसी अखबारो का पूरा जिल्दबद सेट और "फ्रासीसी", "जर्मन", "अग्रेज़ी" और "इतालवी" निशानवाली फाइलो मे विदेशी अखबार रखे थे।

वहां १९१७ के 'प्राव्दा' की जिल्दबंद फ़ोटो-प्रतियां भी रखी हुई थीं।

एक दूसरा किताबदान खिड़की के सामने था, जिसमें हम रूसी अखबारों की चालू महीने की प्रतियां और कुछ दूसरी फ़ाइलें रखते थे।

उस किताबदान के सामने टब में एक बड़ा खजूर का पौधा लगा हुआ था। व्लादीमिर इल्यीच उसे बहुत पसंद करते थे और खुद उसकी देखभाल रखते थे। जब उसमें कोई रोग लगना शुरू होता, तो वे फ़ौरन पादप-विशेषज्ञ को बुला भेजते थे। व्लादीमिर इल्यीच तोड़े हुए फूल नापसंद करते थे और कभी उन्हें अपने कमरे में रखने की इजाजत नहीं देते थे। वे उन्हें इसलिए नापसंद करते थे कि वे जल्दी मुरझा जाते हैं।

सोफ़े की बग़ल में ऊपर दीवारगीर पर पेत्रोग्राद सोवियत द्वारा व्लादीमिर इल्यीच को भेंट किया गया मार्क्स का एक चित्र तथा मूर्तिकार आल्तमान द्वारा निर्मित खाल्तूरिन* उद्भृत मूर्ति रखी हुई थी। उस मूर्ति में "खाल्तूरिन" शब्द गहराई से उत्कीर्णित किया गया था, जिससे वह अच्छी तरह दिखाई नहीं देता था। व्लादीमिर इल्यीच ने यह कहकर उसपर नाम खड़िया से लिख दिया कि हर कोई नहीं जानता कि यह किसका चित्र है। बाद में आल्तमान ने उसके ऊपर सुनहरा रंग चढ़ा दिया।

मेज़ पर लेनिन को भेजे गए कई उपहार रखे हुए थे। उनमें था आदमी की खोपड़ी की जांच करता हुआ ढलवें लोहे का बना एक बंदर, काकेशियाई कारीगरी वाला एक क़लमदान, दो छोटे-छोटे लटकते हुए लैम्पों के साथ कार्बोलाइट की एक दावात और गोले की शक्ल के सिगरेट-लाइटर के साथ एक राखदान। ये सभी मजदूरों द्वारा भेंट की गई चीजें थीं।

---

* स० नि० खाल्तूरिन (१८५६-१८८२) – एक रूसी क्रांतिकारी मजदूर, जिसने रूस में 'रूसी मजदूरों का उत्तरी संघ' नामक पहले मजदूर संगठन की स्थापना की थी। ओदेस्सा की फ़ौजी अदालत के सरकारी वकील की हत्या में शरीक होने के कारण खाल्तूरिन को १८८२ में फांसी दे दी गयी। – सं०

व्लादीमिर इल्यीच का कोई चित्र न तो उनके अध्ययन-कक्ष मे था और न जन-कमिसार परिषद के किसी कमरे में, जहा उनके जाने की सभावना होती थी। अगर वह कभी कोई रखे हुए चित्र देख लेते, तो उसे गुस्से के साथ फेंक देते और महज़ जरूरत होने पर और फोटोग्राफरों की ज़ोरदार कोशिश से ही कभी अपने फोटो खिचवाते थे। वे लेनिन का फोटो उतारने के लिए कुछ भी उठा नही रखते थे। मिसाल के लिए, ओत्सुप नाम के एक फोटोग्राफर थे, जो अपनी मुस्तैद सरगर्मी के लिए मशहूर थे। वह एक दिन १६२२ के अक्तूबर मे जन-कमिसार परिषद आए और मुझे चकमा देकर यह यकीन दिला दिया कि उस समय के लिए व्लादीमिर इल्यीच के साथ उनकी मुलाकात तय थी तथा कुछ कहने का इतज़ार किए बगैर ही मेरे पीछे-पीछे सीधे अध्ययन-कक्ष में पहुच गए। इस अनधिकार प्रवेश पर लेनिन बहुत नाराज़ हुए, लेकिन उसके बावजूद फोटो उतरवाने के लिए राज़ी हो गए।

अनेक चित्रकार और मूर्तिकार लेनिन का चित्र और मूर्तिया बनाना चाहते थे, लेकिन आम तौर से वह उनको साफ मना कर देते थे। फिर भी आल्टमान के बहुत दिनों तक प्रार्थना करते रहने पर उन्होंने १६२० में इस शर्त पर उन्हे आवक्षमूर्ति बनाने की इजाजत दे दी कि उसके लिए बैठकों के दौरान उन्हे (लेनिन को) अपना काम करते रहने की आज़ादी होगी। आल्टमान ने उसे दो या तीन बैठकों मे पूरा कर लेने का वादा किया, लेकिन मेरा ख़याल है कि प्राय रोज़ कई घटे काम करते हुए भी उन्हे उसे पूरा करने मे दो महीने लग गए थे। उसी समय अधिक से अधिक आध-आध घटे की दो या तीन बैठकियो मे अद्रेयेव ने व्लादीमिर इल्यीच के कुछ पेसिल रेखा-चित्र बनाए तथा उनके सिर की एक लघु मूर्ति बनाई।

व्लादीमिर इल्यीच बैठकियो मे टेलीफोन पर बात करने, अभ्यागतो से मुलाकात करने, लिखने आदि के काम करते रहे और आम तौर से ऐसा व्यवहार करते रहे मानो मूर्तिकार के वहा होने का उन्हे ज्ञान ही न हो।

दीमिर इल्यीच के अलावा याकोव मिख़ाइलोविच स्वे...
...र दूसरा कोई भी उनके अध्ययन-कक्ष का उपयोग नहीं
...ा। जब ३० अगस्त १९१८ को घायल किये जाने के बाद
वीमार थे, तब उन्होंने या० मि० स्वेर्दलोव को अत्यधिक
...लिक और महत्वपूर्ण कामों को निपटाने के लिए प्रति दिन
...न घंटे अध्ययन-कक्ष में काम करने की अनुमति दे रखी थी।
लगभग दो हफ़्ते चलता रहा।

१९२२ के १२ दिसम्बर का दिन वह आख़िरी दिन था, व्लादीमिर इल्यीच ने अपने अध्ययन-कक्ष में काम करते हुए गुज़ारा था।

चंद महीनों बाद हमें खिड़की से यह देखकर सदमा पहुंचा कि व्लादीमिर इल्यीच को स्ट्रेचर पर इमारत से बाहर लाकर गोर्की गांव ले जाने के लिए मोटरगाड़ी में रखा जा रहा था।

उसके बाद व्लादीमिर इल्यीच ने अपने अध्ययन-कक्ष को केवल एक बार और देखा वह भी सिर्फ़ एक मिनट के लिए। यह १८ अक्तूबर १९२३ की बात है। गोर्की में बाग़ में टहलते हुए उन्होंने एकबारगी मुड़कर गराज की तरफ़ क़दम बढ़ाया, अपनी कार में बैठ गये और ड्राइवर से मास्को ले चलने को कहा। वह १८ अक्तूबर की तिपहरी में मास्को पहुंचे और रात भर अपने मकान में रहे। सवेरे सम्मेलन-हॉल और अपने अध्ययन-कक्ष को एक नज़र देखा तथा टहलने के लिए क्रेमलिन के अहाते में निकल गए। दोपहर के खाने के बाद वे गोर्की वापस लौटे। उनकी कार राजधानी की मुख्य सड़कों से गुजरती हुई कृषि-प्रदर्शनी को, जो उस समय नेस्कूचनी बाग़ में बन रही थी, पार करती हुई आगे बढ़ गई। वह लेनिन की अन्तिम मास्को यात्रा थी।

व्लादीमिर इल्यीच के अनेक छविचित्र हैं और उनके बा...
में अनेक संस्मरण पुस्तकें हैं। लेकिन जिन लोगों ने लेनिन को क...

---

* या० मि० स्वेर्दलोव (१८८५-१९१९) – कम्युनिस्ट पार्टी तथा सो...
राज्य के एक अग्रणी संगठनकर्ता। लेनिन के निकटतम सहयोगी। अक्तूबर ...
के बाद स्वेर्दलोव सोवियतों की अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति के ...
थे। – सं०

जाना या देखा नही है, उनके लिए उनमे से कोई भी छविचित्र लेनिन की शारीरिक सादृश्यता नही प्रस्तुत करता। और जहा तक उनके मानसिक आकृति-अंकन का संबंध है, वह तो और भी कठिन काम है।

व्लादीमिर इल्यीच के व्यक्तित्व के इतने अधिक पहलू थे, उसका इतना विपुल महत्व था कि उनका सच्चा छविचित्र केवल सम्मिलित प्रयत्न से ही बनाया जा सकता है। जो लोग उन्हे अच्छी तरह जानते हैं, वे यदि सामूहिक रूप से काम करते हुए लेनिन के रूप, उनके जीवन और उनकी क्रियाशीलता को व्यक्त करनेवाले अधिकाधिक नए कोण, अधिकाधिक नए ब्यौरे प्रस्तुत करें, तभी यह कार्य सभव है।

मेरी पुस्तक ठीक इसी उद्देश्य का पालन करती है: लेनिन के छविचित्र के सामूहिक काम मे ऐसे कुछ और कोण, ऐसे कुछ और ब्यौरे जोडने का उद्देश्य, जिन्हे मैं विश्वसनीय रूप से सत्य समझती हूं।

मास्को में जन-कमिसार परिषद के काम के प्रारम्भिक महीने

(मार्च-मई १९१८)

१९१८ में ११ मार्च को ८ बजे शाम को व्ला० इ० लेनिन की अगुआई में सोवियत सरकार मास्को आई। दूसरे दिन १२ मार्च को अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति के अखबार 'इज्वेस्तिया' के अंक ४९ में 'हमारे समय का मुख्य कार्यभार' शीर्षक लेनिन का लेख छपा, जो प्रत्यक्षतः या तो ट्रेन में लिखा गया था या देर गए रात को 'नसिओनाल' होटल में लिखा गया था, जहां मास्को आने पर लेनिन ठहरे थे। उस दिन से मास्को सोवियत राज्य की राजधानी बन गया।

ब्रेस्त-लितोव्स्क की शांति-संधि* अभी-अभी संपन्न हुई थी, सातवीं पार्टी कांग्रेस अभी-अभी ख़त्म हुई थी, जिसमें युद्ध तथा शांति के संबंध में लेनिन का प्रस्ताव, "वामपंथी कम्युनिस्टों"**

---

* ब्रेस्त-लितोव्स्क में मार्च १९१८ में सोवियत रूस और जर्मनी, आस्ट्रिया-हंगरी, बुल्गारिया तथा तुर्की के बीच संपन्न हुई शांति-संधि ने साम्राज्यवादी विश्वयुद्ध में रूस की भागीदारी का अंत कर दिया।

शांति-संधि की शर्तें अत्यंत कठोर थीं, किंतु देश के भीतर प्रतिक्रांति तथा विदेशी हस्तक्षेपकारी ताकतों को परास्त करने के लिए, एक सेना संगठित करने और शक्तिसंचय करने के निमित्त अल्पवयस्क सोवियत जनतंत्र को मुहलत की जरूरत थी। जर्मनी में नवंबर क्रांति (१९१८) के बाद उक्त संधि को रद्द कर दिया गया। – सं०

** "वामपंथी कम्युनिस्ट" – बुखारिन, रादेक और प्याताकोव के नेतृत्व में १९१८ में बना एक पार्टी-विरोधी दल, जिसने ब्रेस्त-लितोव्स्क शांति-संधि संपन्न करने संबंधी प्रश्न पर पार्टी के विरुद्ध स्थिति अपनाई। "वामपंथी कम्युनिस्टों" का यह दल क्रान्तिकारी युद्ध के संबंध में अपनी नीति को वामपंथी लफ़्फ़ाज़ी के आवरण में पेश करते हुए वास्तव में नवोदित सोवियत जनतंत्र को, जिसके पास

की दृढ आपत्तियों के बावजूद स्वीकृत हुआ था। बुखारिन के नेतृत्व में "वामपथियो" ने पार्टी की केंद्रीय समिति मे शरीक होने से साफ इनकार कर दिया और केंद्रीय समिति के निर्णयों तथा प्रस्तावों के बावजूद उसके काम में उस समय तक कोई भाग नही लिया जब तक कि १९१८ की गर्मियों मे "वामपंथी कम्युनिस्टो" का दल पराभूत नही हो गया। "वामपथी" समाजवादी-क्रान्तिकारियों* ने भी ब्रेस्त-लितोव्स्क की शाति-सधि के खिलाफ एक खौफनाक आदोलन चलाया।

ऐसी परिस्थितियो मे पार्टी तथा सोवियत सत्ता के सामने लेनिन ने क्या कार्य-भार प्रस्तुत किया? वह था सारी मायूसी को, अपमानजनक सधि सपन्न करने के बारे मे सारी "क्रान्तिकारी" लफ्फाजी को दूर करने और सारी शक्ति बटोरकर, एक-एक ईट करके समाजवादी समाज की मजबूत बुनियाद रखने की शुरूआत करने का कार्यभार, अनुशासन और आत्मानुशासन स्थापित करने, बेहतर सगठन, व्यवस्था, हिसाब-किताब और निरीक्षण कायम करने के लिए अथक परिश्रम करने का कार्यभार। केवल इसी रास्ते पर चलकर एक सैनिक और समाजवादी शक्ति का सर्जन किया जा सकता था, एक शक्तिशाली और प्रचुर साधनो

अभी कोई सेना भी नही थी, साम्राज्यवादी जर्मनी के साथ युद्ध मे फसा देने की दुस्साहसिकतावादी नीति का अनुसरण कर रहा था और इस प्रकार सोवियत सत्ता को खतरे मे डाल रहा था।

लेनिन के नेतृत्व में पार्टी ने "वामपथी कम्युनिस्टों" की उकसावे की नीति का मुहतोड़ जवाब दिया और उन्हे परास्त किया। – स०

* "वामपंथी" समाजवादी-क्रान्तिकारी – समाजवादी-क्रान्तिकारियो की निम्न-पूजीवादी पार्टी का वाम पक्ष। यह पार्टी रूस मे १९०२ में बनाई गई थी। "वामपथी" समाजवादी-क्रान्तिकारी उस पार्टी मे अलग हो गए और उन्होंने दिसम्बर १९१७ मे एक स्वतत्र पार्टी बनाई। किसान समुदाय पर अपना प्रभाव कायम रखने की इच्छा से ("वामपथी" समाजवादी-क्रान्तिकारी अपने को किसानो की पार्टी मानते थे) उन्होने आधिकारिक रूप मे सोवियत सत्ता को स्वीकार किया, हालाकि तथ्यगत वास्तविकता यह थी कि वे कुलको के हितो की हिमायत करते थे। इस तरह वर्ग-सघर्ष के विकास के साथ वे कुलक-विद्रोहो के सगठनकर्ता बने। "वामपथी" समाजवादी-क्रान्तिकारियो ने "वामपथी कम्युनिस्टो" की तरह ही ब्रेस्त-लितोव्स्क शाति-सधि सपन्न किए जाने का विरोध किया। बाद मे उन्होने सोवियत सत्ता के खिलाफ षड्यत्रो मे भाग लिया। किसानो पर अपना प्रभाव खो देने के साथ इस पार्टी का अत हो गया। – स०

से संपन्न राज्य के रूप में ग़रीब और कमज़ोर रूस का पुनर्निर्माण किया जा सकता था।

इस लेख के मूल में वे विचार मौजूद थे, जिन्हें कुछ समय बाद लेनिन ने अपने लेख 'सोवियत सत्ता के तात्कालिक कार्यभार' में विकसित किया।

मेहनतकश जनता की सभी सोवियतों—नगर, ज़िला और गुबर्निया सोवियतों—को लेनिन तथा बोंच-ब्रुयेविच के हस्ताक्षर से एक गश्ती तार भेजा गया, जिसके द्वारा उन्हें सरकार के मास्को स्थानांतरित होने की सूचना दी गई और यह आदेश दिया गया कि आगे से सभी डाक और तार जन-कमिसार परिषद, मास्को, के पते पर भेजे जाएं।

क्रान्ति के बाद पहली बार १२ मार्च को लेनिन बोंच-ब्रुयेविच के साथ कार में बैठकर त्रोइत्स्किये फाटक के रास्ते क्रेमलिन आये। क्रेमलिन का निरीक्षण करने के बाद व्लादीमिर इल्यीच ने यह जानने में दिलचस्पी ली कि महलों और शस्त्रागार की सारी मूल्यवान वस्तुएं सुरक्षित थीं अथवा नहीं।

उसी दिन लेनिन ने पोलीटेक्निकल म्यूज़ियम के बड़े हॉल में आयोजित मास्को सोवियत की एक सभा में सामयिक समस्याओं पर भाषण किया।

शाम को लेनिन ने एक सभा में भाषण किया, जो फ़रवरी क्रान्ति की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में लेफ़ोर्तोवो में अलेक्सेयेव्स्की सैनिक (घुड़सवारी स्कूल) में हुई थी और जिसमें लगभग दस हज़ार लोग शरीक थे।

१४ से १६ मार्च तक ट्रेड-यूनियन भवन के स्तंभ-हॉल में (जो पहले अभिजातों का क्लब था) सोवियतों की चौथी असाधारण अखिल रूसी कांग्रेस हुई, जो ब्रेस्त-लितोव्स्क शांति-संधि की अभिपुष्टि के लिए आयोजित की गई थी। व्लादीमिर इल्यीच ने १३ मार्च को कांग्रेस के बोल्शेविक ग्रुप के सामने भाषण किया। उन्होंने कांग्रेस के सामने (१४ मार्च को) शांति-संधि की अभिपुष्टि के संबंध में एक विस्तृत रिपोर्ट पेश की और (१५ मार्च को) उपसंहारी भाषण किया।

काग्रेस मे उपस्थिति वहुत वडी थी—१२३२ प्रतिनिधि। 'इज्वेस्तिया' के १५ मार्च, १९१८ के अक ४८ में छपा था: "छ. वजे तक अभिजातो का पुराना क्लव भर गया था। वैठने के लिए उपयुक्त-अनुपयुक्त सारा स्थान श्रोताओ से खचाखच भर गया था।"

मास्को प्रदेश के मजदूरो, किसानो और सैनिकों की ओर से काग्रेस का अभिनदन करते हुए मि० नि० पोक्रोव्स्की ने कहा, "रूस की मेहनतकश जनता के सच्चे प्रतिनिधियो, मास्को का सर्वहारा वर्ग आपका स्वागत करता है!"

काग्रेस को भग करने की कोशिश मे, वामपथी समाजवादी-क्रान्तिकारियो, "वामपथी कम्युनिस्टो", मेन्शेविको और अराजकतावादियो ने ब्रेस्त सधि के खिलाफ अपनी मुहिम को निरतर जारी रखा। मगर उनका अल्पमत था। काग्रेस ने लेनिन द्वारा पेश किए गए प्रस्ताव को प्रवल वहुसख्यक मतो से स्वीकार किया। उन सात वामपथी समाजवादी-क्रान्तिकारियो ने, जिन्हे १० दिसम्बर १९१७ को सरकार मे शामिल किया गया था और जिन्होंने जन-कमिसार परिपद की नीति का अनुसरण करने की शपथ ली थी, किन्तु जो वास्तव मे काम मे वाधा डाल रहे थे, अपनी केद्रीय समिति के आदेश पर सोवियतो की चौथी काग्रेस के वाद जन-कमिसार परिपद से इस्तीफा देने की घोषणा कर दी। इसके साथ ही, अखिल रूसी केद्रीय कार्यकारिणी समिति तथा स्थानीय सोवियतो मे अपने सघर्ष को जारी रखने के इरादे से वे उक्त सस्थाओ मे अपने पदो पर वने रहे।

लेनिन ब्रेस्त सधि के अस्थायित्व और उसकी अयथार्थता को पहले से ही साफ-साफ जानते थे और वह जानते थे कि जर्मन साम्राज्यवाद की सैनिक शक्ति का पराभव अनिवार्य और आसन्न है।

व्ला० द० वोंच-ब्रुयेविच ने अपने सस्मरणो मे लिखा है

"हम अभी मास्को आये ही थे कि जर्मन सरकार ने वढिया टाइपो मे और बढिया कागज़ पर रूसी और जर्मन दोनो भाषाओ मे छपी तथा वढिया जिल्दवदी की हुई शाति-सधि की प्रति हमारे पास भेजी। मुझे वह जन-कमिसार परिपद के प्रवध-कार्यालय मे प्राप्त हुई और मैं उसे लेकर तुरत व्लादीमिर इल्यीच के पास गया।

से संपन्न राज्य के रूप में ग़रीब और कमज़ोर रूस का पुनर्निर्माण किया जा सकता था।

इस लेख के मूल में वे विचार मौजूद थे, जिन्हें कुछ समय बाद लेनिन ने अपने लेख 'सोवियत सत्ता के तात्कालिक कार्यभार' में विकसित किया।

मेहनतकश जनता की सभी सोवियतों – नगर, ज़िला और गुबर्निया सोवियतों – को लेनिन तथा बोंच-ब्रुयेविच के हस्ताक्षर से एक गश्ती तार भेजा गया, जिसके द्वारा उन्हें सरकार के मास्को स्थानांतरित होने की सूचना दी गई और यह आदेश दिया गया कि आगे से सभी डाक और तार जन-कमिसार परिषद, मास्को, के पते पर भेजे जाएं।

क्रान्ति के बाद पहली बार १२ मार्च को लेनिन बोंच-ब्रुयेविच के साथ कार में बैठकर त्रोइत्स्किये फाटक के रास्ते क्रेमलिन आये। क्रेमलिन का निरीक्षण करने के बाद व्लादीमिर इल्यीच ने यह जानने मे दिलचस्पी ली कि महलों और शस्त्रागार की सारी मूल्यवान वस्तुएं सुरक्षित थी अथवा नहीं।

उसी दिन लेनिन ने पोलीटेक्निकल म्यूज़ियम के बड़े हॉल में आयोजित मास्को सोवियत की एक सभा में सामयिक समस्याओं पर भाषण किया।

शाम को लेनिन ने एक सभा में भाषण किया, जो फ़रवरी क्रान्ति की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में लेफ़ोर्तोवो में अलेक्सेयेव्स्की मैनेज (घुड़सवारी स्कूल) में हुई थी और जिसमें लगभग दस हज़ार लोग शरीक थे।

१४ से १६ मार्च तक ट्रेड-यूनियन भवन के स्तंभ-हॉल में (जो पहले अभिजातों का क्लब था) सोवियतों की चौथी असाधारण अखिल रूसी कांग्रेस हुई, जो ब्रेस्त-लितोव्स्क शांति-संधि की अभिपुष्टि के लिए आयोजित की गई थी। व्लादीमिर इल्यीच ने १३ मार्च को कांग्रेस के बोल्शेविक ग्रुप के सामने भाषण किया। उन्होंने कांग्रेस के सामने (१४ मार्च को) शांति-संधि की अभिपुष्टि के संबंध में एक विस्तृत रिपोर्ट पेश की और (१५ मार्च को) उपसंहारी भाषण किया।

कांग्रेस मे उपस्थिति बहुत बडी थी—१२३२ प्रतिनिधि। 'इज्वेस्तिया' के १५ मार्च, १९१८ के अक ४८ मे छपा था "छ बजे तक अभिजातों का पुराना क्लब भर गया था। बैठने के लिए उपयुक्त-अनुपयुक्त सारा स्थान श्रोताओं से खचाखच भर गया था।"

मास्को प्रदेश के मजदूरों, किसानों और सैनिकों की ओर से कांग्रेस का अभिनदन करते हुए मि० नि० पोक्रोव्स्की ने कहा, "रूस की मेहनतकश जनता के सच्चे प्रतिनिधियो, मास्को का सर्वहारा वर्ग आपका स्वागत करता है।"

कांग्रेस को भग करने की कोशिश में, वामपथी समाजवादी-क्रान्तिकारियों, "वामपथी कम्युनिस्टों", मेन्शेविकों और अराजकतावादियों ने ब्रेस्त सधि के खिलाफ अपनी मुहिम को निरतर जारी रखा। मगर उनका अल्पमत था। कांग्रेस ने लेनिन द्वारा पेश किए गए प्रस्ताव को प्रबल बहुसख्यक मतों से स्वीकार किया। उन सात वामपथी समाजवादी-क्रान्तिकारियों ने, जिन्हे १० दिसम्बर १९१७ को सरकार मे शामिल किया गया था और जिन्होंने जन-कमिसार परिषद की नीति का अनुसरण करने की शपथ ली थी, किन्तु जो वास्तव में काम मे बाधा डाल रहे थे, अपनी केंद्रीय समिति के आदेश पर सोवियतों की चौथी कांग्रेस के बाद जन-कमिसार परिषद से इस्तीफा देने की घोषणा कर दी। इसके साथ ही, अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति तथा स्थानीय सोवियतों मे अपने सघर्ष को जारी रखने के इरादे से वे उक्त सस्थाओं मे अपने पदों पर बने रहे।

लेनिन ब्रेस्त सधि के अस्थायित्व और उसकी अयथार्थता को पहले से ही साफ-साफ जानते थे और वह जानते थे कि जर्मन साम्राज्यवाद की सैनिक शक्ति का पराभव अनिवार्य और आसन्न है।

व्ला० द० बोंच-ब्रुयेविच ने अपने सस्मरणों में लिखा है.

"हम अभी मास्को आये ही थे कि जर्मन सरकार ने बढ़िया टाइपों में और बढ़िया कागज़ पर रूसी और जर्मन दोनों भाषाओं मे छपी तथा बढ़िया जिल्दबदी की हुई शाति-सधि की प्रति हमारे पास भेजी। मुझे वह जन-कमिसार परिषद के प्रबध-कार्यालय में प्राप्त हुई और मैं उसे लेकर तुरत व्लादीमिर इल्यीच के पास

से संपन्न राज्य के रूप में ग़रीब और कमज़ोर रूस का पुनर्निर्माण किया जा सकता था।

इस लेख के मूल में वे विचार मौजूद थे, जिन्हें कुछ समय बाद लेनिन ने अपने लेख 'सोवियत सत्ता के तात्कालिक कार्यभार' में विकसित किया।

मेहनतकश जनता की सभी सोवियतों–नगर, ज़िला और गुवर्निया सोवियतों–को लेनिन तथा बोंच-ब्रुयेविच के हस्ताक्षर से एक गश्ती तार भेजा गया, जिसके द्वारा उन्हें सरकार के मास्को स्थानांतरित होने की सूचना दी गई और यह आदेश दिया गया कि आगे से सभी डाक और तार जन-कमिसार परिषद, मास्को, के पते पर भेजे जाएं।

क्रान्ति के बाद पहली बार १२ मार्च को लेनिन बोंच-ब्रुयेविच के साथ कार में बैठकर त्रोइत्स्किये फाटक के रास्ते क्रेमलिन आये। क्रेमलिन का निरीक्षण करने के बाद व्लादीमिर इल्यीच ने यह जानने में दिलचस्पी ली कि महलों और शस्त्रागार की सारी मूल्यवान वस्तुएं सुरक्षित थीं अथवा नहीं।

उसी दिन लेनिन ने पोलीटेक्निकल म्यूज़ियम के बड़े हॉल में आयोजित मास्को सोवियत की एक सभा में सामयिक समस्याओं पर भाषण किया।

शाम को लेनिन ने एक सभा में भाषण किया, जो फ़रवरी क्रान्ति की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में लेफ़ोर्तोवो में अलेक्सेयेव्स्की मैनेज (घुड़सवारी स्कूल) में हुई थी और जिसमें लगभग दस हज़ार लोग शरीक थे।

१४ से १६ मार्च तक ट्रेड-यूनियन भवन के स्तंभ-हॉल में (जो पहले अभिजातों का क्लब था) सोवियतों की चौथी असाधारण अखिल रूसी कांग्रेस हुई, जो ब्रेस्त-लितोव्स्क शांति-संधि की अभिपुष्टि के लिए आयोजित की गई थी। व्लादीमिर इल्यीच ने १३ मार्च को कांग्रेस के बोल्शेविक ग्रुप के सामने भाषण किया। उन्होंने कांग्रेस के सामने (१४ मार्च को) शांति-संधि की अभिपुष्टि के संबंध में एक विस्तृत रिपोर्ट पेश की और (१५ मार्च को) उपसंहारी भाषण किया।

काग्रेस मे उपस्थिति बहुत बडी थी—१२३२ प्रतिनिधि। 'इज्वेस्तिया' के १५ मार्च, १६१८ के अंक ४८ मे छपा था· "छ बजे तक अभिजातों का पुराना क्लब भर गया था। बैठने के लिए उपयुक्त-अनुपयुक्त सारा स्थान श्रोताओ से खचाखच भर गया था।"

मास्को प्रदेश के मजदूरो, किसानों और सैनिको की ओर से काग्रेस का अभिनदन करते हुए मि० नि० पोक्रोव्स्की ने कहा, "रूस की मेहनतकश जनता के सच्चे प्रतिनिधियो, मास्को का सर्वहारा वर्ग आपका स्वागत करता है!"

काग्रेस को भग करने की कोशिश मे, वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारियो, "वामपथी कम्युनिस्टो", मेन्शेविको और अराजकतावादियो ने ब्रेस्त सधि के खिलाफ अपनी मुहिम को निरतर जारी रखा। मगर उनका अल्पमत था। काग्रेस ने लेनिन द्वारा पेश किए गए प्रस्ताव को प्रबल बहुसख्यक मतो से स्वीकार किया। उन सात वामपथी समाजवादी-क्रान्तिकारियो ने, जिन्हे १० दिसम्बर १६१७ को सरकार मे शामिल किया गया था और जिन्होंने जन-कमिसार परिषद की नीति का अनुसरण करने की शपथ ली थी, किन्तु जो वास्तव मे काम मे बाधा डाल रहे थे, अपनी केद्रीय समिति के आदेश पर सोवियतो की चौथी काग्रेस के बाद जन-कमिसार परिषद से इस्तीफा देने की घोषणा कर दी। इसके साथ ही, अखिल रूसी केद्रीय कार्यकारिणी समिति तथा स्थानीय सोवियतो मे अपने सघर्ष को जारी रखने के इरादे से वे उक्त सस्थाओ मे अपने पदो पर बने रहे।

लेनिन ब्रेस्त सधि के अस्थायित्व और उसकी अयथार्थता को पहले से ही साफ-साफ जानते थे और वह जानते थे कि जर्मन साम्राज्यवाद की सैनिक शक्ति का पराभव अनिवार्य और आसन्न है।

व्ला० द० बोंच-ब्रुयेविच ने अपने सस्मरणो मे लिखा है "हम अभी मास्को आये ही थे कि जर्मन सरकार ने बढिया टाइपो मे और बढिया कागज़ पर रूसी और जर्मन दोनो भाषाओ मे छपी तथा बढिया जिल्दबदी की हुई शाति-सधि की प्रति हमारे पास भेजी। मुझे वह जन-कमिसार परिषद के प्रबध-कार्यालय मे प्राप्त हुई और मैं उसे लेकर तुरत व्लादीमिर इल्यीच के पास गया।

"उन्होंने उसे हाथ में लिया, देखा और हंसकर कहा, 'जिल्द अच्छी है, छपाई खूबसूरत है, लेकिन छः महीने बीतते न बीतते इन खूबसूरत काग़जों का नामोनिशान भी बाक़ी नहीं रहेगा।'"

मास्को में हमारे कुछ शुरूआती दिनों का अधिकतर हिस्सा कमिसारियतों को यथास्थान व्यवस्थित तथा संगठित करने में लग गया। अधिकारी साथियों और कुछ कार्यालयों को होटलों में स्थान दिया गया, जहां पहले से स्थान सुरक्षित करा लिए गए थे। व्लादीमिर इल्यीच, नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना और मारीया इल्यीनिच्ना 'नसिओनाल' होटल (सोवियतों के प्रथम भवन) में ठहरे, जहां या० मि० स्वेर्दलोव, जो० वि० स्तालिन, फ़े० ए० द्ज़ेर्जीन्स्की, व्ला० द० बोंच-ब्रुयेविच, अ० द० त्सुरुपा और दूसरे भी ठहरे। विदेशी मामलों की जन-कमिसारियत को 'मेट्रोपोल' होटल (सोवियतों के द्वितीय भवन) में और 'प्राव्दा' के संपादकीय कार्यालय को 'ड्रेस्डेन' होटल में कमरे मिले। रेलवे की जन-कमिसारियत और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की अखिल रूसी परिषद को देलोवोई द्वोर मिला। इसी तरह, दूसरे होटल तथा बड़ी इमारतें भी भर गईं। इस समय ठीक-ठीक यह बताना तो कठिन है कि व्लादीमिर इल्यीच 'नसिओनाल' होटल में कब तक ठहरे, लेकिन वे दस-पंद्रह दिन से अधिक नहीं ठहरे होंगे। क्रेमलिन में जन-कमिसार परिषद के प्रबंध-कार्यालय के लिए कमरों की मरम्मत लेनिन के मकान की मरम्मत से पहले हो गयी। जब तक उनके मकान की मरम्मत हो रही थी, व्लादीमिर इल्यीच होटल से हटने के बाद कुछ दिन तक क्रेमलिन के घुड़सवार कोर की इमारत में रहे। (वहां पर १२ मार्च १९५८ को एक स्मारक-पट्ट लगाया गया)। व्लादीमिर इल्यीच के पास दो कमरे थे। लेनिन मास्को में जन-कमिसार परिषद की पहली बैठकों की अध्यक्षता करने के लिए उन्हीं कमरों से जाते थे। वे जन-कमिसार परिषद के दफ़्तर से लगी, पुरानी दरबार वाली इमारत में अपने निवासस्थान पर या तो अप्रैल महीने के बीच में या अंत में आये।

जन-कमिसार परिषद, लेनिन का अध्ययन-कक्ष और उनका मकान सभी इमारत के एक ही खण्ड में तीसरी मंज़िल पर स्थित

थे। कमरो की योजना और उनके अदर की तरतीब बाद के बरसो की अपेक्षा १९१८ मे कुछ भिन्न थी।

जन-कमिसार परिषद के प्रबध कार्यालय के कर्मचारी-मण्डल मे ११ मार्च १९१८ को ४३ आदमी थे, जिन्हें स्मोल्नी मे लाया गया था और जिनमें मुख्य रूप से छोटे कर्मचारी तथा दूसरे तकनीकी कार्यकर्ता शामिल थे, जैसे कि सफाई करनेवाली औरतें, टेलीफोन-आपरेटर, साइकिल-सदेशवाहक, डाक भेजनेवाले क्लर्क, टाइपिस्ट आदि। शुरू मे जन-कमिसार परिषद के विशेष कार्यालय में सिर्फ चार या पाच आदमी थे, लेकिन मई १९१८ के अत तक १८ आदमी और रख लिए गए। जन-कमिसार परिषद के प्रबध कार्यालय के कर्मचारी-मण्डल मे कमिसारियतो के भारी-भरकम कर्मचारी-मण्डलो की अपेक्षा बहुत कम लोग थे।

मास्को मे जन-कमिसार परिषद की पहली बैठक १८ मार्च को हुई, जिसमे दूसरी बैठक (१९ मार्च) की तरह ही सगठन के प्रश्नो पर विचार-विमर्श हुआ। 'अखिल मत्रिपरिषद सबधी सकट' पहला विचारणीय प्रश्न था, जिसे या० मि० स्वेर्दलोव ने उठाया था यानी "वामपथी" समाजवादी-क्रान्तिकारियो और "वामपथी कम्युनिस्टो" ने जिन पदो से इस्तीफा दिया था, उन पदो पर जन-कमिसारो की नियुक्ति का प्रश्न पहला विचारणीय प्रश्न था। उस दिन की कार्य-सूची मे कृषि, न्याय, डाक-तार और राजकीय सम्पत्ति के जन-कमिसारो तथा राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की अखिल रूसी परिषद के अध्यक्ष के पदो पर नियुक्ति का प्रश्न शामिल था। उस बैठक मे राजकीय दान कमिसारियत के स्थान पर सामाजिक भरण-पोषण कमिसारियत कायम करने, सर्वोच्च सैनिक परिषद की स्थापना करने, आदि के सबध मे एक प्रस्ताव स्वीकृत किया गया।

पहली ही बैठक में स्वेर्दलोव द्वारा पेश किये गये प्रस्ताव पर मास्को के पूंजीवादी अखबारो को फौरन बद कर देने, उनके सपादको तथा प्रकाशको को क्रान्तिकारी अदालत के सामने पेश करने और उनके मामलो मे सख्त से सख्त सज़ा देने का फैसला मजूर किया गया।

१८ मार्च से जन-कमिसार परिषद की वैठकें इतवार को छोड़कर प्रायः रोज़ होने लगीं। कभी-कभी वे वृहस्पतिवार को भी नहीं होती थीं, जब उनके स्थान पर पोलिटव्यूरो की वैठकें होती थीं।

अगली वैठक का दिन और समय गत वैठक के कार्य-विवरण में ही दर्ज कर लिया जाता था। आम तौर से वैठकें शाम के ८ वजे लेकिन कभी-कभी ६ या ७ वजे शुरू होती थीं।

जन-कमिसार परिषद, संसार की सर्वप्रथम सोवियत सरकार का कर्मचारी-मण्डल विल्कुल नया था। उसके पास न अनुभव था, न परंपरा और न दफ़्तरी काम की जानकारी। हमारे काम का वड़ा हिस्सा जन-कमिसार परिषद की वैठकों की सामग्री तैयार करने, व्लादीमिर इल्यीच के नाम आनेवाली डाक को देखने और मेहनतकश लोगों के भेजे हुए असंख्य पत्रों को पढ़ने से संवद्ध था। लेकिन हमारा एक खास और सवसे महत्त्वपूर्ण काम व्लादीमिर इल्यीच की हिदायतों को पूरा करना तथा सभी फ़ौरी मामलों और जन-कमिसारों की पूछताछ के वारे में उन्हें रिपोर्ट देना था। अफ़सोस है कि हमने उस समय उनकी हिदायतों का कोई रेकार्ड नहीं रखा और वेशक अव इतने दिनों वाद उन्हें प्रामाणिकतापूर्वक नही वताया जा सकता। व्लादीमिर इल्यीच हमसे मांग करते थे कि हमें उन सभी चीजों की जानकारी होनी चाहिए जिनका हमारे काम से कोई भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सवध हो। हमे जवाव में "मैं नही जानती" कहने की अनुमति नही थी, चाहे उनके द्वारा पूछा गया प्रश्न विल्कुल ही अप्रत्याशित क्यों न हो।

यद्यपि १६१८ मे हमारा कार्य-दिन वहुत लम्वा और सख़्त था – दिन के खाने के लिए एक घंटे की छुट्टी के साथ ६ वजे सुवह से २ वजे रात तक, – फिर भी हम सभी स्वेच्छापूर्वक काम करते थे। काम वहुत अच्छी तरह और मैत्री के वातावरण में किया जाता था। लेनिन जैसे नेता और साथी के होते हुए अन्यथा हो भी कैसे सकता था?

जन-कमिसार परिषद की वैठकें आम तौर से ८ वजे शाम से ११–१२ वजे रात तक, कभी-कभी और भी देर तक चलती

थी। व्लादीमिर इल्यीच बैठको मे नियम और व्यवस्था लाने के लिए बहुत ज़ोर देते थे, लेकिन उसकी प्रक्रिया अत्यंत धीमी थी। जन-कमिसारियतों के कर्मचारी-मडल मे अभी कई पुराने नौकरशाह थे, जो अपने विशिष्ट क्षेत्रों मे बुरे विशेषज्ञ नही थे, किन्तु जो क्रान्तिकारी रफ़्तार से अपना काम करने के बजाय अपने पुराने नौकरशाही तरीके चालू रखते थे। वे लंबे स्मरण-पत्र लिखते थे और ईमानदारी के साथ विश्वास करते थे कि स्मरण-पत्र जितने ही अधिक लबे होंगे, उतना ही अधिक उनका मूल्य होगा। ये कागज़ात जन-कमिसार के दस्तखत से जन-कमिसार परिषद के नाम, उसकी किसी बैठक की कार्य-सूची मे पेश किसी सूत्र के समर्थन मे भेजे जाते थे। मिसाल के लिए, १४ मई १९१८ की बैठक की कार्य-सूची के केवल ५ सूत्रो की पुष्टि मे पेश किये गये स्मरण-पत्र और दूसरी सामग्रिया १२० पृष्ठों के बराबर थी।

इन लबे कागज़ातो से व्लादीमिर इल्यीच हमेशा चिढते थे, क्योंकि उनकी दलील यह थी कि ऐसी सारी सामग्री को पढना असंभव और अनावश्यक है।

जन-कमिसार ने २० अप्रैल को अपने उस प्रस्ताव की पुनर्पुष्टि की, जिसके अनुसार जन-कमिसारो पर यह पाबदी लगायी गई थी कि वे अपनी आज्ञप्तियो के मसविदो को कार्य-सूची में शामिल करवाने से पहले उन्हे टाइप कराके सभी सबधित विभागो को *सूचनार्थ भेज दिया करे।*

बैठक के दौरान जो लोग बोलने के लिए समय की माग करते थे, उनके नाम व्लादीमिर इल्यीच कार्य-सूची पर या किसी साफ कागज़ पर लिखते जाते थे और जो बोल चुकते थे उनके नाम काटते जाते थे। कभी-कभी वे बाद मे अपने भाषण मे उल्लेख करने के लिए किसी वक्ता की विशेष बातो को लिख लेते थे। लेनिन आम सूची मे अपना नाम भी लिख लेते थे और जब बोलने के लिए खड़े होते थे, तो हमेशा यो ही शुरू करते थे कि "अब मैंने अपना नाम लिख रखा है"। बैठको के जो विवरण सुरक्षित रखे गये हैं, उनसे पता चलता है कि वह हर बैठक मे तीन या चार बार बोलते थे।

लेनिन के घायल होने से पहले बैठकों में सिगरेट आदि पान
मनाही नहीं थी और चूंकि कमरे में कोई संवातक नहीं था,
लिए जब हर कोई जोरों से धूम्रपान करने लगता था, तो कमरे
घुटन भर जाती थी। व्लादीमिर इल्यीच ने संवातक का प्रश्न
र-बार उठाया, लेकिन उसके संबंध में कुछ भी नहीं किया जा
का। उन दिनों हमारी तकनीकी स्थिति वास्तव में बहुत कमजोर
ी।

मौसम ठीक होने पर गर्मियों में हम खिड़कियां खुली रखते
थे और बैठक के आखिरी हिस्से में व्लादीमिर इल्यीच बार-बार
खिड़की के पास जाते तथा खिड़की के दासे पर बैठकर कुछ ताज़ी
हवा लेने के लिए अपने शरीर को यथासंभव बाहर झुका लेते थे।

जन-कमिसार परिषद की बैठकों में अनेक विभागीय प्रतिनिधि
शरीक होते थे। "विशेष समस्याओं पर होनेवाली बहस में भाग
लेने के लिए सोवियत संगठनों के प्रतिनिधियों की संख्या घटाने
की वांछनीयता" के संबंध में लेनिन ने १८ मई को अत्यंत नपे-
तुले शब्दों में एक प्रस्ताव पेश किया। जन-कमिसार परिषद ने फ़ैसला
किया कि सैद्धांतिक तौर पर प्रतिनिधियों की संख्या कम करने
की आवश्यकता को मंजूर किया जाए और संबंधित कमिसारियतों
को हर मामले में एक न्यूनतम आवश्यक संख्या निर्धारित करने
की सलाह दी जाए। संभव हो तो वह संख्या ३ तक ही सीमित
रखी जाए, ताकि हर दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व हो सके।

जन-कमिसार परिषद की बैठकें समस्याओं से भरी हुई होती
थीं और बड़े जोशखरोश से चलती थी। हर कोई उत्साह औ
उत्सुकता अनुभव करता था। अ० व० लुनाचार्स्की ने अपने संस्मर
में इन बैठकों से अपने मन पर पड़े प्रभावों का बहुत अच्छा विवर
दिया है। उन्होंने लिखा है :

"जन-कमिसार परिषद की बैठकों में एक प्रकार का उ
हुआ वातावरण बना रहता था। हर क्षण में इतने तथ्य, वि
और निर्णय भरे होते थे कि ऐसे लगता था जैसे कि स्वयं
ही जम गया हो। इसके साथ ही, उन बैठकों में न तो नौक
प्रवृत्तियों का कोई जरा सा भी लक्षण दिखाई देता था, न आल

का कोई तनिक भी इशारा और न ही तनाव का कोई प्रदर्शन, जो बेहद काम मे लदे लोगो के लिए बहुत स्वाभाविक है। सारी जिम्मेदारियो से भरे हुए होने के बावजूद काम, खासकर लेनिन की मौजूदगी के कारण, 'आसान' लगता था ..

"जन-कमिसार परिषद मे लोग मुस्कराते और मजाक करते हुए, चुस्ती और खुशदिली के साथ काम करते थे।"

अनिवार्य बहस-मुबाहसो मे इस मनस्थिति मे कोई बाधा नहीं पडती थी। अनाज-व्यापार की इजारेदारी के सबध में होनेवाली गरमागरम बहसे मुझे याद हैं। खाद्यान्न के जन-कमिसार अ० द० त्सुरूपा अपने सुगठित बोर्ड की सहायता तथा लेनिन के समर्थन से राज्य के एकाधिकार के लिए और उन लोगो के खिलाफ बडे भावुकतापूर्ण ढग से लडते थे, जो चोरबाज़ारी, मुनाफ़ाखोरी, आदि कुपरिणामों सहित अनाज-व्यापार की आजादी चाहते थे। कभी-कभी बात इस हद तक पहुच जाती थी कि त्सुरूपा बहस की तेज़ी मे एलान करते कि अगर उनके प्रस्ताव नही माने गये तो वे इस्तीफा दे देगे। लेकिन लेनिन की सहायता से मामला तय हो जाता था और त्सुरूपा और उनकी कमिसारियत द्वारा बेहद ज़ोरदार तरीके से समर्थित खाद्यान्न-अधिनायकत्व स्थापित करने की अत्यत महत्त्वपूर्ण आज्ञप्ति* ८ मई १९१८ को जारी की गई।

जन-कमिसार परिषद के कार्य-विवरण-सबधी फैसले प्राय लेनिन बोलकर लिखवाते थे। वे अपने मन मे शब्दावली तैयार कर लेते थे और उसे बहुत तेज़ी से बोलकर लिखाते हुए अत मे हमसे प्रश्न करते – "लिख लिया आपने?", "आप लिख पाये?" और फिर फौरन ही अगले सवाल से सबधित सामग्री की माग करते। हम लोगो मे से कोई भी स्टेनोग्राफर नही था, इसलिए उनके शब्दो को लिखते जाना बहुत कठिन था। उसके लिए ध्यान और याददाश्त दोनों पर बेहद ज़ोर देना पडता था, फिर भी व्लादीमिर

---

* *इस आज्ञप्ति द्वारा खाद्यान्न-व्यापार मे राजकीय एकाधिकार की* अलघनीयता की पुष्टि की गई, खाद्य की जन-कमिसारियत के मातहत जनतत्र की खाद्य सप्लाई और वितरण को सकेंद्रित किया गया और खाद्य जन-कमिसार को अन्न की जमाखोरी और मुनाफ़ाखोरी करनेवाले देहाती पूजीपति वर्ग के खिलाफ सघर्ष करने के लिए विशेष अधिकार दिये गये।

इल्यीच से मैं यह कहने का साहस कभी न कर सकी कि उनके आकस्मिक सवाल मुझे उलझन में डाल देते थे। आम तौर से मैं उनके द्वारा तेज़ी से बोले जानेवाले शब्दों के प्रारंभिक अक्षर लिख लेती थी और उन्हें स्पष्ट करके लिखने के काम को बैठक के बाद तक के लिए छोड़ देती थी।

जन-कमिसार परिषद ने १५ मई को न्याय जन-कमिसार प० इ० स्तूच्का द्वारा पेश किये गये प्रस्ताव पर यह निर्णय पास किया कि बैठकों के कार्य-विवरण टाइप कराए जाए और उनकी एक-एक प्रति हर जन-कमिसार को दी जाएं, जो उसकी रसीद लिखकर दे और उसके लिए खुद जिम्मेदार हो। इससे कमिसारियतों की असंख्य पूछताछों का जवाब देने और उन्हें विभिन्न निर्णयों के संबंध में कार्य-विवरण के उद्धरण भेजने के परेशानी भरे काम से हमें छुट्टी मिल गई।

उसी दिन १५ मई को ही स्तूच्का को यह आदेश देने का फ़ैसला मंजूर किया गया कि वह सरकारी आज्ञप्तियों तथा आदेशों को प्रकाशित करने की नियमावली के बारे में एक प्रस्ताव का मसविदा पेश करे। इसकी ज़रूरत निश्चय ही पहले की कुछ ग़लतियों के कारण पैदा हुई होगी। स्तूच्का ने कहा कि दरअसल प्रकाशन के लिए भेजी गयी सभी आज्ञप्तियां अखबारों में नहीं छपतीं। मिसाल के लिए, 'क्रान्तिकारी अदालतों के बारे में' जारी की गई आज्ञप्ति समय पर नहीं प्रकाशित की गई। दूसरी तरफ़ घड़ियों को एक घंटा आगे करने के संबंध में प्रस्तावित आज्ञप्ति, जो स्वीकृत नहीं की गयी थी, अखबारों में पहुंच गई। जन-कमिसार परिषद ने प्रबंध-व्यवस्थापक को मामले की जांच करने और अखबारों को फ़ौरन इस समाचार का प्रतिवाद भेजने का आदेश दिया।

शुरू में हमारी अनुभवहीनता और कार्यालय संबंधी कामों के बुनियादी नियमों की ग़ैर-जानकारी के कारण हमें बहुत मुसीबतें उठानी पड़ीं और कभी-कभी हमसे भारी ग़लतियां हुईं। एक रात जन-कमिसार परिषद की बैठक के बाद मुझे उसके कार्य-विवरण लिखकर तैयार करने में सुबह के तीन बज गए और यह सुनिश्चित करने के लिए कि उस बैठक में पारित एक महत्वपूर्ण आज्ञप्ति

की खबर सुबह के अखबार में ज़रूर निकल जाए, मैंने उसे खबर के रूप में लिखकर भेजने के बजाय आज्ञप्ति की ही एक प्रति 'इज़्वेस्तिया' को भेज दी, जिस पर कोई हस्ताक्षर नही थे। मुझे निश्चय विश्वास था कि वे खबर खुद बना लेंगे। आज्ञप्ति की प्रति के ऊपर मैंने अपना हस्ताक्षर इस प्रकार कर दिया था, "प्रमाणित सच्ची प्रतिलिपि, ली० फोतियेवा।" दूसरे दिन सुबह जब मैंने काम पर आकर अखबार खोला, तो यह देखकर चकरा गई कि मेरे हस्ताक्षर सहित आज्ञप्ति पूरी की पूरी छपी हुई है। "प्रमाणित सच्ची प्रतिलिपि"—ये शब्द गायब थे। व्लादीमिर इल्यीच ने मुझे फौरन ही बुलाया और पूछा, "आपने अपने नाम से आज्ञप्तियों पर हस्ताक्षर करने का काम कब से शुरू कर दिया है?" ऐसे ही सबको ने हमें छोटे-बड़े हर मामले में समान रूप से सतर्क रहना सिखाया। व्लादीमिर इल्यीच की निगाह से कभी कोई चीज़ बचकर नहीं निकल पाती थी।

धीरे-धीरे, कदम-बकदम जन-कमिसार परिषद की मशीन व्यवस्थित ढग से काम करने लगी थी।

व्लादीमिर इल्यीच ने अपने को पूरी तरह काम में लगा दिया था। सच तो यह है कि अन्यथा हो भी नही सकता था। आज कोई क्रान्ति के प्रारंभिक वर्षों को इतनी पूरी तरह याद ही नही कर सकता कि उन भयानक कठिनाइयों को न महज बुद्धि द्वारा ग्रहण कर सके, बल्कि अपनी समस्त चेतना द्वारा महसूस भी कर सके, जो नवोदित सोवियत राज्य के रास्ते में खड़ी थी। चारों तरफ से शत्रु द्वारा घिरा हुआ सोवियत राज्य, लेनिन की रहनुमाई में कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में समाजवाद का पथ प्रशस्त कर रहा था। सोवियत जनतंत्र के मज़दूरों और किसानों ने बिना अनुभव या जानकारी के, बिना बाहरी सहायता के और पूंजीवादी बुद्धिजीवियों द्वारा तोड़-फोड़ की स्थिति में राज्य की बागडोर अपने हाथ में ली थी। तब क्या लेनिन जैसा महान मेधावी क्रान्तिकारी एक ऐसे समय अपने को बख्श सकता था, जब कि जिस उद्देश्य के लिए उन्होंने जीवन समर्पित किया था, उसने अन्तत उल्लेखनीय नतीजे हासिल कर लिए थे, जब कि सोवियत जनतंत्र

की मेहनतकश जनता महान अक्तूबर क्रान्ति की उपलब्धियों की रक्षा करने के लिए कठिन संग्राम कर रही थी और समाजवादी समाज की बुनियाद क़ायम कर रही थी? बेशक, वह ऐसा नहीं कर सकते थे। लेनिन सोवियत और पार्टी निकायों के सभी कामों के लिए नेता की हैसियत से अपनी निजी ज़िम्मेदारी के प्रति गंभीर रूप से सचेत थे। इसलिए साथियों की यह अपील कि वह आराम करें या इलाज के लिए जाएं, चाहे जितना भी आग्रहपूर्ण और युक्तिसंगत क्यों न रही हो, वह उन दिनों की हालतों में व्यर्थ जाने के सिवाय और कुछ हो ही नहीं सकती थी।

व्लादीमिर इल्यीच पर कैसा दुस्सह भार रहा होगा! लेनिन ने १९१८ के वसंत और गर्मियों में अपने को दम मारने का केवल इतना ही मौक़ा दिया कि कार में नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना और मारीया इल्यीनिच्ना के साथ थोड़े समय के लिए शहर के बाहर सैर के लिए चले जाते थे। व्लादीमिर इल्यीच ने तरासोव्का में ग्रीष्म-घर में रहने की कोशिश की, लेकिन शोर-शराबा और मच्छरों के कारण वह अधिक दिन तक नहीं रह सके। उसके बाद, मारीया इल्यीनिच्ना ने अपने सस्मरणों में लिखा है, दोपहर के खाने के लिए सैंडविच साथ लेकर चंद घंटों के लिए शहर से बाहर कार में घूमने जाने की उन लोगों ने आदत बना ली। जो जगह उन्हें सबसे अधिक पसंद थी, वह बार्वीखा नामक जगह के पास मास्को नदी के किनारे एक कुंज था। केवल घायल होने के बाद ही व्लादीमिर इल्यीच ३ हफ्ते गोर्की गांव में रहे, जो बाद में उनके आराम का प्रिय स्थान बन गया। वे अपने सभी इतवार वहीं बिताते थे और जाड़े तथा गर्मी के अंतिम दिनों में काम के बाद सदा कुछ घंटों के लिए कार से गोर्की घूमने जाते थे।

लेनिन के नेतृत्व में जन-कमिसार परिषद जिन प्रश्नों को लेकर व्यस्त थी, उनका दायरा बहुत विस्तृत था। सरकार के मास्को स्थानांतरित होने के बाद पहले दो महीनों के दौरान जन-कमिसार परिषद ने अहम संगठनात्मक सवालों पर विचार किया और फ़ैसले मंजूर किए, जिनमें राजकीय निरीक्षण संस्था की स्थापना, रेलवे और डाक-तार की प्रबंध-व्यवस्था के केंद्रीयकरण, बाल्टिक

सागर के जहाजी बेडे की व्यवस्था, सरकारी कानूनो और आज्ञप्तियों के सग्रह के प्रकाशन आदि प्रश्न शामिल थे।

जन-कमिसार परिषद ने ८ अप्रैल को रूसी संघ के राजकीय झडे को मजूर किया और लेनिन की आज्ञा से उसे क्रेमलिन पर फहराया गया।

जन-कमिसार परिषद ने राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की ऐसी बडी-बडी समस्याओं पर विचार किया जैसे कि कपास-उत्पादन-कार्यक्रम, तुर्किस्तान की सिचाई-योजना, मूर्मास्क प्रदेश का विकास, मास्को मे रोटी की सप्लाई के लिए छोटी रेल लाइन का निर्माण, धातु-उद्योग का राष्ट्रीयकरण, विदेशी व्यापार का राष्ट्रीयकरण, केंद्रीय पीट समिति का सगठन और शक्कर-उद्योग की बहाली की कार्रवाइया। शक्कर-उद्योग के मजदूरो का एक प्रतिनिधिमडल १६ अप्रैल को व्लादीमिर इल्यीच से मिला, जिसके साथ उन्होंने बडी देर तक बातचीत की। उसी महीने लेनिन ने आर्थिक नीति, विशेषत बैक-सबधी नीति के बुनियादी नियमो पर अपने लेख लिखे।

कृषि के लिए मशीनो और धातुओ की सप्लाई करने, शहरो और देहातो के बीच व्यापार का सगठन करने, कुलको से लडने के लिए मजदूरो की टुकडिया बनाने, आदि के फैसले मजूर किए गए।

देश की प्रतिरक्षा का प्रबध और सशस्त्र सेनाओ, आदि का निर्माण करने के लिए एक सर्वोच्च सैनिक परिषद स्थापित करने का फैसला मजूर किया गया।

उस दौरान लेनिन ने क्रान्तिकारी कानून को सुदृढ बनाने और रिश्वतखोरी का उन्मूलन करने के लिए बहुत कोशिश की। उन्होंने ३० मार्च, १९१८ को, न्याय की जन-कमिसारियत द्वारा जन-कमिसार परिषद मे पेश किए गए, क्रान्तिकारी अदालतो से संबधित आज्ञप्ति के मसविदे का बुनियादी सशोधन करने का प्रस्ताव पेश किया। ऐसा उन्होंने इस उद्देश्य से किया ताकि वास्तविक शीघ्रता के साथ और प्रतिक्रान्तिकारियो, रिश्वतखोरो और अनुशासन भग करनेवाले विघटनकारियो के खिलाफ सच्ची क्रान्तिकारी क्षमाहीनता के साथ काम करने वाली अदालतो की स्थापना के व्यावहारिक परिणामो पर ध्यान केंद्रित किया जा सके।"

न्याय की जन-कमिसारियत ने जन-कमिसार परिषद द्वारा अनुमोदित लेनिन के प्रस्ताव पर 'रिश्वतखोरी और रिश्वतखोरी से संबंधित हर मामले के लिए न्यूनतम भारी सजा के बारे में' एक आज्ञप्ति का मसविदा तैयार किया।

शुरू से ही लेनिन ने अपना ध्यान विजलीकरण की समस्या पर केंद्रित किया। जन-कमिसार परिषद ने अप्रैल में विज्ञान-अकादमी के इस प्रस्ताव को समर्थन करने का फ़ैसला किया कि देश की प्राकृतिक संपदा का अन्वेषण करने के काम में वैज्ञानिकों को खींचा जाए और इस संबंध में अकादमी को आवश्यक वित्त की व्यवस्था की जाए। इस फ़ैसले के संबंध में व्लादीमिर इल्यीच ने अकादमी के काम का ठोस रूप से मार्ग-दर्शन करते हुए 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी कार्य की योजना की रूपरेखा' शीर्षक पत्र लिखा। उसमें लेनिन ने सुझाव दिया कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की अखिल रूसी परिषद विज्ञान-अकादमी को इस बात का आदेश दे कि अकादमी रूस के उद्योग के पुनर्संगठन और उसकी अर्थव्यवस्था के विकास के लिए एक योजना फ़ौरन तैयार करने के निमित्त कई आयोगों की स्थापना करे। इस योजना में विशेष रूप से उद्योग तथा परिवहन के विजलीकरण और कृषि में बिजली के इस्तेमाल की व्यवस्था पर ध्यान देना था। लेनिन के इस पत्र ने विज्ञान-अकादमी के पथ-प्रदर्शक का काम किया और वह रूस के विजलीकरण की योजना—गोएलरो योजना—को अग्रसर करने का आधार बना।

मार्च में व्लादीमिर इल्यीच ने इंजीनियर अ० व० वीन्तेर को मुलाकात के लिए बुला भेजा। उन्होंने शातूरा के बिजली स्टेशन के निर्माण और दलदली पीट-उद्योग के संगठन के बारे में बातचीत की।

जन-कमिसार परिषद ने २३ अप्रैल को स्विर और वोल्खोव नदियों पर पनबिजली स्टेशनों के निर्माण के संबंध में एक फ़ैसला मंजूर किया।

सांस्कृतिक समस्याओं को भी नजरंदाज नहीं किया गया। जन-कमिसार परिषद ने १८ अप्रैल को जारशाही के स्मारकों को हटाने के लिए एक आज्ञप्ति जारी की और अक्तूबर क्रान्ति के स्मारक के लिए प्रतियोगिता की मंजूरी दी।

व्ला० इ० लेनिन के कार्यकलाप अत्यधिक बहुविध थे। वे सार्वजनिक सभाओं में अक्सर भाषण करते थे। मास्को में परिषद का काम शुरू होने पर पहले दो महीनों में उन्होंने कम से कम दस बार ऐसे भाषण किए। मेहनतकश जनता निरपवाद रूप से लेनिन के भाषणों को तालियों की तूफानी गड़गड़ाहट के साथ सुनती थी। सोवियत सत्ता के समस्त शत्रुओं पर विजय के बारे में तथा तमाम कठिनाइयों पर काबू पाने के बारे में लेनिन का विश्वास उन सब लोगों में फैल जाता था जो उनके भाषणों को सुनते थे।

मजदूरों, किसानों और लाल सेना के सैनिकों के प्रतिनिधियों की मास्को सोवियत की एक सभा में भाषण करते हुए उन्होंने २३ अप्रैल, १९१८ को कहा, "सारी कठिनाइयों पर काबू पाने और भूख तथा बेकारी के खिलाफ सफलतापूर्वक लड़ने के लिए हम राष्ट्रीय महत्व का अदृश्य, अप्रदर्शनात्मक लेकिन कठिन काम करेंगे। और जो कोई भी हमारा विरोध करेगा, उसे विश्व सर्वहारा का घातक शत्रु माना जाएगा हम सही रास्ते पर हैं, वह रास्ता हमें समाजवाद की पूर्ण विजय तक पहुंचाएगा।" सभा में उपस्थित हर किसी ने लेनिन के अंतिम शब्दों पर ज़ोर-शोर से तालियां बजाईं।

उसी छोटी सी अवधि में लेनिन ने 'सोवियत सत्ता के तात्कालिक कार्यभार' नामक एक महान सैद्धान्तिक तथा राजनीतिक महत्व की कृति लिखी। व्लादीमिर इल्यीच ने मास्को आने के फौरन बाद, जबकि वह अभी घुड़सवार कोर की इमारत में ही रह रहे थे, इस कृति पर काम करना शुरू कर दिया था। इस असाधारण महत्वपूर्ण कृति में उन्होंने बताया कि वर्तमान काल के प्रमुख कार्य-भार हैं श्रम-अनुशासन पैदा करना, नए उत्पादन-संबंधों की स्थापना करना, नई समाजवादी अर्थव्यवस्था का निर्माण करना तथा समाजवादी निर्माण की दूसरी समस्याओं को हल करना। लेनिन की यह कृति पार्टी, सोवियत सरकार और समस्त जनता की कार्रवाई का कार्यक्रम बन गई।

रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केंद्रीय समिति ने लेनिन की थीसिसों का अनुमोदन किया। २९ अप्रैल को उन्होंने

अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक में एक रिपोर्ट पेश की और उपसंहारी भाषण किया, जिसमें उनकी रिपोर्ट के मुख्य सूत्रों को समाविष्ट करनेवाली उनकी छः थीसिसों को प्रस्ताव के रूप में स्वीकार किया गया।

'सोवियत सत्ता के तात्कालिक कार्यभार' को पैम्फ़लेट के रूप में प्रकाशित किया गया।

'"वामपंथी" बचकानापन और निम्न-पूंजीवादी मनोवृत्ति' नामक दूसरी बड़ी महत्वपूर्ण कृति को लेनिन ने ५ मई १९१८ को पूरा किया। यह "वामपंथी कम्युनिस्टों" के खिलाफ़ तथा उनकी पत्रिका 'कोम्मुनीस्त' (संख्या १, १० अप्रैल १९१८) में अभिव्यक्त उनके द्वारा निम्न-पूंजीवादी अनुशासनहीनता की खुली वकालत के खिलाफ़ लिखी गई थी। यह लेख भी उसी पैम्फ़लेट में छपा था, जिसमें 'हमारे समय का मुख्य कार्यभार' छपा था। भूमिका में लेनिन ने लिखा था कि "दोनों लेख पैम्फ़लेट के शीर्षक में व्यक्त एक ही विषय का, यद्यपि भिन्न-भिन्न पहलुओं से, विवेचन करते हैं।"*

'जिंस रूप में कर' नामक अपने पैम्फ़लेट (१९२१) में लेनिन ने उन समस्याओं को फिर उठाया, जो सोवियत सत्ता के प्रारंभिक अशांत एवं कठिन महीनों में लिखे गए उन दो लेखों में उठाई गई थीं। अब एक ऐसा दौर आरंभ हुआ, जब गृह-युद्ध और विदेशी सैनिक दखलंदाज़ी के वर्षों को विजयपूर्वक पार कर सोवियत राज्य ने समाजवाद के निर्माण की राह पर दृढ़तापूर्वक चलना शुरू किया तथा युद्धकालीन कम्युनिज़्म की नीति का अंत करके नई आर्थिक नीति अपनाई।

मई १९१८ के पूर्वार्द्ध में सोवियत राज्य की राजनीतिक स्थिति बहुत तनावपूर्ण थी। देश के अंदर नवोदित सोवियत राज्य को अकाल, कुलकों तथा समाजवादी-क्रान्तिकारियों के विद्रोहों, देहातों में गृह-युद्ध, "वामपंथी" समाजवादी-क्रान्तिकारियों एवं "वामपंथी कम्युनिस्टों" की विरोधी कार्रवाइयों, श्वेत गार्डों

---

* पैम्फ़लेट का शीर्षक था: 'हमारे समय का मुख्य कार्यभार'।

के विद्रोहो और षड्यंत्रो तथा भूतपूर्व ज़ार निकोलाई रोमानोव के देश से निकल भागने के सबंध मे तोबोल्स्क के राजतत्रवादियों द्वारा किए जानेवाले प्रयत्नों का सामना करना पड़ रहा था।

इसके साथ ही, नवस्थापित सोवियत जनतत्र हर जगह—उत्तर मे, सुदूरपूर्व मे, ट्रासकाकेशिया में, उक्रइना मे और क्रीमिया मे—दुश्मनो से घिरा हुआ था।

श्रम जन-कमिसार नोगिन ने ९ मई १९१८ को जन-कमिसार परिषद मे राजनीतिक परिस्थिति के सवध मे पूछताछ की। जन-कमिसार परिषद ने सूचना देने के लिए लेनिन को अधिकार दिया। इसी संबध मे लेनिन ने 'आधुनिक राजनीतिक परिस्थितियो के संबध मे थीसिस' लिखी, जिसका रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केंद्रीय समिति ने १३ मई को अनुमोदन किया। इसने देश की बाह्य और आतरिक स्थिति तथा सोवियत सरकार की विदेश-नीति को समझने मे बहुत सहायता की। केंद्रीय समिति के आदेश पर लेनिन ने इसे उसी दिन होनेवाले रूसी कम्युनिस्ट पार्टी के मास्को नगर-सम्मेलन मे पेश किया। सम्मेलन ने इसे प्रस्तावो के रूप मे स्वीकार किया।

लेकिन ने अपनी थीसिस मे, बाह्य तथा आतरिक दोनो कारणो से मई के प्रथम दस दिनो मे तेज़ी से गभीर बनी राजनीतिक परिस्थिति को समझाया। उन्होने इस गभीर राजनीतिक परिस्थिति के लक्षण गिनाए और बताया कि विदेश-नीति क्या होनी चाहिए, ताकि युद्ध के आसन्न खतरे को यथासभव अधिक समय के लिए टाला जा सके।

"सोवियत सत्ता की विदेश-नीति किसी तरह भी हर्गिज़ परिवर्तनीय नही होनी चाहिए। हमारी सैनिक तैयारिया अभी पूरी नही हुई है और इस कारण सारे सब के लिए अपरिवर्तित रहेगे तैयारी मे सारी शक्ति लगाते हुए, फिलहाल पैतरेबाजी करो, पीछे हटो, वक्त काटो।"

लेनिन ने अनाज के राजकीय एकाधिकार को विफल बनाने की कोशिश मे तोड-फोड करनेवाले शहरी और देहाती पूजीपति वर्ग के खिलाफ़ निर्मम सघर्ष चलाने की आवश्यकता बतलाई।

उन्होंने सर्वहारा में लौह अनुशासन तथा सैनिक तैयारियों को दृढ़ करने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया।

१४ और १५ मई को लेनिन की थीसिस को रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) के मास्को क्षेत्रीय और प्रादेशिक सम्मेलनों ने स्वीकार किया।

युद्ध का ख़तरा बढ़ रहा था। १९१८ की गर्मियों में शांति की छोटी अवधि ख़त्म हो गई और सोवियत जनतंत्र को एक बार फिर कटु युद्ध में फंसा दिया गया। राष्ट्रीय प्रतिरक्षा की समस्या ने प्राथमिकता प्राप्त कर ली। नारा था, 'सभी कुछ मोर्चे के लिए!' सोवियत राज्य ने यह आर्थिक नीति अपनायी, जो युद्धकालीन कम्युनिज़्म के रूप में सुविदित है।

कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत राज्य के सामने अभूतपूर्व कठिनाइयों से भरी अनेक बड़ी-बड़ी समस्याएं प्रस्तुत थीं। आसन्न युद्ध के ख़तरे के तहत और युद्ध के दौरान भी, शत्रु द्वारा चारों तरफ़ से घिरा हुआ, घरेलू और बाहरी दुश्मनों से अपनी हिफ़ाज़त करता हुआ, सोवियत देश मानवजाति के इतिहास में पहली बार तब तक अज्ञात समाजवाद का पथ प्रशस्त कर रहा था। सोवियत राजकीय मशीनरी की स्थापना, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की बहाली और समाजवादी तरीक़ों से उसके पुनर्निर्माण तथा सर्वहारा के अधिनायकत्व की बुनियाद – मज़दूर-किसान एकता के सुदृढ़ीकरण के लिए अपने महान नेता लेनिन की रहनुमाई में कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार अपनी महत्वपूर्ण संगठनात्मक, आर्थिक और सांस्कृतिक योजनाओं को कार्यान्वित कर रही थीं। अंदरूनी और बाहरी दुश्मनों से समाजवादी राज्य की रक्षा के लिए सेना के निर्माण की समस्या एक प्राथमिक तथा निर्णयात्मक महत्त्व की समस्या थी। आंतरिक स्थिति को मजबूत करने की बुनियादी समस्या भी उतनी ही अहम थी। 'व्यावहारिक धरातल पर' शीर्षक अपने लेख में (१ मार्च, १९१८) लेनिन ने लिखा था, "अच्छी से अच्छी फ़ौजें भी, क्रान्तिकारी हेतु के प्रति अत्यधिक ईमानदारी के साथ एकनिष्ठ लोग भी शत्रु द्वारा तत्काल विनष्ट कर दिए जाएंगे, अगर वे पर्याप्त ढंग से हथियारबंद नहीं हैं, अगर उन्हें

पर्याप्त खाना नही मुहैया होता, अगर वे भली-भांति प्रशिक्षित नही हैं।"

लाल फौज युद्ध की ज्वाला में गठित हुई। हर तरफ से शत्रु द्वारा घिरे होने के बावजूद सोवियत राज्य निरंतर विकसित और शक्तिशाली होता रहा। लेनिन ने देश की प्रतिरक्षा का सचालन खुद किया।

सोवियत राज्य अत्यंत कठिन दौर से गुजर रहा था, लेकिन उसके नेता लेनिन थे। लेनिन को जो विशिष्ट स्थान प्राप्त था, उसे अपनी विनम्रता के कारण वह कोई महत्व नही प्रदान करते थे। वह सर्वाधिक बलशाली, सर्वाधिक बुद्धिमान तथा सर्वाधिक निर्भय व्यक्ति थे और अपने इन गुणों से वह दूसरों को प्रेरणा प्रदान करते थे। वह किसी भी कठिनाई पर काबू पा लेने का रास्ता सदा ही निकाल लेते थे। उनके नेतृत्व मे चलनेवाली पार्टी तथा समस्त सोवियत जनता उन्हे निष्ठापूर्वक प्यार करती थी। वे सहस्र सूत्रो द्वारा आम जनता से जुडे हुए थे। लेनिन के नेतृत्व में चलनेवाली पार्टी की रहनुमाई मे मजदूरों और किसानो ने मोर्चे पर तथा मोर्चे के पीछे दोनों जगह वीरता के चमत्कारपूर्ण कार्य सपन्न किए।

१९१८ में शुरू गृह-युद्ध तथा हथियारबद विदेशी हस्तक्षेप तीन साल तक जारी रहे और सोवियत जनता की विजय के साथ उनका अंत हुआ। मजदूरो और किसानो की वीरता को इतिहास कभी नही भूलेगा, जिन्होने लेनिन के नेतृत्व मे चलनेवाली पार्टी की रहनुमाई मे विदेशी हस्तक्षेपकारियो की सेनाओ को असमान युद्ध में पराजित किया और उन्हे सोवियत भूमि से मार भगाया।

व्ला० इ० लेनिन की हत्या का प्रयत्न

(३० अगस्त १९१८)

१९१८ की गर्मियों में हस्तक्षेपकारी विदेशी फ़ौजों ने, जिन्हें रूसी श्वेत गार्डों की सहायता प्राप्त थी, सोवियत रूस के तीन-चौथाई क्षेत्र पर क़ब्ज़ा कर लिया था। अगस्त का महीना आते न आते देश लड़ाई के मोर्चों के एक जलते हुए दायरे के अंदर घिर चुका था। उन परेशान दिनों में देशी और विदेशी दोनों ही क़िस्म के प्रतिक्रान्तिकारियों ने सोवियत सत्ता के प्रति अपनी कट्टर घृणा के कारण, क्रान्ति को नेताविहीन बना देने और इस प्रकार उसे असफलता के हवाले कर देने के प्रयत्न में षड्यंत्र रचे और सोवियत जनतंत्र के नेताओं के ख़िलाफ़ आतंकवादी कार्रवाइयां कीं।

पेत्रोग्राद के उस असाधारण आयोग के अध्यक्ष, मो० सो० उरीत्स्की, जिसे प्रतिक्रान्ति का मुक़ाबला करने के अधिकार दिए गए थे, ३० अगस्त को सवेरे पेत्रोग्राद में मार डाले गए। ज्यों ही यह समाचार मास्को पहुंचा, उसी क्षण अखिल रूसी असाधारण आयोग के अध्यक्ष फ़े० ए० द्ज़ेर्ज़ोन्स्की पेत्रोग्राद के लिए रवाना हो गए।

उसी दिन शाम को मास्को में व्ला० इ० लेनिन की हत्या का प्रयत्न किया गया।

१९१८ की गर्मियों में मास्को पार्टी समिति हर शुक्रवार की रात को मिलों और कारख़ानों में सभाएं आयोजित करती थी, जिनमें व्लादीमिर इल्यीच आम तौर से भाषण करते थे। २८ अगस्त को लेनिन के कार्यक्रम में दो काम शामिल थे: एक तो मास्को

के बास्मान्नी जिले मे (जिसका नाम अब बाउमन ज़िला रख दिया गया है) अनाज-मडी भवन मे और दूसरे जामोस्क्वोरेच्ये जिले मे पुराने मिखेल्मन कारखाने (जिसका नाम बाद मे ब्लादीमिर इल्यीच कारखाना रख दिया गया) मे होनेवाली सभाओ मे भाषण देना। उरीत्स्की की हत्या को ध्यान मे रखते हुए मास्को समिति ने लेनिन के भाषण कार्यक्रम को रद्द कर दिया। लेकिन उसके बावजूद ब्लादीमिर इल्यीच सभाओं मे गए। बास्मान्नी ज़िले मे भाषण करने के बाद वे फौरन पुराने मिखेल्मन कारखाने के लिए चल पडे।

इस कारखाने की हथगोला-वर्कशाप मे हुई उस सभा मे लोग बडी सख्या मे उपस्थित थे। भाषण का विषय था 'दो सत्ताए (सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व और पूजीपति वर्ग का अधिनायकत्व)', जिसपर बोलते हुए ब्लादीमिर इल्यीच ने मजदूरों का आह्वान किया कि वे प्रतिक्रान्ति की उन शक्तियो को पराजित करने के निमित्त अपनी सारी ताकत सघटित करे, जो आज़ादी और समानता के नारे की आड मे वस्तुत सैकडो-हज़ारो मजदूरो और किसानो को गोलियो से उडा रही है। उन्होंने अपना भाषण इन शब्दो के साथ समाप्त किया, "हमारे निस्तार का एक ही मार्ग है, विजय या मौत!"

सभा समाप्त होने पर ब्लादीमिर इल्यीच वर्कशाप से निकलकर अहाते मे आए, तब काप्लान नाम की एक आतकवादी स्त्री ने उन्हे बुरी तरह घायल कर दिया। उसने दक्षिणपथी समाजवादी-क्रान्तिकारियो की पार्टी की केंद्रीय समिति के आदेश पर लेनिन पर गोलिया चलाई थी। उसने लेनिन पर तीन गोलियां चलाई। दो गोलियों ने उन्हे घायल कर दिया और तीसरी ने पीठ पर सिर्फ उनके ओवरकोट को वेध दिया। यह वही ओवरकोट था, जो ब्लादीमिर इल्यीच उस समय पहने हुए थे, जब वह अप्रैल १९१७ मे उत्प्रवास से रूस लौटे थे और जिसे वह जब तक जीवित रहे, तब तक पहनते रहे। गोलियो ने उसपर स्थायी निशान छोड दिए।

उस समय जन-कमिसार परिषद के सदस्य अपनी एक नियमित बैठक के लिए जमा हुए थे, जिसे लेनिन की व्यस्तता को ध्यान मे रखते हुए सामान्यत साढे आठ बजे के बजाय ६ बजे रखा गया

था। जब ठीक ९ बजे व्लादीमिर इल्यीच उपस्थित नहीं हुए, तब हर कोई परेशानी महसूस करने लगा। हर बीतनेवाले मिनट के साथ संदेह बढ़ता गया। तभी अकस्मात् यह भयानक खबर आयी कि व्लादीमिर इल्यीच जख्मी हालत में घर लाए गए हैं। एक अदम्य शक्ति हमें उनकी ओर खींच ले चली। उनके मकान का दरवाजा, जिसे आम तौर से बंद रखा जाता था, पूरा का पूरा खोल दिया गया था। संतरी खोया हुआ सा खिड़की के पास खड़ा था। मैं जन-कमिसार परिषद के सदस्यों के पीछे-पीछे मकान में पहुंची। व्लादीमिर इल्यीच अपने पलंग पर पड़े थे और जोर-जोर से कराह रहे थे। वे खतरे से आगाह नहीं थे, उन्हें केवल घायल हाथ में दर्द महसूस हो रहा था। लेकिन वह घाव दूसरा था, जिससे उनके जीवन के लिए खतरा था।

लेनिन को विस्फोटक, विष-बुझी गोलियों से घायल किया गया था।

अप्रैल १९२२ में जब आपरेशन करके उस गोली को निकाला गया, जो उनके गले की हड्डी के पास धुस गई थी, तो यह पता चला कि उसमें एक सिरे से दूसरे सिरे तक लीक बनायी गयी थी। समाजवादी-क्रान्तिकारियों के मुकदमे में १९२२ की गर्मियों में हुई जांच से इस बात की पुष्टि हुई कि आतंकवादी काप्लान ने जिन गोलियों से लेनिन को घायल किया था, उनमें कुरारे नामक तेज जहर भरा गया था। मा० इ० उल्यानोवा ने 'तीन गोलियां' नामक अपने संस्मरण में लिखा है, "यह बेहद संयोग की बात थी कि वह हमारे लिए बच गए। विस्फोटक गोलियां फटी नहीं। किन्हीं अज्ञात कारणों से जहर की ताकत क्षीण हो गई।"

जब व्लादीमिर इल्यीच क्रेमलिन में लाए गए, तो उन्होंने ड्राइवर गील के सुझाव के अनुसार स्ट्रेचर पर अंदर जाने से इनकार कर दिया और गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद दूसरी मंजिल पर अपने मकान तक पैदल चलने का आग्रह किया। घायल लेनिन के क्रेमलिन वापस आने की घटना को मारीया इल्यीनिच्ना ने इस प्रकार बयान किया है, "घंटा बीता, दो घंटे बीते। मैं खिड़की के पास खड़ी चिंताकुल उस कार के लौटने का इंतजार कर रही थी,



व्ला० इ० लेनिन, निरोग होने के बाद जन-कमिसार परिषद के कर्मचारियों के बीच।
लेनिन के बायें ली० फोतियेवा (अक्तूबर १९१८)



व्ला० इ० लेनिन और या० मि० स्वेर्दलोव (दाएं) , कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स के
अस्थायी स्मारक के उद्घाटनोपरान्त उसे देखते हुए (नवम्बर १९१८)

जिसे मैं खूब पहचानती थी। अन्तत वह असाधारण रफ्तार से आती हुई दिखाई पडी। लेकिन बात क्या थी? ड्राइवर कूदकर बाहर निकला और उसने पीछेवाला दरवाजा खोला। ऐसा पहले कभी नही हुआ था। कुछ अजनबी बाहर निकलने मे इल्यीच की मदद कर रहे थे। न वह ओवरकोट पहने थे, न कोट। वह साथियो के सहारे चल रहे थे। वह ऊपर चढने ही जा रहे थे कि मैं तेजी से सीढिया उतरकर नीचे पहुची। इल्यीच बिलकुल पीले पड गए थे, लेकिन वह दोनो बगलो मे साथियों के सहारे खुद ही चल रहे थे। हमारे पीछे ड्राइवर गील थे। मैंने उनसे पूछा कि घटना क्या हुई, पर इल्यीच ने आश्वासन देते हुए जवाब दिया कि वह केवल बाह मे कुछ घायल हो गए हैं। मैं दरवाजा खोलने और उनका बिस्तर ठीक करने के लिए आगे दौडी, जहा कुछ मिनट बाद उन्हे लिटा दिया गया।"

डाक्टर विनोकूरोव, वेलीच्किना, वेइसब्रोद, ओबुख और मित्स लेनिन के इर्द-गिर्द जमा हुए, जिनके साथ बाद मे डाक्टर रोजानोव और मामोनोव भी आ मिले। वे प्रत्यक्षत परेशान थे। रक्तस्राव के फेफडे तक फैल जाने का डर था और ऐसी हालत मे तुरत मौत हो सकती थी। हम चिंता और दुख की असहनीय यंत्रणा मे चुपचाप कमरो मे निष्प्रयोजन टहल रहे थे। लेनिन जिस कमरे मे लेटे थे, उसके अलावा वहा तीन कमरे और थे खाने का कमरा, नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना का छोटा सा अध्ययन-कक्ष और मारीया इल्यीनिच्ना का कमरा। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना बाहर गई थी। एक साथी ने दूसरो को चेतावनी दी कि उन्हे इस आघात को बर्दाश्त करने के लिए पहले से तैयार किया जाना चाहिए। जन-कमिसार परिषद के एक सदस्य उनसे मिलने गए और जल्दी ही उन्हे लेकर वापस आ गए। सदा की भाति सकट की घडियो मे नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ऊपर से शात रही। उन्होंने पूछा कि खतरा कितना बडा है।

व्लादीमिर इल्यीच जोर-जोर से कराह रहे थे। उनके कमरे का दरवाजा खुला हुआ था। इस बात की पूरी-पूरी कोशिश करते हुए कि कोई भी आवाज न हो, हमने अदर जाकर देखा और

असह्य पीड़ा में भी लेनिन ने सदा की तरह अपने साथियों की चिंता का ख़याल किया और कहा : "कोई बात नहीं है, महज मेरी बांह में तकलीफ़ है।"

असहनीय व्यथापूर्ण घड़ियां काटे नहीं कट रही थीं। अंत में हमें बताया गया कि फ़ौरी ख़तरा गुज़र गया है। हमारे मन में आशा तरंगित होने लगी। लेकिन डाक्टरों ने बताया कि अगले तीन या चार दिन के भीतर पेचीदगियां पैदा हो सकती हैं और केवल उन दिनों के ख़ैरियत से बीत जाने पर ही कोई विश्वासपूर्वक उनके स्वास्थ्य लाभ करने की बात कह सकता है। सभी साथी एक-एक करके चले गए। केवल निकटतम साथी रात में देखभाल करने के लिए रुक गए—कुछ व्लादीमिर इल्यीच के मकान में और कुछ जन-कमिसार परिषद के कमरों में। लेनिन के घावों से बुरी तरह खून निकला था। हमारे पास पट्टियों की कमी थी, क्योंकि अभी उस समय तक क्रेमलिन में कोई प्राथमिक सहायता-केंद्र नही था। इस कारण व्लादीमिर इल्यीच की एक सेक्रेटरी वहा रात भर खूनी पट्टियों को धोती रही।

धीरे-धीरे व्लादीमिर इल्यीच अच्छे होने लगे। डाक्टरों को डर था कि कहीं घायल बांह दूसरी बांह से छोटी न हो जाये। इसलिए बांह को ठीक दिशा में फैलाने के लिए उससे एक घिरनी पर घूमता हुआ कोई वजन बाध दिया गया। वह कष्टप्रद और अप्रीतिकर दोनो ही था और व्लादीमिर इल्यीच ने यह कहकर उस इलाज पर आपत्ति की कि यह बिलकुल आवश्यक नहीं है कि उनकी दोनों बांहें समान रूप से लबी हों और वह एक बांह के दूसरी से लंबी होने के तथ्य के साथ खुशी से समझौता कर लेंगे। लेकिन डाक्टरों ने उचित इलाज जारी रखने का आग्रह किया।

स्वस्थ्य हो जाने के बाद भी काफ़ी लंबे अर्से तक उनकी बांह ठीक तरह से काम नही करती थी और उन्हें व्यायाम बताए गए थे। वह हर उपयुक्त अवसर का इस्तेमाल करके अपनी चारित्रिक दृढ़ निश्चयता के साथ उन व्यायामों को किया करते थे।

जन-कमिसार परिषद की बैठकों में अक्सर व्लादीमिर इल्यीच अपने घायल हाथ को पीठ की ओर करके खड़े हो जाते थे (बैठ-

वैठे थककर वह कभी-कभी वैठको में खड़े हो जाना पसद करते थे) और उससे कलाई तथा उंगलियो के व्यायाम करते रहते थे। अंत मे वह अपने घायल हाथ का उपयोग बिलकुल संतोषजनक ढंग से करने लगे।

उसी ३० अगस्त की शाम को अखिल रूसी केंद्रीय कार्य-कारिणी समिति ने "सभी मजदूरों, किसानो और सैनिको के प्रतिनिधियो की सोवियतों, सभी फौजो, सभी, सभी, सभी!" के नाम एक अपील जारी की। "कुछ घंटे पहले साथी लेनिन की हत्या की नीचतापूर्ण कोशिश की गई थी मजदूर वर्ग अपनी शक्तियो को और अधिक सघटित करके क्रान्ति के सभी दुश्मनो के खिलाफ निर्मम सार्वजनिक आतक फैलाकर अपने नेताओ की हत्या के प्रयत्नो का जवाब देगा।"

उसी रात को यह अपील रेडियो द्वारा प्रसारित की गई।

अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति की एक आज्ञप्ति द्वारा २ सितंबर को सोवियत जनतत्र एक हथियारबंद शिविर घोषित कर दिया गया।

व्लादीमिर इल्यीच को उनकी बीमारी के दौरान मजदूरो और किसानो के असख्य तार और पत्र मिले, जिनमे बदमाश मुजरिमो के लिए गुस्से और नफरत प्रकट किये गये थे और अपने नेता के लिए शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ की कामना, कई बार तो वस्तुत माग, की गई थी।

चमडा कारखाना मजदूर-सघ के सदस्यो ने लिखा था, "तुम जियोगे, ऐसी है सर्वहारा वर्ग की इच्छा!" मेहनतकश जनता से मिले हजारो तारों और पत्रो का निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए 'प्राव्दा' ने लिखा था

"लेनिन अपनी बीमारी के खिलाफ लड रहे हैं। वह उसपर विजय प्राप्त करेगे! सर्वहारा वर्ग यही चाहता है, यही इच्छा करता है और इस प्रकार वह भाग्य को आदेश देता है।"

मेहनतकश जनता लड़ाई के मोर्चे तथा घरेलू मोर्चे पर वीरत्वपूर्ण कार्य संपन्न करके लेनिन के प्रति अपने प्रेम का प्रदर्शन करती थी।

तुला गुबर्निया में नोवोसील्ये जिले के पांकोवो तहसील के किसानों ने लेनिन को लिखा था: "...हमें आनंदित करने और साम्राज्यवादियों को जलाने के लिए अच्छे हो जाओ। हम सामाजिक क्रान्ति संपन्न करने के तुम्हारे कार्यभारों को समझते हैं और क्रान्ति को भूखों न मरने देने के उद्देश्य से हमने कुलकों से स्टेशन को रोटी दिलवा दी है और कल हम ४००० पूड राई रवाना कर देंगे।"

बीमार और घावों के कारण बेहद तकलीफ़ में होते हुए भी व्लादीमिर इल्यीच का सारा ध्यान राजनीतिक कार्य तथा देश की स्थिति पर ही लगा हुआ था।

जब वह ६ सितंबर को पहली बार लिखने के क़ाबिल हुए, तब उन्होंने ओरेल गुबर्निया के येलेत्स ज़िले में असंतोषप्रद अनाज की वसूली के बारे में कृषि के जन-कमिसार सेरेदा को हिलते हुए हाथ द्वारा पेंसिल से एक नोट लिखा: "साथी सेरेदा! मुझे बहुत अफ़सोस है कि आप मुझसे मिलने नहीं आए। आप को 'अति-उत्साही' डाक्टरों की बात पर ध्यान नहीं देना चाहिए था।

"येलेत्स ज़िले में अच्छे नतीजे क्यों **नहीं निकल रहे हैं?** इससे मुझे बहुत परेशानी हो रही है... यह साफ़ है कि अच्छे नतीजे नहीं निकल रहे हैं। १६ तहसीलों से, जहां ग़रीब किसानों की समितियां है, **एक भी** स्पष्ट निश्चित उत्तर **नहीं** मिला है!..

"कहीं से कोई ऐसी रिपोर्ट नहीं मिलती, जिससे प्रकट हो कि काम पूरे ज़ोर से चल रहा है!" लेनिन ने आगे निवेदन किया था कि हर तहसील में एक-एक संवाददाता नियुक्त किया जाए, जो उनसे (लेनिन से) संपर्क रखे।

लिफ़ाफ़े पर उन्होंने खुद अपने हाथ से लिखा: "साथी सेरेदा (कृषि जन-कमिसार) (लेनिन द्वारा प्रेषित)।"

१७ सितंबर को येलेत्स ज़िले के सभी ग़रीब किसानों की समितियों से लेनिन को तार मिले। किंतु उनसे प्राप्त सूचना संतोष-जनक न होने से उन्होंने जवाब में निम्नलिखित गश्ती तार भेजा:

"आप अपने को आम, अस्पष्ट वक्तव्यों तक ही सीमित नहीं रख सकते, जो बहुत अक्सर कामों की पूर्ण असफलता पर पर्दा डालते हैं। ठीक-ठीक साप्ताहिक आंकड़े आवश्यक हैं... ऐसे

तथ्यो के बिना सब कुछ महज शब्दजाल है। और ठीक-ठीक जवाब दीजिए।"

स्वास्थ्य-लाभ करने के दौरान व्लादीमिर इल्यीच लड़ाई के मोर्चो से आनेवाली खबरों मे जोशो-खरोश के साथ दिलचस्पी लेते थे और लाल फौज की कामयाबियो का गहरी खुशी के साथ उल्लेख करते थे। उन दिनो के उनके पत्र और तार सोवियत सत्ता की अजेयता मे अडिग विश्वास तथा लाल फौज की बहादुरी की प्रशंसा से ओत-प्रोत हैं।

व्ला० इ० लेनिन ने कज़ान की मुक्ति के सबध मे ११ सितबर को लिखा था "मैं लाल फौजों की शानदार जीत का उत्साहपूर्वक स्वागत करता हू।"

लाल फौज ने १२ सितबर को सिम्बीर्स्क को आजाद किया। पहली फौज के योद्धाओ ने लेनिन को निम्नलिखित तार दिया "प्रिय व्लादीमिर इल्यीच! आपके जन्म-नगर पर कब्जा – यह है आपके एक ज़ख्म का जवाब और दूसरे ज़ख्म का जवाब होगा समारा!"

उत्तर मे व्लादीमिर इल्यीच ने लिखा "मेरे जन्म-नगर सिम्बीर्स्क पर कब्जा मेरे ज़ख्मो के लिए सर्वोत्तम इलाज, बेहतरीन पट्टी है। मैं जीवन और शक्ति का असाधारण ज्वार महसूस कर रहा हू। मै लाल सेना के जवानो को उनकी विजय पर बधाई देना चाहता हू और समस्त मेहनतकश जनता की ओर से उन सभी को उनकी कुर्बानियो के लिए धन्यवाद देता हू।"

व्लादीमिर इल्यीच की जिजीविषा प्रचड थी। जनता की इच्छा द्वारा समर्थित उनकी इस जिजीविषा ने उनके सबल शारीरिक गठन के साथ मिलकर उनकी बीमारी पर विजय प्राप्त कर ली। उन्होंने शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ करना शुरू कर दिया और जितनी जल्दी मुमकिन हुआ, वह काम पर लौट आए

त्सरीत्सिन के मोर्चे की स्थिति के सबध मे लेनिन ने १५ सितबर को स्वेर्दलोव और स्तालिन के साथ मत्रणा की। १६ सितम्बर को व्लादीमिर इल्यीच ने रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केंद्रीय समिति की एक बैठक मे भाग लिया, १७ सितम्बर



गोर्की में व्ला० इ० लेनिन का आवास-गृह

वेइसब्रोद के साथ, जो एक कम्युनिस्ट थे, गोर्की के लिए रवाना हुए। वह वहा लघु "उत्तरी" खड मे तीन हफ्ते रहे। कुछ समय के लिए अपनी रोजमर्रा की सरगर्मियो की परेशानियो से छुटकारा पाकर लेनिन ने अपने को सैद्धातिक कार्यों मे लगाया और अपनी अमर कृति 'सर्वहारा क्रान्ति और गद्दार काउत्स्की' लिखी जिसने मार्क्सवाद-लेनिनवाद की मूल्यवान निधि मे वृद्धि की।

आन्दोलनकारी लेनिन

महान लेनिन आंदोलन-कार्य के बेजोड़ मर्मज्ञ थे। यह बात विशेष रूप से सोवियत काल में प्रकट हुई, जब कि उन्हें प्रत्यक्ष रूप से और अखबारों के ज़रिए अक्सर व्यापकतम जन-समुदायों को संबोधित करने का सुयोग प्राप्त हुआ। अपने अनेक भाषणों में लेनिन ने पार्टी की क्रान्ति से पहले की सरगर्मियों के ग़ैरक़ानूनी दौर में और मज़दूर वर्ग द्वारा सत्ता पर अधिकार किए जाने के बाद के दौर में प्रचार और आंदोलन के कार्य-भारों का अंतर समझाया, जब पहले दौर में प्रचारक और आंदोलनकारी एक निश्चित हल्के या संगठन के प्रतिनिधि थे और दूसरे में हर प्रचारक और आंदोलनकारी उस "पार्टी का सदस्य था, जो शासन करती थी, जो संपूर्ण राज्य तथा पूंजीवादी व्यवस्था के ख़िलाफ़ सोवियत रूस के सार्वभौमिक संघर्ष का संचालन करती थी"। लेनिन ने सिखाया कि इन नई हालतों में आंदोलन और प्रचार का काम जन-समुदायों को पुनर्शिक्षित करना होना चाहिए, उसका काम सबसे पहले कम्युनिस्ट पार्टी की नीति की व्याख्या के साथ आर्थिक निर्माण को जोड़ना होना चाहिए। "हर आंदोलनकारी और प्रचारक को इसे अपने काम का आधार बनाना चाहिए और जैसे ही वह यह समझ लेगा वैसे ही सफलता सुनिश्चित हो जाएगी।" व्लादीमिर इल्यीच कहा करते थे कि हर आंदोलनकारी को सोवियत सत्ता का सर्वाधिकार-प्राप्त प्रतिनिधि, आर्थिक निर्माण में सभी मज़दूरों और किसानों का मार्गदर्शक होना चाहिए।

कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत राज्य का पथप्रदर्शन तथा



स्तेपान राज़िन के स्मारक के उद्घाटन के अवसर पर लाल मैदान में भाषण करते हुए
व्ला० इ० लेनिन (मई १९१९)



व्ला० इ० लेनिन और मि० इ० कालीनिन (लेनिन के दाएं दूसरे),
मेहनतकश कज़ाकों की पहली अखिल रूसी कांग्रेस के प्रतिनिधियों के बीच (मार्च १९२०)

अत्यधिक सैद्धांतिक एवं संगठनात्मक कार्य करते हुए भी व्लादीमिर इल्यीच लेनिन हमेशा जनता के बीच रहते थे और अपने निजी उदाहरण से यह प्रदर्शित करते रहते थे कि एक सरगर्म आंदोलनकारी को कैसा होना चाहिए। लेनिन द्वारा काम में लाए जानेवाले, आंदोलन के रूप और तरीके बहुत ही भिन्न होते थे: वह सार्वजनिक सभाओं में भाषण करते थे, अखबारों के ज़रिए मेहनतकश जनता के नाम पत्र और अपीलें जारी करते थे, मजदूरों और किसानों के अनेकानेक प्रतिनिधिमंडलों के साथ तथा अलग-अलग कार्यकर्ताओं के साथ भी बातचीत करते थे।

लेनिन आंदोलन के लोचदार तरीकों में विश्वास करते थे। उनकी मांग थी कि परिस्थिति और लक्ष्य को ध्यान में रखकर उसके अनुसार विभिन्न अवसरों पर आंदोलन के विभिन्न तरीकों और रूपों का उपयोग किया जाना चाहिए। १६१६ के अप्रैल में, जब कि उराल-क्षेत्र में कोल्चाक के बढ़ाव से सोवियत जनतंत्र गंभीर ख़तरे में पड़ गया था, तब लेनिन ने कोल्चाक को हराने के निमित्त एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा देने के लिए आह्वान किया। निजी आंदोलन तथा आंदोलनकारियों की पहलकदमी के प्रोत्साहन पर ज़ोर देते हुए, रंगरूटों और लाल सैनिकों में आंदोलन को विशेष रूप से तेज करने का काम भी उन अमली कार्रवाइयों में शामिल था, जिन्हें लेनिन ने प्रस्तावित किया। लेनिन ने लिखा था "आंदोलन के आम तरीके, जैसे कि भाषण, सभाएं इत्यादि, काफ़ी नहीं है। मजदूरों को अकेले और टोलियां बनाकर लाल सैनिकों के बीच आंदोलन करना चाहिए। बारिकों, लाल फ़ौज की टुकड़ियों और कारखानों को आम मजदूरों, ट्रेड यूनियन के सदस्यों की ऐसी टोलियों के बीच बांट दिया जाना चाहिए। ट्रेड-यूनियनों को यह देखने के लिए जांच कार्रवाइयां करनी चाहिए कि उनका हर सदस्य घर-घर आंदोलन करने, पर्चे बांटने और व्यक्तिगत बातचीत द्वारा आंदोलन करने के कामों में भाग लेता है अथवा नहीं।"

जनता के साथ जो निकट और निरंतर संपर्क लेनिन बनाए रखते थे, वही उनकी तमाम सरगर्मियों की मुख्य विशेषता थी। जनता के साथ घनिष्ठ संबंध को वह सोवियत सत्ता की सफलता

की गारंटी समझते थे। जनता की सृजनात्म
ं, मजदूरों के वर्गीय सहज-बोध में उनका विश्वास
का विश्वास था कि न्यायोचित हेतु की रक्षा के
वे बड़े से बड़ा प्रयास और आत्मत्याग करने में समर्थ
न के आंदोलन-कार्य की मुख्य विशेषता यह थी कि वह
त सीधी अपील करते थे, नवजात सोवियत जनतंत्र के सामने
त कठिनाइयों के बारे में जनता के साथ उसके नेता की
त से बातचीत करते थे और उन कठिनाइयों पर विजय पाने
ए राह दिखाने की योग्यता रखते थे।

जनता के दुःखों के साथ व्लादीमिर इल्यीच की गहरी हमदर्दी
और गृह-युद्ध तथा आर्थिक तबाही के वर्षों में मेहनतकश जनता
ा की गई कुर्बानियों और उसके द्वारा झेली गई तंगी की मार
। वह खूब समझते थे। जनता के सामने समाजवाद के निर्माण
का महान कार्य-भार प्रस्तुत करते हुए, लेनिन ने यह बात स्पष्ट
कर दी कि सोवियत सत्ता की हिफ़ाजत खुद जनता की ताक़त पर
ही निर्भर है। १९१८ के वसंत में खाद्यान्न की समस्या भयानक
हो उठी। मजदूर भूख से बेहाल थे। लेनिन ने पेत्रोग्राद के मजदूरों
को तार दिया और उनका आह्वान किया कि वे खुराकी दस्ते
संगठित करके उन्हें रोटी के लिए लड़ने हेतु देहातों में भेजें। उन्होंने
लिखा "मजदूर साथियो! याद रखो कि क्रान्ति एक नाजुक
स्थिति में है। याद रखो कि और कोई नहीं, केवल तुम्हीं क्रान्ति
की रक्षा कर सकते हो।" इस अपील का गर्मजोशी के साथ स्वागत
हुआ। मजदूरों के खुराकी दस्तों ने कुलकों के आर्थिक तोड़-फोड़
को खत्म करने में सहायता की।

देश की सर्वाधिक संकटपूर्ण घड़ियों में, जबकि कुछ दुर्बलमन
लोगों को परिस्थिति निराशाजनक प्रतीत हो रही थी, लेनिन सदा
ही जन-हेतु की विजय में अपने अडिग विश्वास के द्वारा मेहनतकश
लोगों को मनोबल प्रदान करने में समर्थ थे, हार्दिक, बाध्यकारी
तथा बेहद सच्चाई भरे शब्दों द्वारा उन्हें प्रोत्साहित करने,
जनता को कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने का रास्ता
और साधन बताने और न केवल संघर्ष के तात्कालिक व्य

वहारिक लक्ष्य निर्धारित करने, बल्कि उसके सामने एक नए समाज के निर्माण की महान प्रत्याशा प्रस्तुत करने में भी वह समर्थ थे। १९१८ की मई में 'अकाल के बारे में' लेनिन द्वारा लिखित एक पत्र में उद्धृत ये शब्द समाजवादी क्रान्ति तथा मजदूर वर्ग की सामर्थ्य में उनका विश्वास व्यक्त करते हैं: "हमें सर्वहारा वर्ग के ऐसे और दसगुने **फौलादी दस्तों** की जरूरत है, जो वर्गचेतन हों और जिनकी कम्युनिज़्म में असीम निष्ठा हो। तब हम अकाल और बेकारी पर विजय प्राप्त कर सकेंगे। तब हम क्रान्ति को समाजवाद की वास्तविक भूमिका बनने की ओर अग्रसर कर सकेंगे।"

लेनिन जनता को न केवल शिक्षा देते थे, बल्कि उससे सीखते भी थे। वे हज़ारों सूत्रों द्वारा जनता से जुड़े हुए थे। देश में जो कुछ भी हो रहा था, उस हर चीज़ की उन्हें आश्चर्यजनक रूप से अच्छी जानकारी थी। सरकारी दस्तावेजों का अध्ययन करने के अलावा, लेनिन मेहनतकश लोगों से निजी बातचीत के द्वारा तथा देश के कोने-कोने से प्राप्त होनेवाले ढेरों पत्रों से सूचनाएं प्राप्त करते थे। व्लादीमिर इल्यीच सभी ज़िलों, यहां तक कि दूर-दराज के ज़िलों की घटनाओं का भी मुस्तैदी से अनुसरण करते थे, लोगों की भावनाओं को ध्यानपूर्वक समझते थे, उनकी आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं का ख़याल रखते थे और जनता के हितों तथा उनकी इच्छाओं के अनुरूप ही पार्टी तथा सरकार की नीति संबंधी मुख्य समस्याओं को हल करते थे।

जब गृह-युद्ध की समाप्ति के बाद किसानों ने युद्धकालीन कम्युनिज़्म की नीति के प्रति असंतोष प्रकट करना शुरू किया और मज़दूरों तथा किसानों की एकता के भंग होने का ख़तरा पैदा हो गया, तो लेनिन ने प्रस्ताव किया कि एक नई आर्थिक नीति की ओर आकस्मिक मोड़ लिया जाना चाहिए। यह प्रस्ताव पेश करने से पहले लेनिन ने काफ़ी आधारकार्य किया। उन्होंने तम्बोव, व्लादीमिर तथा दूसरे गुबर्नियों के किसानों के संदेशवाहकों, उनके प्रतिनिधिमंडलों से बातचीत की, सोवियतों की ८वीं अखिल रूसी कांग्रेस के गैर-पार्टी किसान-प्रतिनिधियों की बैठकों में होनेवाली बहसों का ध्यान से अनुसरण किया और किसानों की जरूरतों से

"बहसों और वक्तव्यों के बारे में तहरीरनामे" – २८ मार्च– ...ों, जिन्हें रूसी कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के सदस्यों और जन-कमिसारों को सूचनार्थ दे दिया। देश की स्थिति का ...ानी से विश्लेषण करने और मेहनतकश किसानों की भावनाओं का हर तरह से जायजा लेने के बाद, लेनिन इस नतीजे पर पहुंचे कि राज्य द्वारा जिंस की इकट्ठी वसूली के स्थान पर जिंस के रूप में कर वसूल करने की प्रणाली लागू की जानी चाहिए। इस संबंध में उन्होंने 'किसानों के संबंध में थीसिस का प्रारूप' लिखा, जिसके पहले पैराग्राफ में कहा गया था कि 'जिंस की इकट्ठी वसूली के स्थान पर जिंस के रूप में कर की प्रणाली लागू करके गैर-पार्टी किसानों की मांग पूरी करना।'

दसवीं पार्टी कांग्रेस में भाषण करते हुए लेनिन ने कहा: "हम किसी भी हालत में कुछ भी छिपाने की कोशिश हरगिज नहीं करनी चाहिए, बल्कि हमें स्पष्टतापूर्वक एलान कर देना चाहिए कि किसानों के साथ जिस रूप में हमारे संबंध बने हैं, उनसे किसान [illegible] ... वे इस रूप को नहीं चाहते और वे ऐसे अब तक रहे [illegible] ... यह निर्विवाद है। किसानों ने अपनी इच्छा [illegible] ... मेहनतकश जनता के व्यापक समुदायों की [illegible] ... करनी पड़ेगी। हम [illegible] ... सजीदगी [illegible] ... हम अपनी नीति पर फिर से [illegible] ... स्थापित नई आर्थिक [illegible] ... पार्टी द्वारा [illegible] ... लेनिन के प्रस्ताव पर [illegible] ... नीति ने समाजवाद के लिए पथ प्रशस्त किया।

लेनिन सरल शब्दों में [illegible] लोकप्रिय वक्ता थे। लाखों मजदूरों, सैनिकों और किसानों को संबोधित करते हुए जब वह भाषण करते थे, उनसे उत्साह [illegible] ... उन पर उनका प्रबल प्रभाव पड़ता था। कभी-कभी [illegible] ... आशा और सार्वजनिक चेतना जागृत होती थी। [illegible] ... को दिन में कई बार भाषण देना पड़ता था। उन्होंने [illegible] ... अगस्त १९१८ को [illegible] ... ५ बार भाषण [illegible] ... मोर्चे के लिए रवाना होनेवाले सैनिकों की एक सभा में, [illegible] ... रंगरूट के सामने, [illegible] ... में मास्को कार्यकर्ताओं [illegible]

हल्के मे और स्रोदीन्का मे हुई लाल फौज के सैनिको की एक सभा मे। अपूर्ण आकडो के अनुसार, केवल गृह-युद्ध और सशस्त्र विदेशी दखलंदाजी के वर्षो मे ही लेनिन ने २१६ बार भाषण किये।

लेनिन हमेशा सरल और समझ मे आने लायक ढग से बोलते थे। कठिन से कठिन विषय को वह ऐसे ढग से पेश करते थे कि वह हर सुननेवाले की समझ मे आने लायक बन जाता था। लेनिन अपने श्रोताओं मे ऊपरी लफ्फाजी या भाषणकला के मजे हुए हथकडो द्वारा नही, – उनका सहारा वह कभी नही लेते थे – बल्कि लौह-तर्क, गंभीर निष्ठा तथा जिस हेतु का वह पक्ष-पोषण करते थे उस हेतु की न्याय्यता मे अपनी अडिग आस्था के द्वारा विश्वास या प्रेरणा उत्पन्न करते थे। उनके भाषण करने का ढग बहुत प्रभावशाली और स्पष्ट था। वह अक्सर (अपने भाषणो मे) उपमाओं, चुटकुलो, कहावतो और रूसी तथा ससार की दूसरी भाषाओ के आदर्श ग्रथो के उद्धरणो का इस्तेमाल करते थे।

लेनिन हमेशा इस बात का ध्यान रखते थे कि उनके श्रोता कौन हैं। वह कहा करते थे कि सोवियत सत्ता के बारे मे किसी फैक्ट्री की सभा मे, किसानो की झोपडी मे, विद्यार्थियो के जमावडे मे तथा ऐसे ही अन्य जगहो मे कोई एक ही ढग से भाषण नही कर सकता। आदोलनकारी के लिए हर निश्चित श्रोता-समुदाय के विशिष्ट हितो, आबादी के जिस स्तर या समूह के लोगों के *सामने वह बोल रहा हो उनकी विभिन्न आवश्यकताओं तथा श्रोताओ* के सास्कृतिक स्तर को ध्यान मे रखना लाजिमी है।

लेनिन लिखित भाषण कभी नही पढते थे। विस्तृत रिपोर्टें तैयार करते समय वह आम तौर से अपने भाषण का एक खाका तैयार कर लेते थे और कुछ हालतो मे, अगर भाषण विशेष महत्व और जिम्मेदारी का हुआ तो, वह अपनी थीसिस पहले ही लिख लेते थे। अगर रिपोर्ट मे आकडो या यथार्थ तथ्यो की जरूरत हुई तो वह उन्हे भी लिख लेते थे। किन्तु अपनी असाधारण स्मरण-शक्ति के कारण उन्हे अपनी टीपो को बहुत ही कम देखने की जरूरत होती थी। लेनिन का हर भाषण उमगो से भरा और सृजनात्मक होता था।

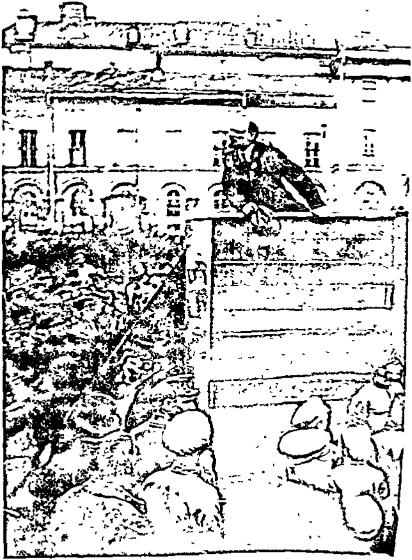
लेनिन के भाषणों को सुनकर, उनके पत्रों और लेखों को पढ़कर जनता अपने संघर्ष की महानता और वीरता का बोध प्राप्त करती थी और अपने इल्यीच का निस्स्वार्थ निष्ठा के साथ अनुसरण करती थी।

लेनिन ने अनेक अवसरों पर मास्को के त्रियोख्गोर्नाया सूती मिल में भाषण किया और मज़दूरों पर अपने नेता के भाषणों का कैसा असर होता था, इसका वर्णन खुद मजदूरों ने यों किया है:

"उनके हर शब्द के साथ मज़दूरों के हृदय में विजय का विश्वास रखने की इच्छा, उन सारी कठिनाइयों पर क़ाबू पा लेने की इच्छा बढ़ती जाती थी, जो हमारे रास्ते में खड़ी हो सकती थीं। लोग लेनिन के हर शब्द का विश्वास करते थे, उनके हर शब्द में सचाई और समझदारी की गूंज होती थी।"

चेर्न्याक नामक एक मज़दूर का बयान है कि जिस इमारत में अक्तूबर क्रान्ति की चौथी वर्षगांठ मनाने के अवसर पर लेनिन ने भाषण किया था, वह खचाखच भरा हुआ था। जब लेनिन मंच पर प्रकट हुए तब "जोश की एक ऐसी लहर उमड़ी कि लोगों के बीच खलबली मच गई। स्वागत के नारे देर तक लगते रहने के कारण इल्यीच अपना भाषण नहीं शुरू कर सके। औरतें अपने बच्चों को अपने सिरों पर उठाए हुए थीं। नौजवान लोग भीड़ में धक्कम-धुक्की करते हुए खिड़कियों और मेजों पर चढ़ गए। हमारे विनम्र तथा बुद्धिमान नेता और शिक्षक के दर्शन से हममें से हर किसी के मन में खुशी की एक ऐसी अदम्य लहर दौड़ गई कि श्रोताओं को शांत करने में अध्यक्ष-मंडल को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। फिर हमारा रोम-रोम ध्यान से सुनने लगा। वक्ता और श्रोता पारस्परिक संवेद, प्रेम और भक्ति के सबल बंधनों द्वारा एक हो गए।"

छापे के माध्यम से लेनिन द्वारा किए जानेवाले आंदोलन-कार्य का – अखबारों में छपे, पर्चों की शक्ल में जारी किए गए और रेडियो द्वारा प्रसारित उनके पत्रों, उनकी अपीलों तथा उनके संबोधनों का – ज़बर्दस्त महत्व था। उनके द्वारा लेनिन ने लाखों लोगों का उद्बोधन किया।



मई १९२० में पोल सफ़ेद गार्डों के खिलाफ़ लड़ने के लिए मोर्चे के लिए जानेवाली
फ़ौजी टोलियों के सामने तेआत्राल्नाया चौक में भाषण करते हुए व्ला० इ० लेनिन

आदोलन के इस रूप की एक मिसाल के तौर पर लेनिन की 'समाजवादी पितृभूमि खतरे मे है!' शीर्षक अपील को लिया जाए, जो ब्रेस्त-लितोव्स्क की सधि-वार्ता के भग हो जाने तथा पेत्रोग्राद के ऊपर जर्मन *साम्राज्यवादियो का आक्रमण शुरू हो* जाने के बाद २१ फरवरी, १९१८ को लिखी गई थी। उस अपील मे दखलदाजो के खिलाफ सघर्ष के बुनियादी कार्यभार सक्षेप मे *किन्तु स्पष्टत बयान किए गए थे* और हमारे न्यायसगत हेतु की विजय मे दृढ विश्वास व्यक्त किया गया था। **"समाजवादी पितृभूमि खतरे में है! समाजवादी पितृभूमि ज़िदाबाद!"** लेनिन की अपील के जवाब मे क्रान्तिकारी जन-समुदाय सघर्ष के लिए उठ खडा हुआ। नवजात लाल फौज की टुकडिया तैयार की गई, जिन्होंने जर्मन फौजो को वीरतापूर्वक पीछे खदेड दिया। पेत्रोग्राद की ओर बढाव रुक गया और समाजवादी पितृभूमि को बचा लिया गया।

आदोलन की दूसरी महत्वपूर्ण दस्तावेज़ वह पत्र है जो अगस्त १९१८ मे लिखा गया था, 'साथी मज़दूरो! अतिम, निर्णायक लडाई के लिए आगे बढो!' आग्नेय शब्दो मे लेनिन ने कुलको के खिलाफ गरीब किसानो की लडाई के महत्व को समझाया और कुलको के विद्रोह के निर्मम दमन की माग की। "इन कुलको के खिलाफ निर्मम युद्ध चलाया जाना चाहिए! उन्हे मौत के घाट उतार दो! मजदूरो के लिए कुलको के विद्रोह को कठोरतापूर्वक *कुचल देना लाज़िमी है* " इस पत्र मे लेनिन ने किसान जनता के विभिन्न स्तरो के प्रति सोवियत सत्ता की नीति का स्पष्टीकरण किया था और कहा था कि "मजदूरो की सत्ता ने औसत किसान *को न कभी नुकसान पहुचाया है और न कभी पहुचाएगी।"*

लेनिन ने नवबर १९१९ में रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शे-विक) की केंद्रीय समिति की ओर से पार्टी सगठनो के नाम एक परिपत्र लिखा जिसमे उन्होंने *उस समय के सबसे बुरे शत्रु – ईधन-सकट* – के खिलाफ सघर्ष करने के लिए उनका आह्वान किया, जिसके कारण सोवियतो के सारे कामो के ठप हो जाने का खतरा पैदा हो गया था। पत्र मे सोवियत सत्ता के *बल-स्रोत और उसकी* विजय के कारणो का आज्वल्यमान विश्लेषण किया गया था।

लेनिन ने बताया था कि "हमारे बल का मुख्य स्रोत मज़दूरों की वर्ग-चेतना और वीरता है, जिनके साथ सहानुभूति और जिनका समर्थन किए बिना मेहनतकश किसान न रह सका है और न रह सकता है। हमारी विजयों का कारण यह है कि हर नई कठिनाई और समस्या को पैदा होते ही बताकर हमारी पार्टी तथा सोवियत सरकार सीधे मेहनतकश जनता से अपील करती हैं; हममें जनता को यह समझा लेने की योग्यता है कि किसी निश्चित समय पर पहले सोवियतों के कार्य के एक पहलू पर और फिर किसी दूसरे पहलू पर सारी शक्ति लगा देना क्यों आवश्यक है; हममें जनता की शक्ति, वीरता और उत्साह को जागृत करने तथा समय के सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य-भार के ऊपर अपने सारे क्रान्तिकारी प्रयत्नों को संकेंद्रित कर देने की क्षमता है।"

जनता से अपील करने में गंभीर सत्यपरायणता आंदोलनकारी लेनिन का एक लक्षण थी। उन्होंने जनता से कभी कोई ऐसी बात नही कही, जिसमें वह खुद विश्वास न करते हों। उन्होंने किसी परिस्थिति की कठिनाइयों या खतरे को कभी छिपाया नहीं। लेनिन अक्सर कहा करते थे कि मेहनतकश जनता जितना ही अधिक सचाई जानेगी, उतना ही अधिक मुस्तैदी से सोवियत सत्ता का साथ देगी। प्रेस्न्या हल्के के ग़ैर-पार्टी मज़दूरों तथा लाल सैनिकों के एक सम्मेलन मे २४ जनवरी १९२० को किए गए अपने भाषण में लेनिन ने कहा कि यह सोचना हास्यास्पद होगा कि जनता बोल्शेविकों का अनुसरण इसलिए करती है कि उनका आंदोलन श्वेत गार्डों अथवा संविधान सभावालो के आंदोलन मे अधिक हृदयग्राही है। "नहीं, बात यह है कि उनका आंदोलन सत्यपरायण है।"

लेनिन के आंदोलनात्मक भाषणों का लक्ष्य सदा ही ऊंचा होता था। उनके नारों की शब्दावली बेहद साफ़ होती थी, वे ठोस होते थे और कार्रवाई के लिए प्रोत्साहित करते थे। उनमें उन मुख्य और तात्कालिक कार्यभारों की अभिव्यक्ति होती थी, जिनपर ऐतिहासिक विकास की किसी निश्चित मंज़िल में सारा ध्यान और सारा प्रयत्न लगाया जाना होता था।

गृह-युद्ध तथा सशस्त्र विदेशी हस्तक्षेप के वर्षों में लेनिन ने

यह नारा दिया कि "सब कुछ मोर्चे के लिए!" और घोषित किया कि हर सभा, हर बैठक और हर कारोबारी सम्मेलन मे इस नारे को लगाना आदोलनकारियो का प्रथम और अनिवार्य कार्य-भार है। जब राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की बहाली की समस्या सामने आई, तब लेनिन ने नए नारे दिए। श्रम-अनुशासन पर अपने भाषण मे (मार्च १६२०) लेनिन ने कहा, "अब हम कहेंगे कि 'सुदगरजो का नाश हो, उन लोगो का नाश हो जो निजी दौलत-मंदी और मुनाफाखोरी की सोचते है, जो अपने कर्तव्य-पालन मे जी चुराते है, जो विजय के लिए अनिवार्य कुर्बानियो मे भागते है।"

"श्रम-अनुशासन ज़िंदाबाद! कार्य का उत्साह ज़िंदाबाद! मज़दूरो-किसानो के हेतु के प्रति निष्ठा अमर हो!"

लेनिन अक्सर कहते थे कि आदोलन का यथार्थ मे निकट सपर्क होना चाहिए, उसमे लफ्फाजी नही होनी चाहिए, क्योकि लफ़्फ़ाजी से मेहनतकश जनता सतुष्ट नहीं होगी। 'हमारे अख़बारों का चरित्र' शीर्षक अपने लेख मे उन्होंने कहा था कि अख़बारो मे पुराने विषयो पर होनेवाले राजनीतिक आदोलन को बहुत अधिक स्थान दिया जा रहा है और नए जीवन के निर्माण मे सबधित दिन प्रतिदिन के तथ्यो को बहुत ही कम। लेनिन ने यह माग की कि कारखानो, गावो और रेजिमेंटो के दिन प्रतिदिन के जीवन पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए, जहा अन्य सभी स्थानो की अपेक्षा नूतन का निर्माण अधिक हो रहा है, जहा इस नए प्रयोग के लिए सबसे अधिक ध्यान, जाच-पडताल और अध्ययन की आवश्यकता है। लेनिन हर नवीन कार्य मे सरगर्म दिलचस्पी लेते थे। जब कुछ अग्रणी मज़दूरो की पहलकदमी पर सुब्बोत्निक* पहले पहल शुरू हुए, तो लेनिन ने उनके महत्व को फौरन ही समझ लिया और उस कार्य को "महान आरभ" कहा। १६२० के मई दिवस के अखिल रूसी सुब्बोत्निक मे खुद जाकर भाग लेना

* सुब्बोत्निक—काम के घटो के बाद या छुट्टी के दिन सोवियत जनतत्र के हित मे मेहनतकश लोगो द्वारा बिना पारिश्रमिक के स्वेच्छापूर्वक काम करने की प्रथा। पहला सुब्बोत्निक १० मई १६१६ को मास्को-कज़ान रेलवे के कुछ पार्टी-सदस्य मज़दूरो की पहलकदमी पर शुरू हुआ था। वह दिन शनिवार का था (रूसी मे 'सुब्बोता'), इसीलिए उसका नाम सुब्बोत्निक पडा।—स०

इस मुहिम के लिए लेनिन का सबसे जबर्दस्त आंदोलन था।

लेनिन आंदोलन के प्रसार को बहुत अधिक महत्व प्रदान करते थे। अगस्त १९१८ में पेंज़ा गुबर्निया की कार्यकारिणी समिति द्वारा कथित रूप से धनाभाव के कारण आंदोलन तथा प्रचार में कमी किए जाने पर उन्होंने उसे एक तार भेजकर ज़ोरदार विरोध किया। "हम आंदोलन के लिए कोई भी खर्च उठा नहीं रखेंगे, चाहे वह हज़ारों-लाखों में ही क्यों न हो। केंद्रीय कार्यकारिणी समिति से फ़ौरन धन की मांग कीजिए, आपको पैसे की कमी नहीं होगी, हम ऐसे बहाने नहीं मानेंगे।"

व्लादीमिर इल्यीच आंदोलन को कठिनाइयों पर विजय पाने, पार्टी-नीति को स्पष्ट करने, समाज के ढुलमुल हिस्सों को सोवियत सत्ता के पक्ष में लाने, जनता को पुनर्शिक्षित करने तथा उसे समाजवादी निर्माण के काम में खींचने और मज़दूरों तथा किसानों को उनका कार्य-भार एवं संघर्ष के उद्देश्य समझाने का एक जबर्दस्त साधन मानते थे।

संस्मृतियों के कुछ पृष्ठ

(अक्तूबर-नवंबर १६२२)

इस छोटे से अध्याय मे मैं चाहे अत्यत सक्षेप रूप मे ही सही, लेनिन के उस समय के काम का वर्णन करना चाहती हू जब अक्तूबर और नवबर १६२२ मे उन्होंने अपनी बीमारी के बाद सोवियत राज्य तथा कम्युनिस्ट पार्टी के पथप्रदर्शन का काम फिर से अपने हाथ मे लिया था।

अपने स्वास्थ्य का अधिक ध्यान रखने के सबध मे डाक्टरो, परिवारवालो और निकटतम मित्रो के अनुनय-विनयों और समझाने-बुझाने की उपेक्षा करके, व्लादीमिर इल्यीच ने जख्मो के अच्छा होते ही पहले की तरह ही जीतोड काम करना शुरू कर दिया। अपने साथियो के स्वास्थ्य की चिता करते हुए, इस बात पर नजर रखते हुए कि हक होने पर वे अपनी छुट्टी का लाभ उठाये और अधिक थके तथा अधिक काम के मारे हुए साथियो के मामलो मे "पूरी दुरुस्ती" का आग्रह करते हुए भी, व्लादीमिर इल्यीच ने ऐसे किसी सुझाव पर कान देने से साफ इनकार कर दिया कि वे खुद भी आराम करे और अपनी तदुरुस्ती ठीक करे। वे हसी-हसी मे बात को यह कहकर उडा देते थे कि उनके लिए केवल एक "नियमित स्वास्थ्य-परीक्षा" ही आवश्यक है। लेकिन १६२१ के अतिम महीनो मे उनका स्वास्थ्य गिरने लगा। यह सब कुछ उनके प्रवास के लम्बे और कठिन वर्षो, उनके जख्म के प्रभाव तथा निरन्तर अति-श्रम का नतीजा था। उन्हें गहरा सिर-दर्द और अनिद्रा रोग सताने लगे। लेकिन उन्हे उस काम से कोई चीज अलग नहीं कर

ा, जिसके लिए उन्होंने अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया था।

अप्रैल १९२२ में, जब उनकी हालत लगातार खराब होने लगी, तो उन्होंने दक्षिण की यात्रा की बात पर ग़ौर करना स्वीकार कर लिया और ओर्जोनिकीद्ज़े* को अपने आराम के लिए एक अच्छा स्थान चुनने में सहायता करने को लिखा। लेकिन उसके बाद भी व्लादीमिर इल्यीच को अपने अतिवांछनीय आराम से अधिक अपने परिवार की सुख-सुविधा का ध्यान था।

ओर्जोनिकीद्ज़े को १७ अप्रैल, १९२२ के एक पत्र में उन्होंने लिखा था:

"साथी सेर्गो! मैं आपको उन डाक्टर द्वारा दी गई कुछ और छोटी-मोटी सूचनाएं भेज रहा हूं, जो वहां ख़ुद जा चुके हैं और जिनपर पूरी तरह भरोसा किया जा सकता है। उनका कहना है कि अवस्तुमान बिलकुल ठीक नहीं है, क्योंकि वह एक 'ताबूत' के समान है, एक संकरी वादी, अस्वस्थ स्नायुओं के लिए अनुपयुक्त: वहां टहलने की जगह नहीं है, केवल चढ़ने की ज़रूरत है और चढ़ाई नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना के लिए वर्जित है। बोर्जोम बहुत माक़ूल है, क्योंकि वहां समतल भूमि पर टहलने के स्थान हैं और यही नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना की ज़रूरत है। इसके अलावा बोर्जोम की ऊंचाई भी उपयुक्त है। जहां तक अवस्तुमान का संबंध है, उसकी ऊंचाई बहुत अधिक है, वह १००० मीटर से भी अधिक है। वह मना है! हमारे डाक्टर बहुत जल्दी रवाना होने के ख़िलाफ़ ख़ास तौर से चेतावनी देते हैं। वे कहते हैं कि जून के मध्य में ठंड पड़ेगी और बारिश होगी। लेकिन अगर मकान ऐसा हो जो गर्म हो और जिसकी छत चूती न हो, तो उक्त बात से मैं नहीं डरता, क्योंकि तब सर्दी और बारिश से डर की कोई बात नहीं है।"

यह यात्रा कभी नहीं हुई।

---

* ग्रि० को० ओर्जोनिकीद्ज़े (पार्टी-उपनाम सेर्गो) (१८८६-१९३७) एक पुराने बोल्शेविक, कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत राज्य के एक प्रमुख सोवियत संघ में आर्थिक निर्माण के अग्रणी संचालक। १९२२ में अखिल कम्युनिस्ट पार्टी की ट्रांसकाकेशियाई क्षेत्रीय समिति के सचिव। — सं०

मई १६२२ के अत तक व्लादीमिर इल्यीच की बीमारी ने ऐसी तेज़ी पकड़ ली कि उन्हें डाक्टरो का आग्रह मानना और लंबे आराम तथा इलाज के लिए गोर्की मे जाकर रहना पड़ा। उन्हे गोर्की मे चार महीने रहना पडा। लेकिन वहा भी सदा राजकीय मामले ही उनके दिमाग मे रहते थे। ज्यों ही वह कुछ कुछ अच्छे हुए कि उन्होंने विभिन्न मामलो के सबध मे पूरी सूचना और सामग्री की माग करनी शुरू कर दी। वह मार्गदर्शक चेतावनियो के साथ पत्र लिखते और बडे महत्वपूर्ण सवाल उठाते। वे जितना ही अधिक बेहतर महसूस करते उतना ही अधिक रचनात्मक पहलकदमी प्रदर्शित करते।

यद्यपि अगस्त और सितम्बर मे लेनिन ने जन-कमिसार परिषद तथा श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद के अध्यक्ष का पद सरकारी तौर पर पुन. नही ग्रहण किया था, तथापि वे पहले ही उन मुख्य समस्याओ पर काम करने लगे थे जो उस समय पार्टी तथा सरकार के सामने पेश थी। वे मजदूर किसान निरीक्षण सस्था, केंद्रीय कमेशन-आयोग और राजकीय योजना-आयोग की सरगर्मियो, नीज्नी नोव्गोरोद की रेडियो प्रयोगशाला तथा दोनबास की परिस्थिति, तथा श्रम और भारवहन कर, श्रम के वैज्ञानिक सगठन की समस्या एव विशेष रूप से राजकीय सस्थाओ के कर्मचारियो की एक-दिवसीय जनसख्या-गणना के बारे मे अधिक से अधिक जानकारी रखना चाहते थे। व्लादीमिर इल्यीच इन सारी समस्याओं के सबध मे पत्र-व्यवहार करते रहते थे।

उन्होंने २५ सितबर को लिखा था, "मैं मास्को के सभी अधिकारियों और सरकारी कर्मचारियो की एक-दिवसीय जनसख्या-गणना को बिलकुल लाज़िमी समझता हू। हमने एक बार ऐसा कराया था, लेकिन वह बहुत पुरानी बात है।

"इस काम को कम से कम खर्च मे करने के लिए, (केवल कागज के खर्च पर, और उसमे भी कुछ कागज़ केंद्रीय सांख्यिकीय बोर्ड के आम स्टाक मे से लिया जा सकता है) जो लोग सोवियत सत्ता तथा ट्रस्टों मे अपना वेतन पाते है, उन सबके लिए अपने निजी कार्डों पर सूचना मुहैया करना लाज़िमी बना दीजिए।

जब तक कि वे ठीक-ठीक सूचना न दें, तब तक किसी को भी वेतन मत दीजिए।

"तब हमें बहुत ही जल्द सूचना मिल जाएगी (विलंब या असंतोषजनक तामील के लिए जुर्माना लगाया जाना चाहिए)।

"हमारी मशीन इतनी निकम्मी है कि उसकी आमूल मरम्मत जरूरी है। जनसंख्या-गणना के बिना हमारा काम नहीं चल सकता। जहां तक केंद्रीय सांख्यिकीय बोर्ड का संबंध है, वह अपने विद्या-मोह के लिए दंड का पात्र है—वे 'पोथे' लिखने में मग्न हैं और जो कुछ आवश्यक है उसपर ध्यान ही नहीं देते..."

लेनिन के पत्रों और नोटों की भांति ही अपने सहयोगी कर्म-चारियों के लिए लिखी गई उनकी हिदायतें ज़िंदादिली और जोश से भरपूर थीं। उनसे पता चलता था कि वह मास्को लौटने और फिर अपने काम में जुट पड़ने के लिए कितने उत्सुक थे।

१ अक्तूबर को लेनिन के कार्यालय के हम सदस्यों को खुश-खबरी से भरा उनका लिखा यह नोट मिला: "मैं कल आ रहा हूं। हर चीज़ तैयार रखिये, बैठकों के कार्य-विवरण, पुस्तकें।"

व्लादीमिर इल्यीच २ अक्तूबर को मास्को लौट आये और पूरे जोश के साथ काम में लग गये।

उन्होंने ३ अक्तूबर को जन-कमिसार परिषद की एक बैठक की अध्यक्षता की। उपस्थिति असाधारण रूप से अधिक थी। जिसको भी जन-कमिसार परिषद की बैठकों में शरीक होने का हक़ था, चाहे वह कितना ही दूर का हक़ क्यों न हो, वह हर आदमी वहां मौजूद था। हर कोई अपने प्यारे इल्यीच को उनकी लंबी अनुपस्थिति के बाद देखने को आतुर था।

व्लादीमिर इल्यीच ने पहले ही दिन से अपने काम का पूरा बोझ उठा लिया। डाक्टर कठोरतापूर्वक नियम-पालन और काम तथा आराम के बीच एक समुचित संतुलन बनाए रखने के लिए आग्रह करते थे। इस बात पर बहस करने के बजाय, व्लादीमिर इल्यीच डाक्टरों की सलाह को तरह-तरह की बहानेबाजियों और छोटी-छोटी तरकीबों से टाल जाते थे। उनके लिए पांच घंटे के कार्य-दिन की सिफ़ारिश की गई: ११ बजे से २ बजे दिन तक और

६ बजे से ८ बजे शाम तक। इतवार को तथा हफ्ते में एक दिन और काम करने की बिलकुल मनाही थी। व्लादीमिर इल्यीच ने दूसरा दिन बुधवार चुना। लेकिन ११ बजे काम शुरू करने के बजाय वह साढे नौ बजे ही अपने अध्ययन-कक्ष में पहुच जाते और उस दिन आए हुए सभी अखबारों को देख डालते। जब भी हम यह देखने के लिए अध्ययन-कक्ष मे झाकते कि वहा कौन है, तो व्लादीमिर इल्यीच मुस्कराते हुए कहते "मैं काम नही कर रहा हू, मैं तो महज़ पढ रहा हू।"

वह १० बजकर ४५ मिनट पर अपनी सेक्रेटरी को बुलाते, आई हुई डाक के बारे मे रिपोर्ट लेते, मिलने के लिए समय चाहनेवालो के लिए समय नियत करते, हिदायतें देते और इस प्रकार डाक्टरो द्वारा बताए गए काम के घंटो के सबध मे कठोर नियम-पालन मे १५ मिनट की और बढ़ती कर देते। ग्यारह बजे उनका व्यस्त दिन शुरू हो जाता मुलाकातो, टेलीफोन, सम्मेलन, सभाए इत्यादि। उसके बाद २ बजे व्लादीमिर इल्यीच कागज़ो का एक पुलिदा साथ लिए घर जाते और जब ६ बजे शाम को अध्ययन-कक्ष लौटते तो उनके पास अनेक आदेश जबानी देने को होते और उनके नोटबुक के पन्ने सेक्रेटरियो के लिए हिदायतो से भरे होते।

व्लादीमिर इल्यीच की इच्छानुसार जन-कमिसार परिषद और श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद की बैठको का समय, जिनकी वह अध्यक्षता करते थे, ६ बजे के बजाय साढे पाच बजे कर दिया गया और इस प्रकार उन्होंने अपने "जायज" कार्य-दिन मे आधा घटा और बढा लिया।

व्लादीमिर इल्यीच बैठको के दौरान पूर्ण शांति और व्यवस्था की माग करते थे। कभी-कभी जब कोई किसी विषय मे सेक्रेटरी से सूचना मागता तो बातचीत सुनकर व्लादीमिर इल्यीच सेक्रेटरी को लिखकर देते, "नोट लिखिए, बाते न कीजिए," और अगर उसमें भी काम न चलता तो आगे इतना और जोड देते, "अन्यथा, मैं आपको बाहर कर दूगा।"

जन-कमिसार परिषद और श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद की

वहसों को सुनते और उनमें सक्रिय रूप से भाग लेते हुए, अनेक दूसरे काम करते रहने की उनकी आदत थी। वह नई किताबों के पन्ने उलट-पुलट कर देखते, कागजात पढ़ते और उनपर दस्तखत करते, विभिन्न कारोबारी मामलों पर, जिनका तत्कालीन विचाराधीन बातों से संबंधित होना जरूरी नहीं था, उपस्थित लोगों के साथ अनेक बार पुर्जियों का आदान-प्रदान करते।

जब मुझे डाक्टरों से मालूम हुआ कि ध्यान के इस प्रकार बंटने से स्नायुओं पर ज़ोर पड़ता है, तब मैंने साथियों से कहा कि वे व्लादीमिर इल्यीच के पुर्ज़ों का जवाब मेरी मार्फ़त दें, ताकि मैं सारे जवाब उन्हें बैठक के बाद इकट्ठे ही दे दूं। व्लादीमिर इल्यीच ने मेरी तरकीब भांप ली और मुझे लिखा, "मैं समझता हूं कि आप मेरे ख़िलाफ़ साज़िश कर रही हैं। मेरी पुर्जियों के जवाब कहां हैं?" तब मुझे उन्हें ये पुर्ज़ियां वापस देनी पड़ीं।

शायद ही कोई दिन ऐसा बीता होगा जब कि समय नियत करके व्लादीमिर इल्यीच से मिलने के लिए लोग न आए हों, विशेषत शाम के समय। उनके आदेशानुसार मुलाक़ातें कार्यालय की मार्फ़त तय होती थी, जिसे नीचे लिखे ब्योरे दर्ज करने होते थे: मुलाक़ात चाहनेवाले का नाम, तारीख़, मुलाक़ात का विषय। व्लादीमिर इल्यीच रोज़ सुबह मुलाक़ात चाहनेवालों की सूची देखते थे और या तो मुलाक़ात पक्की कर देते थे या मुलाक़ात चाहनेवाले को दूसरे साथियों के पास भेज देते थे। पहली स्थिति में वह याददाश्त के लिए मुलाक़ात की बात अपने टेबुल कैलेंडर में दर्ज कर लेते थे।

जब व्लादीमिर इल्यीच किसी से मुलाक़ात करना नामंजूर कर देते थे, तब वे अपने सेक्रेटरी को आदेश देते थे कि उस व्यक्ति को ज़रूर खबर दे दी जाए, लेकिन बहुत ही भलमनसाहत के साथ। "उसे साफ़ जवाब दे दीजिए, मगर बहुत ही भलमनसाहत के साथ," व्लादीमिर इल्यीच कहा करते थे।

सेक्रेटरियों के नोट से पता चलता है कि अक्तूबर-दिसंबर, १६२२ के दौरान व्लादीमिर इल्यीच ने प्रतिदिन १० आदमियों तक को मुलाक़ात के लिए समय दिया। अक्सर ऐसा होता था

कि अदर जाने से पहले लोग सजीदगी से शपथ खाकर कहते थे कि वे निश्चित १० या १५ मिनट मे अधिक नही ठहरेंगे, लेकिन वे उसे खीच तानकर आधा घटा या उससे भी अधिक बना देते थे।

सच तो यह है कि व्लादीमिर इल्यीच के साथ बातचीत के सिलसिले को खत्म करना कभी कोई चाहता ही न था, तिसपर वे खुद भी कभी-कभी दिलचस्पी लेने लगते थे और मुलाकाती को अधिक देर तक रोक लेते थे। वैसी हालत मे मुझे अध्ययन-कक्ष मे आना और अर्थपूर्ण दृष्टि मे घडी की ओर देखना पड़ता था। लेकिन उससे कुछ अधिक लाभ नही होता था। व्लादीमिर इल्यीच मुस्कराकर कहते, "हम काम नही कर रहे है, हम महज़ बातचीत कर रहे हैं।" अथवा कभी-कभी चिढकर कहते, "जाइये, हमारी बातचीत मे खलल न डालिये।"

जब कभी लेनिन के अध्ययन-कक्ष के बगलवाले सम्मेलन-हॉल मे जन-कमिसार परिषद या श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद की कोई बैठक चलती होती, तब वह दबी ज़बान से बाते करते थे और दूसरो से भी वैसा ही करने की माग करते थे, यद्यपि उनकी ही आज्ञा से दरवाज़े पर मोटा दोहरा पर्दा टाग दिया गया था।

उनके आराम के अतिरिक्त दिन, यानी बुधवार का उपयोग उस रूप मे एक हद तक ही होता था। ऐसा अक्सर ही होता था कि व्लादीमिर इल्यीच कागजात घर पर लाकर सारा दिन काम करते थे। अंतर केवल इतना ही होता था कि वे बैठको मे भाग नही लेते थे या उनकी अध्यक्षता नही करते थे। उन बुधवारो मे से एक बुधवार के बारे मे सेक्रटरी के नोट ये हैं "१ नवबर, दिन मे परामर्श-सम्मेलन (कामेनेव, जिनोव्येव, स्तालिन), शाम को ७ बजे से ८ बजे तक इटली के दो साथियो – बोम्बाची तथा गासियादेई – से मुलाकात। सवा आठ बजे से साढे आठ बजे तक स्विदेर्स्की से मुलाकात। साढे आठ बजे व्लादीमिर इल्यीच घर गये। ऐसा था उनके आराम का दिन।"

१ नवबर वह अतिम दिन था जब व्लादीमिर इल्यीच ने सीमित रूप मे काम किया। दूसरे बुधवारो को उन्होंने पूरे दिन काम किया।

अक्तूवर और नववर १६२२ के दौरान व्लादीमिर इल्यीच ने विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय समस्याओं पर तीन बड़ी-बड़ी सभाओं में भाषण किया। सभा-मंचों पर लेनिन के वे अंतिम दर्शन थे।

३१ अक्तूवर को उन्होंने अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति के चौथे अधिवेशन में भाषण किया। उन्होंने कुछ दिन पहले ही अपने भाषण की रूपरेखा तैयार कर ली थी। अपनी ख़तरनाक बीमारी के बाद सभा-मंच पर वह लेनिन का पहला पदार्पण था। हर कोई बहुत व्यग्रतापूर्वक उस अवसर की राह देख रहा था। लेनिन ख़ुद भी व्यग्र और परेशान थे: क्या वे ठीक से बोल पायेंगे? भाषण कैसा रहेगा? वे २० मिनट तक बोले। सेक्रेटरी की तहरीरों से पता चलता है कि भाषण से श्रोता तथा स्वयं लेनिन दोनों ही संतुष्ट थे। "मैंने वह सब कुछ कह डाला, जो कहना चाहता था।"

'प्राव्दा' ने उस अधिवेशन का विवरण छापा था, जो महान क्रेमलिन प्रासाद के अन्द्रेयेव्स्की हॉल में हुई थी। राजदूत-मंडल के प्रतिनिधि उपस्थित थे। लेनिन का स्वागत तूफ़ानी तालियों की गड़गड़ाहट के साथ किया गया। जब अध्यक्ष ने लेनिन को भाषण करने के लिए मंच पर बुलाया तो दुबारा तालियों की जोशीली गड़गड़ाहट हुई।

लेनिन ने अपने भाषण में श्वेत गार्डों की आख़िरी फ़ौजों को समुद्र में ढकेल देने के लिए लाल फ़ौज का अभिनंदन किया और बताया कि इसका कुछ श्रेय हमारी कूटनीति को भी प्राप्त है। आगे चलकर अधिवेशन द्वारा किए गए कामों–श्रम-क़ानून संहिता और भूमि-क़ानून बनाने, न्याय-प्रणाली स्थापित करने आदि कामों–की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि उन संहिताओं और क़ानूनों का पास किया जाना निस्संदेह सोवियत सत्ता की सफलताओं में शामिल है। शाम को व्लादीमिर इल्यीच ने ८ बजे तक जन-कमिसार परिषद की बैठक की अध्यक्षता की, जो इजाज़त दिये गये समय से एक घंटे ज़्यादा था।

व्लादीमिर इल्यीच ने १३ नववर को कमिंटर्न की चौथी कांग्रेस में भाषण किया। उन्होंने 'रूसी क्रान्ति के पांच साल तथा

विश्व क्रान्ति की संभावनाएं' शीर्षक रिपोर्ट जर्मन भाषा में पेश की।

इस रिपोर्ट को व्लादीमिर इल्यीच ने विशेष सावधानी से तैयार किया था। उन्होंने १० नवंबर को कमिंटर्न की तीसरी कांग्रेस की शार्टहैण्ड में लिखी रिपोर्ट तथा जिस रूप में कर वसूल करने की व्यवस्था पर जर्मन भाषा में प्रकाशित अपना ही पैम्फलेट मांगा।

उन्होंने ११ नवंबर की सुबह रिपोर्ट की तैयारी करने में बिताई और किसी मुलाकाती से नहीं मिले।

उसी दिन शाम को उन्होंने कमिंटर्न के जर्मन-विभाग के संपादक को मुलाकात के लिए बुलाया और अपनी रिपोर्ट के सिलसिले में उनसे बहुत देर तक बातचीत की।

निम्नांकित उद्धरण 'प्राव्दा' से लिया गया है "हॉल पहले की और किसी भी सभा की तुलना में अधिक खचाखच भरा हुआ था। हर कोई अपनी कुर्सी आगे मंच की ओर खिसकाता जा रहा था, ताकि एक भी शब्द अनसुना न रह जाए सभी अपने प्यारे इल्यीच की एक-एक भाव-भंगिमा, हर छोटी से छोटी बात भी हृदयंगम कर लेना चाहते थे।

"साथी लेनिन के मंच पर आगमन का देर तक तालियों की तूफानी गड़गड़ाहट तथा महान हर्ष-ध्वनि के साथ स्वागत किया गया। हर किसी ने खड़े होकर 'इंटरनेशनल' गान गाया।"

लेनिन ने नई आर्थिक नीति के अपनाए जाने के बाद से उपलब्ध सफलताओं की चर्चा की। उन्होंने कहा कि देश ने बिना कर्ज या बाहरी सहायता लिये अकाल पर काबू पा लिया है, आर्थिक विघटन को रोक दिया है, हल्के उद्योगों को बहाल कर लिया है और भारी उद्योगों में भी प्रगति शुरू कर दी है। सख्त किफायत बरती जा रही है, विशेष रूप से राज्य की मशीनरी में, जिसके फलस्वरूप २ करोड़ स्वर्ण रूबल भारी उद्योगों में लगा दिए गए हैं। यह रकम बड़ी नहीं है, लेकिन शुरूआत हो चुकी है। हम सही रास्ते पर हैं।

लेनिन की रिपोर्ट एक घंटे से अधिक जारी रही और बहुत कामयाब रही।

उसी दिन शाम को व्लादीमिर इल्यीच ने जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के कांग्रेस-प्रतिनिधियों से मुलाकात की और बहुत देर तक उनसे बातचीत की।

लेनिन ने २० नवंबर को ६.३० बजे मास्को सोवियत और ज़िला सोवियतों के सदस्यों के एक संयुक्त बैठक में भाषण किया। सार्वजनिक सभा के मंच से वह उनका अंतिम भाषण था।

'प्राव्दा' ने २१ नवंबर १९२२ को यों लिखा था, "मंच पर साथी लेनिन के पदार्पण का 'हुर्रा' की तूफ़ानी पुकारों तथा तालियों की ऐसी ज़ोरशोर और देर तक गड़गड़ाहट के साथ स्वागत हुआ, जिसने एक लंबी अनहीन हर्षध्वनि में परिणत होकर 'इंटर-नेशनल' गान के उस तराने को भी आत्मसात् कर लिया, जो कुछ कम बुलंद नहीं था। साथी लेनिन ने भाषण करने की कोशिश की, लेकिन श्रोताओं द्वारा लगाए जानेवाले 'विश्वक्रान्ति के नेता ज़िंदाबाद!' के पुरज़ोश नारों ने उसमें बारम्बार रुकावट डाली।"

लेनिन के भाषण में विजय में दृढ़ विश्वास की, नई आर्थिक नीति अपनाने में सोवियत सत्ता द्वारा अपनाये गये रास्ते की निर्दोषिता में दृढ़ विश्वास की गूंज थी। उन्होंने अपने भाषण को इन महत्वपूर्ण शब्दों के साथ समाप्त किया "... नई आर्थिक नीति का रूस, समाजवादी रूस बन जाएगा।"

लेनिन ९.३० बजे क्रेमलिन वापस लौटे और सीधे अपने अध्ययन-कक्ष में गए, जहां उन्होंने कई साथियों से मुलाक़ात की और उसके बाद ९ बजकर ५० मिनट पर घर गए।

नवंबर के दूसरे पखवारे में व्लादीमिर इल्यीच फिर अत्यधिक थकान महसूस करने लगे। सेक्रेटरियों द्वारा २५ नवंबर १९२२ को लिखे गए नोट में कहा गया है, "आज डाक्टरों ने एक हफ्ता आराम करने और बिलकुल कोई काम न करने की हिदायत दी है।" उसके बाद से व्लादीमिर इल्यीच अपने दफ्तर में कम आने और बैठकों की अध्यक्षता हमेशा नहीं करने थे। इसके बजाय वह पढ़ने में अधिक समय लगाने लगे। लेनिन एकदम काम करना नहीं छोड़ सकते थे।

जब वह मास्को से बाहर रहते थे और यह समझा जाता था कि व्लादीमिर इल्यीच आराम कर रहे हैं, उस समय भी वह पोलिटब्यूरो, जन-कमिसार परिषद, श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद की बैठकों के कार्य-विवरण पढ़ते रहते थे, अन्य काम की सामग्रियों का अध्ययन करते रहते थे, टेलीफोन पर बातें किया करते थे और पत्र लिखा करते थे।

उनकी बीमारी तेज़ हो गई। लेकिन वह जब कभी भी ज़रा कुछ बेहतर महसूस करते, तब अपनी तकलीफ के बावजूद फिर काम करने लगते। जिस हेतु के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित किया था उसकी सिद्धि में अपनी सारी शक्ति लगाते हुए वह तब तक काम करते रहते, जब तक शारीरिक रूप से संभव होता।

व्ला० इ० लेनिन संबंधी संस्मरणों से

(दिसंबर १९२२ से मार्च १९२३ तक)

इन संस्मरणों में लेखिका ने उस आत्मत्याग का वर्णन करने की कोशिश की है जिसके साथ लेनिन ने ७ दिसंबर १९२२ से ६ मार्च १९२३ तक काम किया, जबकि उनकी सख्त बढ़ी हुई बीमारी ने उन्हें अपने सृजनात्मक कार्यों में बहुत काफ़ी कमी करने के लिए विवश कर दिया था।

उन तीन महीनों में – ७ दिसम्बर १९२२ से ६ मार्च १९२३ तक – लेनिन ने कई कृतियों की रचना की और सोवियत समाज के विकास के विभिन्न अधिक महत्वपूर्ण पहलुओं के संबंध में अनेक सुझाव पेश किए, जो आज तक कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत जनता के कार्यक्रम का आधार बने हुए हैं।

उस अवधि में लेनिन के रोज़मर्रा के कामों का, संभव हो तो बिना किसी व्यवधान के वर्णन करना लेखिका का उद्देश्य था। किंतु इस डायरी में व्यवधान हैं, क्योंकि व्लादीमिर इल्यीच की तबीयत कई दिनों तक इतनी सख्त ख़राब रही कि वह बिलकुल काम नहीं कर सके। ऐसे दिन वह अपने सेक्रेटरियों को न तो बुलाते थे और न उन्हें कोई आदेश ही देते थे।

विवरण को यथासंभव बिलकुल सही बनाने के लिए निम्नलिखित नोट जैसे उस समय लिए गए थे उसी रूप में सुरक्षित हैं।

१९२२ की गर्मियों में लेनिन सख्त बीमार हो गए। उत्प्रवास की लंबी और कठिन मुद्दत, ३० अगस्त १९१८ को आए ज़ख्म



व्ला० इ० लेनिन, गोर्की में टहलते हुए (अगस्त-सितम्बर १९२२)



क्रेमलिन में व्ला० इ० लेनिन का मकान। खाने का कमरा

तथा प्राय: विरामहीन निरंतरता के साथ काम करने के अनियम के कारण उनका स्वास्थ्य बिल्कुल खराब हो गया था।

२ अक्तूबर १९२२ – चार महीने से भी अधिक समय की अनुपस्थिति के बाद व्लादीमिर इल्यीच गोर्की से मास्को वापस आए, जहां वह अपना इलाज करा रहे थे और आराम कर रहे थे।

मास्को लौटने के दूसरे ही दिन ३ अक्तूबर को व्लादीमिर इल्यीच ने जन-कमिसार परिषद की बैठक की अध्यक्षता की और उस दिन से जन-कमिसार परिषद, श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद और रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बो०) की केंद्रीय समिति के कार्यों के निजी रूप से संचालन का भार फिर से उठा लिया।

मेहनतकश जनता ने लेनिन के काम पर लौटने का बेहद खुशी के साथ स्वागत किया। अपने अनगिनत पत्रों तथा उपहारों में उसने लेनिन के प्रति अपने प्रेम और अपनी निष्ठा की अभिव्यक्ति की।

महान अक्तूबर क्रांति की पांचवी वर्षगांठ के अवसर पर पेत्रोग्राद सूती मिल ट्रस्ट के अंतर्गत एक कारखाने के मजदूरों ने अपना बनाया हुआ एक कम्बल व्लादीमिर इल्यीच को भेजा। उन्होंने लिखा "हमारे प्यारे, आपसे पेत्रोग्राद कारखाना यह चाहता है कि आप हमारे तुच्छ उपहार में न केवल शारीरिक गर्मी, बल्कि हम मजदूरों के दिलों की वह गर्मी भी महसूस करें, जिससे हम आपको लपेट लेना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि आप यह भी देखें कि अत्यंत घिसी-पिटी मशीनों, अव्यवस्था, अभाव तथा संकटों की स्थिति में भी हम जितना काम युद्ध से पहले करते थे उससे कम काम नहीं कर रहे हैं और इसके फलस्वरूप हम जो चाहते हैं उसकी उपलब्धि कर सकते हैं।

"हमारे प्यारे, आप इसे हमारी श्रेष्ठतम कामनाओं के साथ ओढ़िए।"

३ नवंबर १९२२ – उत्तर में व्लादीमिर इल्यीच ने यह नोट लिखा. "प्यारे साथियो! आपके भेजे हुए कम्बल के लिए मेरा हार्दिक धन्यवाद। बहुत उम्दा है।"

नवंबर के दूसरे पखवारे में व्लादीमिर इल्यीच में फिर बेहद स्नायविक थकान के लक्षण प्रकट हुए – सख्त सिरदर्द और निरंतर

मारी बढ़ रही थी। फिर भी डाक्टरों की
ब्लादीमिर इल्यीच पहले की भांति ही ज़ोरों के साथ
ते रहे। उनकी अदम्य इच्छा तथा पार्टी एवं जनता के
ने महान उत्तरदायित्व के बोध ने उन्हें रोग द्वारा प्राप्त
ो सहने में सहायता पहुंचायी।
डाक्टर कोजेवनिकोव के लिए, जो बराबर लेनिन की देखभाल
रहे थे, उनके काम का नियमन असंभव प्रतीत होने लगा।
दीमिर इल्यीच की, उनके कथनानुसार "महज़ दोस्तों और
चितों" के साथ बेशुमार मुलाकातें होती रहती थीं, जो वास्तव
नाना प्रकार के भिन्न-भिन्न लोगों के साथ – विभिन्न सोवियत
स्थाओं तथा इंगलैंड, अमरीका, जर्मनी आदि की कम्युनिस्ट
पार्टियों के प्रतिनिधियों के साथ – लंबी कामकाजी बातचीत होती थीं।
ऐसी बातचीत को काम मानने में ब्लादीमिर इल्यीच इनकार करते
थे।

अक्तूबर १९२२ से दिसंबर १९२२ तक की अवधि में ब्लादीमिर इल्यीच ने अनेकानेक बड़ी आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याओं पर काम किया, अनेकानेक प्रमुख साथियों से मंत्रणाएं कीं, कामकाजी पत्र-व्यवहार किया, अधिक महत्वपूर्ण समस्याओं पर प्रमुख सोवियत तथा पार्टी संगठनों द्वारा की जानेवाली बहसों पर ध्यान रखा, जन-कमिसार परिषद, श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद, पोलिटब्यूरो और आयोगों की बैठकों की अध्यक्षता की, बहसों में सक्रिय भाग लिया, सोवियतों की दसवीं अखिल रूसी कांग्रेस के लिए अपनी रिपोर्ट तैयार की और तीन बार सार्वजनिक सभाओं के मंच पर आकर लंबे-लंबे भाषण किये। इसके साथ ही वे विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भी व्यस्त रहे लाउसान्ने-सम्मेलन तथा हेग की अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस में सोवियत प्रतिनिधिमंडल के भाग लेने की तैयारी करना और कमिंटर्न समस्याओं का अध्ययन करना। लेनि
ने पूंजीवादी विदेशी अखबारों के दो संवाददाताओं को इंट
भी दिये इत्यादि।

१९२२ के २ अक्तूबर से १६ दिसम्बर तक ब्लादीमिर इ
ने २२४ कामकाजी पत्र तथा पुर्जे लिखे, १२५ बार करके

आदमियों को मुलाकात का समय दिया और जन-कमिसार परिषद, श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद, पोलिटब्यूरो एव आयोगों की ३२ बैठको की अध्यक्षता की।

उनकी सरगर्मियो की यह नीरस और अपूर्ण गणना भी उन महीनों के दौरान लेनिन द्वारा सपादित अत्यधिक तथा बहुविध कार्यो का परिचय देती है।

व्लादीमिर इल्यीच अपनी कोशिशों में कोई भी कमी किए बगैर काम करते रहे। दूसरे ढग से न तो वे काम कर सकते थे, न ही वे चाहते थे। प्रोफेसर फार्स्टर* ने मारीया इल्यीनिच्ना से कहा कि अपने काम के घटे कम करने के लिए लेनिन को राजी करने की सारी कोशिशों का कुछ खास नतीजा नही निकला।

फिर भी दिसबर के शुरू में व्लादीमिर इल्यीच ने यह बात खुद ही समझ ली कि उन्हे तत्काल और लबे विश्राम की सख्त जरूरत है। उन्होंने डाक्टरो की साग्रह माग को स्वीकार कर लिया और ७ दिसबर को पोलिटब्यूरो की बैठक के बाद, जिसमे वह विशेष रूप से भाग लेना चाहते थे, चद दिनों के लिए गोर्की जाने का वादा किया। व्लादीमिर इल्यीच ने अपना वादा पूरा किया।

७ दिसंबर को वह सुबह १० बजकर ५५ मिनट पर अपने अध्ययन-कक्ष मे आए। पोलिटब्यूरो की बैठक ११ बजे शुरू हुई। व्लादीमिर इल्यीच तिपहरी मे २ बजकर २० मिनट तक वहा मौजूद रहे और उसके बाद घर चले गए। उस दिन शाम को वह साढे पाच बजे अपने अध्ययन-कक्ष मे आए, टेलीफोन पर स्तालिन से बाते की और अपनी सेक्रेटरी को कई आदेश दिए।

व्लादीमिर इल्यीच सवा छ बजे तक दफ्तर मे रहे और उसके बाद चालू मामलो से सबधित कुछ दस्तावेज अपने साथ लेकर गोर्की के लिए रवाना हो गए।

उसी दिन शाम को गोर्की से टेलीफोन आया। व्लादीमिर इल्यीच ने जन-कमिसार परिषद के प्रबध-व्यवस्थापक तथा अपनी सेक्रेटरी को बोलकर एक पत्र लिखवाया, जिसमे यह आदेश दिया

*फार्स्टर – ब्रेस्लाऊ (जर्मनी) के एक स्नायु-चिकित्सक थे, जिन्हें लेनिन की बीमारी के सबध में परामर्श के लिए आमत्रित किया गया था।

खाद्य जन-कमिसार और दो उप जन-कमिसारो के लिए इस आशय का एक पत्र बोलकर लिखवाया कि उक्त उद्देश्य के लिए परिरक्षित की जानेवाली रोटी की मात्रा का हिसाब लगाया जाए।

उन्ही कुछ दिनो मे व्लादीमिर इल्यीच ने सोवियतो की दसवी अखिल रूसी काग्रेस के लिए अपना भाषण तैयार किया और उसका मसविदा लिखा। आगामी दिनो मे १६ दिसबर तक लिखे गए छोटे-छोटे नोटो को छोडकर, इस भाषण की हस्तलिखित प्रति ही उनकी अतिम पाडुलिपि थी। यह मसविदा छप चुका है और उसका शीर्षक है – 'सोवियतो की दसवी अखिल रूसी काग्रेस मे किये जाने वाले भाषण का मसविदा'।

इस प्रकार ७ दिसबर से १० दिसबर तक के "विश्राम" के दिन भी सदा की भाति ही वे बेहद कार्य-व्यस्त रहे। केवल ११ दिसबर का दिन ही एक ऐसा दिन था जबकि व्लादीमिर इल्यीच ने न तो कोई टेलीफोन किया और न कोई आदेश जारी किया।

१२ दिसंबर को व्लादीमिर इल्यीच गोर्की से ११ बजे दिन मे लौटे और सवा ग्यारह बजे अपने अध्ययन-कक्ष आए। वह वहा ज़रा देर के लिए रुके और फिर घर चले गए। दोपहर मे वह फिर अध्ययन-कक्ष आए और जन-कमिसार परिषद एव श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद के उपाध्यक्षो से बाते करते हुए २ बजे तक वहा रहे। उसके बाद हम लोगो को शाम के लिए कोई आदेश दिए बग़ैर ही घर चले गए।

वह साढे पाच बजे फिर अध्ययन-कक्ष आए और चद मिनट तक टेलीफोन पर बाते करते रहे। उन्होंने हमे वह पत्र रवाना कर देने का आदेश दिया जो हमारे पास तैयार रखा था और जो इटली के समाजवादी लज्जारी* को, कमिंटर्न की चौथी कांग्रेस के इटली के सभी सच्चे क्रान्तिकारियो का सुदृढ तथा वास्तविक एकीकरण करने के निर्णय के सबंध मे (शर्मानी ने) लिखा गया

---

* लज्जारी कोन्स्तैन्तिनो (१८५७-१९२७) इटली की समाजवादी पार्टी के एक सस्थापक। युद्ध के बाद उन्होंने इटली की समाजवादी पार्टी के कमिंटर्न के साथ मेल का समर्थन किया। लज्जारी ने कमिंटर्न की [illegible] कांग्रेस के काम मे हिस्सा लिया। – स०



व्ला० इ० लेनिन अपने क्रेमलिन-स्थित मकान में अपने सम्बन्धियों के बीच।
पहली पंक्ति (लेनिन के बाएं) ना० कों० क्रुप्स्काया और आ० इ० येलिज़ारोवा (लेनिन की बहन),
दूसरी पंक्ति, मा० इ० उल्यानोवा, और द० इ० उल्यानोव (लेनिन की बहन और भाई)

१३ दिसंबर को दोपहर के लगभग, जबकि डाक्टर वापस जा चुके थे, व्लादीमिर इल्यीच ने मुझे बुलाया और बोलकर तीन पत्र लिखवाए – १) स्तालिन के नाम – रोजकोव* के बारे में 'केंद्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन के लिए', २) विदेशी व्यापार के एकाधिकार के संबंध में फ्रूम्किन** को, ३) जन-कमिसार परिषद और श्रम तथा सुरक्षा परिषद के उपाध्यक्षों के काम के बटवारे तथा क्रम के बारे में त्सुरूपा तथा दूसरे उपाध्यक्षों को।

शाम को ५ बजकर ५५ मिनट पर उन्होंने मुझे फिर बुलाया।

व्लादीमिर इल्यीच ने १४ दिसंबर को दोपहर में ग० म० क्रजिजानोव्स्की के साथ मुलाकात का समय निश्चित किया था और वे फ्रूम्किन से भी मिलना चाहते थे। लेकिन बाद में उन्होंने उस हिदायत को रद्द कर दिया।

उस दिन उनकी मनःस्थिति कुछ बुरी नहीं थी। यहां तक कि वे उस दिन मज़ाक भी कर रहे थे। फिर भी अपने काम को समेटने की बात से उनको परेशानी थी।

उन्होंने १३ दिसंबर को उपाध्यक्षों के बीच काम के बटवारे के संबंध में जो पत्र लिखवाया था, वह उन वक्तव्यों का जवाब

---

* लेनिन ने रोजकोव के संबंध में केंद्रीय समिति के नाम उस प्रस्ताव से अपनी असहमति के फलस्वरूप पत्र लिखा था, जिसे पोलिटब्यूरो ने अपनी ७ दिसंबर की बैठक में पास किया था और जिसके द्वारा मेन्शेविक केंद्रीय समिति के एक भूतपूर्व सदस्य प्रोफेसर न० अ० रोजकोव को मास्को में रहने की अनुमति दी गयी थी। व्लादीमिर इल्यीच उस प्रस्ताव को *ग़लत समझते* थे। उन्हें रोजकोव की सचाई में विश्वास नहीं था। पोलिटब्यूरो के सदस्यों के नाम एक नोट (बिना तारीख़ का) लिखकर लेनिन ने कहा था, " वास्तव में मुझे बहुत भय है वे चाहे जितना भी झूठ बोलेंगे ज़रूरत होने पर अख़बारों के ज़रिये भी। वे झूठ बोलेंगे और हम धोखा खा जायेंगे। इसी का मुझे भय है। उनका एक नारा है *झूठ बोलो, पार्टी से इस्तीफ़ा दो और रूस में रहो।* यही हमें सोचना और विचारना है।"

लेनिन ने केंद्रीय समिति के साथ रोजकोव के प्रश्न को १३ दिसंबर को फिर उठाया और निवेदन किया कि ७ दिसंबर को पोलिटब्यूरो द्वारा पास किये गये प्रस्ताव को रद्द किया जाये। पोलिटब्यूरो ने प्रस्ताव को लेनिन के सुझाव के अनुसार १४ दिसंबर को रद्द कर दिया, जिसे सुनकर व्लादीमिर इल्यीच ने कहा कि यह बड़ी अच्छी ख़बर है।

** म० इ० फ्रूम्किन – कम्युनिस्ट, एक माल्थियर्सविद। १९२२ में विदेशी व्यापार के उप जन-कमिसार थे। – सं०

ाध्यक्षों ने लेनिन द्वारा पहले पेश किए गए सुझा

ादीमिर इल्यीच ने १९२२ के पूरे साल भर उपाध्यक्षों के ो संगठित करने पर बहुत अधिक ध्यान दिया, जिसे वे त मशीनरी के पुनर्संगठन तथा सुधार की समस्या के साथ ऽ रूप से संबंधित मानते थे। यह सभी जानते हैं कि इस नरी के पुनर्संगठन तथा सुधार को वे प्राथमिक महत्व प्रदान ते थे। उनका इरादा उपाध्यक्षों के काम का **आमूल पुनर्सं-** **न करने** का था। उनका सबसे पहला काम सोवियत सत्ता ी आज्ञप्तियों तथा आदेशों की अमली तामील पर निगरानी रखना था। उन्हें जन-कमिसार परिषद और श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद के प्रबंध-कार्यालय के कार्यकर्ताओं के अलावा मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था और लघु जन-कमिसार परिषद के कार्यकर्ताओं को भी उस काम में खींचना; नौकरशाही तरीक़ों और लाल फ़ीतेशाही के ख़िलाफ़ संघर्ष करना; जन-कमिसार परिषद और श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद को छोटे-मोटे मामलों से ब करना और आर्थिक प्रशासन के प्रश्नों पर ध्यान केंद्रित करना था। जन-कमिसारियतों की अधिक मज़बूती के साथ वेहतर रहनुमाई की गारंटी के लिए व्लादीमिर इल्यीच का इरादा यह था कि उपाध्य-क्षों की व्यक्तिगत योग्यताओं तथा रुझानों का समुचित ध्यान रखते हुए, विभिन्न कमिसारियतों पर निगरानी रखने का काम उनमें बांट दिया जाए।

गोर्की से ६ दिसबर १९२२ को (अपने तथाकथित "विश्राम" की अवधि में) टेलीफ़ोन द्वारा लिखाए गए पत्र में व्लादीमिर इल्यीच ने कहा था, "अव तक हमारे उपाध्यक्षों का सारा सम वैठकों की अध्यक्षता करने और उप जन-कमिसारों तथा जन-कमि सारों के साथ गपशप करने में ही बीतता रहा है, लेकिन चू समूची राजकीय मशीनरी के नियमन तथा सुधार का काम उ अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण है, इसलिए यह लाज़िमी है कि ऐसा नियम क़ायम और उसका सख़्ती के साथ पालन किया जिसके अनुसार हर उपाध्यक्ष सप्ताह में **कम से कम दो घं**

उतरे' और मशीनरी के ऊंचे तथा नीचे दोनों ही प्रकार के विभिन्न पुर्जों की, उनमें भी न्यूनतम प्रत्याशित पुर्जों की निजी तौर से जांच करे।"

उपाध्यक्षों ने व्लादीमिर इल्यीच के कुछ सुझावों का, विशेषत. जन-कमिसारियतों की निगरानी के बटवारे के सुझाव का विरोध किया।

अपनी बीमारी और अस्थायी रूप से काम से अलग होने की अपनी मजबूरी को ध्यान में रखते हुए, व्लादीमिर इल्यीच का ख़याल था कि उपाध्यक्षों से उनके मतभेद का उस समय कोई व्यावहारिक महत्व नहीं था। इसलिए उन्होंने उपाध्यक्षों के बीच काम के बटवारे को अपनी वापसी तक के लिए स्थगित कर दिया। तो भी, व्लादीमिर इल्यीच ने रीकोव के साथ अपने बुनियादी मतभेद की तरफ ध्यान आकृष्ट किया, जिनकी राय थी कि आम तौर से व्लादीमिर इल्यीच को निजी मुलाकात के लिए केवल उन्हीं लोगों को समय देना चाहिए, जिन्हें जन-कमिसार परिषद या श्रम तथा प्रतिरक्षा परिषद के उपाध्यक्ष अथवा पार्टी की केंद्रीय समिति के सेक्रेटरी पहले से चुन चुके हों।

विदेशी व्यापार की इजारेदारी के प्रश्न से व्लादीमिर इल्यीच को ख़ास तौर से परेशानी थी। उनके दिमाग पर इस ख़याल का बड़ा बोझ था कि कहीं यह प्रश्न गलत तरीके से न निपटा दिया जाए या उसे बहुत दिनों तक स्थगित न रखा जाए। व्लादीमिर इल्यीच को पक्का विश्वास था कि विदेशी व्यापार के राजकीय एकाधिकार से हाथ खींच लेना, जिसे वे सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की अत्यंत प्रभावशाली शर्त मानते थे, सोवियत सत्ता के लिए विनाशकारी होगा। लेकिन केंद्रीय समिति के सभी सदस्य इस विचार से सहमत नहीं थे। बुख़ारिन तथा सोकोल्निकोव का विरोध विशेष रूप से प्रबल था।

रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बो०) की केंद्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन में ६ अक्तूबर को मध्यस्थ का एक फ़ैसला पहले ही स्वीकार हो चुका था, जिसके अनुसार या तो माल की चंद किस्मों के बिना किसी प्रतिबंध के आयात-निर्यात की इजाज़त दी गई थी

सरहदों पर निर्बाध आयात-निर्यात की इजाज़त दे
व्यवहारतः राजकीय एकाधिकार को ख़त्म कर देता।
र्णाधिवेशन ने ६ अक्तूबर को लेनिन की अनुपस्थिति में
न पर विचार किया था, जबकि वे बीमारी की वजह से
वेशन में सम्मिलित होने में असमर्थ थे।

कई दिन बाद १३ अक्तूबर को व्लादीमिर इल्यीच ने स्ता-
को विस्तारपूर्वक एक लंबा पत्र लिखा। पत्र छोटे-छोटे अक्षरों
साढ़े पांच पृष्ठों में लिखा गया था और उसमें दो पुनश्च भी
गे हुए थे। व्लादीमिर इल्यीच ने उसमें पूर्णाधिवेशन के फ़ैसले
की आलोचना की थी और समझाया था कि यह गोया आंशिक
सुधार मालूम पड़ता है, लेकिन वस्तुतः यह निर्णय राजकीय एका-
धिकार के अंत की ओर ले जानेवाला क़दम है।

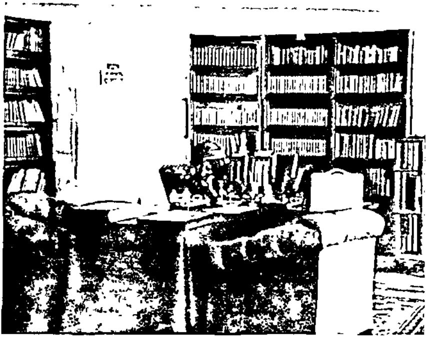
व्लादीमिर इल्यीच ने आगे कहा था कि पूर्णाधिवेशन में प्रश्न को अनुचित रूप से जल्दबाज़ी के साथ और पहले से गंभीर विचार-विमर्श किए बग़ैर पेश किया गया था, जबकि कम महत्व के प्रश्नों का बार-बार मूल्यांकन करते हुए उनपर फ़ैसले करने में अक्सर कई-कई महीने लगाए गए थे। इसलिए उन्होंने सुझाव दिया कि राजकीय एकाधिकार के प्रश्न पर अंतिम फ़ैसला दो महीने के लिए, यानी केंद्रीय समिति के आगामी पूर्णाधिवेशन तक के लिए स्थगित कर दिया जाए।

लेनिन ने लिखा था, "मुझे बेहद अफ़सोस है कि उस दिन
मैं बीमारी की वजह से पूर्णाधिवेशन में शरीक न हो सका और
आज मुझे विवश होकर नियम में कुछ अपवाद करने का निवेदन
करना पड़ रहा है।

"लेकिन मेरा ख़याल है कि प्रश्न को तौलने और अध्यय
करने की ज़रूरत है और जल्दबाज़ी से नुक़सान होगा।"

लेनिन के निवेदन को मानते हुए प्रश्न को केंद्रीय समि
के दिसंबर के पूर्णाधिवेशन की कार्य-सूची में शामिल कर दि
गया।

नए सिरे से बहस की तैयारी के सिलसिले में व्ला
इल्यीच ने आंकड़े जमा किए, उनकी जांच करने तथा उनसे



क्रेमलिन में व्ला० इ० लेनिन के अध्ययन-कक्ष का सामान्य दृश्य

निकालने के लिए एक आयोग बनाया, उसे अधिकार दिया कि जिस हद तक विदेशी व्यापार का संबंध है उस हद तक वह विदेशो मे स्थित मिशनो के काम की जाच करे। नई बहस के सिलसिले मे उन्होंने पत्र लिखे, साथियो को अपने दृष्टिकोण की दुरुस्तगी की बात समझाई और अपने पक्ष-समर्थको को सघटित किया।

दिसबर के शुरू मे व्लादीमिर इल्यीच ने फ़ूम्किन को विदेशी व्यापार की स्थिति पर सक्षिप्त सूचना देने का आदेश दिया, विभिन्न साथियो से बाते की तथा ३ और ५ दिसबर को प्राप्त अवनेसोव* की रिपोर्टों का अध्ययन किया, जिनमे अन्य देशो में स्थित व्यापारिक मिशनो के कामो की जाच करनेवाले आयोग के निष्कर्ष दिए गये थे। व्लादीमिर इल्यीच को रिपोर्टें सतोषजनक नही लगी और उन्होंने एक के ऊपर "सरसरी रिपोर्ट" और दूसरे के ऊपर "एक और सरसरी रिपोर्ट" लिख दी।

गोर्की से एक नोट लिखकर व्लादीमिर इल्यीच ने १० दिसबर को फ़ूम्किन से अवनेसोव आयोग द्वारा पेश की गयी थीसिस के अतिम रूप का संक्षिप्त विवरण मागा।

उन्होंने १३ दिसम्बर तथा आगामी दिनों को अवनेसोव, फ़ूम्किन तथा दूसरो को विदेशी व्यापार के राजकीय एकाधिकार के सबध मे अनेक पत्र तथा नोट लिखे, सामग्री भेजी और उसपर उनकी राय मागी, उनके जवाबो पर गौर किया, फ़ूम्किन तथा ये० यारोस्लाव्स्की** से बाते की तथा केंद्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन के लिए स्तालिन को एक नया लबा पत्र*** लिखवाया।

आगामी पूर्णाधिवेशन की सामग्री के तौर पर इस पत्र की प्रतिया केंद्रीय समिति के सदस्यो को भेजी गई।

---

*वा० अ० अवनेसोव (१८८४-१९३०) – पुराने बोल्शेविक, प्रमुख सोवियत कार्यकर्ता। १९२२ मे मजदूर किसान निरीक्षण सस्था के उप जन-कमिसार थे। – स०

** ये० मि० यारोस्लाव्स्की – मि० इ० गुबेल्मान (१८७८-१९४३) का गुप्त नाम, क्रान्तिकारी आदोलन के एक सबसे पुराने नेता, १८९८ से कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य, इतिहासकार तथा राजनीतिक समीक्षक। वे १९२२ मे कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के सदस्य थे। – स०

*** उस पत्र मे लेनिन ने विदेशी व्यापार के राजकीय एकाधिकार की अनिवार्यता का पक्ष-पोषण किया था और बुखारिन की कटु आलोचना की थी, जो राजकीय एकाधिकार के विरोधी थे।

व्लादीमिर इल्यीच ने अगले दो दिनों को पूरी तरह से विदेशी व्यापार के राजकीय एकाधिकार के प्रश्न के अध्ययन में लगाया।

लेनिन की हालत बदतर हो जाने के कारण रूसी कम्यूनिस्ट पार्टी (बो०) की केंद्रीय समिति का पूर्णाधिवेशन १८ दिसंबर, १९२२ को फिर उनकी अनुपस्थिति में ही शुरू हुआ और उसमें विदेशी व्यापार के राजकीय एकाधिकार को क़ायम रखने के बारे में फ़ैसला मंजूर हुआ। लेकिन व्लादीमिर इल्यीच उससे संतुष्ट नहीं थे। वे पार्टी-कांग्रेस के एक निर्णय द्वारा उस फ़ैसले का अनुमोदन लाज़िमी समझते थे।

विदेशी व्यापार के राजकीय एकाधिकार के प्रश्न को बारहवीं पार्टी कांग्रेस की कार्य-सूची में दर्ज कर लिया गया। लेकिन लेनिन उसमें भी शरीक नहीं हो सके। बारहवीं पार्टी कांग्रेस ने केंद्रीय समिति की राजनीतिक रिपोर्ट के संबंध में जो प्रस्ताव पास किया उसमें विदेशी व्यापार के राजकीय एकाधिकार की अनिवार्यता की पुष्टि की गयी और उसके कार्यान्वित किए जाने में किसी प्रकार की भी बहानेबाज़ी या ढुलमुलपन को अमान्य क़रार दिया गया। उसने नई केंद्रीय समिति को विदेशी व्यापार के एकाधिकार की व्यवस्था को विकसित करने तथा मज़बूत बनाने के लिए नियमित कार्रवाइयां करने का आदेश दिया।

इस प्रकार लेनिन द्वारा दिए गए सुझाव मंजूर किए गए। उनकी बुद्धिमानी तथा दूरदर्शिता ने एक ग़लत फ़ैसले को तोड़ दिया, जिसका सोवियत राज्य की आर्थिक तथा राजनीतिक स्थिति के ऊपर भयानक प्रभाव पड़ता।

सिद्धांत संबंधी सवालों पर सही फ़ैसलों की मंजूरी के लिए लेनिन जिस जोश और आग्रह के साथ कोशिश करते थे, विदेशी व्यापार के राजकीय एकाधिकार के लिए उनका संघर्ष उसका एक ज्वलंत उदाहरण था। समस्या की सर्वांगीण परीक्षा करते हुए, वे अधिकाधिक तर्क प्रस्तुत करते जाते थे। वे बहस में उन बहुतेरे कार्यकर्ताओं को खींच लेते थे, जिन्हें वे मुनासिब समझते थे, उनकी रायों पर एहतियात के साथ ग़ौर करते थे और लोगों पर अपना अधिकार अथवा प्रभाव कभी नहीं लादते थे। जिस तरह

रूमी कम्युनिस्ट पार्टी (बो०) की केंद्रीय समिति विदेशी व्यापार का राजकीय एकाधिकार कायम करने के फैसले पर पहुंची, वह पूरी कहानी इस बात की साक्षी है कि सामूहिक नेतृत्व के लिए लेनिन के मन मे गहरा आदर था।

१४ दिसंबर को व्लादीमिर इल्यीच ने ११ बजे सुबह हमे टेलीफोन किया और कहा कि उन्होंने विदेशी व्यापार के सबध मे पिछले दिन स्तालिन को जो पत्र लिखा था वह किसी को दिया न जाए, क्योकि उन्हे उसमे एक पुनश्च जोडना था। उन्होंने जानना चाहा कि क्रजिजानोव्स्की आयेगे अथवा नही। एक बजकर दस मिनट पर ये० यारोस्लाव्स्की से सपर्क स्थापित कराने को कहा, किंतु चूकि उनका कही पता नही चल सका, इसलिए व्लादीमिर इल्यीच ने कहा कि वे यारोस्लाव्स्की से शाम को टेलीफोन पर बात करेगे या मिलेगे।

व्लादीमिर इल्यीच ने २ बजकर २५ मिनट पर मुझे अवने-सोव के लिए एक नोट दिया। स्तालिन के नाम विदेशी व्यापार के सबध मे लिखित उनके पत्र की प्रतिलिपि के साथ उस नोट को भेजा जाना था। नोट मे लिखा था, "मैं अपना पत्र आपको भेज रहा हू। सात बजे शाम तक इसे वापस कर दीजिए। अच्छी तरह सोच लीजिए कि इसमे क्या जोडा जाना है, क्या घटाया जाना चाहिए, **लड़ाई को किस तरह अच्छे से अच्छे ढंग से आयोजित करना चाहिए।**"

व्लादीमिर इल्यीच ने हमे आदेश दिया कि पत्र जब वापस आ जाए, तो उसे हम फ्रुम्किन के पास भेज दे, जो सभवत उस शाम को लेनिन से मिलनेवाले थे।

उनकी मन स्थिति अच्छी प्रतीत हो रही थी। वह हस रहे थे और मजाक कर रहे थे।

बाद मे उसी दिन तिपहरी मे ५ बजकर ४५ मिनट पर व्लादी-मिर इल्यीच ने टेलीफोन करके पूछा कि पोलिटब्यूरो की बैठक का कार्य-विवरण आ गया है या नहीं और कहा कि वह कुछ बोलकर लिखाना चाहते हैं। उन्होंने हमे ये० यारोस्लाव्स्की का टेलीफोन नबर मिला देने को कहा, जो शाम को उनसे मिले और जिनसे

उन्होंने विदेशी व्यापार के राजकीय एकाधिकार के संबंध में बातें कीं।

फ़ूम्किन छः बजने के कुछ बाद आए लेकिन वे व्लादीमिर इल्यीच से मिल नहीं पाए, क्योंकि ठीक उसी वक़्त डाक्टर आ गए। व्लादीमिर इल्यीच ने आठ बजने के बाद मुझसे कहा कि जब फ़ूम्किन अगले दिन दोपहर में त्सुरूपा से मिलने आयें, तो उनके साथ मुलाक़ात की बात व्लादीमिर इल्यीच को याद दिला दी जाए।

अपने सुबह के आदेश में परिवर्तन करते हुए व्लादीमिर इल्यीच ने मुझसे कहा कि स्तालिन के नाम विदेशी व्यापार के एकाधिकार संबंधी उनका पत्र जैसा था वैसा ही भेज दिया जाए और उसमें वे जो कुछ जोड़ना चाहते थे वह एक अलग पत्र में लिखेंगे। लेकिन लगभग दस बजे रात में मारीया इल्यीनिच्ना ने टेलीफ़ोन किया कि वे रात में कुछ भी नहीं लिखायेंगे।

यद्यपि उस दिन उनकी तबीयत ठीक नहीं थी, फिर भी उन्हें आंखों के डाक्टर प्रोफ़ेसर आवेरबाख़* को मकान देने के लिए जन-कमिसार परिषद के प्रबंध-व्यवस्थापक नि० पे० गोर्बुनोव को पत्र लिखना याद रहा।

यह हर कोई जानता है कि लेनिन जनता के कल्याण का कितना ध्यान रखते थे। जिस समय वे ख़ुद अपनी बीमारी के कारण बुरी तरह तकलीफ़ में थे, उस समय भी दूसरों के लिए उनकी आश्चर्यजनक हार्दिक चिंता उल्लेखनीय थी। मारीया इल्यीनिच्ना ने हमें बताया कि वे किस प्रकार अपने साथियों का ख़याल रखते थे, मिलने के लिए आनेवाले हर किसी से किस हार्दिकता तथा चिंता के साथ उसका हाल-चाल पूछते थे, उससे जिज्ञासापूर्वक जानना चाहते थे कि उसे काफ़ी आराम करने को मिल रहा है या नहीं और यह देख लेने पर कि आदमी कार्याधिक्य से दबा हुआ है, उसे फ़ौरन आराम के लिए भिजवा देते थे।

डाक्टर कोजेवनिकोव ने बताया कि जब वे ७ नवंबर को व्लादीमिर इल्यीच से मिले और उन्हें बताया कि क्रेमलिन प्राचीर

---

* म० इ० आवेरबाख़ (१८७२-१९४४) – सोवियत चिकित्सा-क्षेत्र में प्रमुख नेत्र-विशेषज्ञ, अकादमीशियन, चिकित्सा-विज्ञान के सम्मानित कार्यकर्ता। उन्होंने व्ला० इ० लेनिन की चिकित्सा की। – सं०

से परेड देखने जा रहे हैं, तो लेनिन ने पहला सवाल यह किया कि आप काफी गर्म कपड़े पहने हुए हैं या नही। जब कोजेवनिकोव ने जवाब दिया कि वे सूती ओवरकोट पहने हुए है, तब व्लादीमिर इल्यीच ने बेहद जोरदार विरोध किया और उन्हें अपना गर्म ओवरकोट पहनने को मजबूर किया। इस प्रकार डाक्टर लेनिन का ओवरकोट पहनकर परेड मे उपस्थित हुए।

१५ दिसंबर को व्लादीमिर इल्यीच ने दिन मे ११ बजकर ५० मिनट पर टेलीफोन किया और पिछले दिन लिखे गए पत्रो की प्रतिया मागी। उन्होंने मुझे अपने घर बुलाया और अपना लिखा एक गुप्त पत्र मुझे देकर कहा कि मैं उसे टाइप करके रवाना कर दू। उस पत्र की प्रति मुहरबद लिफाफे मे गुप्त सग्रहालय मे रखी जानी थी। लिखना व्लादीमिर इल्यीच के लिए बडा कष्ट-साध्य था।

उन्होंने अपनी किताबो को इस प्रकार सुव्यवस्थित करने को कहा तकनीकी और डाक्टरी किताबो को छाटकर वापस कर दिया जाए, कृषि-सबधी पुस्तके मारीया इल्यीनिच्ना को दे दी जाए, औद्योगिक प्रणाली के प्रचार और श्रम-सगठन तथा शिक्षण-कला सबधी पुस्तके नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना के हवाले कर दी जाए, कथा-साहित्य के सबध मे बाद मे आदेश दिया जाएगा, राजनीतिक समीक्षको की कृतियो, राजनीतिक सस्मरणो, यादो आदि की पुस्तको को उनके निजी उपयोग के लिए रखा जाए।

इसके अतिरिक्त, व्लादीमिर इल्यीच ने सेक्रेटरी की व्याख्यात्मक टीपो सहित वित्त-समिति के सारे कार्य-विवरणो की माग की। व्याख्यात्मक टीपो के बारे मे उन्होंने लिखा कि वे "बहुत बडी न हो, पर बहुत छोटी भी न हो", बस ऐसी हो जिनसे साफ-साफ पता चल सके कि वित्त-समिति किस स्थिति मे है।

व्लादीमिर इल्यीच कुछ खुश नही थे, वह अपनी हालत बदतर होती महसूस कर रहे थे और उन्होंने बताया कि वह पिछली रात सोए नही थे।

अब यह स्पष्ट था कि व्लादीमिर इल्यीच अपने मन मे इस बात से सतुष्ट थे कि उन्होंने उन मामलो के सबध मे काम खतम

कर लिया है, जिनके बारे में उन्हें विशेष परेशानी थी। इस सिल-सिले में उन्होंने पोलिटब्यूरो के सदस्यों के लिए स्तालिन के नाम एक पत्र लिखवाया। उस पत्र को उन्होंने साढ़े आठ बजे शाम को टेलीफ़ोन पर बोलकर लिखवाना शुरू किया, लेकिन फिर मुझे अपने घर बुला लिया और पत्र को लिखवाना जारी रखा।

उस विख्यात पत्र में व्लादीमिर इल्यीच ने कहा था, "अब मैंने अपना काम खतम कर लिया है और मन की शांति के साथ जा सकता हूं... केवल एक ही बात है जिससे मुझे परेशानी है। वह यह कि सोवियतों की कांग्रेस में मैं भाषण नहीं कर सकूंगा। मंगल के दिन डाक्टर लोग मुझे देखने आ रहे हैं और तब हम लोग यह फ़ैसला करेंगे कि मेरे भाषण करने की कोई संभावना हो सकेगी या नहीं। बहुत नरम शब्दों में कहूं कि भाषण करने से परहेज़ करना मेरे लिए बहुत असुविधाजनक होगा। कई दिन पहले ही मैं अपने भाषण के प्रारूप को लिखित रूप दे चुका हूं। इसलिए मेरा सुझाव है कि मेरी जगह बोलने की तैयारी दूसरा कोई ज़रूर करता रहे, लेकिन इस प्रश्न पर बुधवार तक कोई निर्णय न लिया जाए, जबकि मुझे यह पता चलेगा कि सामान्य से कहीं छोटे भाषण के साथ – उदाहरणत: एक ४५ मिनट के भाषण के साथ – शायद मैं खुद मंच पर उपस्थित हो सकूंगा। ऐसे भाषण से मेरे बदले में बोलनेवाले (चाहे आप जिसे भी इस काम के लिए चुनें) के भाषण में किसी भी रूप से बाधा नहीं पड़ेगी। लेकिन मेरा खयाल है कि ऐसा करना राजनीतिक तथा वैयक्तिक दोनों अर्थों में उपयोगी होगा, क्योंकि उससे किसी बड़ी चिंता का कारण समाप्त हो जाएगा। कृपया इस बात को ध्यान में रखें और यदि कांग्रेस को कुछ दिनों के लिए और टालना हो, तो मेरी सेक्रेटरी द्वारा मुझे पहले से सूचना दिलवा दें। **लेनिन।**" अपने प्रस्तावित भाषण के प्रारूप में व्लादीमिर इल्यीच ने जिन समस्याओं की रूपरेखा प्रस्तुत की थी उनकी विशद व्याख्या उन्होंने बाद में अपने पत्रों और लेखों में की। व्लादीमिर इल्यीच के इस पत्र से प्रकट है कि काम से मजबूरन अवकाश लेने तथा महत्वपूर्ण समस्याओं पर होनेवाली बहसों में सक्रिय भाग लेने में अपनी असमर्थता से उनके मन में कितना क्षोभ था।



गोर्की मे व्ला० इ० लेनिन



व्लादीमिर इल्यीच लेनिन

१६ दिसंबर को व्लादीमिर इल्यीच की हालत एकाएक बदतर हो गई। उस रात को उन्हे जो दौरा पड़ा, वह ३५ मिनट तक बना रहा। लेकिन इसके बावजूद दूसरे दिन तडके डाक्टर के आने से पहले उन्होने उपाध्यक्षो के काम के सबध मे एक और पत्र बोलकर लिखवाया।

डाक्टर लोग उनके पास ११ से पौने १२ बजे तक रहे।

व्लादीमिर इल्यीच की मास्को से गोर्की जाने की कोई इच्छा नही थी प्रोपेलर बर्फ-गाडी से जाने मे थकान होती और बर्फ अधिक होने के कारण मोटरगाडी से जाना असभव था। प्रोफेसर फार्स्टर का तार आया कि काग्रेस मे भाषण कर सकने से पहले व्लादीमिर इल्यीच को कम से कम सात दिन पूरी तरह आराम करना पडेगा।

व्लादीमिर इल्यीच ने हमे कोई आदेश देने के लिए उस दिन एक बार भी टेलीफोन नही किया।

शाम को नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने टेलीफोन किया और प्रार्थना की कि व्लादीमिर इल्यीच का यह सदेश जो० वी० स्तालिन को पहुंचा दिया जाए कि वे सोवियतो की काग्रेस मे भाषण नही कर सकेंगे। मैंने उनसे व्लादीमिर इल्यीच की हालत पूछी तो उन्होंने जवाब दिया, "औसत, हालत बुरी नही दिखाई देती, लेकिन आम तौर से कुछ कह सकना मुश्किल है।" नादेज्दा कोन्स्तान्ती-नोव्ना ने यह भी कहा कि व्लादीमिर इल्यीच चाहते है कि मैं ये० यारोस्लाव्स्की को टेलीफोन कर दू कि जब पूर्णाधिवेशन मे विदेशी व्यापार के राजकीय एकाधिकार के प्रश्न पर बहस हो तो वे इसके विरोधियो के – बुखारिन, प्याताकोव और सभव हो तो अन्यो के भी – भाषण लिख ले।

सोवियतो की दसवी काग्रेस मे भाषण करने मे असमर्थता के कारण व्लादीमिर इल्यीच पर बहुत बुरा प्रभाव पडा। उनकी हालत यकायक बिगड गई, उनकी दाहिनी बाह और दाहिने पैर मे लकवे का असर हो गया था।

रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बो०) की केंद्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन १८ दिसबर की सुबह और शाम को हुए। व्लादीमिर इल्यीच

उसमें भाग लेने में असमर्थ थे। पूर्णाधिवेशन ने सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ की स्थापना के संबंध में क़ानून का एक मसविदा स्वीकार किया।

सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ की स्थापना के प्रश्न पर केंद्रीय समिति के अक्तूबर (१९२२) के पूर्णाधिवेशन में पहले विचार हो चुका था।

केंद्रीय समिति के पोलिटब्यूरो ने ११ अगस्त को स्तालिन के नेतृत्व में गठित एक आयोग को पूर्णाधिवेशन में विचारार्थ क़ानून का मसविदा तैयार करने का काम सौंपा था। आयोग ने जिन प्रारूपों को विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया, वे मुख्यतः "स्वायत्तीकरण" के सिद्धांत पर, यानी स्वशासन के अधिकार के साथ जनतंत्रों के रूसी संघ में सम्मिलित किए जाने के सिद्धांत पर आधारित थे।

जब सितंबर १९२२ में व्लादीमिर इल्यीच ने अपने गोर्की-प्रवास के दिनों में स्तालिन के प्रारूपों को पढ़ा, तब उन्होंने २७ सितंबर को पोलिटब्यूरो के सभी सदस्यों को पत्र लिखकर "स्वायत्तीकरण" के सिद्धांत के प्रति अपना ज़ोरदार विरोध प्रकट किया और इस बात के लिए आग्रह किया कि रूसी संघ के साथ पूरी बराबरी के आधार पर जनतंत्रों की संघीय एकबद्धता हो, एक अखिल संघीय केंद्रीय कार्यकारिणी समिति का निर्माण किया जाए और हर जनतंत्र से एक एक आदमी लेकर कार्यकारिणी समिति के चार अध्यक्ष चुने जाएं।

२६ सितंबर को पोलिटब्यूरो के सदस्यों के लिए कामेनेव के नाम लिखे पत्र में व्लादीमिर इल्यीच ने लिखा, "मैं समझता हूं कि प्रश्न परम महत्वपूर्ण है; स्तालिन में थोड़ी जल्दबाज़ी की प्रवृत्ति है।"

रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बो०) की केंद्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन में ६ अक्तूबर को लेनिन की राय के अनुसार संशोधित स्तालिन आयोग की रिपोर्ट को स्वीकार किया गया और दिसंबर के पूर्णाधिवेशन में पेश करने के लिए सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ की स्थापना के संबंध में क़ानून का एक मसविदा तैयार करने हेतु एक दूसरा आयोग गठित किया गया। १८ दिसंबर १९२२

को केंद्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन ने सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ की स्थापना के संबंध में कानून का मसविदा स्वीकृत किया।

जिस समय केंद्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन तथा सोवियतों की दसवीं अखिल रूसी कांग्रेस हो रही थी, जिनकी कार्यावली में ऐसी समस्याएं शामिल थीं, जिनके बारे में व्लादीमिर इल्यीच इतने परेशान थे तथा जिनके विचार-विमर्श में भाग लेने की उनकी इतनी बड़ी आशा तथा तीव्र इच्छा थी, उस समय व्लादीमिर इल्यीच अपने क्रेमलिन वाले मकान में बुरी तरह बीमार पड़े हुए थे। डाक्टरों का आग्रह था कि वे बिना किसी शर्त के पूर्ण विश्राम करें। उनकी मांग थी कि लेनिन सारा काम बंद कर दें, यहां तक कि अखबार भी न पढ़ें। व्लादीमिर इल्यीच ने किसी को नहीं बुलाया, न ही कोई हिदायत दी।

लेकिन अपने कष्ट में भी लेनिन ने अपनी आत्मा की अद्वितीय महानता प्रदर्शित की। वे अपने देश के भविष्य तथा उस हेतु के बारे में निरंतर सोचते रहे, जिसकी उन्होंने सारी उम्र आत्मत्याग के साथ सेवा की थी। अतिमानवीय शक्ति तथा संकल्प से वह अपनी बीमारी को दबा लेते थे। बीमारी के दौरान मिले हर छोटे से छोटे अवकाश का उपयोग करते हुए वह सोवियत राज्य के विकास के लिए अपनी योजनाओं को, पार्टी तथा सोवियत जनता के लिए अपनी उन बुद्धिमत्तापूर्ण नसीहतों को बोलकर लिखवाते थे, जो आज लेनिन की राजनीतिक वसीयतें बन गयी हैं।

२३ दिसंबर को डाक्टर कोजेवनिकोव ने बताया कि व्लादीमिर इल्यीच ने अपने स्टेनोग्राफर को कोई चीज़ ५ मिनट तक बोलकर लिखवाने की डाक्टरों से अनुमति मांगी है, क्योंकि एक मामले की उन्हें चिंता है और उन्हें यह अंदेशा है कि उसे बाद में करने के लिए उनके पास समय नहीं होगा। उन्हें अनुमति दे दी गई और उनका मन शांत हो गया।

उसी दिन शाम को ८ बजे के ठीक बाद व्लादीमिर इल्यीच ने म० अ० वोलोदिचेवा* को अपने मकान पर बुलाया और उन्हें

---

* म० अ० वोलोदिचेवा (जन्म १८९१) – १९१७ से सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्य। १९१८ से १९२४ तक जन-कमिसार परिषद के कार्यालय में काम किया। – सं०

चार मिनट तक बोलकर लिखवाया। वोलोदिचेवा के अनुसार, व्लादीमिर इल्यीच की तबीयत बहुत खराब थी। लिखवाना शुरू करने से पहले उन्होंने वोलोदिचेवा से कहा, "मैं कांग्रेस के लिए एक पत्र लिखाने जा रहा हूं। इसे लिख लीजिए।" वे बहुत तेज बोल रहे थे, लेकिन रुग्णावस्था का उनपर प्रभाव था। जब पत्र लिखा चुके तब उन्होंने वोलोदिचेवा से पूछा कि आज तारीख क्या है और वह इतनी पीली क्यों दिखाई पड़ रही हैं तथा कांग्रेस* में क्यों नहीं शरीक हो रही हैं।

अपने कर्मचारी-मंडल के सदस्यों के साथ सीधा-सादा और दोस्ताना व्यवहार व्लादीमिर इल्यीच की बहुत बड़ी चरित्रगत विशेषता थी। उस दिन उन्होंने वोलोदिचेवा को और कोई आदेश नहीं दिया।

२४ दिसंबर को व्लादीमिर इल्यीच ने शाम को ६ और ८ बजे के बीच में वोलोदिचेवा को फिर बुलाया और दस मिनट तक बोलकर लिखाया। उन्होंने वोलोदिचेवा को चेतावनी दी कि जो कुछ उन्होंने पिछले दिन (२३ दिसंबर को) लिखाया था और जो कुछ उस दिन (२४ दिसंबर को) लिखा रहे थे, वह बेहद गोपनीय था। उन्होंने इस बात पर बार-बार ज़ोर दिया और आदेश दिया कि उन्होंने जो कुछ लिखाया था वह सब किसी सुरक्षित जगह रखा जाए।

हमें मारिया इल्यीनिच्ना के ज़रिये मालूम हुआ कि जब सेक्रेटरी तथा स्टेनोग्राफ़र के साथ बातचीत करने पर डाक्टरों ने एतराज़ किया तब व्लादीमिर इल्यीच ने उनसे साफ़-साफ़ कह दिया कि या तो उन्हें रोज़, थोड़ी ही देर के लिए सही, अपने स्टेनोग्राफ़र को बोलकर लिखाने की अनुमति दी जाए, वरना वे इलाज कराने

---

* २३ दिसंबर को मास्को में सोवियतों की दसवीं अखिल रूसी कांग्रेस हुई थी, जिसने, जैसे कि उससे पहले हुई उक्रइनी सोवियत समाजवादी जनतंत्र, बेलोरूसी सोवियत समाजवादी जनतंत्र और ट्रांस-काकेशियाई सोवियत संघीय समाजवादी जनतंत्र की सोवियतों की कांग्रेसों ने, जातियों की स्वेच्छा तथा समता के आधार पर उक्त जनतंत्रों को संयुक्त करने का फ़ैसला मंज़ूर किया।

मे बिलकुल इनकार कर देगे। यही पर व्लादीमिर इल्यीच की सबसे बडी चरित्रगत विशेषता प्रकट होती है: सकल्प की दृढता, जो सदा उनके जीवन का अभिन्न अग बनी रही। क्रान्तिकारी कार्य के बिना उनके लिए जीवन का कोई अर्थ नही था और शैयाग्रस्त होने हुए भी, बुरी तरह सिरदर्द तथा अनिद्रा के कष्टों से पीडित होते हुए भी वे अतिमानवीय दृढता के साथ पार्टी के लिए, मजदूर वर्ग के हेतु के लिए कुछ कर सकने के हर अवसर का इस्तेमाल करने की कोशिश करते थे।

व्लादीमिर इल्यीच अपनी "डायरी" लिखवाने के लिए डाक्टरो से अनुमति प्राप्त करने की निरतर कोशिश करते रहते थे। वे अपने नोटो का यही नाम देते थे और शायद यह समझते थे कि इस भोले-भाले नाम से उन्हे अनुमति मिलने में सहायता प्राप्त होगी।

२४ दिसबर को पोलिटब्यूरो के सदस्यो के साथ डाक्टरो के सलाह-मशविरे के फलस्वरूप यह तय किया गया कि व्लादीमिर इल्यीच को रोज़ ५ या १० मिनट बोलकर लिखाने की अनुमति दी जाए, लेकिन उन्हे अपने नोटो के जवाब पाने की उम्मीद नही करनी चाहिए। मुलाकातियो के आने की बिलकुल मनाही कर दी गई। मित्रो अथवा परिवार वालो को उन्हे कोई राजनीतिक समाचार बताने की इजाज़त नही थी ताकि इसे चिंतित होने या घबडाने के कोई कारण न हो। व्लादीमिर इल्यीच अपने नोट लिखवाने के लिए मुझे या वोलोदिचेवा को बुला सकते थे।

व्लादीमिर इल्यीच ने डाक्टरो की अनुमति से लाभ उठाकर दिसबर १९२२ के अत तथा जनवरी १९२३ के शुरू में अपने वे पत्र और लेख लिखवाए, जिनका पार्टी के लिए बेहद महत्व है।

धीरे-धीरे उनके लिखाने का समय बढकर प्रतिदिन २० मिनट हो गया और अतत सुबह और शाम की दो बैठको मे कुल मिलाकर वह ४० मिनट प्रतिदिन तक पहुच गया।

व्लादीमिर इल्यीच अक्सर निर्धारित समय बीत जाने पर भी शुरू कराया हुआ लेख लिखवाते ही चले जाते थे। वास्तव में वे निर्धारित समय से कही अधिक देर तक काम करते थे।

14*

लिखवाने के दौरान वे कभी-कभी पहले की लिखवाई सामग्री की टाइप की हुई प्रति पढ़ने लगते थे। किसी-किसी दिन वे शामों को सोने के पहले भी पढ़ते थे। यह बात यक़ीन के साथ कही जा सकती है कि बोलकर लिखवाने का समय बंधा-बंधाया होने के कारण, व्लादीमिर इल्यीच को पार्टी से जो कुछ अत्यावश्यक रूप से कहना होता था, उसकी शब्दावली के संबंध में वे दिन में तथा निद्राहीन रातों में भी, कई-कई घंटे सोचा करते थे।

लिखने के बजाय बोलकर लिखवाने की मजबूरी व्लादीमिर इल्यीच के लिए निस्संदेह बहुत कष्टप्रद थी। बीमार पड़ने से पहले भी उन्हें बोलकर लिखाना कभी पसंद नहीं था। वे कहा करते थे कि वे अपना लिखा हुआ सामने देखते रहने के आदी हैं, इसलिए बोलकर लिखाना उन्हें मुश्किल मालूम होता है। उन्हें यह देखकर भी परेशानी होती थी कि जब तक वे लिखाने के लिए अगली बात सोचें, तब तक हाथ में पेंसिल साधे स्टेनोग्राफ़र उनके आगे बोलने का इंतज़ार करती हुई बैठी रहे। लेकिन उन्हें इस स्थिति के साथ ताल-मेल बैठाना था और उन्होंने सोचा कि अगर विराम-अवधि में पढ़ने के लिए स्टेनोग्राफ़र के पास कोई किताब हो तो शायद उन्हें उलझन न हो। लेकिन उससे भी कुछ ख़ास लाभ नहीं हुआ। अंत में स्टेनोग्राफ़र को पास के कमरे में बैठाया गया और उसे कान के फ़ोन दिए गए, ताकि व्लादीमिर इल्यीच उसे फ़ोन द्वारा बोलकर लिखा सकें। लेकिन इस तरीक़े को वे बहुत ही कम और अनिच्छापूर्वक ही अपनाते थे।

अपने अंतिम पत्रों तथा लेखों को बोलकर लिखाते समय व्लादीमिर इल्यीच जो वाक्य अपने मन में बना चुके होते थे, उसे तेज़ी से बोल जाते थे और फिर अगला वाक्य सोचने के लिए थोड़ी देर तक रुक जाते थे। वे कभी एक वाक्य को दुबारा नहीं बोलते थे और उनकी विचार-शृंखला के भंग होने के भय से वोलोदिचेवा या मैं उनसे वाक्य दुहराने को कहती भी नहीं थी।

हम संकेताक्षरों में जो कुछ लिखती थीं, उसे हमें फ़ौरन साफ़-साफ़ लिख और टाइप करके व्लादीमिर इल्यीच को देना पड़ता था। उनके आदेश पर उसकी पांच प्रतियां टाइप की जाती

थी, जिनमे से एक तो उनके पास रह जाती थी, तीन नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना को दे दी जाती थी और एक उनके सचिवालय की फाइल मे लगा दी जाती थी।

जो प्रति 'प्राव्दा' को भेजनी होती थी, उसे तमाम सुधारो और परिवर्तनो के साथ दुबारा टाइप होने पर व्लादीमिर इल्यीच को दिखाया जाता था। उसके बाद उसे अखबार को भेजने के लिए मारीया इल्यीनिच्ना को दे दिया जाता था, जो उस समय 'प्राव्दा' के सपादकीय कार्यालय की सेक्रेटरी थी। अन्य प्रतियो को भी उसके अनुरूप सुधार लिया जाता था और मोटे तौर पर बनायी गयी प्रतियो को जला दिया जाता था।

असाधारण गुप्त नोटो को मुहरबद लिफाफो मे रखा जाता था, जिनपर व्लादीमिर इल्यीच हमसे यह लिखवा देते थे कि उन्हे केवल व्ला० इ० लेनिन ही खोल सकते है। "और उनकी मृत्यु के बाद – नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना" – वे तत्काल इतना और जोड देते थे, लेकिन ये शब्द लिफाफो पर लिखे नही जाते थे। उनके बारे मे सिर्फ नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना तथा मारीया इल्यीनिच्ना जानती थी। व्लादीमिर इल्यीच के नाम के साथ मृत्यु शब्द लगाना असहनीय था।

मारीया इल्यीनिच्ना ने जो [illegible] पास से हटती थी, तमाम घरेलू और [illegible] उठा रखा था। नादेज्दा [illegible] इल्यीच की परिचर्या मे लगी [illegible] लिए सर्वाधिक प्रिय थी वे [illegible] लिए सदा ही स्नेहपूर्ण बिना [illegible]

उनकी चारपाई मे एक [illegible] जिसपर व्लादीमिर इल्यीच [illegible] सही-सलामत बाए हाथ मे [illegible] कही एक-दो सुधार करते जाते थे। जब [illegible] होती, तब वे मुस्कराते, हसी-मजाक [illegible] कि क्या हम बहुत थक तो नही गई? लेकिन [illegible] बार लौट आता था और तब उनके सिर पर [illegible]।

वे ऐसे कठिन दिन थे, जो भूले नहीं जा सकते। हमारा समूचा जीवन उन कुछ मिनटों में केंद्रित प्रतीत होता था, जो हम उनकी शय्या के पास गुज़ारते थे और जब इस बात के लिए व्याकुल रहते थे कि कहीं उनका एक भी शब्द हमसे अनसुना न छूट जाए, या कि कहीं उनके चेहरे की भावाभिव्यक्ति की कोई क्षणिक छाया भी हमसे अनदेखी न रह जाए।

वोलोदिचेवा को या मुझे जब-जब व्लादीमिर इल्यीच अपने पास बुलाते तब-तब हर बार हमारे सभी साथी, लेनिन के छोटे से दफ़्तर के सभी कर्मचारी हमारे लौटने की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा किया करते थे। पहली बात जो वे सभी जानना चाहते थे वह यह थी कि उस दिन लेनिन कैसा महसूस कर रहे थे और वे देखने में कैसे लग रहे थे। कभी-कभी उनके पास से हमारे लौटने के बाद नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना या मारीया इल्यीनिच्ना सचिवालय में आकर या तो लेनिन द्वारा उस समय लिखवाई गई सामग्री को पढ़ती या लेनिन की हालत के बारे में हमसे बातें करती थीं।

व्लादीमिर इल्यीच को **२४ दिसंबर को** सुखानोव की पुस्तक 'क्रांति संबंधी लेख'* का तीसरा और चौथा खंड मिला, जो उन्होंने मंगाये थे।

२५ और २६ दिसंबर को उन्होंने अपना 'कांग्रेस के नाम पत्र'** लिखाना जारी रखा, जिसे २३ दिसंबर को शुरू कराया था।

---

* मेन्शेविक न० सुखानोव की पुस्तक 'क्रांति संबंधी लेख' के तीसरे और चौथे भागों में जिनका चौथा संस्करण १९२२ में ज़ि० इ० ग्रजेबिन प्रकाशन गृह, बर्लिन-पेत्रोग्राद-मास्को ने प्रकाशित किया था, ३ अप्रैल १९१७ से लेकर ८ जुलाई १९१७ तक की अवधि का वर्णन किया गया था। इन्हीं पुस्तकों के संबंध में लेनिन ने 'हमारी क्रांति के बारे में' शीर्षक से अपने लेख लिखे थे।—सं०

** 'कांग्रेस के नाम पत्र' में लेनिन ने पार्टी की एकता की हिफ़ाज़त पर ज़ोर दिया था। एकता को सुनिश्चित करने के लिए उन्होंने जो कार्रवाइयां सुझायी थीं उनमें से एक यह थी कि केंद्रीय समिति की सदस्य-संख्या २७ से बढ़ाकर ५० और १०० के बीच में कर दी जाये।

इस पत्र में लेनिन ने केंद्रीय समिति के कई सदस्यों की अच्छाइयों और बुराइयों पर टीका-टिप्पणी करते हुए उनका चरित्र-चित्रण किया था।

'कांग्रेस के नाम पत्र' को तेरहवीं पार्टी कांग्रेस में जनता के सामने लाया गया था।—सं०

२७ और २८ दिसंबर को व्लादीमिर इल्यीच ने 'राजकीय योजना-आयोग को विधायी कार्यभार प्रदायन'* शीर्षक पत्र बोलकर लिखाया और उसे २९ को ख़त्म किया।

इस पत्र मे व्लादीमिर इल्यीच ने राजकीय योजना-आयोग के कार्यक्षेत्र को विस्तृत करने की बात कही और बताया कि सैद्धातिक प्रश्न यही पर व्यक्तियों के प्रश्न के साथ, बिल्कुल ठीक-ठीक कहे कि आयोग का नेतृत्व करनेवाले लोगों के प्रश्न के साथ जुड़ा हुआ है। लेनिन ने १९२१ और सितंबर १९२२ मे व्यक्त की गई अपनी सम्मति का हवाला देकर कहा कि राजकीय योजना-आयोग के वैज्ञानिक कार्य को प्रशासनिक कार्यों के साथ मिला दिया जाए।

ना० कॉ० क्रूप्स्काया ने २ जून १९२३ को यह पत्र केंद्रीय समिति के पोलिटब्यूरो को दे दिया। ३ जून १९२३ को उसकी प्रतिया पोलिटब्यूरो के सभी सदस्यो और उम्मीदवार सदस्यो तथा केंद्रीय नियंत्रण-आयोग** के अध्यक्षमडल के सदस्यो को भेज दी गई।

२८ दिसंबर को व्लादीमिर इल्यीच ने २० मिनट तक बोलकर लिखाया और उतना ही समय पढने मे लगाया।

२९ दिसंबर को नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने हम लोगो को बताया कि डाक्टरो ने व्लादीमिर इल्यीच को पुस्तके पढने की अनुमति दे दी है और अब वे सुखानोव के 'क्रान्ति सबधी लेख'

---

* **'राजकीय योजना-आयोग को विधायी कार्यभार प्रदायन'** नामक अपने पत्र मे लेनिन ने समाजवादी निर्माण मे आयोग की सवर्द्धित भूमिका पर जोर दिया था, उसके कार्यकलाप को विस्तृत करने की आवश्यकता बताई थी, और उन राजनीतिक तथा कामकाजी जरूरतो को स्पष्ट किया था जिन्हे पूरा करना राजकीय योजना-आयोग के नेताओ के लिए आवश्यक था। – स०

** पार्टी की उच्चतम नियत्रणकारी समिति, जो १९२० से १९३४ तक काम करती रही। वह पहले पहल दसवी पार्टी काग्रेस मे पार्टी की एकता को मज़बूत करने, पार्टी-अनुशासन को दृढ करने, नौकरशाही व्यवहारो और पार्टी-सदस्यो द्वारा पार्टी तथा सोवियत के भीतर पदो के दुरुपयोग के ख़िलाफ़ सघर्ष करने के लिए चुनी गयी थी। 'मजदूर किसान निरीक्षण सस्था का पुनर्गठन किस प्रकार करना चाहिए' और 'चाहे कम हो पर बेहतर हो' नामक अपने दो लेखो मे लेनिन द्वारा पेश किये गये सुझावो के अनुसार बारहवी पार्टी काग्रेस ने केंद्रीय नियत्रण-*आयोग और मजदूर किसान निरीक्षण सस्था नामक दो समितियो को एक मे मिला* दिया और उसे पार्टी-एकता को सुरक्षित रखने, पार्टी तथा नागरिक अनुशासन को दृढ करने और राजकीय मशीनरी को चहुमुखी ढग से बेहतर बनाने के कर्तव्य सौंपे। – स०

पढ़ रहे हैं, तथा चाहते हैं कि हम कथा-साहित्य की पुस्तकों को छोड़कर, जिसमें उस समय उनको रुचि नहीं थी, अन्य सभी नयी पुस्तकों की सूची तैयार कर दें।

व्लादीमिर इल्यीच के बोलकर लिखवाने का समय बढ़ाकर दिन में दो बार दस-दस मिनट कर दिया गया, किंतु वे अक्सर उससे अधिक समय ले लेते थे। मारीया इल्यीनिच्ना ने हमें बताया कि व्लादीमिर इल्यीच की बड़ी इच्छा थी कि वे अच्छे हो जाते और इसलिए दवाओं के संबंध में डाक्टरों के आदेशों का पालन करते थे, किंतु काम का प्रश्न आने पर उनकी उपेक्षा करते थे।

उस अवधि में लेनिन की क्रियाशीलता केवल पत्रों को बोलकर लिखवाने तक ही सीमित नहीं थी, "जिनके उत्तर की आशा" डाक्टरों के कथनानुसार "उन्हें नहीं करनी थी", बल्कि वे नित्य-प्रति के मामलों में भी दिलचस्पी लेते थे और उनकी प्रगति को प्रभावित करने का प्रयत्न करते थे।

२९ दिसंबर को व्लादीमिर इल्यीच ने राजकीय योजना-आयोग संबंधी पत्र समाप्त किया और केंद्रीय समिति की सदस्य-संख्या-वृद्धि के सवाल पर वापस आये।

यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि व्लादीमिर इल्यीच ने पहले भी केंद्रीय समिति के निर्माण पर अक्सर ध्यान दिया था। उनकी दृष्टि में यह बात विशेष रूप से महत्वपूर्ण थी कि केंद्रीय समिति का कार्य निरंतर जारी रहे और नौजवान लोग उसमें भाग लेकर कार्य के अभ्यस्त बनें।

३० दिसंबर को व्लादीमिर इल्यीच ने अपना वह पत्र दो बार में पंद्रह-पंद्रह मिनट बोलकर लिखाया, जिसका शीर्षक "जातियों अथवा 'स्वायत्तीकरण' का प्रश्न" था। उन्होंने दो बार करके बीस-बीस मिनट उसे पढ़ने में भी लगाए।

३१ दिसम्बर की शाम को व्लादीमिर इल्यीच ने दो बैठकियों में उस पत्र को खत्म करवाया।

अपने पत्र में व्लादीमिर इल्यीच ने छोटी जातियों के प्रति कम्युनिस्ट पार्टी की नीति का उच्च सैद्धान्तिक विश्लेषण किया। जार्जिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति में मतभेद होने

की वजह से इस पत्र की आवश्यकता हुई थी। मतभेद मुख्यतः प्रस्तावित ट्रास-काकेशियाई संघात्मक जनतंत्र के निर्माण के कारण शुरू हुआ था। जार्जियाई केंद्रीय समिति के सदस्यों के एक दल (मदिवानी, मखारादज़े और दूसरो) का मत था कि अभी इस प्रश्न को उठाने का समय नही आया है और उसका पर्याप्त अध्ययन नहीं हुआ है। वे लोग संघ के निर्माण के विरोध मे थे और जार्जियाई सोवियत समाजवादी जनतंत्र को सीधे सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ में मिला देना चाहते थे।

रूसी कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के सचिवालय ने २४ नवंबर को जार्जिया की कम्युनिस्ट पार्टी की पुरानी केंद्रीय समिति के सदस्यो (फ० मखारादज़े और दूसरो) द्वारा दिए गये त्यागपत्रों के तात्कालिक अध्ययन तथा जार्जिया की कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर टिकाऊ शांति की स्थापना हेतु आवश्यक कार्रवाई पर सोच-विचार करने के लिए एक आयोग नियुक्त किया। इस निर्णय को पोलिटब्यूरो मे स्वीकृति के लिए पेश किया गया था, जिसपर मतदान के समय व्लादीमिर इल्यीच ने अपना वोट नहीं दिया।

जाच के लिए आयोग को तिफलिस की यात्रा करनी पड़ी थी। उसका काम दिसंबर में समाप्त हो गया था और दुर्जेर्जीन्स्की ने व्लादीमिर इल्यीच को उसके नतीजे बता दिये थे। इस पूरी चीज़ का व्लादीमिर इल्यीच पर बहुत ही भयानक प्रभाव पड़ा।

वह फ़े० ए० दुर्जेर्जीन्स्की के आयोग के कार्य से असंतुष्ट थे और उनका विचार था कि उसने "जार्जियाई प्रश्न" की जाच मे आवश्यक निष्पक्षता नहीं दिखायी थी।

लेनिन ने अपने उस पत्र में, जिसका शीर्षक "[illegible] अथवा 'स्वायत्तीकरण' का प्रश्न" था, यह बताया था कि [illegible] वर्गीय अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की नीति की विकृति से [illegible] के बीच हमारे प्रभाव का मूलोच्छेद हो सकता है और [illegible] समय मे विशेष रूप से घातक तथा [illegible] है [illegible] की जनता करोड़ों की संख्या में अपनी [illegible] हेतु गतिशील होने लगी है। व्लादीमिर इल्यीच [illegible]

निम्नलिखित भविष्यदर्शी शब्दों के साथ समाप्त किया था, "और कल ही दुनिया के इतिहास में ठीक ऐसा दिन आएगा जब कि साम्राज्यवाद द्वारा उत्पीड़ित जनता अंततः उत्साहित तथा जागृत होगी और अपनी स्वाधीनता के लिए लंबा, कठिन तथा निर्णयकारी संघर्ष प्रारंभ करेगी।"*

'जातियों या "स्वायत्तीकरण" का प्रश्न' शीर्षक व्लादीमिर इल्यीच का पत्र तथा सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ के निर्माण से संबंधित उनका २७ सितंबर का पत्र विरल महत्व की दस्तावेज़ें हैं। इनकी बदौलत सोवियत सत्ता की जातियों से संबंधित नीति के विकृत किए जाने और सर्वहारा वर्गीय अंतर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धांत के भंग किए जाने के ख़िलाफ़ पार्टी ख़बरदार हो गई।

लेनिन के इस पत्र का अंतर्य बारहवीं पार्टी कांग्रेस से पहले कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के केवल कुछ ही सदस्यों को ज्ञात था। उसे बारहवीं कांग्रेस के प्रतिनिधिमंडलों के नेताओं के सम्मेलन में पढ़कर सुनाया गया था। कांग्रेस के जातियों से संबंधित प्रस्तावों में व्ला० इ० लेनिन की हिदायतें ध्यान में रखी गयी थीं।

अंतिम लेख

१९२३ की जनवरी और फ़रवरी के दौरान व्लादीमिर इल्यीच ने सख़्ती से काम जारी रखा तथा कई लेख बोलकर लिखवाए, जिन में हमारे देश में समाजवाद के निर्माण की योजना की रूपरेखा प्रस्तुत की।

२ जनवरी – व्लादीमिर इल्यीच ने 'डायरी के पन्ने' बोलकर लिखवाया।

४ जनवरी – व्लादीमिर इल्यीच ने कांग्रेस के नाम अपने पत्र का एक संयोज्यांश बोलकर लिखवाया और 'सहकारिता के बारे में' नामक लेख शुरू करवाया। उसे उन्होंने ६ जनवरी को ख़त्म कर दिया।

---

* व्ला० इ० लेनिन, अन्तिम पत्र और लेख, हिंदी संस्करण, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७९, पृ० १९-२२। – सं०

५ जनवरी—व्लादीमिर इल्यीच ने हममे से किसी को अपने पास नही बुलवाया, लेकिन ३ जनवरी से प्राप्त नई पुस्तको की सूची तथा तिल्लीनोव की किताब 'नया गिर्जा' मंगवायी।

६ जनवरी— व्लादीमिर इल्यीच ने अपना लेख 'मजदूर किसान निरीक्षण सस्था के सबध मे हमे क्या करना चाहिए?' ('हमे मजदूर किसान निरीक्षण संस्था का पुनर्सगठन किस प्रकार करना चाहिए' का प्रारुप) बोलकर लिखवाया। उन्होने उसे १३ जनवरी को भी जारी रखा।

१० जनवरी— सुबह व्लादीमिर इल्यीच को अपनी तबीयत खराब लग रही थी। अपने सुबह के फेरे के बाद जब डाक्टर लोग वापस जा रहे थे, तब मारीया इल्यीनिच्ना ने डाक्टर कोजेवनिकोव से बाद मे फिर आने को कहा और बताया कि व्लादीमिर इल्यीच केवल चंद मिनटों के लिए ही अपनी सेक्रेटरी को बुलाने के लिए आग्रह कर रहे है। डाक्टर की अनुमति मिलते ही व्लादीमिर इल्यीच ने मुझे अदर बुलवाया और केंद्रीय साख्यिकीय बोर्ड मे सपर्क स्थापित करके वहा से सरकारी दफ्तरो के कर्मचारियो की जनसख्या-गणना के नतीजे मागने को कहा।

१६ जनवरी— व्लादीमिर इल्यीच ने अपना लेख 'हमारी क्रान्ति के बारे में' बोलकर लिखवाया।

१७ जनवरी— व्लादीमिर इल्यीच ने शाम को ६ और ७ बजे के बीच वोलोदिचेवा को आध घटे के लिए अंदर बुलवाया। उन्होंने 'हमारी क्रान्ति के बारे में' नामक अपने लेख को पढा और उसमें संशोधन किए। उन्होंने अगले १० या १५ मिनट तक उसमे और जोडवाया। वे नए तख्ते से खुश थे, जिसमे उनके लिए अपनी पाडुलिपियो और पुस्तको को पढना आसान हो गया था।

वोलोदिचेवा ने हमे बताया कि जब व्लादीमिर इल्यीच अपना यह वाक्य बोलकर लिखा रहे थे कि "हमारे सुखानोव लोग इस बात की कल्पना तक नही कर सकते कि " तो वे अगला शब्द सोचने के लिए रुके और मजाक करते हुए बोले, "क्या खूब याद-दाश्त है! मैं बिलकुल ही भूल गया कि क्या कहने जा रहा था! कितने आश्चर्यजनक रूप से खराब याददाश्त है!"

वे मांग करते थे कि नोट को फ़ौरन टाइप करके उनके पास लाया जाए।

दिसंवर १९२२ से फ़रवरी १९२३ तक की अवधि में व्लादीमिर इल्यीच द्वारा वोलकर लिखाए गए लेखों में 'हमारी क्रान्ति के वारे में' ही एक ऐसा लेख था, जिसका शीर्षक वे नहीं दे सके थे। ना० को० क्रूप्स्काया ने उसे 'प्राव्दा' को दिया था, जहां उसका नामकरण किया गया था। वह लेख ३० मई १९२३ को प्रकाशित हुआ था।

१९ जनवरी – व्लादीमिर इल्यीच ने वोलोदिचेवा को दो वार वुलवाया, एक वार शाम को ७ बजे और फिर ८ बजे के कुछ वाद। उन्होंने लगभग ३० मिनट तक बोलकर लिखवाया। ('हमें मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था का पुनर्संगठन किस प्रकार करना चाहिए' नामक लेख का वह दूसरा रूप था।) उन्होंने कहा कि वे लेख को यथासंभव शीघ्र समाप्त कर देना चाहते हैं। डाक्टर कोजेवनिकोव ने वताया कि व्लादीमिर इल्यीच अपने काम से प्रसन्न हैं और बहुत नहीं थके हैं।

२० जनवरी – व्लादीमिर इल्यीच ने दोपहर को १२ और १ वजे के वीच वोलोदिचेवा को वुलवाया। वे ३० मिनट तक उनके पास रुकीं, जवकि व्लादीमिर इल्यीच ने मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था संवंधी अपने लेख को पढ़ा और उसमें संशोधन तथा संयोजन किए। उन्होंने कहा कि उनके लेख के एक भाग से संवंधित आंकड़े उनके लिए नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना मुहैया करेंगी और मुझे यह पता लगाने का भार सौंपा कि श्रम के वैज्ञानिक संगठन से संवंधित कितनी और किस क़िस्म की संस्थाएं मौजूद हैं, इस विषय के संवंध में कितनी कांग्रेसें हो चुकी हैं और उनमें किन दलों ने भाग लिया। उसके वाद उन्होंने पूछा कि क्या इस विषय पर पेत्रोग्राद में किसी सामग्री का होना संभावित है। उन्होंने वताया कि म० इ० ख़्लोपल्यान्किन* ने उनके पास वही सामग्री भेजी है जो नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना के पास पहले ही मौजूद है। अंतर केवल इतना

* ख़्लोपल्यान्किन म० इ० – लघु जन-कमिसार परिषद तथा श्रम जन-कमिसारियत वोर्ड के सदस्य। – सं०

है कि वह थोडा अधिक ब्योरेवार है, उसके बाद लेनिन ने अपने लिए आई पुस्तको की एक पूरी सूची देने का मुझे आदेश दिया।

२२ जनवरी – व्लादीमिर इल्यीच ने वोलोदिचेवा को २५ मिनट (दिन के १२ बजे से १२ बजकर २५ मिनट तक) के लिए बुलवाया। उन्होंने मजदूर किसान निरीक्षण संस्था सबधी अपने लेख के दूसरे मूलपाठ मे सशोधन किए और अतत. यह निश्चय किया कि दूसरा मूलपाठ ही अतिम रहेगा। उनके काम का समय प्रतिबधित था, इसलिए उन्हे बेहद जल्दी पड़ी थी। उन्होंने वोलोदिचेवा से लेख को तरतीब देने, टाइप करने और उसी शाम को लाकर देने को कहा। जब वे बाद मे आई, तो नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने दरवाज़ा खोला और कहा कि व्लादीमिर इल्यीच ने नियमो का उल्लघन किया है और लेख को देखने के लिए और चद मिनट ले लिए हैं। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने यह भी कहा कि ड्यूटी पर तैनात नर्स उस दिन किसी भी मुलाकाती को अदर आने देने के विरुद्ध थी। बाद में वह सचिवालय आई और उन्होंने कहा कि अगर वोलोदिचेवा व्लादीमिर इल्यीच का बोला हुआ सब कुछ न लिख पाई हो, तो वे चाहते हैं कि छूटे हुए अशो के लिए स्थान छोड दिए जाए। व्लादीमिर इल्यीच इतनी जल्दी मे थे कि उन्हे खुद सदेह था कि उनकी पूरी बात लिख लेना कठिन रहा होगा।

२३ जनवरी – व्लादीमिर इल्यीच ने दिन के १२ और १ बजे के बीच वोलोदिचेवा को बुलाया। उन्होंने मज़दूर किसान निरीक्षण से सबधित लेख पर एक बार और दृष्टि डाली और चद छोटे-मोटे सशोधन किये। उन्होंने वोलोदिचेवा से अपनी तथा हम लोगो की प्रतियो मे उसके अनुरूप सशोधन करने और एक प्रति 'प्राव्दा' के लिए मारीया इल्यीनिच्ना को दे देने को कहा। सभी प्रतियो मे सशोधन कर दिया गया और ३ बजे दिन से पहले एक प्रति मारीया इल्यीनिच्ना को दे दी गई। व्लादीमिर इल्यीच ने यह पूछा कि क्या मैं पेत्रोग्राद से लौट आई और क्या हमारी छुट्टिया खत्म हो गई। उसके बाद उन्होंने पौन घटे तक लिखवाया और पढा। 'हमे मज़दूर किसान निरीक्षण सस्था का पुनर्सगठन किस प्रकार करना चाहिये' शीर्षक लेख (बारहवी पार्टी काग्रेस के

लिए प्रस्ताव) 'प्राव्दा' में २५ जनवरी १९२३ को प्रकाशित हुआ।

२४ जनवरी – व्लादीमिर इल्यीच ने मुझे बुलाया और द्ज़ेर्झीन्स्की या स्तालिन से जार्जियाई प्रश्न से संबंधित आयोग के तथ्यों को प्राप्त करने को कहा और आदेश दिया कि मैं, मा० इ० ग्लास्सेर* तथा नि० पे० गोर्बुनोव उनका सांगोपांग अध्ययन करें तथा उसपर एक रिपोर्ट लिखकर उन्हें दें। उन्होंने इतना और कहा कि उन्हें ये चीज़ें पार्टी कांग्रेस के लिए चाहिए। स्पष्टतः उन्हें यह नहीं मालूम था कि "जार्जियाई प्रश्न" पोलिटब्यूरो के कार्यक्रम में शामिल था। व्लादीमिर इल्यीच ने कहा, "मेरे बीमार पड़ने से ठीक पहले द्ज़ेर्झीन्स्की ने आयोग के कार्य तथा 'घटना' के संबंध में मुझे बताया था जिसका मेरे ऊपर दर्दनाक प्रभाव पड़ा।"

हमें "जार्जियाई प्रश्न" के तथ्यों का अध्ययन करने का आदेश देने में व्लादीमिर इल्यीच "निश्चित रूप से विद्यमान अन्यायों तथा पक्षपातपूर्ण रायों के विशाल ढेर को सही करने की दृष्टि से द्ज़ेर्झीन्स्की-आयोग के सभी तथ्यों की जांच पूरी करने या नए सिरे से जांच करने" की आवश्यकता द्वारा प्रेरित हुए थे।

२५ जनवरी – व्लादीमिर इल्यीच ने यह पूछा कि क्या आयोग ने सामग्री भेज दी। मैंने उत्तर दिया कि द्ज़ेर्झीन्स्की तिफ़लिस (अब – त्बिलीसी) से अभी शनिवार, तारीख़ २७ जनवरी को ही आनेवाले हैं।

२६ जनवरी – व्लादीमिर इल्यीच ने मुझे अ० द० त्सुरूपा, अ० इ० स्विदेर्स्की** और अवनेसोव से यह कह देने का आदेश दिया कि यदि वे मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के विषय में लेनिन के लेख से सहमत हों तो कांग्रेस से पहले उन्हें इस बात पर विचार करने के लिए कई बैठकें बुलानी होंगी कि क्या श्रम-संगठन के बारे में एक योजना, पाठ्यपुस्तकों का एक सार संग्रह तैयार करना

---

* मा० इ० ग्लास्सेर (१८९०-१९५१) – १९१७ से सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्य। उन्होंने १९१८ से १९२४ तक जन-कमिसार परिषद के सचिवालय में काम किया। – सं०

** अ० इ० स्विदेर्स्की (१८७८-१९३३) – पेशेवर क्रान्तिकारी, १८९९ से कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य। मई १९२१ से १९२३ तक मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के बोर्ड के सदस्य। – सं०

वेहतर नही होगा। व्लादीमिर इल्यीच यह भी जानना चाहते थे कि क्या वे लोग केर्जेन्त्सेव* और येर्मान्स्की** की पुस्तकों से परिचित थे।

२७ जनवरी – मैंने द्ज़ेर्जीन्स्की से "जार्जियाई प्रश्न" से सवधित सामग्री की माग की, लेकिन उन्होंने मुझसे कहा कि वे स्तालिन के पास थे किंतु वे सयोगवश मास्को से बाहर थे।

२९ जनवरी – स्तालिन ने मुझसे टेलीफोन पर कहा कि वे पोलिटब्यूरो की मजूरी के बगैर मुझे सामग्री नही दे सकते। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं व्लादीमिर इल्यीच को जितना वाछनीय है, उससे अधिक वाते नही बता रही हू, क्योंकि वे समसामयिक मामलो से अच्छी तरह परिचित प्रतीत होते है। उदाहरण के लिए मज़दूर किसान निरीक्षण सस्था के सवध मे उनके लेख से प्रकट है कि कुछ विशेष परिस्थितिया उनको ज्ञात थीं। मैंने उत्तर दिया कि *मैं व्लादीमिर इल्यीच को कुछ नहीं बताती हूं* और मेरे पास यह विश्वास करने का कोई कारण नही है कि वे समसामयिक मामलों की पूरी जानकारी रखते है।

३० जनवरी – व्लादीमिर इल्यीच ने मुझे बुलवाया और कहा कि वे इस बात के लिए सघर्ष करेंगे कि सामग्री उन्हे दी जाए। उसके बाद उन्होंने मुझसे यह पूछा कि मजदूर किसान निरीक्षण सस्था संबधी उनके लेख के बारे मे त्सुरूपा ने क्या कहा और क्या वे (त्सुरूपा), स्विदेर्स्की, अवनेसोव, रेस्के तथा बोर्ड के अन्य सदस्य उससे सहमत है। इस नियम को ध्यान मे रखते हुए कि व्लादीमिर इल्यीच से कामकाजी मामलो पर बात नही करनी चाहिए, मैंने उत्तर दिया कि मुझे नही मालूम है। व्लादीमिर इल्यीच ने कहा कि कही ऐसा तो नही है कि शायद त्सुरूपा का मन डावाडोल

---

* **प० म० केर्जेन्त्सेव** (१८८१-१९४०) – पुराने बोल्शेविक, पत्रकार और कूटनीतिज्ञ। एक समय वे श्रम के वैज्ञानिक सगठन मे लगे हुए थे। यहा लेनिन ने उनकी १९२२ मे प्रकाशित पुस्तक 'सगठन के सिद्धात' का हवाला दिया है। – सं०

** **ओ० अ० येर्मान्स्की** – सामाजिक-जनवादी, मेन्शेविक। लेनिन ने यहा उनकी १९२२ मे प्रकाशित पुस्तक 'श्रम का वैज्ञानिक सगठन तथा टेलर पद्धति' का हवाला दिया है। – स०

है, वे मामले को टालने की कोशिश कर रहे हैं और मेरे साथ अपनी वातचीत में खरे नहीं हैं। मैंने उत्तर दिया कि मुझे अब तक उनसे वात करने का मौका नहीं मिला है। मैंने उन्हें केवल संदेश दे दिया था, जिसपर उन्होंने कहा था कि वे कार्रवाई करेंगे।

व्लादीमिर इल्यीच ने मुझसे कहा कि उन्होंने पिछले दिन डाक्टरों से पूछा था कि क्या वे ३० मार्च को पार्टी-कांग्रेस में बोल सकेंगे।* डाक्टरों का उत्तर नकारात्मक था, किंतु उन्होंने आश्वासन दिया कि उस समय तक वे उठ खड़े होंगे और महीने भर में उन्हें अखबार पढ़ने की इजाज़त मिल जाएगी। जब फिर "जार्जियाई प्रश्न" की बात छिड़ी, तो व्लादीमिर इल्यीच ने हंसते हुए कहा, "यह अखबार नहीं है और इसलिए मैं इसे अभी पढ़ सकता हूं।"

उस दिन वे अच्छी मन:स्थिति में थे।

* * *

१ फ़रवरी– व्लादीमिर इल्यीच ने मुझे शाम के साढ़े छः वजे वुलाया। मैंने उन्हें वताया कि पोलिटव्यूरो ने उन्हें जार्जियाई आयोग की सामग्री देने की अनुमति दे दी है। व्लादीमिर इल्यीच ने वताया कि सामग्री की जांच करते समय क्या बातें हमें विशेष रूप से ध्यान में रखनी चाहिए और सामान्यत: किस तरह उसे काम में लाना चाहिए। उन्होंने कहा, "काश मैं आज़ाद होता..." फिर हंसकर दुबारा बोले, "काश मैं आज़ाद होता, तो आसानी से सब कुछ खुद ही कर लेता।"

लेनिन के आदेश पर मैंने प्रश्नों की एक सूची तैयार की, जिनके जवाव सामग्री के अध्ययन की प्रक्रिया में प्राप्त करने थे।

उसके वाद उन्होंने मुझसे फिर पूछा कि त्सुरूपा तथा मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था के जन-कमिसारियत के अन्य सदस्यों की राय उनके लेख के वारे में क्या थी। त्सुरूपा और स्विदेर्स्की के आदेशानुसार मैंने उत्तर दिया कि दूसरे साथी की उसके साथ पूर्ण सहमति है और पहले साथी यद्यपि उस भाग का स्वागत करते

* वारहवीं पार्टी कांग्रेस का उद्घाटन ३० मार्च को होनेवाला था। व्लादीमिर इल्यीच का स्वास्थ्य वेहतर होने की आशा में इसे स्थगित कर दिया गया था।

जिसमे केद्रीय समिति के सदस्यो को भेजने की बात कही गई, तथापि उनके मन मे इस बारे मे शकाए है कि सारे कर्मचारी दल को घटाकर ३०० या ४०० कर दिया जाए, तो क्या मजदूर किसान निरीक्षण के सभी वर्तमान कर्तव्यो का पालन करना सभव होगा। अवनेसोव का विचार मुझे मालूम ही नही था।

व्लादीमिर इल्यीच सूचना पाकर सतुष्ट प्रतीत हुए और उन्होने आगे पूछा कि क्या केद्रीय समिति ने लेख के प्रश्न को उठाया है। मैने उत्तर दिया कि मुझे पता नही है।

२ फ़रवरी – व्लादीमिर इल्यीच ने दिन के पौने ग्यारह बजे वोलोदिचेवा को बुलाया और साढे बारह बजे तक 'भले कम हो, पर बेहतर हो' शीर्षक अपना लेख बोलकर लिखाते रहे।

उन्होने वोलोदिचेवा से मुझे यह सदेश भेजा कि मुझे [illegible] एक दिन के अतर से हमेशा उनके पास आना चाहिए। वोलोदिचेवा के यह पूछने पर कि किस समय, व्लादीमिर इल्यीच ने उत्तर दिया था कि अब मैं आजाद आदमी हू। प्रसगवश उन्होने यह भी [illegible] कर दिया था कि दिन के २ बजे से ५ बजे तक का समय छोड़कर कोई भी समय उपयुक्त हो सकता है, किन्तु क्षण भर सोचने के बाद कहा था कि ६ बजे शाम को ठीक रहेगा, हालांकि मेरे लिए शायद यह बेहतर रहेगा कि मैं उनकी बहन से तय कर लू।

वोलोदिचेवा ने हमे बताया कि ऊपर से देखने मे व्लादीमिर इल्यीच की हालत काफी सुधरी हुई लगती थी: उनका रग निखरा हुआ था, वे खुश दिखाई देते थे, वे बिना रुके और [illegible] शब्दो की तलाश करते हुए बहुत अच्छी तरह [illegible] थे या कि, यो कहना और बेहतर होगा कि वे [illegible] रहे थे, बल्कि उत्साहपूर्ण भावभंगी के साथ [illegible] देते हुए भाषण कर रहे थे। सिर पर कोई [illegible]

३ फ़रवरी – व्लादीमिर इल्यीच ने [illegible] लिए ७ बजे शाम को बुलाया। उन्होने [illegible] जार्जियाई आयोग की सामग्री को जाच [illegible] कि अभी मैने केवल कागजो पर [illegible] उसी सख्या जितनी समझी

हुई है। उसके बाद व्लादीमिर इल्यीच ने जिज्ञासा की कि क्या उक्त प्रश्न पोलिटब्यूरो में विचारार्थ पेश हुआ था। मैंने कहा कि इसके बारे में बात करने का मुझे कोई अधिकार नहीं है। तब व्लादीमिर इल्यीच ने पूछा, "क्या आपको इस विशेष मामले पर मुझसे बात करना मना है?"

मैंने उत्तर दिया कि समसामयिक मामलों पर उनसे बात करने का मुझे बिल्कुल अधिकार नहीं है। उन्होंने कहा, "तो, दूसरे शब्दों में यह एक समसामयिक मामला है?" तब मेरी समझ में आया कि मैंने भयानक भूल की है। व्लादीमिर इल्यीच मुझसे प्रश्न पर प्रश्न पूछते गये, "बीमार पड़ने के पहले से ही मुझे द्ज़ेर्जोन्स्की के ज़रिये इस मामले की जानकारी रही है। क्या पोलिटब्यूरो की बैठक में आयोग ने रिपोर्ट पेश की थी?" अब मेरे लिए इसके सिवा और कोई चारा नहीं रह गया था कि मैं व्लादीमिर इल्यीच को बता दूं कि आयोग ने पोलिटब्यूरो की बैठक में रिपोर्ट पेश की थी और ब्यूरो ने आम तौर से आयोग के निर्णयों को मंज़ूर किया था। उसके बाद व्लादीमिर इल्यीच ने कहा, "तो, मेरे ख़याल में आप अपनी रिपोर्ट आज से लगभग तीन हफ़्ते के भीतर दे देंगी और तब मैं एक पत्र लिखूंगा।"

शीघ्र ही डाक्टर लोग (प्रोफ़ेसर फ़ार्स्टर, जो अभी-अभी आए थे, डाक्टर कोजेवनिकोव और डाक्टर क्रैमर) आ गए और मैं चल पड़ी। व्लादीमिर इल्यीच उस दिन प्रसन्न और स्फूर्ति से भरे दिखाई दे रहे थे।

४ फ़रवरी – इतवार – व्लादीमिर इल्यीच ने लगभग छः बजे शाम को वोलोदिचेवा को बुलाया और उनसे पूछा कि क्या छुट्टियों के दिन भी बुलाए जाने पर उन्हें कोई आपत्ति तो न होगी। "आख़िर आपको भी तो कभी आराम करना चाहिए," लेनिन ने कहा।

उन्होंने 'चाहे कम हो, पर बेहतर हो' नामक अपने पहले शुरू किए गए लेख को आध घंटे से कुछ अधिक देर तक बोलकर लिखाया। वोलोदिचेवा के कथनानुसार उस दिन व्लादीमिर इल्यीच की आवाज़ में ताज़गी और ख़ुशी थी। उन्होंने यह कहकर लिखाना ख़त्म किया कि "बस, इस समय के लिए इतना काफ़ी है। मैं

कुछ थक भी गया हू।" उन्होंने वोलोदिचेवा से कहा कि जब वे अपने नोट को साफ-साफ लिख लें तो उन्हे टेलीफोन करे। फिर उन्होंने कहा कि संभवत. वे उस दिन शाम को लिखाना जारी रखना चाहेंगे। उन्होंने आगे कहा कि अपनी पाडुलिपि को सामने रखकर लिखने की उनकी पुरानी आदत है और उसके बगैर काम चलाना उन्हे कठिन प्रतीत हो रहा है।

नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने हमे बाद मे बतलाया कि उस दिन प्रोफेसर फार्स्टर ने व्लादीमिर इल्यीच से अनेक उत्साहप्रद बातें कही, उन्हे कसरत करने की इजाजत दे दी तथा उनके बोलकर लिखाने का समय बढा दिया। इन सारी बातो मे व्लादीमिर इल्यीच बहुत प्रसन्न थे।

व्लादीमिर इल्यीच ने वोलोदिचेवा को ८ बजे शाम को फिर बुलाया। लेकिन बोलकर लिखाने के बजाय उन्होंने टाइप किये हुए पन्नो को पढा और लेख में कुछ और बढाया। उसे खत्म कर चुकने के बाद उन्होंने वोलोदिचेवा से कहा कि उनका इरादा यह है कि अखबार को देने से पहले लेख को त्सुरूपा तथा उनके बोर्ड के कुछ अन्य सदस्यों को भी दिखा दें। और उन्हे यह भी आशा थी कि जिन विचारो को उन्होंने प्रस्तुत किया था उनमे शायद कुछ और भी जोड सकेंगे।

५ फ़रवरी—व्लादीमिर इल्यीच ने दोपहर मे वोलोदिचेवा को बुलाया। वे ४५ मिनट तक उनके साथ रही। उस दिन लिखाने का काम धीरे-धीरे चल रहा था। जब सही शब्दावली तत्काल पकड में नही आती, तो व्लादीमिर इल्यीच कहते, "आज मेरा काम किसी कारण सहज ढग से, चुस्ती के साथ नही चल रहा है।" (वे "चुस्ती के साथ" शब्द पर जोर देते।) फिर उन्होंने अपना वह लेख मागा जिसका शीर्षक था 'हमे मजदूर किसान निरीक्षण संस्था का पुनर्संगठन किस प्रकार करना चाहिए', और उसे ३-४ मिनट तक चुपचाप पढते रहे। उन्होंने कुछ देर और बोलकर लिखाया और उसके बाद यह कहकर काम खत्म करने का फ़ैसला किया कि शाम को चार, पाच या हो सकता है ६ बजे वोलोदिचेवा को फिर बुलायेंगे।

व्लादीमिर इल्यीच ने ७ बजे शाम को मुझे बुलाया, लेकिन मैं अस्वस्थ थी, इसलिए मेरे बजाय ग्लास्सेर गई। उन्होंने व्लादीमिर इल्यीच के साथ अपनी बातचीत का एक विवरण लिख डाला, जिसे सुरक्षित रखा गया है और जिसे मैं बिना किसी परिवर्तन के नीचे दे रही हूं:

"व्लादीमिर इल्यीच ने मुझसे पूछा कि क्या हमने जार्जियाई आयोग की सामग्री पर काम करना शुरू कर दिया है और हम उसे कब तक समाप्त करने की आशा करते हैं। मैंने उत्तर दिया कि हमने सामग्री को आपस में बांट लिया है और उसे पढ़ना शुरू कर दिया है। जहां तक काम को समाप्त करने का संबंध है, हमारी योजना है कि उनके द्वारा निर्धारित अवधि, यानी तीन हफ्तों में ही काम को खत्म कर दें। व्लादीमिर इल्यीच ने दूसरी यह बात जाननी चाही कि हम पढ़ने के काम को किस तरह पूरा करने का इरादा करते हैं। मैंने कहा कि हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि हर चीज़ को पूरी तरह पढ़ जाना हममें से प्रत्येक के लिए लाज़िमी है। उन्होंने पूछा, 'क्या यह निर्णय सर्वसम्मत है?' मैंने कहा कि हां। व्लादीमिर इल्यीच ने हिसाब लगाने की कोशिश की कि कांग्रेस के होने में अभी और कितने दिन हैं और जब मैंने उन्हें बताया कि एक महीना और पच्चीस दिन, तब उन्होंने कहा कि वैसे तो यह समय काफ़ी है लेकिन अगर काकेशिया से कोई अतिरिक्त सूचना प्राप्त करनी हुई, तो यह समय अपर्याप्त सिद्ध हो सकता है। उन्होंने मुझसे पूछा कि हममें से प्रत्येक कितने घंटे रोज़ काम करता है और कहा कि अगर आवश्यकता हो तो हम अपनी मदद के लिए वोलोदिचेवा और मानुचार्यान्त्स को ले लें।

"व्लादीमिर इल्यीच ने यह भी जानना चाहा कि क्या हमारा यह फ़ैसला औपचारिक ढंग से हुआ था कि हममें से प्रत्येक सब कुछ पढ़े। मैंने जवाब दिया कि हमने इस बात को कहीं दर्ज नहीं किया है और उनसे पूछा कि क्या वे हमारे फ़ैसले को ग़लत समझते हैं। व्लादीमिर इल्यीच ने कहा कि वे बेशक यह पसंद करेंगे कि हम सभी पूरी सामग्री को पढ़ें, लेकिन हमारे लिए निर्धारित कार्यभार अत्यधिक अस्पष्ट है। एक ओर तो वे हमें अनावश्यक रूप

से कष्ट देना नही चाहते थे, लेकिन दूसरी तरफ [illegible] की जाती थी कि काम के दौरान हमारे कार्यभार [illegible] आवश्यक सिद्ध होगा। शायद अतिरिक्त सामग्री की [illegible]

"व्लादीमिर इल्यीच ने मुझसे पूछा कि दस्तावेज़ [illegible] है, उन्हे इस्तेमाल करने का हमारा तरीका क्या है, क्या [illegible] दस्तावेजो का सारांश तैयार करके उसे [illegible] और क्या यह सारा कुछ अत्यधिक झंझट का काम नही [illegible] मे व्लादीमिर इल्यीच ने कहा कि सप्ताह के [illegible] कर ले कि हमे कितना समय चाहिए और [illegible] किस तरह काम करना है। उन्होंने यह भी [illegible] मोटे तौर से उठाए गए प्रश्नो तथा [illegible] इल्यीच द्वारा प्रस्तुत किए जानेवाले [illegible] का एक सामान्य मूल्यांकन तैयार [illegible] अपने काम मे सचालित होना चाहिए।

"व्लादीमिर इल्यीच ने मुझे [illegible] कि पेत्रोग्राद, मास्को और [illegible] ([illegible] हुई हो तो) की जनगणना की [illegible] सांख्यिकी बोर्ड में कैसी हो रही है [illegible] हो जायेगी और क्या वह [illegible] ने कहा कि पार्टी कांग्रेस [illegible] और जनगणना के [illegible] जरूरी समझते थे, [illegible] छपती थी, पोस्ते [illegible] पास भेज देते थे। [illegible] और पहले उनसे [illegible] पूछताछ भेज दी जानी चाहिए

उक्त बातचीत [illegible]

६ फरवरी—[illegible] ६ बजे के बीच [illegible] घंटे तक रही। [illegible] काम शुरू करने [illegible]

को पढ़ा। लाल स्याही से किए गए संशोधनों से (खास संशोधनों से नहीं बल्कि जिस ढंग से उन्हें बीच-बीच से लिखा गया था उससे) उनकी मन:स्थिति में उल्लास चमक उठा। उनके आदेशानुसार आम तौर से शार्टहैंड में लिए गए नोटों को पहले कच्चे तौर से लिखकर उन्हें बढ़ाने-घटाने और संशोधन करने के लिए दे दिया जाता था। लेकिन चूंकि वे संशोधन प्रूफ़ पढ़नेवाले के तरीक़े से नहीं बल्कि एक क्लर्क के तरीक़े से जोड़े जाते थे, इसलिए व्लादीमिर इल्यीच के लिए पांडुलिपि को पढ़ना मुश्किल होता था। फलत: उन्होंने कहा कि आगे से उसकी साफ़ प्रति तैयार की जाए।

लेख पर नज़र दौड़ाते हुए उन्होंने बोलकर लिखाने के बजाय खुद लिखने की आदत का ज़िक्र किया और कहा कि अब मैं समझता हूं कि क्यों मैं अपने स्टेनोग्राफ़रों से कभी भी संतुष्ट नहीं हो पाता हूं। बात असल यह थी कि वे अपनी लिखी हुई चीज़ को सामने देखते रहने के अभ्यस्त थे, उलझाव में डालनेवाले किसी अनुच्छेद पर रुककर विचार करते हुए कमरे में एक सिरे से दूसरे सिरे तक चहलक़दमी करते थे और कभी-कभी बाहर टहलने के लिए कमरे से भी निकल जाते थे। उन्होंने कहा कि अब भी कभी-कभी उनका मन बुरी तरह चाहता है कि पेंसिल उठा लें और स्वत: लिखना या संशोधन करना शुरू कर दें।

व्लादीमिर इल्यीच को अपने स्टेनोग्राफ़र को बोलकर काउत्स्की संबंधी लेख लिखवाने के अपने १६१८ के शुरूआती प्रयत्नों की याद आई। उन्होंने कहा कि जब उन्होंने यह महसूस किया कि अब "उलझाव में पड़ रहे हैं" तो घबराकर "कल्पनातीत" गति से "सरपट लगाया" और नतीजा यह हुआ कि पांडुलिपि को आग की लपटों के सुपुर्द कर देना पड़ा, जिसके बाद वे 'सर्वहारा क्रान्ति और गद्दार काउत्स्की' नामक अपने लेख को खुद लिखना शुरू किया और उस लेख से उनको खुशी हुई।

व्लादीमिर इल्यीच ने ये सारी बातें अपनी मुग्धकारी हंसी के साथ बहुत प्रफुल्ल मन से बताईं। वोलोदिचेवा ने बताया कि तब तक उन्होंने लेनिन को वैसी प्रफुल्ल मन:स्थिति में कभी नहीं

देखा था। उसके बाद उन्होंने शुरू किये हुए लेख को १८ या २० मिनट तक और लिखवाया और अंत मे खुद ही कहा कि अब समय समाप्त हो गया।

७ फरवरी – व्लादीमिर इल्यीच ने मुझे सुबह बुलवाया। उन्होंने मुझसे तीन मामलो के सबध मे बाते की

१) जनगणना की रिपोर्ट। उन्होने उसका प्रूफ दिखाने को कहा। उन्हे कहना पडा कि इसके लिए स्तालिन की इजाज़त पानी चाहिए।

२) जार्जियाई आयोग। उन्होंने पूछा कि काम की प्रगति कैसी हो रही है, हम पढने का काम कब तक खत्म कर लेने की आशा करते है, हम अपनी बैठक कब कर रहे हैं, इत्यादि।

३) मजदूर किसान निरीक्षण सस्था। व्लादीमिर इल्यीच ने मुझसे पूछा कि क्या बोर्ड कोई फौरी फैसला करने और राजकीय महत्व की कार्रवाइया करने का इरादा कर रहा है या कि वह मामले को काग्रेस के समय तक के लिए टाल रहा है। उन्होंने बताया कि वे एक लेख लिख रहे है, मगर वह कुछ ठीक चल नही रहा है। फिर भी वे चाहते हैं कि उसे पूरा कर दे और अखबार को देने से पहले त्सुरूपा को पढवा दे। उन्होंने मुझे त्सुरूपा से यह पूछने को कहा कि उस लेख को लिखने मे (व्लादीमिर इल्यीच यहा अपने लेख 'चाहे कम हो, पर बेहतर हो' का हवाला दे रहे थे) शीघ्रता करने की जरूरत है अथवा नही।

उस दिन डाक्टर कोजेवनिकोव ने कहा कि व्लादीमिर इल्यीच की हालत मे सुधार दिखाई दे रहा है वे अब अपना दाया हाथ हिला सकते हैं और वे खुद विश्वास करने लगे हैं कि अन्तत वे उस हाथ को इस्तेमाल कर सकेंगे।

उसी दिन बाद मे (लगभग साढे बारह बजे) व्लादीमिर इल्यीच ने वोलोदिचेवा को बुलवाया और कहा कि वे विभिन्न विषयो पर बोलकर लिखवायेंगे। पहला विषय यह था कि पार्टी तथा सोवियत सस्थाओ के काम का एकीकरण किस प्रकार किया जा सकता है। दूसरा यह था कि क्या शैक्षणिक तथा व्यावहारिक कार्यकलापो को सयुक्त करना समुचित होगा ('चाहे कम

हो, पर बेहतर हो' शीर्षक लेख का तीसरा और चौथा भाग)।

"और क्रान्ति जितना ही अधिक कठोर होगी..."–इस वाक्य को अनेक बार दुहराते हुए व्लादीमिर इल्यीच रुक गए। ज़ाहिर है कि उन्हें अगला शब्द नहीं मिल रहा था। उन्होंने वोलोदिचेवा से उससे पहले के अंश को पढ़कर आगे लिखवाने में सहायता करने को कहा और हंसते हुए बोले, "यहां ऐसा लगता है कि मैं बिलकुल ही उलझ गया हूं; लिख लीजिए–ठीक इस स्थान पर मैं उलझकर रह गया!"

उस दिन ७ बजे और ९ बजे के बीच रात में व्लादीमिर इल्यीच ने वोलोदिचेवा को फिर बुलवाया और वह लगभग डेढ़ घंटे तक वहां रहीं। वोलोदिचेवा ने बताया कि सबसे पहले तो उन्होंने उस वाक्य को पूरा कराया जिसे तिपहरी में छोड़ दिया था और बोले, "अब मैं अगले विषय को लूंगा।" उन्होंने वोलोदिचेवा से पहले तैयार की गयी रूपरेखा के अनुसार विषय-सूची पढ़कर सुनाने को कहा। सुन चुकने पर उन्होंने कहा कि एक विषय उनसे छूट गया था–ग्रामीण क्षेत्रों के सामान्य शिक्षा संबंधी कार्य और व्यावसायिक शिक्षा के केंद्रीय बोर्ड का पारस्परिक संबंध।

लेनिन द्वारा तैयार की गयी रूपरेखा के अनुसार विषय निम्नलिखित थे:

१) उपभोक्ता-समितियों का केंद्रीय संघ और नई आर्थिक नीति के दृष्टिकोण से उसका महत्व;

२) जार्जिया की कम्युनिस्ट पार्टी में पैदा हुए हाल के झगड़े को दृष्टि में रखते हुए अंतर्राष्ट्रीयतावाद तथा जातियों का प्रश्न;

३) 'सार्वजनिक शिक्षा के आंकड़े' नामक नई पुस्तक जो १९२२ में निकली;

४) ग्रामीण क्षेत्रों की सामान्य शिक्षा संबंधी कार्य और व्यावसायिक शिक्षा के केंद्रीय बोर्ड का पारस्परिक संबंध।

यह कहना कठिन है कि १९२२ में दिसंबर के अंतिम दिनों में और जनवरी-फ़रवरी १९२३ में लिखाए गए पत्रों तथा लेखों में ये सारे विषय पूरे ब्योरे के साथ आ गए अथवा नहीं।

तीसरे और चौथे विषयो का महज़ सरसरी तौर से 'डायरी के पन्ने' नामक लेख मे जिक्र कर दिया गया था। इसके अलावा, व्यावसायिक शिक्षा के केंद्रीय वोर्ड वाले विषय को लेनिन ने अपनी विषय-सूची मे ७ फरवरी को शामिल किया था, जबकि 'डायरी के पन्ने' शीर्षक लेख २ जनवरी को लिखवाया गया था।

व्लादीमिर इल्यीच ने अतर्राष्ट्रीयतावाद तथा जातियो के प्रश्न वाले विषय का विवेचन अपने उस पत्र में किया था, जिसका शीर्षक 'जातियों अथवा "स्वायत्तीकरण" का प्रश्न' था। हो सकता है कि उन्होंने पूर्णत इसी विषय से सबधित एक दूसरा लेख लिखवाने का इरादा किया हो।

अत मे, क्या 'सहकारिता के बारे मे' उनके लेख मे नई आर्थिक नीति की दृष्टि से उपभोक्ता-समितियो के केंद्रीय संघ और उसके महत्व के विषय का सांगोपांग विवेचन हुआ? सभवतः नही। यह समझने को विवश होना पडता है कि उनके काम को सक्षिप्त करती हुई बीमारी के कारण व्लादीमिर इल्यीच ने जिन विषयों की रूपरेखा बनाई थी, उनपर वे जो कुछ लिखवाना चाहते थे, वह सब नही लिखवा सके।

व्लादीमिर इल्यीच ने 'चाहे कम हो, पर बेहतर हो' शीर्षक लेख के आम हिस्से को तेजी से और आसानी से, भावभगिमा द्वारा अभिव्यक्ति को स्पष्टतर करते हुए और उचित शब्दो के चुनाव मे कोई भी कठिनाई महसूस किए बगैर बोलकर लिखाया।

जब वे उसे खत्म कर चुके तो कहा कि पूरे लेख के साथ उस भाग को जोडने की कोशिश वे बाद मे करेगे। बाद में नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना से वोलोदिचेवा को मालूम हुआ कि व्लादीमिर इल्यीच अगले दिन उनसे कुछ नही लिखवाएगे, क्योकि वे कुछ पढना चाहते थे।

६ फ़रवरी – व्लादीमिर इल्यीच ने सुबह मुझे बुलवाया और कहा कि वे मजदूर किसान निरीक्षण सस्था के प्रश्न को कांग्रेस के सामने पेश करेगे।

वे जनगणना की रिपोर्ट की ठीक-ठीक छपाई के बारे में चिंतित थे। उन्होंने मेरा यह सुझाव मान लिया कि क्रजिजानोव्स्की

और स्क्रिप्ट्स्की को लुइस अथवा कामेनेव से यह मालूम करने का अधिकार दिया जाए कि काम कैसा चल रहा है।

व्लादीमिर इल्यीच अच्छे दिखाई दे रहे थे और अत्यंत प्रसन्न मुद्रा में थे। उन्होंने मुझसे कहा कि डाक्टर का फ़ैसला अब ऐसा है कि मुझे पहले तो मुलाक़ातियों से मिलने और बाद में अख़बार पढ़ने की इजाज़त दे दी जाएगी। मेरे यह कहने पर कि स्वास्थ्य की दृष्टि से यह क्रम सचमुच बेहतर प्रतीत होता है, उन्होंने बड़ी संजीदगी से और कुछ सोचने के बाद उत्तर दिया कि ठीक स्वास्थ्य की दृष्टि से ही यह क्रम बदतर था, क्योंकि मुद्रित सामग्री पढ़कर ख़त्म कर दी जाती है, जबकि लोगों से मुलाक़ात करने का अर्थ होता है विचार-विनिमय।

९ फ़रवरी को व्लादीमिर इल्यीच ने दोपहर के बाद वोलोदिचेवा को बुलवाया और कहा कि दुबारा टाइप किए हुए नोट को देखकर उन्हें अधिक ख़ुशी हुई। उन्होंने पिछले दिन लिखवाए हुए हिस्से को पढ़ा और शायद ही कोई परिवर्तन किया। पढ़ चुकने के बाद उन्होंने कहा, "मेरा ख़याल है कि मैंने इसे सोद्देश्य बना दिया है।" वोलोदिचेवा ने बताया कि व्लादीमिर इल्यीच लेख के इस भाग से बहुत प्रसन्न थे और उन्होंने इसका अंत बोलकर लिखाया। उन्होंने क़रीब एक घंटा काम किया।

शाम को नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने लेख के सामान्य भाग की माँग की क्योंकि व्लादीमिर इल्यीच चाहते थे कि वे उसे पढ़ें।

१० फ़रवरी – व्लादीमिर इल्यीच ने मुझे शाम को छः बजे के बाद बुलवाया और 'चाहे कम हो, पर बेहतर हो' शीर्षक लेख को लुइस को दे देने को कहा और कहा कि अगर संभव हो तो वे लेख को दो दिन में पढ़ डालें। फिर व्लादीमिर इल्यीच ने मुझसे वे किताबें माँगी जिनपर उन्होंने सूची में निशान लगा दिए थे। उनमें रोजित्सिन का 'नया विज्ञान और मार्क्सवाद' तथा 'मुद्रा-सिद्धांत की आधारभूत समस्याएं' नामक लेख-संग्रह, फ़ाल्कनर का 'विश्व औद्योगिक संकट के विकास में मोड़', ड्रेव्स की 'ईसामसीह की पुराणकथा', कुनौव का 'रूसी बादशाही का

अत' और मोदजालेव्स्की की 'सर्वहारा कपोलकल्पनाओ की रचना। समसामयिक सर्वहारा काव्य मे विचारधारात्मक प्रवृत्तिया' इत्यादि पुस्तकें शामिल थी।

व्लादीमिर इल्यीच थके हुए प्रतीत हो रहे थे और उन्हें बोलने मे ज़ोर लगाना पड रहा था। . .

१२ फ़रवरी – व्लादीमिर इल्यीच ने मुझे चद मिनटो के लिए बुलवाया। उनकी हालत बदतर थी, उन्हे सख्त सिरदर्द था। मारीया इल्यीनिच्ना के कथनानुसार उन्हे डाक्टरो ने उद्विग्न कर दिया था। पिछले दिन फार्स्टर ने उनसे कहा था कि उनके लिए अखबारो, मुलाकातियो और राजनीतिक जानकारियो की बिलकुल मनाही है। वे मुझसे उन्ही तीन विषयों – जनगणना, जार्जियाई आयोग तथा मजदूर किसान निरीक्षण – पर बाते करते रहे और सिरदर्द की शिकायत करते रहे।

१४ फ़रवरी – व्लादीमिर इल्यीच ने मुझे ठीक दोपहर बाद बुलवाया और कहा कि उनका सिरदर्द खत्म हो गया है और उनकी तबीयत बेहतर है, उनकी बीमारी स्नायविक है और इसलिए कभी तो वे पूर्णत: ठीक हो जाते हैं, यानी उनका दिमाग बिलकुल साफ़ रहता है और कभी उनकी हालत बदतर हो उठती है। यही कारण है कि हमे उनके आज्ञा-पालन मे जल्दी करनी है, क्योकि कोई काम ऐसा है जिसे वे काग्रेस से पहले पूरा कर लेने के लिए कृत-निश्चय है और उन्हे उम्मीद है कि वे उसे पूरा कर लेगे। अगर हम विलब करेगे और उनकी योजना पूरी नही हो पायेगी, तो उन्हे बेहद झुझलाहट होगी।

डाक्टरो के आ जाने से हमारी बातचीत बद हो गई।

व्लादीमिर इल्यीच ने उस दिन शाम को मुझे फिर बुलाया। स्पष्ट ही वे थके हुए थे और उन्हें बोलने मे कठिनाई महसूस हो रही थी। उन्होंने फिर उन्ही तीन विषयो पर बाते शुरू की, विशेषकर "जार्जियाई प्रश्न" पर जिसकी वजह से उन्हे सबसे अधिक परेशानी थी। उन्होंने हमे जल्दी करने को कहा और मुझे कुछ अतिरिक्त आदेश दिये।

फरवरी के उत्तरार्द्ध में व्लादीमिर इल्यीच की हालत ख़राब

रही और उन्होंने हममें से किसी को भी नहीं बुलवाया। वे पढ़ना चाहते थे मगर डाक्टरों ने उन्हें समझा-बुझाकर रोक दिया।

फिर भी, डाक्टर कोजेवनिकोव के शब्दों में, बेहतर हो जाने के गिने-चुने मिनटों को व्लादीमिर इल्यीच ने काम करने के लिए इस्तेमाल करने की कोशिश की।

२० फ़रवरी – शाम को व्लादीमिर इल्यीच ने रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतंत्र की सोवियतों की दसवीं कांग्रेस की रिपोर्ट मांगी। नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने लाने का वादा किया किंतु मारीया इल्यीनिच्ना ने उन्हें ऐसा न करने की सलाह दी और कहा कि रिपोर्ट पढ़ना उनके लिए हानिकर होगा।

व्लादीमिर इल्यीच को घोर निराशा हुई और उन्होंने कहा कि वे रिपोर्ट को पहले ही पढ़ चुके हैं, वे उसे केवल एक बार देखने के लिए प्राप्त करना चाहते थे, जिसपर उनका दिमाग़ उस समय लगा हुआ था। फिर भी उन्हें रिपोर्ट नहीं दी गई और वे बहुत बेचैन हुए।

अगले चंद दिन उन्होंने पढ़ने में लगाए। उन्होंने सुखानोव के 'क्रान्ति सम्बंधी लेख' की ७वीं जिल्द मांगी और कारोबारी मामलों पर कुछ बातें कीं।

२ मार्च – व्लादीमिर इल्यीच ने अंतिम बार अपने 'चाहे कम हो, पर बेहतर हो' शीर्षक लेख को पढ़ा और उसे अखबारों को भिजवा दिया। वह 'प्राव्दा' में ४ मार्च, १९२३ को प्रकाशित हुआ। तार्किक दृष्टि से यह लेख 'हमें मज़दूर किसान निरीक्षण संस्था का पुनर्संगठन किस प्रकार करना चाहिए' शीर्षक लेख के क्रम में था और दोनों के मिलाने से मानो एकपूर्ण लेख बनता था।

समाजवादी निर्माण के पहले परिणाम निकालते हुए तथा देश के भीतर और विदेशों में वर्ग शक्तियों के संतुलन की दृष्टि से इसे निर्माण के आगे के विकास की संभावनाओं को ध्यान में रखकर व्लादीमिर इल्यीच ने भविष्यवाणी के साथ लिखा था:

"संघर्ष के फल का निर्णय अंतिम रूप से इस बात के द्वारा होगा कि भूमंडल की आबादी का प्रबल बहुमत रूस, भारत,

चीन इत्यादि मे रहता है और पिछले बरसो मे यही बहुमत ऐसी असाधारण तेज़ी के साथ अपनी मुक्ति के सघर्ष मे खिंचा है कि इस सबध मे रत्ती भर भी सदेह नही हो सकता कि विश्व-सघर्ष का अतिम फल क्या होगा। इस अर्थ मे समाजवाद की अतिम विजय पूर्णत और नितात सुनिश्चित है।"*

३ मार्च– हमने "जार्जियाई प्रश्न" पर द्ज़ेर्ज़ीन्स्की आयोग द्वारा प्रस्तुत की गई सामग्री के परीक्षण [illegible] मे अपना स्मरणपत्र और अपने नतीजे व्लादीमिर इल्यीच को दे दिए।

५ मार्च– व्लादीमिर इल्यीच ने दोपहर के लगभग [illegible] को बुलवाया और उनसे दो पत्र लिखवाए, जिसमे [illegible] २० मिनट लगे।

बाद मे डाक्टर कोजेवनिकोव ने बताया कि [illegible] ने उनसे यह कहा था कि पत्रो से उन्हे कोई [illegible] वे कारोबारी पत्र थे, लेकिन स्टेनोग्राफर [illegible] होते ही उन्हें ज्वरांश महसूस होने लगा [illegible]

बाद को व्लादीमिर इल्यीच ने [illegible] हिदायते दी।

६ मार्च– व्लादीमिर इल्यीच ने [illegible] दोनो को सुबह बुलवाया, लेकिन [illegible] से लिखवाई।

उन्होंने पिछले दिन [illegible] पत्र को दुबारा पढ़ा और [illegible] पत्र को स्तालिन को [illegible]

फिर व्लादीमिर [illegible]

"मदिवानी, [illegible]

"प्रिय [illegible] तैयार कर रहा [illegible]

---

* [illegible]
[illegible], भाग २, [illegible]

इन पंक्तियों के साथ ही लेनिन का कार्यकलाप बंद हो गया।

६ मार्च से शुरू होकर व्लादीमिर इल्यीच की आम हालत में भी आकस्मिक बदतरी दिखाई पड़ी। व्लादीमिर इल्यीच अब बिलकुल ही काम करने योग्य नहीं रह गए थे।

१० मार्च – डाक्टरों ने तब से दिन-रात की ड्यूटी की व्यवस्था की। वे १५ मई तक अपने क्रेमलिन वाले मकान में रहे जहां श्रेष्ठतम रूसी तथा विदेशी डाक्टर उनकी देखभाल कर रहे थे और उनका परिवार तथा पार्टी की केंद्रीय समिति उनकी सुश्रुषा में लगी हुई थी।

१२ मार्च – सरकार ने लेनिन के स्वास्थ्य के बारे में एक बुलेटिन प्रकाशित की। उसके बाद से बुलेटिनें नियमित रूप से प्रकाशित होने लगीं। सारा देश चिंताकुल भाव से उनकी प्रतीक्षा करता रहता था।

जब मौसम में कुछ गर्मी आई तब डाक्टरों की राय के अनुसार व्लादीमिर इल्यीच को गोर्की ले जाया गया।

लेनिन ने अपने लौह संकल्प की समस्त शक्ति के साथ अपनी बीमारी के ख़िलाफ़ संघर्ष किया। जुलाई में उनके स्वास्थ्य में कुछ सुधार परिलक्षित हुआ। यहां तक कि उन्होंने केवल एक छड़ी के सहारे बिना किसी की मदद के चलना-फिरना भी शुरू कर दिया। डाक्टरों ने कहा कि अब उनके अच्छे हो जाने की उम्मीद पैदा हो गई है।

१२ अक्तूबर को व्लादीमिर इल्यीच अंतिम बार मास्को आये थे।

२ नवंबर को लेनिन की मज़दूरों से आख़िरी मुलाक़ात हुई। ग्लूख़ोवो टेक्सटाइल मिल से एक प्रतिनिधिमण्डल उनसे मिलने आया, जो गोर्की के पौधाघर में रोपने के लिए चेरी के १८ पौधों की भेंट लेकर आया था। उस मुलाक़ात के बारे में ख़ोलोदोवा नाम की एक मज़दूरिन का कहना है, "इस चेतावनी के बाद कि हम बहुत देर तक न रुकें, हमें मुलाक़ात के कमरे में पहुंचाया गया। एक या दो मिनट बाद हमें दूसरे कमरे में मारीया इल्यीनिच्ना की आवाज़ सुनाई पड़ी – 'वोलोद्या, तुम्हारे पास मेहमान आए

है।' दरवाजा खुला और व्लादीमिर इल्यीच मुस्कराते हुए अदर आए। वे हमारे पास आए, अपने बाएं हाथ मे अपनी टोपी उतारी, उसे दाहिने हाथ मे लिया और हमसे मिलाने के लिए अपना बाया हाथ पेश किया। हम इतने खुश हुए कि हमारी समझ मे ही नही आया कि क्या करे और हम बच्चो की तरह रोने लगे। हमने मजदूरो तथा प्रबध-विभाग के हस्ताक्षरो से युक्त अभिनदन-पत्र उन्हे भेट किया और स्थानीय सगठनो की ओर से अभिनंदन के कुछ शब्द कहे। हम इल्यीच के साथ ५ मिनट तक रहे और हममे से हर एक ने उन्हें चूमकर उनसे विदा ली। विदा लेनेवालो में अतिम थे ६०-वर्षीय मजदूर कामरेड कुज्नेत्सोव। वे तथा इल्यीच आलिगन-बद्ध दो मिनट तक खडे रहे। बूढे कुज्नेत्सोव अपने आसुओ के बीच बार-बार कहते रहे, "मैं एक मेहनतकश लोहार हू, व्लादीमिर इल्यीच, एक लोहार। आप द्वारा आयोजित हम सब कुछ गढ देगे ."

मजदूरों के साथ इस मुलाकात से लेनिन को बेहद खुशी हुई। मारीया इल्यीनिच्ना ने बताया कि बाद मे उन्होने उनके अभिनदन-पत्र को बार-बार पढा।

मजदूरो से वही लेनिन की आखिरी मुलाकात थी। शायद वे उनके माध्यम से उस वर्ग के प्रतिनिधियो से अलविदा कह रहे थे, जिस वर्ग के हेतु के लिए उन्होने अपना जीवन अर्पित कर दिया था।

मेहनतकश जनता के साथ लेनिन के सबध प्रबल और अटूट थे। जिस समय वे भयानक रूप से बीमार थे तब भी उनके विचार पूर्णत जनता के ही साथ थे। वह बधन एक दिन, एक क्षण को भी नही टूटा। हमारे बहुजातीय देश के कोने-कोने से लेनिन के स्वास्थ्य-लाभ की शुभकामनाओ के साथ [illegible] के लाखो पत्र और तार आते रहते थे। [illegible] व्यक्ति करते हुए 'प्राव्दा' ने लिखा [illegible] भावनाए, हमारे हृदय उनके साथ है [illegible]

१९२३ मे रियाजान-उराल [illegible] पार्टी मजदूरो ने अपने अवकाश के [illegible]

लेनिन के जीवन के चंद पन्ने

ली० फ़ोतियेवा